पर नज़र डाली और शीघ्र ही वह चेहरा उन्हे दिखलाई दे गया, जिसे कि उनकी आँखे अब तक खोज रही थी। वह व्यक्ति थी उर्मिला, पडितजी की पुत्री, जिसकी दृष्टि उनके आने के समय से लेकर अब तक एकटक उन्ही की तरफ लगी हुई थी। उर्मिला ने हाथ जोड कर पिता को प्रणाम किया, जिसका पंडितजी ने कुछ गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया।

कुछ ही मिनट बाद अदालत मे कुछ हलचल सी दिखलाई पड़ने लगी। बहुत ही स्वच्छ कपडे पहने हुए एक व्यक्ति कमरे में घुसा और अदालत की मेज के आगे कुरसी पर बैठ गया। गरमी बहुत अधिक थी, किन्तु ऐसा जान पड़ता था कि उसे इसकी किञ्चित् मात्र भी परवाह नहीं है—फिर भी न जाने क्यों उसके चेहरे पर उद्विग्नता और घबराहट साफ झलकती थी। यह व्यक्ति थे डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट मि० ओकले।

विचार के लिए जो मामला पेश था, वह एक तरह से असाधारण सा था। कम से कम मि० ओकले को जिलाधीश के पद से जो काम नित्य करने पडते थे उन्हे देखते हुए यह अपूर्व था। उन्होंने बरसो तक पूर्ण निर्लिप्तता और धैर्य के साथ न्याय किया था। चोरी, राहज़नी, अग्निकाण्ड और हत्या तक के मामलों मे उनके अन्त करण की शान्ति भग न होने पाती थी। मानव प्रकृति जैसी है वैसी ही रहेगी, उसके लिए किया क्या जाय ? अपने सरकारी पद के विविध कर्तव्यो मे अपराधियों को दंड देना भी मि० ओकले का एक कार्य था। परन्तु आज जो मामला उनके सामने पेश था, उसमे साधारण दृष्टि से ऐसा कोई भी अपराध नहीं था, जिसके लिए कि वे दंड दे सकें।

मि० ओकले बहुत दिन से पंडितजी को एक सुशिक्षित और सुसंस्कृत सज्जन के रूप मे जानते थे। यहाँ तक कि वे उन्हे

दावत भी दे चुके थे और उनके दिल में यह विचार जम गया था कि यह आदमी अच्छा है। तव क्या पंडितजी अपनी गलती नहीं समझते ? क्या वे यह नहीं जानते कि अपने कार्यों से वे लोगो को उत्तेजित कर रहे है, उनमे असन्तोष की भावनाएँ भर रहे हैं ? क्या वे इतना भी नहीं समझते कि जो सरकार जनता के कल्याण के लिए अनवरत प्रयत्न कर रही है उसके लिए वे व्यर्थ मे आफ़त खड़ी कर रहे है ? सौ साल पहले देश मे जो अव्यवस्था छायी हुई थी, उसमें और वर्तमान की नियमित उन्नति मे कितना अन्तर है, इसे तो एक मूर्ख भी समझ सकता है। आखिर पंडितजी चाहते क्या हैं ? इस वात को तो हम कल्पना भी नही कर सकते कि अगरेज़ हिन्दुस्तान छोड़ कर चले जायँ।

मि० ओकले वैठे हुए उद्विग्न मुद्रा से टेविल पर अपनी फाइलें पलट रहे थे। फिर कुछ खाँसने-खूसने के वाद उन्होंने सरकारी वकील को कार्यवाही आरम्भ करने का आदेश किया।

सरकारी वकील के खड़े होते ही अदालत के कमरे मे सन्नाटा छा गया। पखो की चीं-चीं की ध्वनि के सिवाय और कोई आवाज़ सुनाई न देती थी। उन्होंने अपने भाषण मे कहा—"अभियुक्त पंडितजी पर दड विधान की उस धारा के अन्दर मामला चलाया जा रहा है, जिसके अनुसार कानून भंग करने वाली सस्थाओ का सदस्य होने के कारण अधिक से अधिक ढाई साल की कड़ी सज़ा दिए जाने का नियम है। इस सस्था का नाम भारतीय राष्ट्रीय कौंसिल है। अभियुक्त इस कौंसिल का सदस्य ही नहीं वल्कि उसका अध्यक्ष भी है। इस कौंसिल के उद्देश्य समय समय पर प्रकाशित विविध वुलेटिनों और पर्चों मे वतलाये जाते रहे हैं, जिन पर कि

पंडितजी के हस्ताक्षर रहा करते थे। यह सब कागज़ात भी अदालत के सामने पेश हैं। कौंसिल का मुख्य उद्देश्य हिन्दुस्तान से अंगरेजी हकूमत को (जैसी कि वह आज है) नष्ट करना और इसके स्थान पर स्वराज्य या राष्ट्रीय शासन की स्थापना करना है। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए ब्रिटिश माल का बहिष्कार और सत्याग्रह साधन निश्चित किए गए हैं। एक सरकारी आज्ञा से इस राष्ट्रीय संस्था को गैर-कानूनी करार दिया जा चुका है। यह आज्ञा सरकारी गजट में प्रकाशित हुई थी और उसकी प्रतिलिपि दैनिक और साप्ताहिक समाचारपत्रों में भी निकली थी। इसके सिवाय आर्डिनेन्स की एक प्रतिलिपि अभियुक्त के पास भी भेजी गयी थी, जिसे स्वीकार करने की रसीद भी अदालत के सामने पेश की जाती है। इसके बाद २४ घंटे के अन्दर ही एक सार्वजनिक सभा हुई, जिसके अध्यक्ष स्वयं पंडितजी थे। इस सभा में अभियुक्त ने जनता से आर्डिनेन्स की उपेक्षा करने और जी-जान से देश को विदेशी शासन से मुक्त करने के लिये प्रयत्नशील होने का अनुरोध किया था। इस भाषण की भी अक्षरशः रिपोर्ट पेश की गयी है। इसके बाद गिरफ़ारी का वारंट निकाला गया और सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस ने जाकर अभियुक्त को गिरफ़ार कर लिया।"

सरकारी वकील अपना वक्तव्य पढ़ कर बैठ गये। जान पड़ता था कि उन्हें अपना यह कार्य शीघ्र समाप्त होजाने पर कुछ सन्तोष ही हो रहा था।

इसके बाद सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस ने अपने बयान में बतलाया कि किस तरह तड़के उन्होंने अभियुक्त को गिरफ़ार किया था। सुपरिन्टेन्डेन्ट महोदय ने अन्त में यह भी कहा—"यह कहना मैं उचित समझता हूँ कि इस अप्रिय कर्तव्य-पालन में पंडितजी के

घरवालों और स्वयं पडितजी ने मुझे हर तरह की सहायता दी है।"

कैप्टिन ब्रायन ओकोनर जैसे ही गवाही देने के स्थान से उतर कर नीचे आ रहे थे कि उनकी नज़र दर्शकों की गैलरी की तरफ पडी, जहाँ उर्मिला बैठी हुई थी। उर्मिला ने खेदपूर्ण मुसकराहट से उन की तरफ देखा और इसके बाद अपने सिर को कुछ झुका लिया।

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट कुछ देर तो अस्थिर से होकर कुरसी पर हिलते रहे। इसके बाद पंडितजी की तरफ मुखातिब हो कर बोले—"क्या आप अपनी कुछ सफाई देना चाहते है ?"

"नहीं"—शान्त स्वर मे उन्हे उत्तर मिला—"मै नियमित रूप से अपनी सफाई नही पेश करना चाहता। सरकारी वकील ने जो बातें बतलायी हैं, वे सही हैं, तो भी मैं अपना एक वक्तव्य देना चाहता हूँ।"

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट क्षण भर के लिये दुविधा मे पड़ गये। एक तरफ तो यह ख्याल था कि जोशीले भाषण के कारण लोगों से भरी हुई अदालत मे कोई आफत न खडी हो जाय और दूसरी तरफ उनकी स्वाभाविक न्याय-भावना अभियुक्त के वाजिबी अनुरोध को मानने के लिये उन्हें विवश करती थी।

मि० ओकले ने कुछ अनमने होकर कहा—"आप वक्तव्य दे सकते हैं, किन्तु वह अधिक लम्बा न हो।"

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के मुँह से यह बात निकलते ही अदालत के कमरे मे कुछ सनसनी फैल गयी। परन्तु पडितजी के खडे होते ही फिर पहले की सी शान्ति हो गयी। सभी के नेत्र उस आकर्षक व्यक्ति की तरफ लगे हुए थे। सुदीर्घ नेत्र, उच्चाशय

एक क्षण मे वहाँ फिर पहले की सी शान्ति हो गयी। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट फैसला सुनाने लगे तो एक सुई गिरने की भी आवाज सुनाई दे सकती थी।

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट महोदय बोले—"इस मामले मे मुझे इस बात से सरोकार नही कि भारत मे ब्रिटिश शासन के क्या आर्थिक, राजनीतिक या नैतिक परिणाम हुए और न मुझे इस आर्डिनेन्स के ही सम्बन्ध में इससे अधिक कुछ कहना है कि यह प्रकाशित करके जारी कर दिया गया है। अभियुक्त ने स्वय स्वीकार किया है कि जो बातें कही गयी है, सच हैं और मेरे मत मे इन बातों से आर्डिनेन्स निश्चय ही भंग हुआ है। अब मुझे विचार करना है कि जानबूझ कर जो यह कानून तोडा गया है इसके लिए क्या सज़ा दी जाय? आर्डिनेन्स के अनुसार मुझे अधिक से अधिक दो वर्ष के कठोर कारावास का दंड देने का अधिकार है और असाधारण मामलो मे मुझे कुछ स्वतंत्रता भी इस सम्बन्ध मे दी गई है।"

मजिस्ट्रेट महोदय अपने नोट कुछ देर तक देखते रहे और इसके बाद उन्होंने कहना आरम्भ किया—"बहुत सोच विचार के बाद मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि यह मामला असाधारण है और इसीलिए मुझे इसका फैसला कुछ स्वतंत्रतापूर्वक करने का अख्त्यार है। आर्डिनेन्स अभी कुछ दिन पहले प्रकाशित हुआ है। इसकी आवश्यकता कई जगह उपद्रवो और पुलिस से उपद्रवियो की मुठभेड़ के कारण हुई है। किसी भी सरकार का सबसे प्रथम कर्तव्य अमन और कानून की रक्षा करना है और यह कार्य सैनिक शक्ति के मुकाबले मे नैतिक प्रभाव से कहीं अच्छा होता है। अभियुक्त का अपनी जाति मे बहुत ऊँचा स्थान है और लोगो पर उनका व्यक्तिगत प्रभाव भी बहुत अधिक है। न्याय की

दृष्टि से सर्वोत्तम तो यह होगा कि उनसे आर्डिनेन्स के नियमों को भंग न करने का वचन ले लिया जाय और साथ ही भविष्य में नेकचलनी के लिए एक जमानत भी ली जाय। अभियुक्त स्वयं व्यक्तिगत रूप से १० हजार रु० का मुचलका दे और इतनी ही रकम की दो जमानतें उनके लिये दो अन्य सम्मानित नागरिक जमा करें।"

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट कुछ समय तक चुप रहे। इसके बाद अदालत की शान्ति को भंग करते हुए उन्होंने पूछा—"क्या आप यह वचन देने को तैयार हैं?"

पंडितजी एक क्षण की भी हिचकिचाहट के बिना बोल उठे—"अपना आत्मसम्मान, अपना अंत करण और देश के प्रति अपना कर्तव्य मुझे बाध्य करता है कि इस प्रकार की कोई भी प्रतिज्ञा मैं न करूँ।"

पंडितजी के प्रति प्रशंसात्मक शब्दों से अदालत का कमरा गूँज उठा, किन्तु उनके हाथ उठाते ही फिर पहले की सी शान्ति छा गई।

तब डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने अपना अन्तिम फैसला सुनाते हुए कहा—"चूँकि आपने जान बूझ कर देश के कानून को भंग करने का अपराध किया है, चूँकि आपने नेकचलनी की जमानत देने से भी इनकार कर दिया है, इसलिए पहले जुर्म में मैं आपको ६ महीने की सादी कैद की सजा देता हूँ।"

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट अभी फैसला सुना ही रहे थे कि अदालत के बाहर बहुत कोलाहल सुनाई दिया। कचहरी के अहाते की नीची दीवार को फोड़ कर भीड़ अन्दर घुस [illegible] और [illegible] के खड़े हुए पुलिस कान्स्टेबिलों को उसे पीछे रखना कठिन हो [illegible]

था। "पंडितजी की जय। पंडितजी की जय" ही चारों तरफ सुनाई दे रही थी और कभी कभी भीड़ की क्रोध भरी आवाजे भी कानो तक पहुँच जाती थीं। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट की तरफ प्रश्नसूचक दृष्टि से देखने लगे। कैप्टिन ब्रायन ने उनके कुछ कहे बिना ही परिस्थिति को समझ लिया। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की टेबिल के पास जाकर उन्होने गम्भीर और आदेश सूचक आवाज मे कहा—"कोई हिले नही, जो जहाँ है, वही खड़ा या वैठा रहे।"

लोग चुपचाप यह देखने लगे कि क्या होता है। सुपरिन्टे-न्डेन्ट पुलिस ने अपने एक सिपाही से कहा—"कमरे का दरवाजा वन्द करके ताला लगा दो और देखो इजाजत के विना किसी को भीतर या वाहर आने-जाने न देना।" जल्दी मे उन्होंने पडितजी की तरफ इस आशय की दृष्टि भी डाली कि भीतर कोई गडवड न होने की जिम्मेदारी वे लेते हैं या नहीं। पंडितजी ने इशारे से प्रकट किया इसके लिये वे तैयार हैं और तब उर्मिला की तरफ दृष्टि डाली। ब्रायन इसका मतलब समझ गए और उन्होने एक पुलिस कान्सटेबिल को बुला कर आदेश दिया कि पडितजी की पुत्री को उनके पास जाने दो और जहाँ भी वे (उर्मिला) चाहे उनके आने जाने मे कोई रुकावट न डाली जाय।

इस वीच मे वाहर शोरगुल इतना अधिक वढ गया कि ऐसा जान पड़ने लगा कि मानो कुछ ही देर मे अदालत की इमारत पर आक्रमण होने वाला है।

तव ब्रायन डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के पास पहुँचे। मि० ओकले अपने मन मे विचार कर रहे थे कि आखिर क्या होने वाला है। ब्रायन ने धीरे से कहा—"यहाँ सव ठीक है, चलिये हम लोग वाहर चलें।"

बाहर परिस्थिति बड़ी संगीन थी। भीड़ बढ़ आने के कारण पुलिस पीछे हट आई थी और अदालत के बरामदे में लोगों को न आने देने के लिए उत्कट प्रयत्न कर रही थी। इधर उधर भीड़ में से कोई व्यक्ति इतने पर भी बरामदे में चढ़ जाते थे, किन्तु पुलिस वाले उन्हें फिर हटा देते थे। पुलिस वालों के पास लाठियों के सिवाय और कोई भी हथियार न था। लाठियों के द्वारा उन्होंने इमारत के चारों तरफ एक घेरा बना लिया था। भीड़ लाठियों के इस घेरे पर बराबर जोर डाल रही थी और ऐसा जान पड़ रहा था कि यह घेरा अब टूटने ही वाला है और पुलिस को आत्मरक्षा के लिये अपनी लाठियों का उपयोग करना ही पड़ेगा।

ऐसी कठिन परिस्थिति के बीच जिले के मजिस्ट्रेट और सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस अदालत की सीढ़ियों पर आकर खड़े हो गए। इन लोगों के आते ही शोरगुल और क्रोध की आवाज़ दुगने ज़ोर से आने लगी।

ब्रायन ने भीड़ पर एक नजर डाली और जल्दी से एक छोटे कागज़ पर कुछ लिख कर अपने अर्दली को दे दिया और तब वे डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट से बोले—"दंगे सम्बन्धी एक्ट को पढ़िये।"

मि० ओकले ने अपने जेब से एक लम्बा, नीला लिफाफा निकाला और उसमें से एक कागज़ निकाल कर हाथ में ले लिया। ऊँचे स्थान पर खड़े होने के कारण डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के अंग-प्रत्यंग की प्रत्येक गति को भीड़ वाले अच्छी तरह देख सकते थे। लोगों के लिए भी यह लिफाफा देखने का पहला मौका न था। यहाँ तक कि अधिकांश को तो दंगा सम्बन्धी एक्ट ज़बानी याद हो गया था। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के पढ़ना प्रारम्भ करते ही भीड़ में एक भयानक शान्ति छा गयी जिसमें भावी तूफान के चिह्न साफ दिखलाई पड़ रहे थे।

जैसे जैसे कि सरकार की अवज्ञा करने वालो को दिए जाने वाले कडे दण्ड का उल्लेख वे करते जाते थे डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की आवाज़ रह रह कर कड़ी और गम्भीर होती जाती थी। इस समय वे सरकार के प्रतिनिधि के रूप मे बोल रहे थे और इस तरह की गडबड़ सहन करना उनके लिए किसी तरह सम्भव न था।

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने कडी और गुस्सेभरी आवाज़ मे आगे बढ़ कर कहा--"सभी को मालूम होना चाहिए कि मेरे पढ लेने के बाद जा लोग हट न जायँगे उन पर बिना किसी चेतावनी के गोली चला दी जायगी।"

एकाएक लगभग २०० गज की दूरी पर ब्रिटिश सैनिको की एक टुकडी दोहरी कतार मे खडी दिखलाई दी। बायन को यह देख कर बडा सन्तोष हुआ कि अपने अर्दली को उन्होंने जल्दी मे लिखकर जो सन्देश भेजा था, वह उचित स्थान पर पहुँच गया। सभी की आखें सैनिको की तरफ लग गयीं। वह स्थान इतना पास था कि वहाँ से अफसर की आवाज साफ सुनायी पडती थी।

"फ्राम दि सेन्टर टू पेसैज एक्सटैन्ड—डबल मार्च" की आज्ञा हुई और सैनिक दाहिने और बाय मुड़ते हुए ऐसे स्थान पर खडे हो गये, जहाँ से गोली अच्छी तरह चलायी जा सकती थी।

"स्टैंडिग लोड . . ."

एक ही साथ सौ हाथ सौ बन्दूको पर पडे और क्षण मात्र मे कारतूस भर लिए गए।

"आर्डर आर्म्स"—और सौ बन्दूके एक ही आवाज के साथ कडी जमीन पर आकर पडी और फिर स्थिर हो गयी।

तब सैनिकों का अफसर सीधा डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के पास पहुँचा और फौजी सलाम के बाद फिर तेजी से पीछे हट कर उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा।

"मेजर मेटलैंड, मैंने रायट एक्ट पढ़ दिया है। अब यह लोग यदि पाँच मिनट के भीतर तितर-बितर न हो जायँगे तो मैं आपको गोली चलाने का हुक्म दूँगा।"

"वैरी वैल सर"—मेजर मेटलैंड ने उसी फौजी ढंग से उत्तर दिया और वे फिर अपने सैनिकों के पास चले आये।

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट कुछ कदम आगे बढ़े और भीड़ की तरफ देखते हुए उन्होंने कहा—"मैंने आज्ञा दे दी है कि पाँच मिनट के भीतर तुम लोग न हटे तो गोली चला दी जायगी।" वे हाथ में घड़ी लिए इस तरह उसकी तरफ देखने लगे कि उनका यह कृत्य सभी को अच्छी तरह दिखलाई देता था।

लोग जमीन पर लेट गये और चिल्लाने लगे—"गोली चलाओ, मार डालो, मार डालो।"

ब्रायन ने हाथ में घड़ी लिए डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की ओर देखा, गोली चलाने के लिए प्रतीक्षा करते हुए मेजर मेटलैंड को देखा और फिर जमीन पर निर्भीकतापूर्वक गोलियों की बाद का सामना करने के लिए निश्चल पड़ी हुई भीड़ पर भी उन्होंने अपनी दृष्टि डाली।

एक मिनट बीत चुका था। उन्होंने जल्दी से [illegible] लिख कर अपने अर्दली को दिया और [illegible] आकर उनके पास खड़ी हो गयी।

ब्रायन ने कहा—"आपके साथी यदि तीन मिनट में न हटे तो उन पर गोली चला दी जायगी। वे हटेंगे नहीं [illegible]

जानता हूँ। आप पंडित जी से तुरन्त बाहर आने के लिए कह दीजिए।"

इस बीच में मि० ओकले बोल उठे—"देखो ब्रायन, यह बहुत भारी गलती है।"

"हटाइये गलतियों को"—ब्रायन ने कुछ उत्तेजित होकर कहा,—"हमें करना केवल यही है कि पंडितजी जेल में पहुँच जायँ और यह भीड़ बिना रक्तपात के यहाँ से हट जाय। क्या आप नगर को एक बूचड़खाना बनाना चाहते हैं, देश में किसी खूनी क्रान्ति का बीजारोपण करना चाहते हैं? गलतियों को हम लोग पीछे सुधारते रहेंगे—इस बीच जो कुछ होता है उसकी पूरी जिम्मेदारी मैं अपने ऊपर लेता हूँ।"

दो मिनट और भी निकल गए।

मेजर मेटलेंड अपनी घड़ी की तरफ देख रहे थे। उन्होंने स्थिर और साफ आवाज में आज्ञा दी—"रैडी, प्रजेन्ट।"

पंडितजी और उर्मिला इस बीच दिखलाई पड़े और वे ब्रायन की बगल में आकर खड़े हो गए। जमीन पर पड़े हुए हजारों मूक प्राणियों की तरफ बन्दूकें सधी हुई थीं। पंडितजी तब डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के पास पहुँचे और उनसे पाँच मिनट का समय और माँगा। मि० ओकले ने घड़ी से नजर उठाकर दृढ़ता-पूर्वक कहा—"३० सैकिंड और हैं।"

पंडितजी ने डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के इस निर्णय को नम्रतापूर्वक स्वीकार किया और वे जल्दी से बरामदे से नीचे उतर कर भीड़ और सैनिकों के बीच में आकर खड़े हो गए।

इसके बाद लोगों की तरफ स्थिर दृष्टि से देखते हुए शान्त,

स्पष्ट और दृढ स्वर मे बोले—"यदि १० सैकिंड मे तुम न हटे तो सैनिक गोली चला देगे और सब से पहले मेरी मृत्यु होगी।"

इसके बाद सैनिको की तरफ मुँह करके वे खड़े हो गए और हाथ जोडे हुए नतमस्तक परिणाम की प्रतीक्षा करने लगे।

इसका बड़ा आश्चर्य्यजनक प्रभाव पड़ा। सैनिक बन्दूके कन्धे पर रखे हुए गोली चलाने की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे थे। मेजर मेटलैंड की आखे बड़ी गम्भीरतापूर्वक डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की तरफ लगी हुई थी। भीड़ और सैनिको के बीच पडितजी अचल मूर्ति की तरह अविचलित खडे हुए थे। जनता ने जब यह परिस्थिति देखी तो सबके दिल कॉप उठे। समय बीतता जा रहा था और डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट चिन्तित मुद्रा मे अपनी घड़ी की तरफ देख रहे थे।

"हे भगवान!"—उर्मिला रो पड़ी—"मै अवश्य पिताजी के पास जाऊँगी।'

ब्रायन ने तब उसका हाथ धीरे किन्तु दृढ़तापूर्वक दबा कर कहा—"उर्मिला धैर्य्य रखो, थोडी देर मे सब ठीक हुआ जाता है।"

उनके मुँह से यह बात निकली ही थी कि लोग हटने लगे और दो सैकिंड तक दुविधा मे पडे रहने के बाद लोगों ने घटना-स्थल से तितर बितर हो गए।

—

सम्बन्ध पक्का हुआ

इसके बाद मेजर मेटलैंड अपने सैनिकों को लिए हुए चले गए। मि० ओकले, ब्रायन और उर्मिला पंडितजी को जेल ले जाने वाली कार के पीछे उड़ती हुई धूल को देर तक देखते रहे।

ब्रायन उर्मिला को पहुँचाने उसकी कार तक आये और अपने हाथ से उसका दरवाजा खोल दिया।

"उर्मिला, मुझे निहायत ही अफसोस है।"

"धन्यवाद, मि० ब्रायन" उर्मिला बोली—"आप हम लोगों के साथ बहुत ही अच्छी तरह पेश आये।"

उर्मिला के जाने के बाद डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने ब्रायन से कहा—"बहुत ही बुरा हुआ,—अब मैं रिपोर्ट में क्या लिखूँ ? आप जानते हैं सरकार इसे कभी पसन्द न करेगी। हमने कमजोरी, हद दर्जे की कमजोरी दिखलाई है।"

"क्यों, रिपोर्ट देने में क्या कठिनाई है"—ब्रायन ने कहा,—"तार से सूचना दे दीजिए कि पंडितजी को छः महीने की सजा दे दी गयी और अब वे जेल में हैं।"

"यह तो ठीक है, पर इस उपद्रव के बारे में क्या लिखा जाय"—मि० ओकले बोले।

लेकिन ब्रायन का धीरज हाथ से छूटा जा रहा था, उन्होंने [illegible] में कहा—'उपद्रव हुआ ही कहाँ, और अगर कुछ हुआ भी तो इसमें सरकार का ही दोष अधिक है, क्योंकि आपके [illegible] परिस्थिति उपस्थित करने की जिम्मेदारी भी तो आखिर उसी की है ?'

मि० ओकले के स्वाभिमान की भावना को इससे कुछ ठेस लगी और ज़िले के सबसे बड़े अफ़सर के पद के अनुरूप वे गम्भीरतापूर्वक बैठे रहे।

"मै इसके बारे में विचार करूँगा मि० ओकोनोर, और देखूँगा कि इस सम्बन्ध मे क्या किया जाय।"

ब्रायन बिना कुछ कहे ही बंगले की तरफ चल दिए। रास्ते मे वे आज की घटनाओं पर विचार करने लगे। यदि एक तरफ़ डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के दृष्टिकोण को वे समझते थे तो दूसरी तरफ़ पंडितजी की विचारधारा से भी वे अपरिचित न थे। दोनो ही मे विवेक, अध्यवसाय और नेकनीयती की कमी न थी, फिर भी उनमे ज़मीन आसमान का अन्तर था। वे सोच-विचार मे पड गए कि अब क्या करना चाहिए।

समस्या को हल करने के लिए अपने मस्तिष्क पर [illegible] देर तक ज़ोर डालने के बाद थक कर उन्होने [illegible] दी और मन मे कहने लगे कि मै तो सरकार का एक [illegible] कर्मचारी हूँ। मेरा कर्तव्य तो सिर्फ़ यही है कि [illegible] हुई आज्ञाओ का पालन करूँ। मुझे इन [illegible] की ज़रूरत क्या है?

कुछ देर बाद एक और विचार [illegible] टिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की पुत्री से [illegible] हो चुका है और तीन या चार महीने [illegible] ससुर होने वाले है। आज [illegible] होगे—यह बुरा हुआ।

[illegible] इतना परिचय [illegible] था। वे सुन्दरी है। उसके हृदय मे [illegible]

सम्बन्ध पक्का हुआ

इसके बाद मेजर मेटलैंड अपने सैनिकों को लिए हुए चले गए। मि० ओकले, ब्रायन और उर्मिला पंडितजी को जेल ले जाने वाली कार के पीछे उड़ती हुई धूल को देर तक देखते रहे।

ब्रायन उर्मिला को पहुँचाने उसकी कार तक आये और अपने हाथ से उसका दरवाज़ा खोल दिया।

"उर्मिला, मुझे निहायत ही अफ़सोस है।"

"धन्यवाद, मि० ब्रायन" उर्मिला बोली—"आप हम लोगो के साथ बहुत ही अच्छी तरह पेश आये।"

उर्मिला के जाने के बाद डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने ब्रायन से कहा—"बहुत ही बुरा हुआ,—अब मैं रिपोर्ट में क्या लिखूँ? आप जानते हैं सरकार इसे कभी पसन्द न करेगी। हमने कम-जोरी, हद दर्जे की कमज़ोरी दिखलाई है।"

"क्यों, रिपोर्ट देने में क्या कठिनाई है"—ब्रायन ने कहा,—"तार से सूचना दे दीजिए कि पंडितजी को छ महीने की सजा दे दी गयी और अब वे जेल मे हैं।"

"यह तो ठीक है, पर इस उपद्रव के बारे मे क्या लिखा जाय"—मि० ओकले बोले।

कैप्टिन ब्रायन का धीरज हाथ से छूटा जा रहा था, उन्होंने जरा ताने से कहा—"उपद्रव हुआ ही कहाँ, और अगर कुछ हुआ भी तो इसमे सरकार का ही दोष अधिक है, क्योकि आपके लिए चिन्तनीय परिस्थिति उपस्थित करने की जिम्मेदारी भी तो आखिर उसी की है?"

मि० ओकले के स्वाभिमान की भावना को इससे कुछ ठेस लगी और जिले के सबसे बड़े अफसर के पद के अनुरूप वे गम्भीरतापूर्वक बैठे रहे।

"मै इसके बारे में विचार करूँगा मि० ओकोनोर, और देखूँगा कि इस सम्बन्ध मे क्या किया जाय।"

ब्रायन बिना कुछ कहे ही बंगले की तरफ चल दिए। रास्ते में वे आज की घटनाओ पर विचार करने लगे। यदि एक तरफ डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के दृष्टिकोण को वे समझते थे तो दूसरी तरफ पडितजी की विचारधारा से भी वे अपरिचित न थे। दोनो ही मे विवेक, अध्यवसाय और नेकनीयती की कमी न थी, फिर भी उनमे जमीन आसमान का अन्तर था। वे सोच-विचार में पड गए कि अब क्या करना चाहिए।

समस्या को हल करने के लिए अपने मस्तिष्क पर [illegible] देर तक जोर डालने के बाद थक कर उन्होने [illegible] दी और मन मे कहने लगे कि मै तो सरकार [illegible] कर्मचारी हूं। मेरा कर्तव्य तो सिर्फ यही है कि [illegible] हुई आज्ञाओ का पालन करूँ। मुझे [illegible] की जरूरत क्या है?

कुछ देर बाद एक और विचार [illegible] डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की पुत्री से [illegible] हो चुका है और तीन या चार [illegible] ससुर होने वाले हैं। आज [illegible] होगे—यह बुरा हुआ।

[illegible] था। वे सुन्दरी है। [illegible]

उल्लास का समुद्र हिलोरे ले रहा है। बात इस तरह चली कि जाड़े के मौसम मे ब्रायन को डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के साथ जिले मे दौरा करना पड़ा। उन दिनो की घटनाएँ जीवन भर उनके स्मृति पटल पर अङ्कित रहेगी। आधी रात का समय था। सुनसान जङ्गल मे चॉदनी खिली हुई थी। मच्छर बुरी तरह तङ्ग कर रहे थे, फिर भी मे अकेले अपने मचान पर सिकुड़ी हुई बैठी थी। मचान ज़मीन से करीब ३० फीट ऊँचा था। लगभग ४० गज़ की दूरी पर ब्रायन एक दूसरे मचान पर डटे थे। निकट ही बीच के खुले स्थान मे बकरा बँधा हुआ था। उसकी आवाज़ से कभी कभी जङ्गल की नीरवता भङ्ग हो उठती थी।

एकाएक उस खुली हुई ज़मीन मे बिना किसी आहट के धीरे धीरे सतर्कता पूर्वक एक बड़े चीते ने प्रवेश किया। खुले मे आते ही वह रुका और एक बार सिर उठा कर इधर उधर सूँघने का उपक्रम करते हुए एक क्षण के लिये अगले पैरो को सामने फैला कर और शरीर के पिछले भाग को ज़रा झुका कर वह बैठ गया। आगे काल को साक्षात मूर्ति देख कर बकरे का खून सूख गया। गले मे बँधी हुई रस्सी को तोड़ने का एक बार उसने उत्कट प्रयत्न किया ही था कि इसी बीच मे चीते ने छलॉग मार कर उसकी पीठ में अपने नृशस दॉत घुसेड दिये। बकरे की क्षीण आवाज़ और चीते की गर्जन के साथ हड्डियो की कड़कड़ाहट और मांस उखाडने का भयानक शब्द मिल गया। तत्काल ही बन्दूक की ध्वनि से जङ्गल गूँज उठा और दूसरे ही क्षण चीता मर कर अपने शिकार के पास ही गिर पड़ा।

ब्रायन और मे तब अपने मचानो से उतर पड़े। थकावट अधिक थी, शरीर जकड़ा हुआ था, पर मन की खुशी बिखरी पड़ती थी। चीते के पास जाकर देखा तो लम्बाई ८ फीट थी।

"वाह मे"—ब्रायन बोल उठे—"तुम्हारी गोली कन्धे के पीछे बिलकुल उचित स्थान पर लगी है।"

"ब्रायन ! कहो कैसा मजा आया"—हाँफते हुए मिस ओकले बोल उठी। वह उनके पीछे खड़ी थी। चेहरा उल्लास से भरा हुआ था, आँखें चमक रही थीं और अधरों में रह रह कर कम्पन हो रहा था। एकाएक ब्रायन ने पीछे झुक कर उसे चूम लिया। बाला ने उनके गले मे हाथ डाल दिये और स्वयं भी उनका चुम्बन कर लिया।

"प्रिये, तुम प्रसन्न हो ?"

कन्धे पर टिके हुए सुन्दर मुखड़े ने उन्हें उत्तर दिया—"यह मेरे जीवन की सब से प्यारी घड़ी है।"

इसके बाद दोनो के सम्बन्ध पक्के होने की बात घोषित कर दी गयी। कुछ ही दिन मे मैदान की गरमी से बचने के लिये मिस मे अपनी माता के साथ किसी पहाड़ी जगह को चली गई।

कार जब ब्रायन के बँगले के आगे जाकर खड़ी हुई तब कहीं उनका मधुर स्वप्न भङ्ग हुआ। भोजन के लिये उन्हें [illegible] देर हो गयी थी इस लिये वे सीधे "डाइनिंग रूम" में [illegible]। यहाँ खाने के साथ मेज पर डाक का ढेर रखा था। [illegible] पूर्वक वे मे के पत्र को खोजने लगे किन्तु उन्हें [illegible] निराशा ही हुई। पिछले पत्र से उन्हें तीसरी बार [illegible] के सम्बन्ध मे निराशा हो चुकी है—उन्होंने सोचा [illegible] डाक से आती हो और हुआ भी यही। शाम की डाक से चिट्ठी उन्हें मिल भी गयी। दिन भर के घोर परिश्रम से [illegible] नस नस मे जो थकावट व्याप्त हो गयी थी, वह [illegible] प्राप्ति से एक क्षण मे मिट गयी। पत्र के नीचे [illegible]

पर वे इस तरह लेट गये मानो प्रिया से प्रत्यक्ष बातें करने जा रहे हो। परन्तु पत्र से उनका मन न भरा। पहली बात तो यह कि देरी के कारण का उसमे कुछ भी उल्लेख न था। कडी गरमी मे रात दिन काम मे व्यस्त रहने पर एक बार भी वे चिट्ठी डालना न भूले थे। मे के पास तो शीतल जलवायु मे आनन्द करने के सिवाय और कोई काम भी न था। २४ घंटो मे भावी पति के लिये यदि आध घंटा दे देती तो क्या उसका कुछ बिगड़ जाता ?

परन्तु ब्रायन जैसे जैसे पत्र पढ़ते जाते थे उनकी असन्तोष की भावना दूर होती जाती थी। पत्र के अक्षरो मे रह रह कर उन्हे मे की वही मनोहर और हँसमुख मूर्ति दिखलाई पड़ने लगी, जिसका अवलोकन उन्होने निकट से किया था। हँसी के फव्वारे छोड़ कर जैसा आनन्दमय वातावरण वह कर देती थी, उसकी याद भी उन्हे हो आयी। वे सोचने लगे कि ऐसी युवती ने अपना प्रेम मुझे दिया, अपने हृदय मन्दिर मे स्थान दिया, यह कुछ कम सौभाग्य की बात नहीं। वे पत्र का आखिरी पैरा पढ़ने लगे —

"हाँ, एक बात और है। जार्ज पैडैल यहाँ से अभी कुछ दिन हुए रवाना हो चुके हैं। मेरा ख्याल है कि कब मे वे तुम से मिलेंगे। तुमने मुझसे एक बार कहा था कि वह बिलकुल गधा है, मेरा ख्याल है तुम्हारी यह धारणा बिलकुल गलत है। मुझे अभी हाल मे उनका परिचय निकट से प्राप्त करने का अवसर मिला। वह निहायत ही सीधे स्वभाव के और आकर्षक नवयुवक हैं—और नाचते तो सचमुच बहुत ही सुन्दर हैं।"

पत्र उनके हाथ से गिर पड़ा। सिर के पिछले भाग मे दोनो हाथ लगा कर ब्रायन सोच-विचार मे पड गए। उनके मन मे जो बातें उठ रही थीं, उससे उनकी उदासी भी बढ़ती ही जा रही थी।

यह ठीक है कि वह अभी कमसिन है और उम्र में नहीं तो कम से कम अनुभव में मैं उससे बहुत बढ़ा हुआ हूँ। पर वह अभी तक मेरे सिवाय और किसी भी युवक के सम्पर्क में नहीं आयी है। हम लोग जिन दिनों कैम्प में थे, उन दिनों जीवन कितने आनन्द से बीतता था।

वे सोचने लगे—तो क्या मैंने उसकी अनुभवहीनता का अनुचित लाभ उठाया है। पैडल घुड़सवार सेना का अफसर है। वह सुन्दर है, धन भी उसके पास अधिक है। इधर मैं पुलिस का एक साधारण अफसर हूँ। इस पद पर जितना वेतन मिलता है, उसमें तो मेरा अपना काम भी मुश्किल से चलता है। जितनी बातें हैं, सभी मेरे खिलाफ जाती हैं। शायद मैंने जो सोचा हो वही ठीक हो और मैं ही गलती पर होऊँ।

ब्रायन इन सब बातों पर विचार करते करते उकता उठे। उन्होंने मन में कहा कि गरमी और थकावट के कारण शायद मैं कुछ झुँझलाया हुआ हूँ। चलूँ जरा [illegible] तक हो आऊँ। दोस्तों से गप्प लड़ाने के बाद जब घर आऊँगा तो तबीअत अवश्य सुधर जायगी। उस समय शान्त मन से विचार करूँ तो सम्भव है किसी दूसरे परिणाम पर पहुँचूँ।

और सचमुच ही नहा धोकर पुलिस की भारी वर्दी के स्थान पर छुट्टी जाने के हलके कपड़े पहन कर [illegible] उनके चित्त की हालत बदली हुई थी। अपनी पसन्द का [illegible] गाना गुनगुनाते हुये उन्होंने कार स्टार्ट कर दी। [illegible] की शीतल वायु ने उनके दिमाग को [illegible] हलका [illegible] दिया।

के शीतल पेय पी रहे थे। सफेद वर्दी पहने हुये खानसामे जहाँ-तहाँ तैयार खड़े थे और जरा सा इशारा मिलते ही आवश्यक वस्तु लाकर उपस्थित कर देते थे। कैप्टिन ब्रायन ने जैसे ही लान मे पदार्पण किया मेजर मेटलैड ने उन्हे बुला लिया और बोले—"आओ मि० ब्रायन, दिन भर की मेहनत के बाद कोई ठंढी चीज पीने से तुम्हारी थकावट दूर हो जायगी। अच्छा एक बात बतलाओ। क्या तुम कैप्टिन पैडल को जानते हो।"

ब्रायन चूँकि अपने प्रतिस्पर्धी से मिलना चाहते थे इसलिये उन्होंने ऐसा उत्तर दिया, जिसका मतलब "हाँ" और "ना" दोनो ही हो सकता था। पैडल बड़े सजीले जवान थे। उनकी रग-रग से स्फूर्ति निकली पडती थी। अभी वे छुट्टी से वापस आए थे। डेढ महीने तक काश्मीर मे शिकार खेलते रहे और पन्द्रह दिन उस पहाडी स्थान पर बिताये, जहाँ मिस ओकले अपनी मा के साथ ठहरी हुई थी। कुछ बात चीत के बाद वे बोले—"कैप्टिन ब्रायन, मै आपको भावी पत्नी से मिला। सचमुच बड़ी आकर्षक युवती है। जिस होटल में मै ठहरा था, उसकी तो मानो वह जान ही है। सभी उसे चाहते हैं। वास्तव मे आप बड़े भाग्यवान हैं।"

ब्रायन के मुँह से "धन्यवाद" के सिवाय और एक भी शब्द न निकला। दुनिया मे जितने भी आदमी हैं सब से वे इस विषय पर बात कर सकते हैं, पर पैडल से नहीं।

कुछ देर चुप रहने के बाद मेजर मेटलैड बोले—"मि० ब्रायन कुछ भी हो उस आदमी ने आज मुझे बड़ा प्रभावित किया। यदि सुबह गोली चलानी पड़ती तो एक बड़ा ही अप्रिय कार्य मुझे करना पडता।"

पैडल इस सम्बन्ध मे कुछ न जानते थे इसलिये उन्होने पूछा कि बात क्या है।

"अरे कुछ नहीं"—मेजर मेटलैंड ने कहा—'देश में जो कुछ लोग राजविद्रोह का प्रचार किया करते हैं, उनमें एक के मामले पर आज प्रातःकाल विचार हुआ था और उसे छः मास के लिए कारावास का दण्ड दिया गया था। उस आदमी के कई हजार अनुयायी इकट्ठे होकर उपद्रव पर उतारू हो गये। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने दंगा सम्बन्धी कानून पढ़ कर सुना दिया था और मैं लोगों को तितर बितर करने के लिये गोली चलाने के इशारे की प्रतीक्षा ही कर रहा था कि वह आदमी भीड़ और सैनिकों के बीच में आकर इस तरह खड़ा हो गया कि गोली चलाई जाने पर सबसे पहले उसी की लाश तड़पती नजर आती। भीड़ पर इसका असाधारण प्रभाव पड़ा और वह चुपचाप हट गयी।"

पैडेल ने अपनी आँखों में घृणा भर कर कहा—'आपकी जगह यदि मैं बुलाया गया होता तो खुशी से भीड़ को तितर बितर करा देता।"

ब्रायन बोल उठे—"मैं नहीं जानता था कि ब्रिटिश [illegible] सेना का एक अफसर निहत्थे और अरक्षित लोगों पर भी गोली दौड़ाने में अपनी बहादुरी समझता है।'

"हाँ, यही तो"—मेजर मेटलैंड बोले—'यदि मुझे [illegible] बाध्य होकर भीड़ पर गोली चलाना पड़ता तो [illegible] मेरे लिये अफसोस की बात होती। वे लोग कोई दंगा के लिए [illegible] न खड़े थे, उन्होंने तो खुद कुछ किये बिना ही जान दे [illegible] निश्चय कर लिया था। इसीलिए मेरा तो ख्याल है कि [illegible] शासन में कहीं न कहीं कोई बुराई जरूर है या तो [illegible] इनके लिये बहुत कठोर है, या बहुत ही [illegible] ही। मैं इन बातों में अधिक जानकारी [illegible] करता। तुम्हारा क्या ख्याल है, ब्रायन ?'

के शीतल पेय पी रहे थे। सफेद वर्दी पहने हुये खानसामे जहाँ-तहाँ तैयार खडे थे और जरा सा इशारा मिलते ही आवश्यक वस्तु लाकर उपस्थित कर देते थे। कैप्टिन ब्रायन ने जैसे ही लान मे पदार्पण किया मेजर मेटलैड ने उन्हे बुला लिया और बोले—"आओ मि० ब्रायन, दिन भर की मेहनत के बाद कोई ठंढी चीज पीने से तुम्हारी थकावट दूर हो जायगी। अच्छा एक बात बतलाओ। क्या तुम कैप्टिन पैडल को जानते हो।"

ब्रायन चूँकि अपने प्रतिस्पर्धी से मिलना चाहते थे इसलिये उन्होने ऐसा उत्तर दिया, जिसका मतलब "हाँ" और "ना" दोनो ही हो सकता था। पैडल बड़े सजीले जवान थे। उनकी रग-रग से स्फूर्ति निकली पड़ती थी। अभी वे छुट्टी से वापस आए थे। डेढ महीने तक काश्मीर मे शिकार खेलते रहे और पन्द्रह दिन उस पहाडी स्थान पर बिताये, जहाँ मिस ओकले अपनी मा के साथ ठहरी हुई थी। कुछ बात चीत के बाद वे बोले—"कैप्टिन ब्रायन, मैं आपको भावी पत्नी से मिला। सचमुच बडी आकर्षक युवती है। जिस होटल मे मै ठहरा था, उसकी तो मानो वह जान ही है। सभी उसे चाहते है। वास्तव मे आप बडे भाग्यवान हैं।"

ब्रायन के मुँह से "धन्यवाद" के सिवाय और एक भी शब्द न निकला। दुनिया मे जितने भी आदमी हैं सब से वे इस विषय पर बात कर सकते हैं, पर पैडल से नहीं।

कुछ देर चुप रहने के बाद मेजर मेटलैड बोले—"मि० ब्रायन कुछ भी हो उस आदमी ने आज मुझे बड़ा प्रभावित किया। यदि मुझे गोली चलानी पडती तो एक बडा ही अप्रिय कार्य मुझे करना पडता।"

पैडल इस सम्बन्ध मे कुछ न जानते थे इसलिये उन्होने पूछा कि बात क्या है।

"अरे कुछ नहीं"—मेजर मेटलैंड ने कहा—'देश मे जो कुछ लोग राजविद्रोह का प्रचार किया करते हैं, उनमे एक के मामले पर आज प्रात काल विचार हुआ था और उसे छ मास के लिए कारावास का दण्ड दिया गया था। उस आदमी के कई हजार अनुयायी इकट्ठे होकर उपद्रव पर उतारू हो गये। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने दगा सम्बन्धी कानून पढ़ कर सुना दिया था और मैं लोगो को तितर बितर करने के लिये गोली चलाने के इशारे की प्रतीक्षा ही कर रहा था कि वह आदमी भीड़ और सैनिको के बीच में आकर इस तरह खडा हो गया कि गोली चलाई जाने पर सबसे पहले उसी की लाश तडपती नजर आती। भीड पर इसका असाधारण प्रभाव पडा और वह चुपचाप हट गयी।"

पैडेल ने अपनी आँखो मे घृणा भर कर कहा—"आपकी जगह यदि मैं बुलाया गया होता तो खुशी से भीड को तितर बितर करा देता।"

ब्रायन बोल उठे—"मैं नहीं जानता था कि ब्रिटिश घुडसवार सेना का एक अफसर निहत्थे और अरक्षित लोगों पर ही घोडा दौडाने मे अपनी बहादुरी समझता है।"

"हॉ, यही तो"—मेजर मेटलैंड बोले—"यदि मुझे प्रात काल बाध्य होकर भीड पर गोली चलाना पडता तो अवश्य मेरे लिये अफसोस की बात होती। वे लोग कोई ढोंग के लिए हमारे सामने न खडे थे, उन्होंने तो खुद कुछ किये बिना ही जान दे डालने का निश्चय कर लिया था। इसीलिए मेरा तो ख्याल है कि हमारे इस शासन मे कहीं न कहीं कोई बुराई जरूर है या तो हमारी व्यवस्था इनके लिये बहुत कठोर है, या बहुत ही शिथिल और या दोनो ही। मै इन बातो से अधिक जानकारी रखने का दावा नहीं करता। तुम्हारा क्या ख्याल है, ब्रायन ?'

ब्रायन कुछ हिचकिचाहट मे ही थे कि क्या कहा जाय कि मेटलैंट फिर बोल उठे—"मुझे शासन सम्बन्धी किसी गोपनीय बात जानने की उत्सुकता है, ऐसा न समझना। मैं भारत मे बहुत सालों से हूँ, पर यहाँ की जानकारी मुझे करीब करीब नहीं के बराबर है। बात यह है कि अपना काम पूरा करके, जितनी भी छुट्टी मिल सके ले लेना व्यक्तिगत रूप मे मै आवश्यक समझता रहा हूँ, इससे अधिक कोई बात जानने का मैंने वास्ता ही नहीं रखा। पर अब मेरा ख्याल है कि देश की हालत के सम्बन्ध मे भी हमे कुछ न कुछ अवश्य जानना चाहिये।"

ब्रायन हँसे और कुछ झेप भी गए। वास्तव मे वे मेटलैंड जैसे साफ और सरल तबीयत के आदमी को दिल से पसन्द करते थे।

झेप मिटाने के लिए उन्होंने कहा—"मेरी हिचकिचाहट केवल इसी कारण थी कि न जाने आपको मेरे व्यक्तिगत विचार पसन्द आये या नहीं? कहीं आप सरकारी दृष्टिकोण के भक्त न हो? कम से कम मेरे निजी विचारों के आधार पर तो अधिकारियों के दृष्टिकोण की तारीफ नहीं की जा सकती।"

"अरे, सरकारी दृष्टिकोण को मारो गोली। बिसमार्क कहा करता था कि सच बात तो वह है, जिसका सरकारी तौर पर खण्डन कर दिया जाय।"

ब्रायन कहने लगे—"अधिकांश यूरोपियन अफसर देश की मौजूदा हालत के बारे मे कुछ भी नहीं जानते। और एक प्रकार से इसमे उनका कोई कसूर भी नहीं है। देश मे क़दम रखते ही उनके सिर पर इतना काम डाल दिया जाता है, इतनी जिम्मेदारियाँ लाद दी जाती है कि बेचारो को दम मारने की फुरसत नहीं मिलती। इस चक्की मे बच कर जो ऊँचे ओहदे पर पहुँचते

हैं वे एक ऐसे वातावरण मे पड़ जाते है, जहाँ नई बातो को तनिक भी प्रोत्साहन नहीं दिया जाता। सवाल यह होता है कि पहले के लोग जो कुछ करते रहे है, वह आप से क्यो नहीं होता ? जो उनके लिए ठीक था, वही आपके लिए भी ठीक होना चाहिए। बात यह है कि हमारी शासन-व्यवस्था का इजन समय पर तेल डालते रहने के कारण चलता तो ठीक तरह है, किन्तु जिन पटरियों पर वह चलता है उनमें दरार होने लगी है और बहुत सी जगह हो भी चुकी है—इसी कारण कहीं कहीं हमे अचानक धक्के भी लग जाते हैं।'

"तो आपका मतलब है—" पैडल बीच ही में बोल उठे—"कि मि० ओकले को अपने जिले की जानकारी नहीं है। वे तो इसके कोने कोने को जानते हैं, यहाँ तक कि अदने से अदने सरकारी नौकर का नाम भी उन्हे याद है।"

"हाँ यही तो—" ब्रायन ने कहा—"मि० ओकले अपनी मातहती मे रहने वाले सब लोगों को खूब जानते हैं और वे लोग भी इनकी प्रत्येक बात से परिचित हैं।"

"ब्रायन, मैं नहीं समझा आपका मतलब क्या है"—मेटलैंड ने कहा।

ब्रायन ने तब मुसकराते हुए कहा—"मि० ओकले जनता को छोड कर जिले की प्रत्येक बात जानते हैं। यदि मातहत अफसर किसी उपद्रव या अव्यवस्था की सूचना देते है तो समझा जाता है कि ऐसा उन्हीं की गलती से हुआ है और उनकी उन्नति रोक दी जाती है। यदि वे रिपोर्ट भेजें कि सब ठीक-ठाक है तो उनकी पीठ ठोकी जायगी, वेतन बढा दिया जायगा। कल्पना कर लीजिए, इसका क्या परिणाम होगा ? मातहत लोग मि० ओकले के पास रिपोर्ट भेजते है सब ठीक है, मि० ओकले सरकार

के पास सूचना देते हैं कि सब ठीक है और सरकार भारत-मंत्री के पास यही 'सब ठीक है' का खरीता भेज देती है। क्या यह एक प्रज्वलित होने वाले ज्वालामुखी के मुँह पर बैठने के समान नहीं है?"

"आखिर यह उपद्रवी लोग चाहते क्या हैं? ज़रा विचार कीजिए, यदि हम लोग चले जायँ तो देश मे कितनी अशान्ति और अव्यवस्था फैल जायगी।"—पैडल ने कहा।

"और ज़रा देखिये तो यदि यूरोपियन इस देश से विदा हो जायँ तो स्वयं उनमें भी कितनी अशान्ति फैल जायगी"—ब्रायन ने उसी लहजे मे उत्तर दिया।

"अच्छा . "—मेजर मेटलैंड एकाएक बोल उठे—"मैने इस बात पर कभी विचार ही न किया था। यदि इंगलैंड मे बेकारो की संख्या में एकाएक कई लाख की वृद्धि हो जाय तो सचमुच ही वहाँ बड़ी अशान्ति फैल जायगी।"

परन्तु पैडल को सन्तोप न हुआ था, उन्होंने फिर अपना पहला प्रश्न ही दुहराया—"आखिर यह लोग चाहते क्या हैं?"

"चाहते क्या हैं वही, जिसका हमने वचन दिया था—स्वराज्य"—ब्रायन ने उत्तर दिया।

पैडल—अरे यह सब राजनीतिज्ञों की हुल्लडबाजी है। हमारा यह मतलब कभी न था।"

ब्रायन—इसीलिए तो यह गलतफ़हमी फैली हुई है।

"आखिर, इसके लिए किया क्या जाय"—कुछ ताने के साथ पैडल ने पूछा।

ब्रायन बोले—"मैं तो नहीं बतला सकता। अशान्ति तो है ही और वह तब तक रहेगी जब तक कि हम एक दूसरे को समझने का प्रयत्न नहीं करते।"

मेजर मेटलैंड बोले—"बस यही तो मै भी कहता हूँ।"

"प्रत्येक यूरोपियन को, चाहे वह किसी पद पर क्यों न हो, देश के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त करना अपना कर्तव्य समझना चाहिए।"

पैडल—देश के बारे मे आखिर जानना ही क्या है, ग्रीष्म-ऋतु मे कडी गरमी और मक्खियों की तवालत और जाडे के मौसम में पोलो और शिकार।

"और जनता ?"—ब्रायन ने प्रश्न किया।

"जनता ?"—पैडल ने ताज्जुब से कहा—"कहीं आपका मतलब 'नेटिव' लोगों से तो नहीं है। झूठे, दगाबाज कहीं के।"

ब्रायन ने कहा—"आप शायद यह शब्द निम्न वर्ग के लोगों के लिए उपयोग कर रहे हैं—और उनके सम्बन्ध मे भी मेरी राय आप से नहीं मिलती।"

"और न मेरी ही।"—मेटलैंड ने कहा—"मेरा एक वृद्ध नौकर है, जो मुझे अपने बेटे से भी अधिक चाहता है। मुझे विश्वास है मेरे लिये वह जान देने के लिए तैयार हो जायगा।"

ब्रायन कुछ देर मौन रहे। फिर गम्भीरता पूर्वक कहने लगे—"ऊपर जो अशान्ति दिखलाई पडती है, अशान्ति नहीं है। वैध आन्दोलन तो ऊपर ही दिखलाई पडता है इसे तो बलपूर्वक दबाया भी जा सकता है। सच्चा खतरा तो क्रान्तिकारियो का संगठन है जो देश की अशान्ति का कारण [illegible] दिन बनता जा रहा है।

पैडल हैरत मे पड़ गये और कहने लगे—"क्या यह लोग राजनीति और विधान के सम्बन्ध मे भी जानते हैं ?"

"कभी आप किसी भले घर के भारतीय सज्जन या महिला से मिले है या नहीं ?"

पैडल ने जरा ताने मे कहा—"मै तो यह भी नहीं जानता कि भारत मे भले लोग हैं भी कि नहीं।"

"नगर के प्रसिद्ध व्यापारी और बैंकर लालाजी अपने पुत्र के विवाह मे एक दावत तेरह तारीख को दे रहे है। क्या आप मेरे साथ चलकर अपनी गलतफहमी मिटाना चाहेंगे ?"

पैडल ने जँभाई लेते हुए अपनी रजामन्दी जाहिर की और पूछने लगे कि दावत मे क्या पहन कर जाना चाहिए।

ब्रायन ने कहा—"इस अवसर पर आप कोई भी पोशाक पहने। आपका स्वागत होगा।"

मेजर मेटलैंड ने पूछा—"ब्रायन, क्या मै भी चल सकता हूँ ?"

"जरूर, जरूर"—ब्रायन ने कहा। "तेरह तारीख को आठ बजे मैं तुम्हे ले जाऊँगा।"

क्रान्तिकारियों का दल

कैप्टिन ब्रायन का जन्म भारत मे ही हुआ था। उर्मिला के पिता और उनके पिता इंगलैंड के प्रसिद्ध पब्लिक स्कूल हैरो और आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी मे साथ-साथ पढ़े थे। संयोगवश ब्रायन

के पिता सिविल सर्विस की परीक्षा पास करने के बाद उसी नगर मे डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट नियुक्त किए गए, जिसमें कि युवक बैरिस्टर पंडितजी ने प्रैक्टिस आरम्भ की थी। इसलिए मैत्री के नाते के सिवाय अदालत में भी वे एक दूसरे से जज और बैरिस्टर की हैसियत से मिला करते थे। उर्मिला और ब्रायन मे इसीलिये बचपन से ही जान पहचान थी। अपने छोटे-छोटे टट्टुओ पर बैठ कर यह लोग एक साथ घूमने जाया करते थे और कभी कभी टेनिस या गाल्फ भी खेला करत थे।

ब्रायन कहते—"बड़ा होने पर मैं सिपाही बनूँगा और बड़े घोड़े पर बैठ कर अपने सिपाहियो के साथ दुश्मनो पर आक्रमण किया करूँगा।"

"मै भी सिपाही बनूँगी"—उर्मिला कहती। तब ब्रायन उसे चिढ़ाते—"तुम तो लडकी हो, सिपाही कैसे बनोगी?"

"बनूँगी, बनूँगी, जरूर बनूँगी"—कहते हुए उर्मिला तब रोने लगती।'

"अच्छा रोओ न उर्मिला" ब्रायन तब उसे ढाढ़स देते "शायद तुम भी सिपाही बन सको। देखो रानी एलिजबेथ सिपाही थी या नहीं?"

इसके बाद उर्मिला और ब्रायन बहुत दिनों तक मिल न सके। उर्मिला को यूरोप के किसी नगर मे पढ़ने भेज दिया गया। ब्रायन अभी स्कूल मे ही थे कि महायुद्ध छिड़ जाने के कारण उनकी शिक्षा मे बाधा पड़ गयी। रणक्षेत्र मे उन्हे कई घाव भी लगे। अच्छा होने पर पुलिस मे नियुक्त होकर वे जिस जहाज पर आ रहे थे, उसी पर उनकी भेंट उर्मिला और उनके पिता से संयोगवश हो गयी। पुरानी स्मृतियाँ फिर हरी हुई, किन्तु भारत में उनका

जैसा सम्बन्ध था, वैसा फिर नहीं हुआ। पंडित जी ने त्रायन के प्रति सदा की भाँति उदारतापूर्ण व्यवहार किया। उर्मिला का व्यवहार उनके प्रति था तो मैत्री पूर्ण, किन्तु न जाने क्यो इस बार वह उनसे अलग ही अलग रहती थी।

अरब समुद्र मे जहाज भारतीय किनारे की तरफ बढा आ रहा था। चाँदनी खिली हुई थी। उर्मिला के पिता और त्रायन इस सुहावने समय मे डैक पर कुर्सियाँ डाले बैठे थे।

कुछ देर चुप रहने के बाद पंडितजी ने कहा—"त्रायन, भारत से तुम कितने साल बाहर रहे हो?"

"१५ वर्ष से कुछ अधिक।"

"इस बीच मे सभी बातों मे भारी परिवर्तन हो गया है। युद्ध के कारण ससार की विचारधारा मे एक क्रान्ति सी मच उठी है। पिछले पाँच वर्षों मे भारत मे जो जागृति हुई है, वह ५० वर्षों की राजनीतिक जागृति से कहीं अधिक है। महायुद्ध इस उद्देश्य से लड़ा गया था कि राष्ट्रों के आत्म-निर्णय के सिद्धान्त की विजय हो। भारत भी अपने को राष्ट्र कहता है। यह उसका परिवर्तन काल है और उसमे उन्नति की भावना इतनी कूट कूट कर व्याप्त हो गयी है, कि किसी भी नियन्त्रण या रोकथाम को वह सहन नहीं कर सकता। युद्ध मे भारत ने अपना जन-धन पानी की तरह बहाया और ब्रिटेन ने उसे साम्राज्य के ताज का सबसे देदीप्यमान मणि कह कर उसका मान बढाया। परन्तु संधि के मसविदे पर हस्ताक्षर भी न होने पाये थे कि देश मे दमन आरम्भ हो गया। शासन म सुधार भी किया गया। परन्तु पानी मिले हुए दूध मे नवजात शिशु की तृप्ति हो सकती है, किन्तु कई वर्ष के हृष्टपुष्ट बालक की क्षुधा शान्त नहीं हो सकती।"

"कसूर किसका है ?"—ब्रायन ने सरलता पूर्वक पूछा।

"इसकी जिम्मेदारी तुम्हारे राजनीतिज्ञो पर है"—पंडितजी ने उत्तर दिया।

"राजनीतिज्ञ जो कुछ करें सो थोडा—और तो और उन्होने तो महायुद्ध मे हारने की भी खूब कोशिश की थी।"

"हाँ ठीक है। कुछ समय के बाद हम भारतीय किनारे पर पहुँच जायँगे। तुम खुद ही देख लोगे कि परिस्थिति क्या है। तुम सरकारी अफसर होगे और मैं देश की सेवा मे लग जाऊँगा। इसलिए हम दोनो के मार्ग एक दूसरे से बिलकुल अलग होंगे। यदि तुम्हारे पिता से मेरी मित्रता न होती और मैं तुम्हे अपने पुत्र की तरह न मानता तब तो दूसरी बात थी, परन्तु जब ऐसा है तो मेरी सदैव यह आशा रहेगी और ईश्वर से भी इसके लिए मैं प्रार्थना करता रहूँगा कि तुम्हारे हृदय मे मानवता के प्रति उदार दृष्टिकोण सदा बना रहे। इस विषय मे तुम्हे कठिनाई अधिक न होगी, क्योंकि तुम्हारी शिक्षा-दीक्षा युद्ध के वातारण में हुई है, जब कि मनुष्यों में जाति, रंग और धर्म के भेद बहुत कुछ कम हो चुके थे। शायद कभी भविष्य मे विरोधी विचारो के प्रतिपादक होने के कारण हमें एक दूसरे का विरोध करना पडे—किन्तु निश्चय समझना कि इससे तुम्हारे प्रति मेरे प्रेम मे किसी तरह कमी न आने पावेगी।'

जिस दिन का जिक्र हम पिछले अध्यायों में कर आये हैं उस दिन ब्रायन इन्हीं सब बातो को सोचते हुए घर आये। कडी गरमी पड रही थी इसलिए उन्होंने उस दिन अपने बँगले के बाहर लान पर भोजन किया। बँगले के आगे सडक थी और सडक के उस पार दूर कालेज की इमारत दिखलाई

पड़ रही थी। कालेज की इमारत से कुछ इधर ही होस्टल थे, जिन में धीमी-धीमी रोशनियाँ चमक रही थीं। ब्रायन ने अपने मन मे कहा कि इन कमरों के भीतर जो कुछ हो रहा है यदि मुझे मालूम पड़ सकता तो काम बनता। ऐसा जान पड़ता है कि एक दिन वहाँ मुझे जाना ही पड़ेगा।

होस्टल के सब कमरों मे तो नहीं किन्तु एक कमरे मे क्या हो रहा है यह आप भी देख सकते है। कड़ी गरमी पड़ रही है, फिर भी तीन लड़के बाहर से किवाड़ बन्द किए भीतर बैठे हुए हैं।

बनर्जी शरीर का कुछ स्थूल और हँसमुख, पैर मोड़े हुए चारपाई पर बैठा है। उसके शरीर पर एक हलकी बनियाइन पड़ी है।

घोष नेकर और खुले गले की कमीज पहने है, जिसके भीतर से उसकी पुष्ट मांस-पेशियाँ साफ दिखलाई दे रही हैं। वह दरवाजे की तरफ पीठ किए खड़ा है।

गुप्ता इकहरे बदन का लम्बा युवक, टसर सिल्क का सूट पहने कुरसी पर बैठा हुआ है। वह कभी चुप नहीं बैठ सकता। कभी तो खडा होकर वह अपने साथियो को उत्तेजना पूर्ण भाषण सुना देता है और कभी कमरे ही मे उत्तेजित होकर उस चीते के समान चहलकदमी करने लगता है, जो अभी जगल से पकड़ कर पिंजड़े मे रखा गया हो।

यह लोग बगला मे बात कर रहे है, यद्यपि अंगरेजी और हिन्दी मे भी बात करना इनके लिए उतना ही आसान है। गुप्ता ब्रिटिश सरकार के अत्याचार और अन्याय पर लम्बा भाषण देता हुआ बतता रहा है कि वैध आन्दोलन से कुछ भी लाभ नहीं हो सकता। "आयरलैंड को लीजिये। सौ वर्ष तक आयरिश जनता

वैध आन्दोलन के द्वारा स्वाधीनता पाने के लिए उद्योग करती रही। परिणाम में क्या मिला—महायुद्ध के आरम्भ में होमरूल बिल और सेना में अनिवार्य्य रूप से भरती किया जाना। इसके विपरीत केवल पाँच साल तक हिंसात्मक उपायों से लड़ने का परिणाम यह हुआ कि आयर्लैंड को स्वाधीनता मिल गयी। आखिर आयर्लैंड के उदाहरण से हम किस परिणाम पर पहुँचते हैं? विरोधी पक्ष ने जो कुछ पशुबल के जोर से लिया है उसे हम पशुबल के जोर से ही उससे छीन सकते हैं। इसलिए हमें कुछ न कुछ अवश्य ही करना चाहिए। पंडित जी और उनकी ही तरह के अन्य राजनीतिज्ञों की नीति से तो मैं ऊब उठा हूँ।"

गुप्ता इस भाषण के बाद शिथिल सा होकर कुरसी पर गिर गया, किन्तु उत्तेजना के कारण उसके अंग-प्रत्यंग अब भी काँप रहे थे। बनर्जी पहले की तरह शान्त मुद्रा से मुसकराता हुआ घोष की तरफ देखने लगा, जो गुप्ता के भाषण से असाधारण रूप से प्रभावित जान पड़ता था। वह जो कुछ भी कहा जाय उसे करने के लिए तैयार हो जाता था। बनर्जी ने उसी प्रकार मुसकराते हुए गुप्ता से पूछा—"तुम क्या करना चाहते हो?"

"मैं देश के लिए जान देने को तैयार हूँ"—गुप्ता ने कहा।

बनर्जी बोला—"जान देने के लिए तो आज प्रातःकाल पंडितजी भी तैयार थे। फिर उनमें और तुम्हारे बीच अन्तर ही क्या रह गया?"

गुप्ता हँस कर बनर्जी के गम्भीर नेत्रों की तरफ देखता हुआ उसके आशय को समझने का असफल प्रयत्न कर ही रहा था कि बनर्जी उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही बोल

उठा—"आज प्रातःकाल यदि पंडितजी की मृत्यु हो जाती तो देश भर में उत्तेजना की एक लहर फैल जाती और दल में भरती करने के लिए हमें काफी नवयुवक मिल जाते। और गुप्ता, तुम मरते तो तुम्हारे लिए न तो कोई आँसू बहाता और न श्रद्धाञ्जलि ही अर्पित की जाती। यही नहीं, बल्कि अपनी मूर्खता के कारण तुम संस्था की कोई हानि ही करते।"

बनर्जी ने चारपाई से खड़ा होकर अपने शरीर को सीधा किया। एकाएक उसके चेहरे की मुसकराहट लुप्त हो गयी और उसका स्थान अनुशासन की गम्भीर मुद्रा ने ले लिया। काँपती हुई गुप्ता की पीठ को थपथपाते हुए उसने कहा—"गुप्ता तुम मूर्ख हो। तुम्हें क्या अपनी शपथ और जिम्मेदारी का स्मरण नहीं रहा। तुम्हें और मुझे केवल आज्ञा पालन करना है। हमारी सफलता केवल सब बातों को गुप्त रखने और अनुशासन ही में है। संस्था का प्रधान अच्छी तरह जानता है कि हमारा क्या कर्तव्य है? प्रत्येक व्यक्ति को जो काम दिया गया है, उसे वही अपनी शक्ति भर करना चाहिए। हो सकता है कि वह कार्य रुचिकर न हो, फिर भी होना वह अवश्य चाहिए। तुम्हें जो मैं इतना खुश और हँसता हुआ दिखलाई देता हूँ, क्या यह मेरी स्वाभाविक मुद्रा है? क्या मेरे दिल में कुछ कर बैठने की इच्छा नहीं होती? प्रिय मातृभूमि को दिन प्रति दिन लाञ्छित और अपमानित किया जा रहा है, क्या इससे मेरा रक्त उबल नहीं पड़ता?"

बनर्जी ने गुप्ता के कंधों को एक बार धीरे से थपथपा कर छोड़ दिया। इसके बाद एक लम्बी साँस लेकर फिर वह चार-पाई पर बैठकर कहने लगा—"गुप्ता, देखो तुम अपने काम में लग जाओ। देशभक्तिपूर्ण कुछ नये पर्चे छपवा कर सदा की

भाँति वितरित करा दो। यह दल का एक बड़ा महत्वपूर्ण काम है। सतर्क रहो और धैर्य्य कभी न खोओ। मेरा ख्याल है इस तरह तुम्हारी बारी भी शीघ्र ही आवेगी।"

तब घोष ने दरवाजा खोल दिया और गुप्ता कमरे से निकल कर बाहर चला गया। गुप्ता के जाते ही घोष बनर्जी की तरफ उत्सुकता पूर्वक देखने लगा।

"आओ यहाँ बैठ जाओ" बनर्जी गम्भीरता पूर्वक बोला,—"पर पहले किवाड बन्द कर दें, ताला लगाने की जरूरत नहीं, वैसे ही। इस तरह हमारी बातचीत मे कोई बाधा न पड़ेगी और यदि पड़ी भी तो तुम्हे बहाने के लिए अपने हाथ मे कोई किताब रखना चाहिए। कालेज के लोगो मे यह ख्याल फैला हुआ है कि मैं खूब पढ़ने वाला हूँ और तुम पक्के खिलाडी हो, किन्तु पढाई मे कमजोर हो। हमें एक पास देख,कर लोग यही समझेंगे कि मैं पढ़ने-लिखने में तुम्हारी सहायता कर रहा हूँ।"

यह कह कर बनर्जी ने चारपाई पर रखी हुई किताबो मे से "जूलियस सीजर" उठा कर घोष को दे दिया और गुप्ता मे सीजर की हत्या वाला दृश्य खोलने को कहा, ताकि जो कुछ वह कहे वह इस सम्बन्ध मे भी लागू हो जाय।

घोष के किताब हाथ मे लेने पर बनर्जी ने कहा—"आज प्रात काल अपने दल के प्रधान से मुझे एक चिट्ठी मिली है।"

"अच्छा! तब तो उसमे कुछ न कुछ करने की आज्ञा अवश्य दी गयी होगी।"

"हाँ और बहुत ही शीघ्र। गुप्ता को मैं इस काम के लिए चुनना नहीं चाहता था। बात यह है कि वह बहुत जल्दी उत्तेजित हो उठता है और बदला की भी उसमें कमी है।"

उठा—"आज प्रातःकाल यदि पंडितजी की मृत्यु हो जाती तो देश भर में उत्तेजना की एक लहर फैल जाती और दल में भरती करने के लिए हमें काफी नवयुवक मिल जाते। और गुप्ता, तुम मरते तो तुम्हारे लिए न तो कोई आँसू बहाता और न श्रद्धाञ्जलि ही अर्पित की जाती। यही नहीं, बल्कि अपनी मूर्खता के कारण तुम संस्था की कोई हानि ही करते।"

बनर्जी ने चारपाई से खड़ा होकर अपने शरीर को सीधा किया। एकाएक उसके चेहरे की मुसकराहट लुप्त हो गयी और उसका स्थान अनुशासन की गम्भीर मुद्रा ने ले लिया। काँपती हुई गुप्ता की पीठ को थपथपाते हुए उसने कहा—"गुप्ता तुम मूर्ख हो। तुम्हें क्या अपनी शपथ और जिम्मेदारी का स्मरण नहीं रहा। तुम्हें और मुझे केवल आज्ञा पालन करना है। हमारी सफलता केवल सब बातों को गुप्त रखने और अनुशासन ही में है। संस्था का प्रधान अच्छी तरह जानता है कि हमारा क्या कर्तव्य है? प्रत्येक व्यक्ति को जो काम दिया गया है, उसे वही अपनी शक्ति भर करना चाहिए। हो सकता है कि वह कार्य रुचिकर न हो, फिर भी होना वह अवश्य चाहिए। तुम्हें जो मैं इतना खुश और हँसता हुआ दिखलाई देता हूँ, क्या यह मेरी स्वाभाविक मुद्रा है? क्या मेरे दिल में कुछ कर बैठने की इच्छा नहीं होती? प्रिय मातृभूमि को दिन प्रति दिन लाञ्छित और अपमानित किया जा रहा है, क्या इससे मेरा रक्त उबल नहीं पड़ता?"

बनर्जी ने गुप्ता के कंधों को एक बार धीरे से थपथपा कर छोड़ दिया। इसके बाद एक लम्बी साँस लेकर फिर वह चारपाई पर बैठकर कहने लगा—"गुप्ता, देखो तुम अपने काम में लग जाओ। देशभक्तिपूर्ण कुछ नये पर्चे छपवा कर सदा की

भाँति वितरित करा दो। यह दल का एक बड़ा महत्वपूर्ण काम है। सतर्क रहो और धैर्य्य कभी न खोओ। मेरा ख्याल है इस तरह तुम्हारी बारी भी शीघ्र ही आवेगी।"

तब घोष ने दरवाजा खोल दिया और गुप्ता कमरे से निकल कर बाहर चला गया। गुप्ता के जाते ही घोष बनर्जी की तरफ उत्सुकता पूर्वक देखने लगा।

"आओ यहाँ बैठ जाओ" बनर्जी गम्भीरता पूर्वक बोला,—"पर पहले किवाड़ बन्द कर दें, ताला लगाने की जरूरत नहीं, वैसे ही। इस तरह हमारी बातचीत में कोई बाधा न पड़ेगी और यदि पड़ी भी तो तुम्हें बहाने के लिए अपने हाथ में कोई किताब रखना चाहिए। कालेज के लोगों में यह ख्याल फैला हुआ है कि मैं खूब पढ़ने वाला हूँ और तुम पक्के खिलाड़ी हो, किन्तु पढ़ाई में कमजोर हो। हमें एक पास देख,कर लोग यही समझेंगे कि मैं पढ़ने-लिखने में तुम्हारी सहायता कर रहा हूँ।"

यह कह कर बनर्जी ने चारपाई पर रखी हुई किताबों में से "जूलियस सीजर" उठा कर घोष को दे दिया और गुप्ता में सीजर की हत्या वाला दृश्य खोलने को कहा, ताकि जो कुछ वह कहे वह इस सम्बन्ध में भी लागू हो जाय।

घोष के किताब हाथ में लेने पर बनर्जी ने कहा—"आज प्रात काल अपने दल के प्रधान से मुझे एक चिट्ठी मिली है।"

"अच्छा! तब तो उसमें कुछ न कुछ करने की आज्ञा अवश्य दी गयी होगी।"

"हाँ, और बहुत ही शीघ्र। गुप्ता से मैं इस काम के लिए कहना नहीं चाहता था। बात यह है कि वह बहुत जल्दी उत्तेजित हो उठता है और दृढ़ता की भी उसमें कमी है।"

"मुझे जो भी काम दिया जायगा उसे ठंडे दिमाग और दृढ़ता से करने में कुछ उठा न रखूँगा"—घोप ने उत्साहित होकर कहा।

"अच्छा, यह तो बतलाओ कि गोली चलाने का जो तुम अभ्यास करते थे, उसका क्या परिणाम निकला ?"

"दाहिने हाथ से रिवाल्वर चलाने में ६ में से ५ वार गोली ठीक जगह लगी और बाये हाथ से ५ में से ४ वार निशाना ठीक वैठा।"—घोप ने उत्तर दिया।

तब बनर्जी ने वड़ी गम्भीरतापूर्वक कहना आरम्भ किया—"अच्छा, सुनो हमारे दल के प्रधान का खयाल है कि देश के विविध भागों में एक साथ प्रदर्शन करने की शक्ति हमने सञ्चित कर ली है। इस प्रदर्शन का रूप यह होगा कि भारत भर में लगभग एक ही समय कुछ अफसरों की हत्या की जाय। यह सब कार्य १५ तारीख तक होना चाहिए।"

"इस जिले में किसकी हत्या होगी ?"—घोप ने कुछ उत्तेजित होकर पूछा।

"प्रधान ने मारे जाने वाले व्यक्ति, स्थान और समय निश्चित करने का भार मेरे ऊपर छोड़ दिया है।"

घोप ने कहा—"और तुमने मि० ओकले का नाम चुन लिया है।"

बनर्जी ने गम्भीरतापूर्वक कहा—"नहीं, पुलिस सुपरिन्टे-न्डेन्ट कैप्टिन ब्रायन ओकोनर का।"

घोप हैरत में आ गया। किताव उसके हाथ से गिर पड़ी। वह ब्रायन के साथ फुटवाल और हाकी के मैच खेलता रहा है। अनेक वार मिलने जुलने के कारण दोनों में मैत्री का बीजा-

रोपण तक हो गया है, जैसा कि अच्छे खिलाडियो के बीच अक्सर हो जाया करता है। व्रायन भी इस पुष्ट अङ्गो वाले युवक को दिल से चाहने लग गए हैं और अपने प्रति बराबरी का व्यवहार करते देख कर घोष भी उनकी तरफ आकर्षित हो चुका है। बनर्जी इनके इस सम्बन्ध को अच्छी तरह जानता है। घोष इस विचार को कभी ख्याल मे भी नही ला सकता। वह उत्तेजित होकर कुरसी से उठ बैठा।

"नही, नहीं, हजार बार नहीं, मैं ऐसे काम मे हाथ नही डाल सकता। मैं इसमें कुछ भी सहयोग नही दे सकता"—घोष उत्तेजित होकर बोल उठा।

भावोद्वेग के कारण वह दरवाजे से कुरसी की तरफ और कुरसी से दरवाजे की तरफ कई बार आया गया। इनके बीच मुश्किल से दो कदम की दूरी थी इसलिए वह दरवाजे की तरफ मुँह करके खडा हो गया। अपने हाथ उठा कर उसने सिर पर रख लिये और गहरी साँस लेने लगा।

"मै तो पहले ही जानता था कि यह तुम्हारी सामर्थ्य के बाहर का काम है और वास्तव में मेरा विचार ठीक ही था। आओ, यहाँ बैठो।"

घोष एकाएक मुडा और अपने शरीर को निर्जीव भाव से कुरसी पर रख दिया। उसकी आँखें जमीन की तरफ लगी रहीं, यह शायद बनर्जी की नजर से बचने का उपक्रम था।

"किताब उठा लो"—बनर्जी की आवाज धीमी थी, किन्तु नेता की आवाज मे अनुशासन की जो ध्वनि होती है, उसका इसमें अभाव न था।

घोष ने धीरे से किताब उठा ली और जरा मन्द भाव

कुरसी पर बैठ गया। कुछ मिनट चुप रहने के बाद बनर्जी ने कहा—"इतनी जल्दी भूल गये कि दल मे प्रविष्ट होते समय तुमने शपथ ली है कि आवश्यकता पड़ने पर अपने माता, पिता और भाई का भी बलिदान करने मे आनाकानी न करोगे।"

घोष ने बिना कुछ कहे ही सिर हिला दिया कि शपथ की बात उसे याद है।

"यदि ऐसा है तो अब तुम एक सरकारी अफसर के सम्बन्ध मे हिचकिचाते क्यों हो, और वह भी एक ऐसे अफसर के सम्बन्ध मे, जो बहुत ही ख़तरनाक है।"

घोष कुरसी पर बैठा हुआ अशान्ति से छटपटा रहा था। उसकी आँखें पुस्तक की तरफ लगी हुई थीं, जिसके पन्ने अभी तक खुले थे। इस स्थिति से ऊब कर उसने किताब को बन्द करके ज़मीन पर फेंक दिया।

इसके बाद वह बनर्जी के निकट घूँसा तान कर खड़ा हो गया, किन्तु बनर्जी की आँखों मे अभी तक उपेक्षा की हँसी भरी हुई थी। घोष ने चाहा कि इस हँसी को घूँसो की मार से बन्द कर दे किन्तु उसके हाथ आगे बढ़ न सके। ऐसा जान पड़ा मानो उसको कलाई किसी मजबूत चीज से जकड दी गई हो। इस भय से कि कही उसका हाथ जोड़ से न टूट जाय वह उलट कर ज़मीन पर आ गिरा और इस बीच मे बनर्जी के घुटने उसकी छाती पर आ गये तथा उसकी उँगलियाँ उसके गले पर पहुँच गयीं। बनर्जी की आँखों में अब भी वही उपेक्षापूर्ण मुसकराहट खेल रही थी। उसकी अवाज मे अब भी अस्थिरता या कम्पन नहीं जान पड़ता था—"मूर्ख कहीं के, दिमाग तो तुममे बिलकुल है ही नहीं। क्या तुम सोचते हो कि हाकी, फुटबाल अच्छा खेल सकने या रिवाल्वर का सीधा निशाना लगा सकने के कारण शारीरिक शक्ति मे भी

तुम अजेय हो गये हो। अब उँगलियो से तुम्हारी गर्दन को दबा दूँ तो तुम क्या कर लोगे ? ”

यह कहते हुए वनर्जी जैसे जैसे घोष का गला दबाता जाता था वैसे वैसे उसकी आँखो के आगे अँधेरा होता जाता था। इस प्रकार शक्ति का प्रमाण देकर वनर्जी ने अपना हाथ खींच लिया और फिर चारपाई पर पहले की तरह बैठ गया।

बेचारा घोष कुहनी के बल बैठ कर अपने गले को सहलाने लगा।

तब वनर्जी ने कहा—“अभी तुम्हारे मन मे हमारे दल के अनुरूप दृढता नहीं आयी है। देश के प्रति जो अत्याचार होते है उनका तुम्हारे ऊपर प्रभाव पड़ता है। मेरा ख्याल है कि देश के कल्याण के लिये सभी त्याग करने के लिये तैयार रहने का वायदा भी तुमने सच्चे मन से किया है। परन्तु जब पहली बार ही त्याग करने के लिये कहा गया तो तुम आनाकानी करने लगे। क्या कहते हो ? ”

घोष मौन बैठा रहा।

वनर्जी बोला—“ तुम कायर नहीं हो। देश के लिये प्रेम भी तुम्हारे हृदय मे काफी है, केवल तुम्हारे भीतर कुछ आवश्यक बातो की कमी है। तुम मे अनुशासन के भाव का अभाव है। तुम्हारे दिमाग मे यह साधारण बात नहीं जमी कि हमारी इस बडी मशीन (व्यवस्था) में तुम एक छोटे पुर्जे हो, तुम हमारे दल की मशीन के तो प्रशंसक हो, किन्तु यह नहीं जानते कि छोटे पुर्जों के बिगडने से सारी की सारी मशीन का काम रुक सकता है।'

वनर्जी ने अपने पैर डाले और चारपाई पर सीधा बैठ गया।

इसके बाद आगे झुक कर घोप की कलाई उसने अपने हाथ मे ले ली और खींच कर उसे अपनी चारपाई पर बैठा लिया। उसके गले मे हाथ डाल कर वह बड़ी नर्मी के साथ कहने लगा—"घोप मुझे निहायत ही अफसोस है कि हम दोनो के बीच यह गलतफहमी हुई। हम दोनो ही देश को स्वतंत्र देखना चाहते हैं। बतलाओ, चाहते हैं या नहीं ?"

"हाँ"—घोप ने धीरे से उत्तर दिया। बनर्जी का उस पर पहले ही प्रभाव कुछ कम न था, अब उसके शारीरिक बल का परिचय पाने के कारण इसमे और भी वृद्धि हो गयी थी।

बनर्जी ने कहा—"अपनी जानकारी के अभाव के कारण तुम तुरन्त इस निश्चय पर पहुँच गये कि हत्या मि० ओकले की ही होनी चाहिए और उनके स्थान पर अपने मित्र ब्रायन ओकोनर का नाम सुन कर तुम हैरानी मे पड़ गये।"

ब्रायन का नाम दोहराये जाने पर घोप ने फिर हृदय मे कम्पन का अनुभव किया और बनर्जी के हाथों को कंधे से हटा कर वह "जूलियस सीजर" लेकर फिर अपनी कुरसी पर बैठ गया। अबकी बार उसने कुछ दृढ़तापूर्वक कहना आरम्भ किया—"हो सकता है कि मुझमे बुद्धि का बिलकुल ही अभाव हो, शारीरिक शक्ति भी मुझमे कम होना सम्भव है, किन्तु कुछ साधारण समझदारी रखने का दावा तो मै अवश्य ही कर सकता हूँ। पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट बड़े सज्जन है, मेरे मित्र हैं। उन्होने बराबर मेरे साथ समानता की दृष्टि रख कर मित्र का व्यवहार किया है। दूसरी तरफ मि० ओकले की नजर मे मैं बराबर असभ्य और घृणा के योग्य रहा हूँ। जब एक यूरोपियन ही का सवाल है तो मि० ओकले को ही क्यो न चुना जाय ?'

"अब हम लोगो की गलतफहमी दूर हो जायगी। मैं मि० ओकले को तुमसे भी अधिक घृणा करता हूँ, क्योकि वे प्रत्येक भारतीय को गुलाम से अधिक और कुछ नहीं समझते। उनका ख्याल है कि भारतवासियो के साथ बुरा से बुरा व्यवहार करने मे भी कुछ दोष नहीं है। इसका परिणाम यह हुआ है कि प्रत्येक देशभक्त उनसे घृणा करता है।"

"यही तो मेरा भी कहना है"—घोष प्रसन्नता से बोल उठा—"तब मि० ओकले ही को अपना शिकार क्यो न बनाया जाय।"

"मि० ओकले को इस लिये जीवित छोडा जाता है कि अपनी कडी नीति से अप्रत्यक्ष रूप मे वे हमारी सहायता करते हैं।"

घोष—मैं यह तर्क नहीं समझ सका।

बनर्जी ने कहा—" बात बडी सीधी है। मि० ओकले अपने जीवन काल मे नित्य किसी न किसी भारतीय का अपमान करते हैं। उन्हे भी किसी न किसी दिन मौत के घाट अवश्य उतरना होगा, क्योंकि उनका नाम तो पहले ही हमारी डायरी मे दर्ज हो गया है। आजकल वे खुशामदियों से घिरे रहते हैं। इस स्थिति मे किसी न किसी दिन वे बहुत आगे बढ़ जायँगे और तब उनका अंत निश्चित है।'

घोष—यह तो ठीक है, फिर भी कप्तान साहब (ब्रायन) जैसे सज्जन के खून से अपने हाथ रँगने मे क्या लाभ ?

बनर्जी ने कहा—"ब्रायन भले आदमी हैं, इससे मैं इनकार कब करता हूँ ? वे भारत की वास्तविक अवस्था किसी भी यूरोपियन अफसर की अपेक्षा अधिक समझते हैं। भारतवासियों के प्रति उनमे सहानुभूति है। उनकी यह सहानुभूति ही तो हमारे मार्ग की सब से बडी बाधा है। इससे लोगो के दिल मे विश्वास पैदा होता है। ब्रायन की भलमनसाहत ही वास्तव मे हमारे लिए

सब से बड़ा खतरा है। जिले मे अब या तो हम रहेंगे और या कैप्टिन आयन ?"

घोप के दिमाग मे बनर्जी का दृष्टिकोण अब आने लगा। बनर्जी ने अपनी सफलता होती देखी तो बोल उठा—"देखो, मैं तुम्हे उदाहरण देता हूँ, तुम उर्मिला को जानते हो ?"

"पडितजी की पुत्री ?"—घोप ने जरा सँभल कर कहा—"उससे इस मामले का क्या सम्बन्ध है ?"

"सब कुछ और कुछ भी नहीं"—रहस्य पूर्ण ढंग से बनर्जी ने उत्तर दिया। अबकी बनर्जी ने बड़ी गहरी चाल चली थी। वह स्वयं उर्मिला से प्रेम करता था, वह यह भी जानता था कि घोप भी उस पर मरता है और साथ ही उसे यह भी सन्देह था कि उर्मिला कैप्टिन आयन से प्रेम करती है। उसने घोप से पूछा—"क्या तुम उर्मिला के सम्बन्ध मे अधिक जानकारी रखते हो ?"

घोप ने उत्तर दिया—"नहीं, मैं उसके सम्बन्ध मे कुछ नहीं जानता और न जानना चाहता ही हूँ। मैं तो सिर्फ यही जानता हूँ कि आवश्यकता पड़ने पर उसके लिए अपनी जान तक देने को तैयार हूँ।"

"तुमसे अपनी जान देने को कौन कहता है ?"—बनर्जी बीच ही मे बोल उठा—"मैं तो तुमसे केवल किसी दूसरे व्यक्ति की जान लेने का अनुरोध कर रहा हूँ, ताकि उर्मिला की, हमारे दल की, और देश की रक्षा हो सके।"

"इसके लिए सदा तैयार हूँ"—घोप ने दृढता पूर्वक उत्तर दिया।

बनर्जी अब अपनी करनी पर मुसकराने लगा। उसने सोचा कि घोप अब पूरी तरह मुट्ठी मे आगया है और उससे अब चाहे जो काम कराया जा सकता है। बनर्जी ने कुछ समय पूर्व जो यह

कहा था कि मि० ओकले का अन्त स्वयं ही हो जायगा और वास्तविक खतरा आयन से है, उसकी यह बाते बनावटी कदापि न थीं। अपने हृदय मे भी वह इसका अनुभव कर रहा था। उर्मिला के प्रति बनर्जी का प्रेम था अवश्य, किन्तु देश के लिए वह उसका भी बलिदान करने को तैयार था। बनर्जी गजब का भावुक था।

वह बोला—"कई साल की बात है। मै पंडितजी से एक दूसरी ही स्थिति मे मिला था। उस समय मैं लदन मे था।"

"लंदन में।"—घोष हैरत मे आ गया—"मेरा यह ख्याल भी न था कि कभी तुम भारत के बाहर गये होगे।"

बनर्जी—तुम ही क्या, बहुत कम लोग जानते हैं। शायद हमारे प्रधान और पडितजी को छोड कर कोई भी नहीं जानता, और तुमसे यह भी प्रसगवश बताए देता हूँ कि मेरा नाम बनर्जी नहीं है। यह भी बहुत कम लोग जानते हैं।

उसने अपने पैर खोले और चारपाई पर से घोष की तरफ झुकते हुए धीरे से कहा—"अपनी किताब की तरफ देखो।"

घोष चौंक उठा। अभी तक उसने कोई आवाज़ नहीं सुनी थी। फिर भी वह किताब की तरफ़ देखने लगा।

उसी क्षण कमरे का दरवाजा एकाएक खुला और कालेज के प्रिन्सिपल एकाएक कमरे में आकर दाखिल हो गए।

षड्यंत्र

प्रिन्सिपल ने कमरे मे घुसते ही कडक कर कहा—"क्या हो रहा है। हाजिरी हुए काफी देर हुई, इस समय तुम सब को अपने कमरो में होना चाहिए।"

प्रिन्सिपल के आते ही बनर्जी और घोष दोनो उठकर खड़े हो गए। बनर्जी ने कहा—"साहब, हमें नियमोल्लंघन करने का खेद है। परन्तु मैं तो केवल घोष को पढ़ाई मे सहायता ही कर रहा हूँ।"

"यदि ऐसा है तो वार्डन से अनुमति लेकर बाकायदा काम क्यो नही करते। मुझे विश्वास है कि उन्हें इस पर कुछ भी आपत्ति न होगी। बनर्जी, एक कागज का टुकड़ा दो, लाओ मैं तुम्हे अनुमति लिख दूँ। तुम तो जानते हो कि नियमो का यदि पूरी तरह पालन न किया जाय तो बिलकुल अव्यवस्था ही फैल जाय।"

प्रिन्सिपल जिस समय अनुमति-पत्र लिख रहे थे बनर्जी और घोष दोनो उनके चेहरे की तरफ टकटकी लगा कर देख रहे थे। प्रिन्सिपल महोदय की देह सुगठित और व्यक्तित्व प्रभावोत्पादक था। अनुशासन के नियमो का वे कड़ाई के साथ पालन करते थे। फिर भी कालेज के विद्यार्थियो मे आप अपने निष्पक्ष व्यवहार और मिलनसारी के कारण लोकप्रिय थे।

"बड़ी ही गर्मी है आज"—उन्होने अनुमति पत्र बनर्जी के हाथ मे देते हुए कहा—"तुम दोनो ही भले आदमी हो। बनर्जी, तुम मेरे सब से तेज विद्यार्थी हो और घोष, तुम कालेज के

सर्व-श्रेष्ट खिलाड़ी हो। यदि तुम्हीं नियम भंग करोगे तो कैसे बनेगा। तुम्हे तो दूसरो के लिये उदाहरण स्वरूप होना चाहिये।"

वनर्जी ने फिर अपनी वही वात दुहरा दी—"हमे सचमुच वडा खेद है। भविष्य मे ऐसा कभी न होगा।"

"वहुत अच्छा, इस वार मैं तुम दोनो को चेतावनी देकर छोड़े देता हूँ।"—कहते हुए प्रिन्सिपल महोदय मुसकरा उठे, जिसके कारण वनर्जी और घोष के मुख पर भी हँसी की क्षीण रेखाऍ चमक उठी।

"अच्छा, वनर्जी"—प्रिन्सिपल ने कहा—"उस दिन तुमने जो लेख लिख कर दिया था, वह मुझे वहुत ही पसन्द आया है। क्या, वह मौलिक है?'

वनर्जी ने उत्तर दिया—"वह लेख किसी पुस्तक की नकल तो नही है पर यह अवश्य है कि उसमे प्रकट किये गये विचार मैने विविध पुस्तको में समय समय पर पढे थे। मैं अभी विचारो की मौलिकता का दावा नही कर सकता।"

"नहीं, मेरा आशय यह नहीं है। साहित्य के इतिहास के जिस काल के सम्बन्ध मे आलोचकगण पिछले सौ साल से बहस-मुबाहिसा करते आये है, उस पर मौलिक विचार प्रकट करना बहुत कठिन है। कुछ भी हो, तुम्हारा लेख अच्छा था। इस विषय पर मेरे पास कुछ पुस्तके है, उन्हे पढ कर देखना। याद रहेगा तो कल उन्हे लेता भी आऊँगा।'

"अनेक धन्यवाद, महोदय'—बनर्जी ने कहा—'मैं आपको याद दिला दूँगा।

"अरे अब याद आया, इन्हें सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस का सन्देश घोष को देना है।—प्रिन्सिपल ने [illegible] कहा।

सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस का नाम सुन कर घोष कुछ चौंक पड़ा।

"चौंकते क्यों हो?"—प्रिन्सिपल ने घोष से हँसते हुए कहा। "वे तो सिर्फ यही जानना चाहते हैं कि १३ ता० को तुम उनके साथ हाकी मैच खेल सकते हो या नहीं।"

"मेरे ख्याल मे हम खेल सकते हैं, किन्तु कल पूर्ण निश्चय करके मैं आपको जवाब दूँगा।"

"अच्छा, देखो काफी देर हो गयी है। अधिक रात तक न जगना, गुडनाइट।"

प्रिन्सिपल के कमरे से बाहर जाने के बाद कुछ क्षण बनर्जी और घोष उसी तरह अपने स्थान पर निश्चल खड़े रहे। उस के पैरो का शब्द क्षीण होने पर बनर्जी ने घोष से कहा— "यह भी बड़ा अच्छा आदमी है। विद्यार्थियों पर इसका बहुत प्रभाव है। किसी दिन इसे भी मरना होगा।"

घोष को पहले ही शिक्षा मिल चुकी थी, इसलिये वह चुप रहा।

तब बनर्जी ने कहा—"देखो, दरवाजा बन्द करके भीतर से ताला लगा दो और रोशनी भी बुझा दो। पंडितजी के मुकद्मे के कारण शहर मे जो सनसनी फैल गयी थी उसकी वजह से आज प्रिन्सिपल के आने की आशा मुझे भी थी और इसीलिये मैंने गुप्ता से जल्दी ही पीछा छुड़ा लिया था। अब हमारी बातों में बाधा पड़ने की कोई आशंका नहीं है।"

घोष ने ताला बन्द करके रोशनी बुझा दी और बनर्जी के कहने से वह उसकी चारपाई पर आकर बैठ गया।

बनर्जी—अच्छा देखो आज हमे रात भर काम करना है। हाँ, तो हम लोग उर्मिला के सम्बन्ध मे बात कर रहे थे।

"नहीं, तुम बतला रहे थे कि लंदन मे किस विचित्र परिस्थिति मे तुम्हारी भेंट पंडितजी से हुई।"—बीच ही मे घोष ने बात काट कहा कहा।

अंधेरे मे बनर्जी मुसकरा उठा। प्रिन्सिपल के आने के समय जो कुछ वह कह रहा था, वह उसे अब भी याद था। किन्तु वह तो घोष के मन की थाह लेना चाहता था और इसमे उसे सफलता भी मिल गई।

"हाँ, तो उसी समय मैं उर्मिला से मिला था"—यह कह कर बनर्जी कुछ रुका मानो किसी भूली हुई बात को याद कर रहा हो और इसके बाद, आश्चर्य्य मे पड़े हुए घोष को अपनी रहस्यपूर्ण कथा सुनाने लगा।

"स्कूल और कालेज मे मैं सदा पढने में बहुत ही तेज था। विशेष प्रयत्न किए बिना ही इम्तहानो में मेरा नम्बर अव्वल आता था। इसके सिवाय मेरे पिता के पास अटूट धन राशि थी और मेरे जैसे कुशाग्र-बुद्धि पुत्र का पिता होने का अभिमान भी उन्हे कुछ कम न था। उन्हे राजनीति मे दिलचस्पी बिलकुल न थी। अंगरेजी सरकार उन्हे अपना धन उपभोग करने या सयुक्त पारिवारिक जीवन बिताने मे कोई बाधा उपस्थित नहीं करती थी इसलिए उसके विरुद्ध उन्हे कुछ भी शिकायत न थी।

"पिताजी का ख्याल था कि मेरे जैसे तेज युवक के लिए सिविल सर्विस में पहुँच कर चमक उठना कठिन न होगा। वे मेरे डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट और कमिश्नर ही नहीं, बल्कि गवर्नर तक बनने का स्वप्न देखा करते। और वास्तव मे उनका यह सोचना किसी असम्भव बात की कल्पना करना न था। हिन्दुस्तानी पहले भी प्रान्तों के गवर्नर हो चुके हैं। पिता जी का कहना

था कि आखिर उनका पुत्र उन भारतीयों की अपेक्षा सामाजिक स्थिति, धन या लियाक़त किस बात में कम है ?

"इन्हीं विचारो की पूर्ति के उद्देश्य से सब प्रबंध किया गया और मै लंदन पहुँच कर आई० सी० एस० परीक्षा के लिए तैयारी करने लगा। जीवन मे पहली बार मैंने मेहनत की थी। पिताजी के मेरे सम्बन्ध में जो खयालात थे उनकी सचाई में साबित करके दिखाना चाहता था। इसके सिवाय मै यह भी जानता था कि यदि परीक्षा मे कहीं असफल हो गया तो इससे पिताजी को कितना दुख होगा। परीक्षा शुरू होने मे एक महीने की देर थी। मुझे अपने में पूरा विश्वास था और ८० उम्मेदवारों के बीच यदि मेरा नाम प्रथम १० मे आ जाता तो इसमे तनिक भी आश्चर्य्य की बात न होती। परन्तु, एक दिन सायंकाल के समय जीवन के प्रति मेरे सम्पूर्ण दृष्टिकोण ही मे परिवर्तन हो गया।

"उस दिन काम समाप्त करके मैं कमरे मे अकेला बैठा हुआ था, न जाने बिना किसी कारण ही मेरा मन क्यो उदास हो रहा था। मेरा स्वास्थ्य उन दिनो बिलकुल ठीक था, पढाई का कार्य भी ठीक चल रहा था और परीक्षा मे पूर्ण रूप से सफल होने की भी मुझे आशा थी। रुपये-पैसे की तंगी या अन्य किसी प्रकार की चिन्ता भी मेरे लिए न थी। फिर भी एक अजीब किस्म की उदासी मेरे मन पर अधिकार करती जा रही थी। इससे बचने के लिये मैं पास ही के कमरे मे एक मित्र के यहाँ चला गया। वहीं पंडितजी और उनकी पुत्री उर्मिला से मै प्रथम बार मिला। पंडितजी की दृष्टि मे न जाने कैसा आकर्षण था कि पहली बार ही मे मैं उनकी तरफ खिंच गया। इसी तरह उर्मिला को देखते ही मेरे हृदय मे उसके प्रति प्रेम का बीज जम गया।"

उर्मिला से बनर्जी के प्रेम की बात सुनते ही चारपाई पर बैठा हुआ घोष चौंक पड़ा।

"चौंको नही। मैं जानता हूँ कि तुम भी उर्मिला को प्रेम करते हो। मैंने तो प्रतिज्ञा की है जब तक काम पूरा न होगा तब तक प्रेम का एक शब्द भी मेरे मुँह से न निकलेगा।"

बनर्जी की यह बात सुन कर घोष ने निश्चिन्तता की साँस ली और बनर्जी फिर अपना हाल सुनाने लगा।

"उस दिन हम लोगों की बातें भारतीय राजनीति के सम्बन्ध मे हुई थीं। देश के लिए पंडितजी ने जो त्याग किये थे उनकी बाबत मैं पहले ही सुन चुका था और उनका प्रशसक भी था परन्तु अपने पिता की तरह मैं भी सरकार को अटल और स्थिर मान कर यह सोचने लगा था कि राजनीति में दखल देना मेरा काम नहीं है। परन्तु मेरा यह भ्रम शीघ्र ही दूर हो गया।

"पडितजी ने मुझ से पूछा कि लदन में मैं क्या करता हूँ। मैंने सब बातें कह दीं और उनके मन पर प्रभाव डालने के लिये यह भी बतला दिया कि सिविल सर्विस परीक्षा के सफल व्यक्तियों में प्रथम दस में अपना नाम आने की भी मुझे पूर्ण आशा है। मेरी इस बात से उनके मुख पर एक खेदपूर्ण मुसकराहट की रेखा खिंच गयी, जिसे देखकर मुझे अनुभव होने लगा कि मैं ऐसा काम कर रहा हूँ जो मेरे उपयुक्त कदापि नहीं है और जिसे पण्डितजी भी पसन्द नहीं करते।

"मैंने उनसे पूछा भी कि क्या आपके खयाल मे मैं उचित नहीं कर रहा हूँ। इसका उन्होंने जिस शान्ति और सादगी से भरा उत्तर दिया, उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। उन्होंने कहा कि तुम 'हत्या' कर रहे हो।

"पंडितजी ने देखा कि उनके उत्तर ने मुझे मूक कर दिया। शायद उनकी उक्ति का उद्देश्य प्रभाव डाल कर मेरी उस आत्म-तुष्टि की भावना का अन्त करना था। वे मुझसे देश के सम्बन्ध में बातें करते रहे और अपने दृष्टिकोण से सभी बातों पर विचार करने का अनुरोध भी उन्होंने मुझसे किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने आगे एक उच्च आदर्श रखना चाहिये और इस समय हमारे आगे अपनी मातृभूमि की गुलामी की जजीरों को तोड़ने का प्रयत्न करने की अपेक्षा और कोई आदर्श उच्च नहीं हो सकता। देश को गुलामी में बाँध रखने वाली जंजीरों में सबसे मजबूत है भारतीय सिविल सर्विस और इसमें जाने वाला प्रत्येक भारतीय देश की स्वतंत्रता का जनाजा निकालने में मददगार बनता है।

"तुम तो जानते ही हो कि पंडितजी के व्यक्तित्व में कितना आकर्षण है। उन्होंने मुझे बिलकुल अपना गुलाम बना लिया। मैंने उर्मिला की तरफ देखा—उसकी बड़ी बड़ी और सुन्दर आँखें मुझसे कुछ याचना कर रही थीं। कुछ तो इस वजह से और कुछ पण्डितजी द्वारा पैदा किये जोश के कारण मैंने उसी जगह और उसी समय सिविल सर्विस में न बैठने का निश्चय कर लिया।"

एक क्षण के लिए ऐसा जान पड़ा मानो बनर्जी अपने आप में डूब गया हो। परन्तु घोष के हिलने से वह कुछ सँभल गया और कहने लगा—"यह मेरे लिये सदा आश्चर्य्य की बात रही है कि अपने जीवन का यह महत्वपूर्ण निर्णय मैंने किस आसानी से कर डाला और इससे भी आश्चर्य्य मुझे इस बात से होता है कि ऐसा करते ही जो उदासी मुझ पर छायी हुई थी वह न जाने एकाएक कहाँ चली गई।

"पण्डित उस समय कितने ही राजनीतिक कार्यों में व्यस्त थे

इसलिये मुझे और उर्मिला को उन दिनों एक साथ रहने का काफी अवसर मिला करता था। उसके दिल मे देश के लिए जो जोश उमड़ा हुआ था उसका कुछ असर मुझ पर भी पड़ा और इस तरह हम दोन एक साथ रह कर अधिक आनन्द, और स्वच्छन्दता का अनुभव करने लगे। उस समय परिस्थिति बड़ी आशा पूर्ण जान पडती थी। ऐसा जान पड़ता था कि पण्डितजी जिन राजनीतिक सभाओं में भाग ले रहे थे, उनसे मानो भारतीय स्वतन्त्रता के आन्दोलन को निकट भविष्य मे सफलता की पूर्व-सूचना मिल रही हो।

"एक दिन 'क्यू गार्डन' में हम लोग पास ही बैठे थे। लदन के हिसाब से उस दिन गरमी काफ़ी थी। नीले आसमान में सूरज चमक रहा था। आसपास का दृश्य बडा ही मनोरम था। प्रकृति की इस शान्त छटा का हम लोग पूरा आनन्द उठा रहे थे।

"उर्मिला एकाएक बोल उठी—'इस दृश्य को देख कर मुझे बचपन की याद उठ आई है। क्या तुम जानते हो कि एक डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट और मेरे पिता मे बडी मित्रता थी। दोनों हैरो और आक्सफोर्ड मे साथ-साथ पढ़े थे। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के पुत्र का और मेरा बचपन साथ-साथ बीता था। हम लोग साथ ही घोडे की सवारी को जाते, टैनिस खेलते और कभी कभी बाग मे बैठे हुए सुहावनी धूप का आनन्द लिया करते थे। वे कितने अच्छे दिन थे।'

"इसके बाद वह कुछ देर के लिए रुकी और फिर मुस्कराती हुई कहने लगी—'आश्चर्य्य की बात तो यह थी कि एक भारतीय बालिका और यूरोपियन बालक मे सहसा स्नेह हो देने गया। मुझे अपनी विदाई का समय भी याद है, क्योंकि अपने जीवन में इतना दुख मुझे कभी न हुआ था। उन्हे इगलैंड पढने के लिए

भेज दिया गया'—अबकी बार जब वह रुकी तो उसकी मुद्रा कुछ गम्भीर हो गयी—'मुझे विश्वास है कि कभी न कभी मैं एकबार उससे अवश्य मिलूँगी। उसका शरीर कितना हृष्टपुष्ट था, किन्तु हृदय से उदारता और सहानुभूति बरसी पड़ती थी। भारत जाने वाले सभी यूरोपियन उसकी तरह होते तो कैसे होता ? तब राजनीतिक अशान्ति भारत मे कदापि न होती ?'

"उर्मिला के मुँह से यह सब बाते सुनकर उस यूरोपियन युवक के प्रति मेरे मन मे बडी ईर्षा उत्पन्न हो गई और यहाँ तक कि सभी यूरोपियनों से मै घृणा करने लगा। दूसरी तरफ जिन राजनीतिक समितियो और सभाओ का आरम्भ इतनी सफलता पूर्वक हुआ था वे कुछ ही समय मे छिन्न-भिन्न हो गयीं। उर्मिला और मैं बड़े हतोत्साह हो गए। हम लोग सशस्त्र क्रान्ति और हिंसात्मक कार्यों की बातें करने लगे। पडितजी भी हमारे विचार जान गए। उन्होंने कहा कि इन कान्फरेंसो और समितियो की पूर्ण सफलता तो लगभग असम्भव सी बात थी। अभी इस तरह की कितनी ही कान्फरेंसों और धैर्य्य के साथ प्रचार करते रहने की आवश्यकता है। पंडितजी ने कहा कि यदि हिंसात्मक उपायो का अवलम्बन किया गया तो भारतीय स्वतंत्रता का आन्दोलन १०० वर्ष के लिए पिछड़ जायगा।

"इसके बाद पंडितजी और उर्मिला भारत वापस चले आये। मैं लंदन मे अकेला रह गया। एक दूसरे से विदा होने के पूर्व मैंने और उर्मिला ने जीवन भर देश सेवा करने का व्रत ग्रहण किया। मैंने पिता को लिख दिया कि मै सिविल सर्विस की परीक्षा मे नहीं बैठ रहा हूँ। उन्हे सफाई देने की कोशिश भी मैंने न की, क्योंकि मैं जानता था कि ऐसा करना बेकार है। मैंने लिखा कि आप रुपया भेजना बन्द कर दीजिए, क्योंकि अब मैंने अपने निराले

मार्ग पर चलने का निश्चय कर लिया है। उस दिन के वाद आज तक पिता से मेरा कभी पत्र-व्यवहार नही हुआ। वे यह भी नही जानते कि मैं जीवित भी हूँ या नही ?" .

पिता की याद आते ही वनर्जी फिर एक वार सोच मे पड़ गया। वह उन्हें हद से ज्यादा चाहता था, किन्तु देश प्रेम की भावना ने उसकी भावुक प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली थी, जिसका वीजारोपण पडितजी के आकर्षक व्यक्तित्व और उर्मिला के प्रेम के कारण हुआ था।

घोष ने पूछा—"जव पिता ने खर्च भेजना वन्द कर दिया तव तुमने अपना कार्य कैसे चलाया ?"

वनर्जी ने कुछ हिचकिचाने के वाद कहा—"मेरे जीवन का यह भाग ऐसा है, जिसे भूल सकूँ तो मुझे खुशी ही होगी। हृदय में देश प्रेम की लहरें हिलोर ले रही थीं, युवावस्था थी, और जोश भी कुछ कम न था। रुपया मिलना वन्द होने पर मुझे जीवन की यथार्थता से सामना पडा। सर्कस के प्रोग्राम मैंने वेचे, डाक में कुली का काम मैंने किया, भूखा मरा और सर्द रातें वेंचों पर लेट-कर विता दीं। किन्तु इस वीच में उर्मिला से पत्र-व्यवहार वरावर जारी रहा। उसने नव-भारत समिति की स्थापना की और मुझसे उसकी शाखा लदन मे खोलने का अनुरोध किया।

"इस समिति मे आखिरकार दो दल हो गए। वैध आन्दोलन के पक्षपाती पडितजी के अनुयायी वने रहे और उग्र विचार वाले भारत मे हमारे प्रधान के सम्पर्क मे आ गए। अपने ही अनुरोध के कारण मुझे इस जिले मे भेजा गया। उर्मिला की सहानुभूति सदा उग्र विचार वालों की तरफ थी। वह हमारे दल मे मिलने वाली ही थी कि इस वीच में उसके पुराने दोस्त, और 'चहेते' पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट कहीं से टपक पडे।

बनर्जी ने 'चहेते' शब्द का प्रयोग जान बूझकर घोष को उत्तेजित करने के लिए किया था और तीर निशाने पर बैठ भी गया।

"क्या!"—घोष चारपाई से उठ कर उत्तेजित होकर चिल्ला उठा।

"अरे चुप रहो"—बनर्जी ने धीरे से कहा—"शान्त होकर बैठ जाओ।"

घोष कुछ देर बाद फिर चारपाई पर अपने पूर्व के स्थान पर बैठ गया। वह उर्मिला पर मरता था। बनर्जी ने उसके हृदय में अपने प्रति सम्मान और भय की भावना को जन्म देकर पहले ही अपना गुलाम बना लिया था। उर्मिला से प्रेम के कारण अब वह उसका अनुसरण करने के लिए और भी तैयार हो गया।

सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस को आखिर उर्मिला के प्रति ऐसी भावना रखने का अधिकार ही क्या था? भावुक प्रकृति का होने के कारण घोष के विचार ब्रायन की तरफ से बिलकुल बदल गए।

बनर्जी बोला—"उर्मिला ब्रायन से प्रेम करती है। उस पर उनका प्रभाव बहुत अधिक है। वह जान बूझकर हमारे साथ विश्वासघात कभी न करेगी, पर जब तक पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट का प्रभाव उस पर रहेगा तब तक वह हमारे कार्यों में पूरा योग न देगी। उनकी हत्या करके एक तरफ तो हम उर्मिला को बचा लेंगे और दूसरी तरफ अपने एक प्रतिस्पर्धी का अन्त करके दल की गोपनीय स्थिति की रक्षा कर लेंगे। अब शायद तुम समझ गए होगे कि मैंने मि० ओकले के बजाय ब्रायन को क्यों चुना था।"

घोष के अन्तर में द्वन्द्व हो रहा था, साँस जोरों से चल रही थी। उसके मुँह से "हाँ" के सिवाय और कुछ न निकल सका।

"क्या तुम तैयार हो ?"—बनर्जी ने पूछा।

"अभी चाहो तो अभी या जब कहो तो तब, किन्तु जल्दी ही।"

"तब आओ मेरे साथ। मैने तुमसे पहले ही कहा था कि हमे रात भर काम करना है।"

उस समय रात आधी बीत चुकी थी। यह लोग होस्टल के अहाते से चुपचाप बाहर निकलकर अँधेरे मे छिप गये।

मुंशीजी का कमरा

बनर्जी और घोष होस्टल की चहारदिवारी से निकल कर सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस के बँगले के अहाते के निकट छिपते हुए चलने लगे। अहाते की दीवार के ऊपर उन्हे ब्रायन की मसहरी लगी हुई चारपाई दिखलाई पड रही थी। बँगले के दरवाजे के बाहर एक संतरी चहलकदमी कर रहा था।

जिस सडक पर यह लोग चल रहे थे, उसके दोनों तरफ घने पेड लगे हुए थे। लगभग आध मील चलने के बाद डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट का बँगला मिला। इस बँगले के सामने ही पोलो खेलने का मैदान था और इस मैदान के उस पार जंगल था। पोलो खेलने का मैदान समाप्त होने पर बनर्जी ठहर गया। सडक उसमे समकोण बनाती हुई शहर की तरफ चली गयी थी। इसके दोनों तरफ भारतीय धनिक वर्ग के बँगले थे, जो पेड़ो से ढके होने के कारण सोते से जान पडते थे। कुछ दूर और चलने के बाद यह लोग एक बहुत बडे बँगले के पास पहुँच गये। इसमे शहर के

प्रसिद्ध रईस और बैंकर लालाजी तथा पंडित जी की पुत्री उर्मिला रहती थी। बनर्जी ने मुँह मे हथेली देकर गीदड़ के चिल्लाने की आवाज़ अपने मुँह से निकाली, जो रात के अंधकार मे दूर तक गूंज गयी। कुछ देर बाद वैसी ही एक और भी आवाज़ सुनायी दी।

बनर्जी बोला—"सब ठीक है। चलो, हम लोग चले।"

इसके बाद यह लोग लालाजी के बंगले में जाने वाली सडक पर चलने लगे। इस समय सर्वत्र शान्ति छायी हुई थी और कुत्तो के भूंकने तथा चौकीदारो के चिल्लाने के सिवाय और कोई आवाज़ सुनाई न देती थी। बँगले के अहाते के भीतर ही उसकी खास इमारत के पीछे एक और मकान बना हुआ था। बँगले के दरवाजे पर इन लोगो को एक वृद्ध भारतीय मिला, जिसकी श्वेत दाढ़ी के कारण उसके प्रति सभी व्यक्तियो के हृदय मे आदर की भावना उठ आना स्वभाविक हो जाता था। यह व्यक्ति आगे चल कर इन लोगो को बँगले की पिछली इमारत की तरफ चुपचाप लिवा ले गया। यह व्यक्ति लालाजी का मुंशी था, जिन्हे हम सहूलियत के लिये "मुशीजी" के नाम से स्मरण रखेंगे।

मुंशीजी ने इन लोगो के मकान मे प्रविष्ट होते ही दरवाजा भीतर से बन्द कर दिया और भीतर एक ऐसे कमरे मे जाकर सब लोग बैठ गए, जिसकी रोशनी बाहर नहीं पहुँच सकती थी।

मुशीजी बोले—"मैने वे सभी बातें जान ली है, जिनके लिए आपने कह दिया था। क्या आप कोई बहुत बड़ा काम कर रहे है।"

बनर्जी ने उत्तर दिया—"हाँ, मुझे प्रधान से आज्ञा मिल चुकी है और वह काम बहुत ही शीघ्रता से होने वाला है।"

वृद्ध मुंशीजी की मुद्रा एकाएक भयानक हो उठी, वे बोले—"तो यह जितनी ही जल्दी हो उतना ही अच्छा।"—वे अपनी कुर्सी पर सीधे तन कर बैठ गये और हाथ की मुट्ठी बाँध कर कुर्सी पर रख ली। क्रोध के कारण उनकी आँखें इस समय जल रही थी और उत्तेजना के कारण दम फूल रहा था। वे बोले—"मेरी इच्छा तो तब पूरी होती जब जवानी की ताकत मुझमे फिर आ जाती। मैं अत्याचारियों का अन्त करने के लिये सुबह से शाम तक काम करता। किन्तु यह असम्भव है। इस हालत में मैं अपने स्वप्नो को यथार्थ होते देखने के लिए जीवित रहने के सिवाय और किसी बात की आशा नहीं कर सकता"—यह कहते कहते वे कुर्सी पर पीछे की तरफ निश्चेष्ट और उदास होकर गिर पड़े।

मुशीजी के जीवन की कहानी बडी करुण थी। एक गलत-फहमी के कारण उन्हें बडा सन्ताप उठाना पड रहा था। जीवन भर उन्होने बडी आजिजी के साथ सरकारी नौकरी की और पेंशन लेने के बाद लाला जी के यहाँ पूर्ण उत्साह से काम करने लगे। साल भर भी न हुआ होगा कि मुशी जी का पुत्र एक राजनीतिक जुर्म में फँस गया। मुशीजी को उसकी निर्दोषिता के सम्बन्ध मे कोई सन्देह न था और उन्होंने अधि-कारियो से यह बात बार बार कही भी, किन्तु वे पुत्र की रक्षा न कर सके। और उसे कालेपानी का दण्ड दे दिया गया।

उसी क्षण से मुशीजी मे भारी परिवर्तन हो गया। अब भी वे अपना ऊपरी काम पहले की भाँति करते रहते थे, पर भीतर ही भीतर दिल मे टीस उठा करती थी। वे इस बात का विचार किया करते कि अधिकारियो ने उनकी जीवन भर की सेवाओं का तनिक भी ख्याल न किया। यहाँ तक कि उन्होंने पुत्र को अपना अनुकरण करने के लिये सरकारी कार्य की शिक्षा दे

थी। परन्तु राजनीतिक आवश्यकताओं के कारण उनकी सेवाओं और उनके लाड़ले पुत्र के जीवन का निष्ठुरता पूर्वक बलिदान कर दिया गया।

बनर्जी यह सब बातें जानता था। मुंशीजी के दिए हुए कागज़ों को पढ़ने के बाद उसने कहा—"१३ तारीख वाली दावत में तो केवल एक ही यूरोपियन आ रहा है।"

मुंशीजी ने कहा—"हाँ, केवल सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस ही ने निमंत्रण स्वीकार किया है। सिविल सर्जन, डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट और डिस्ट्रिक्ट जज को काम थे, इसलिए वे दावत में न आ सकेंगे।"

"दावत कब तक समाप्त होने की आशा है?"—बनर्जी ने पूछा।

"आधी रात के पहले लगभग साढ़े ११ बजे। पहली बात तो यह है कि दूसरे दिन लालाजी को सुबह से ही बहुत से काम करने हैं, दूसरे सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब भी अधिक रात तक जागने के आदी नहीं हैं और तीसरे उर्मिला भी अधिक रात तक बाहर रहना पसन्द नहीं करती।"

"आपने उर्मिला तक मेरा सन्देश पहुँचा दिया न?"—बनर्जी ने पूछा।

"हाँ"—मुंशीजी ने घड़ी की तरफ देखते हुए कहा—"बस अब वह आने ही वाली है।"

इसी समय दरवाज़े को बाहर से किसी ने धीरे से खट-खटाया। मुंशीजी बोले—"लीजिये वह आ भी गई"—और वे दरवाजा खोलने चले गए।

उर्मिला के कमरे मे प्रवेश करते ही वनर्जी और घोष दोनों ही ने हाथ जोड़ कर उसका अभिवादन किया, जिसका प्रत्युत्तर देकर वह मुशीजी द्वारा दी हुई कुर्सी पर वैठ गई।

कुछ देर कमरे मे शान्ति रही। इसके वाद उर्मिला ने वनर्जी से कहा—"आपके वुलाने से मुझे असीम आनन्द हुआ है। पर, आज मैं आपको यह वताना चाहती हूँ कि इस वीच मे कुछ ऐसी वातें हो गयी हैं, जिनके कारण कि राजनीतिक कार्य के सम्वन्ध में मेरे दृष्टिकोण में भारी परिवर्तन हो गया है।"

उर्मिला अपनी कुर्सी पर सीधी तनी वैठी थी। मस्तक और कंधे पर आज़ादी के साथ पड़ी हुई ज़री के काम की साडी उसके गौर वर्ण पर खूव फव रही थी। साडी की सुनहरी किनारी और केशपाश के वीच माथे पर लगी हुई सिन्दूर की विन्दी के कारण उसकी मुखश्री और भी वढ गई थी। कमरे मे उपस्थित सभी व्यक्तियों की आँखे उसकी तरफ लगी हुई थी।

धीमी किन्तु दृढतापूर्ण आवाज़ से वह कहने लगी—"क्या आपको उस समय की याद है जव लन्दन में हम लोग एक साथ थे।"

वनर्जी ने उसकी वडी वडी आँखो में अपनी आँखे डालते हुए कहा—"उन दिनो की याद मुझे कभी न भूलेगी।"

उर्मिला के उपरोक्त प्रश्न से वनर्जी को अपने मनोभाव छिपाने का सहज सयम कुछ शिथिल हो गया और उर्मिला भी कुछ लजा गई। कुछ देर वनर्जी की तेज़ नजर वचाने के वाद उसकी की तरफ देखते हुए उर्मिला ने कहा—"वहाँ हमने अपना जीवन मातृभूमि की सेवा मे लगा देने की प्रतिज्ञा की थी। उसका मैंने निर्वाह किया है—और देश जव तक स्वतन्त्र न होगा

अबकी वार आयन खिलखिला कर हँस पड़े—"अभी तक तुम ज़िद करती ही जा रही हो। तुम्हारे अनुरोध को टालना मुझे वड़ा अरुचिकर है, पर मैं खतरे में पड़ने के लिए उत्सुक हूँ ताकि इतने दिन से जो षड्यंत्र भीतर ही भीतर चल रहा है उसका पता तो लगे।"

आयन वहुत थके जान पड़ते थे। उर्मिला को इच्छा हुई कि पास जाकर उनके आराम के लिये जो कुछ भी सम्भव हो करे, किन्तु ऐसा करना उसके लिये उचित न था।

"आयन तुम अव भी पहले ही की तरह दुस्साहसी हो और किसी की सुनना जानते ही नहीं—"

"और तुमने अभी तक जिद करना नहीं छोड़ा। क्या तुम्हें याद है कि कभी मैंने तुम्हारे सैनिक वन सकने के दावे को माना हो?"

इसके वाद पुरानी वातें याद करके वे एक दूसरे की चुटकियाँ लेने लगे।

हाकी मैच

कालेज के हाकी के मैदान में ५ वजे के पहले ही भीड़ होने लगी थी। कालेज और पुलिस वालो के मैच वास्तव मे वडे ही मनोरंजक होते थे। वात यह थी कि दोनों टीम एक दूसरे के जोड़ की थीं और उनके सम्वन्ध मे यह कहना मुश्किल हो जाता था कि दोनों के वीच कौन अच्छा खेलती है। पाँच मैच खेले जा

चुके थे। कालेज की टीम तीन बार जीत चुकी थी और पुलिस दो बार, किन्तु प्रत्येक बार जीत बहुत थोड़े गोलों से हुई थी।

एक तरफ विद्यार्थी एकत्रित हो रहे थे और दूसरी तरफ पुलिस के जवान। टीम भी आ चुकी थीं। कालेज वाले एक गोल पर "प्रैक्टिस" कर रहे थे और पुलिस वाले दूसरे पर। दर्शकों मे दोनों तरफ बातों के दौरान चल रहे थे और कभी कभी अच्छा "शाट" लगने पर "शाबाश" या "वैल प्लेड" की आवाजे भी सुनाई दे जाती थीं।

ठीक साढ़े पाँच बजे प्रिन्सिपल और मेजर मेटलैंड फील्ड मे आये। प्रिन्सपल अपने समय खुद भी हाकी के अच्छे खिलाड़ी रह चुके थे और यह उन्हीं के प्रोत्साहन का परिणाम था कि कालेज की टीम ने इतना नाम कमा लिया था। मेटलैंड भी अच्छे खिलाडी थे, इसलिए कैप्टिन ओकोनर ब्रायन ने उनसे दूसरा "रैफरी" बनने का अनुरोध किया था। प्रिन्सिपल के सीटी बजाते ही सर्वत्र शान्ति छा गयी।

पुलिस टीम के कप्तान थे ब्रायन और कालेज टीम का घोष। "टास" करने के लिए रैफरी को तरफ साथ साथ जाते हुए ब्रायन ने घोष से कहा—"घोष, कैसे हो? तुम शायद हमे हराने के लिए पक्का इरादा करके 'फील्ड' में आये हो? किन्तु आज हम तुम्हारी एक न चलने देंगे।"

घोष ने इसके उत्तर मे कुछ नहीं कहा, वह केवल मुसकराता ही रहा।

प्रिन्सपल ने एक पैसा ऊपर फेंक कर कहा—"घोष बोलो।"

घोष ने कहा—'हैड्स'

"हैड्स नहीं है"—ब्रायन ने हँसते हुए कहा—"चलो घोष, जीत किसी की भी हो, खेल आज का अवश्य अच्छा होगा।"

घोष "फील्ड" में अपने स्थान पर खड़ा हुआ मन ही मन ब्रायन की सज्जनता की सराहना कर रहा था। "वुली" के लिए जब "रैफरी" ने सीटी बजाई तो वह रात को होने वाले काण्ड के सम्बन्ध में विचार कर रहा था। ब्रायन उसकी गफलत से लाभ उठा कर तुरन्त गेंद ले भागे और सीधा ले जाकर गोल कर दिया। पुलिस पक्ष के दर्शकों में गगन भेदी हर्षध्वनि हुई और विद्यार्थी समुदाय में गम्भीरता छा गयी।

दोनों टीम वाले अपनी अपनी जगह पर खेल रहे थे। ब्रायन "सेन्टर फारवर्ड" और घोष "सेन्टर हाफ़" खेल रहे थे।

घोष ने अपने पक्ष को हारते देख कर मन में कहा कि पीछे चाहे कुछ भी हो इस वक्त खेल तो लिया जाय। और सचमुच घोष ऐसा खेलने लगा मानो उसके जीवन की बाज़ी लगाई गई हो। गेंद दोनों तरफ गजब की तेजी से नाचने लगी। हाफ टाइम के कुछ ही पहले ब्रायन को दिए गए एक "पास" को घोष ने बीच ही में रोक लिया। इसके बाद पहले बाईं तरफ और फिर दाहिनी तरफ पास करने का बहाना किया और पुलिस के दोनों "बैकों" से क्षण मात्र में गेंद निकाल कर बड़ी खूबसूरती से गोल कर दिया। गोल होते ही विद्यार्थी समुदाय ने तरह तरह की आवाज़ों से अपना हर्ष प्रकट किया, जिसमें पुलिस वालों ने भी तालियाँ बजा कर साथ दिया।

ब्रायन ने घोष की पीठ थपथपाते हुए कहा—"शाबाश घोष शाबाश, बहुत अच्छे रहे। खेल बड़ा अच्छा हो रहा है।"

कुछ ही देर में हाफ टाइम की सीटी बज गयी।

खिलाड़ियों के प्रशंसक और साथी फील्ड मे जमा हो गए और उन्हे विजय प्राप्त करने के कितने ही अनावश्यक और असाध्य ढंग बतला कर अपना ज्ञान प्रकट करने लगे। घोष खेल की उत्तेजना मे अपने आप को भूला बैठा था कि कंधे पर किसी का हाथ पड़ने पर वह चौक पडा और तब उसे होश आया कि सामने बनर्जी खडा हुआ मुसकरा रहा है।

"वाह घोष, खूब खेल रहे हो। जरा घुटने का ख्याल रखना, मै उस कोने पर रहूँगा।"

"क्या?"—घोष ने जैसे सोते से जागते हुए कहा।

"याद रखो कि यह हाकी मैच केवल खेल ही है। वास्तविक काम तो पीछे होगा। घुटने की चोट का ख्याल रखना।"

बनर्जी और गुप्ता इसके बाद भीड़ मे मिल गए और घोष अकेला रह गया। एकाएक यह विचार आते ही कि आज उसे क्या करना है उसका दिमाग चक्कर खाने लगा। उसने देखा कि ब्रायन एक तरफ खड़े हुए प्रिन्सिपल और मेटलैंड से बातें कर रहे हैं। उन लोगो से कुछ दूरी पर खडा होकर घोष ने सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस से कहा—"क्या मै आप से कुछ बातें कर सकता हूँ?"

"जरूर, घोष"—ब्रायन ने उसके पास आकर पूछा—"क्या है?" घोष चुपचाप खड़ा रहा। इसके बाद बोला—"आपकी जो मुझ पर मेहरबानी रही है इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ। यह वर्ष लगभग समाप्त हो चुका है और यह शायद हमारा अन्तिम मैच भी है। आगामी वर्ष मैं यहाँ न रहूँगा।"

"इसके लिए मुझे बडा खेद है, घोष। तुम अच्छे खिलाड़ी और बडे योग्य कप्तान रहे। तुम्हारे न रहने से हम सभी को खेद होगा। पुलिस में आने के सम्बन्ध में तुमने क्या

तय किया। यदि तुम निश्चय कर लो तो बाकी सब कार्रवाई मैं कर लूँगा। तुम्हारे ही जैसे आदमी की मुझे जरूरत है।"

"इसके लिए अनेक धन्यवाद। खेद है मेरे लिए पहले ही प्रबंध हो चुका है।"

"बहुत अच्छा। किन्तु घोष, याद रखना। यदि तुम्हें मेरी सहायता की आवश्यकता पड़े तो लिखने मे संकोच न करना। मैं कुछ दिनों मे छुट्टी लेकर थोड़े समय के लिए बाहर जाने वाला हूँ। बहुत सम्भव है वापस आने तक तुम चले जाओ। इसलिए गुडबाई। कभी कभी मुझे लिखते रहना कि तुम्हारा कैसा हालचाल है।"

सीटी बजी और खेल होने लगा। घोष को खेल में बिलकुल दिलचस्पी नहीं रह गई थी, उसे जल्दी ही घुटने की चोट का बहाना करके लेट जाना था। दोनो पक्ष के बीच "कार्नर" पर संघर्ष हो रहा था कि अचानक पीछे से किसी का धक्का लगते ही वह गिर पड़ा। "फाउल" की सीटी बज गयी, घोष अभी तक ज़मीन पर पड़ा हुआ था। तब दोनों रैफरी और खिलाड़ी उसके पास आकर खड़े हो गए।

पैर की एलेस्टिक की तरफ इशारा करते हुए घोष ने कहा—"आह ..घुटना—इसकी चोट फिर उभड़ आई।"

प्रिन्सिपल ने कहा—"बडे अफसोस की बात है। इसे फील्ड के बाहर करना चाहिए।"

"मैं सब ठीक कर लूँगा"—बनर्जी ने सामने आकर कहा और वह गुप्ता की सहायता से घोष को अपने कमरे मे ले गया।

ब्रायन ने घोष की जगह नया खिलाड़ी रखने की अनुमति भी दे दी, किन्तु घोष के बिना पुलिस वालो ने आसानी से विद्यार्थियों को हरा दिया।

मैच के बाद ब्रायन और मेटलैंड प्रिन्सिपल के बँगले मे जलपान के लिए गए। ब्रायन ने तब मेटलैंड की अनुमति लेकर प्रिन्सिपल से अपने काम की बात छेड़ी—"विद्यार्थियो का आजकल क्या हाल है ?"

"जहाँ तक मेरी जानकारी है, आजकल सभी विद्यार्थी यूनिवर्सिटी परीक्षाओं की तैयारी मे लगे हैं, जो आगामी सप्ताह से आरम्भ होने वाली हैं । मेरा अनुमान था कि पंडितजी की गिरफ़ारी के बाद कुछ उत्तेजना फैलेगी, किन्तु यह समय भी बिना किसी कठिनाई के बीत गया ।"

"क्या आपकी जानकारी में हाल ही मे कोई विशेप घटना हुई है ?"

"नहीं, जहाँ तक मेरा ख्याल है, कोई नही हुई। केवल एक छोटी सी घटना से मुझे कुछ आश्चर्य अवश्य हुआ था। कुछ दिन पहले मैं एकाएक होस्टल पहुँच गया था। उस दिन मैंने दो विद्यार्थियों को एक ही कमरे में पाया। वार्डेन से अनुमति लिए बिना ऐसा करना एक बेकायदे बात है। यह विद्यार्थी थे बनर्जी और घोप। सबसे ताज्जुब की बात तो यह थी कि इन दोनों के एक साथ रहने की इसके पहले मैं कल्पना तक नहीं कर सकता था।

ब्रायन ने कहा—"मैं घोप को जानता हूँ। बड़ा अच्छा लड़का है। आज शाम को मैंने उससे पुलिस मे आने को भी कहा, पर वह बोला कि उसका प्रबंध पहले ही कर लिया गया है। अच्छा बनर्जी कौन है ?"

"उसके सम्बंध में मैं आपको अधिक नहीं बतला सकता। पार साल वह एम० ए० के अंगरेज़ी के दर्जे में भरती हुआ था। आज

तक इतना तेज लडका मेरे देखने मे नहीं आया। वह बड़ा हँसमुख और मिलनसार है, परन्तु किसी खेल मे भाग नहीं लेता। मेरे समझ मे यह नहीं आता कि उसमें और घोष में इतनी मैत्री क्यों है ?"

"बनर्जी आया कहाँ से था ?"—ब्रायन ने प्रश्न किया।

"कलकत्ता से। हाँ, मुझे उसके सम्बंध में एक और विचित्र बात ज्ञात हुई। उसने कई वर्ष पहले बी० ए० पास किया था। मैंने पूछा कि इतने साल तक क्या करते रहे तो उसने बीमारी और आर्थिक कठिनाई के कारण बतलाए।"

"बनर्जी फिर यहाँ आया कैसे ?" ब्रायन ने प्रश्न किया।

"मैंने इससे यह पूछा था। उसने बतलाया कि यहाँ उसका चाचा है, जिसने उसके रहने के लिए स्थान और पढाई का खर्च देने का वायदा कर लिया है। इस तरह के कितने ही लड़के आते रहते हैं, इसलिए मैं इस बात को भूल भी गया था। इसके सिवाय उसके सार्टिफिकेट भी दुरुस्त थे।"

"क्या आप इन सब बातो की जाँच कराने की कृपा करेंगे ?"

"अवश्य, भूलने के भय से मैं नोट भी किये लेता हूँ।"

"मैं यह अनुरोध आपसे एक कारण वश कर रहा हूँ। करीब एक साल से बंगाल के क्रान्तिकारी दल का एक बहुत ही खतर-नाक नेता गायब है। ऐसा जान पडता है कि वहाँ अपनी दाल गलती न देख कर या सी० आई० डी० द्वारा बुरी तरह पीछा किए जाने पर वह वहाँ से भाग निकला है। अभी तक उसका निश्चित रूप से पता नहीं लगा है, किन्तु सन्देह किया जाता है कि वह कहीं इसी तरफ है। मैंने जिले का कोना कोना छान डाला है पर उसका पता कहीं न चला। इस बात की काफी सम्भावना है कि

कहीं आपके विद्यार्थियों ही में वह छिपा न हो। ऐसा करना आग के साथ खेलना अवश्य है, किन्तु उस दुस्साहसी आदमी के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। क्या वनर्जी को ज्ञात हुए विना आप सभी वातों का पता लगा सकते हैं ?"

"हाँ, हाँ, जरूर" प्रिन्सिपल ने उत्तर दिया।

"यदि ऐसा कर सकें तो मैं आपका वड़ा कृतज्ञ रहूँगा। यदि वनर्जी ही वह क्रान्तिकारी है तो उसे यह पता न लगना चाहिए कि उसके सम्वन्ध में जाँच-पड़ताल हो रही है। यदि वह निर्दोष निकला तो उसे यह जानकर दुख होगा कि व्यर्थ ही उस पर शक किया जा रहा है।

इसके वाद मेटर्लंड की तरफ देखकर ब्रायन ने कहा—"भई मेटलैंड माफ करना तुम तो इन वातों से बिलकुल ऊब रहे होगे।"

"नहीं, बिलकुल नहीं। मुझे तो इन वातों में वडा मजा आ रहा था। आखिर विद्यार्थियों का दृष्टिकोण कैसा होता है ?"

"यह तो आपने वडी कठिन वात पूछ डाली। अधिकांश लड़के सरकारी नौकरी पाने के इरादे से कालेज में डिग्री लेने आते हैं। साधारणत विद्यार्थियों में असन्तोष नहीं होता। सहानुभूति और उदारता दिखाने पर वे भी वैसा ही व्यवहार करने को तैयार हो जाते हैं। केवल राजनीतिक हलचल के समय वे उत्तेजित हो उठते हैं। विद्यार्थियों की देशभक्ति की भावना धार्मिक उत्तेजना से कम नहीं होती। यहाँ तक कि एक अव्यावहारिक आदर्श के लिए भी वे अपना सव कुछ त्यागने को तैयार हो जाते है।"

"सचमुच मुझे आप दोनों के भाग्य पर ईर्षा होती है। हम सैनिक लोग वास्तव में वड़ा नीरस और निरुत्साहपूर्ण जीवन

व्यतीत करते हैं। सच्चे सैनिक तो आप ही लोग हैं, जो अदृश्य शक्तियों के संघर्ष में सदा व्यस्त रहते हैं।"

"हाँ जरूर"—ब्रायन ने कुछ ताने में कहा—"जनाब यह अदृश्यता ही तो सब बुराई की जड़ है। अच्छा मेटलैंड, हटाओ इस पचड़े को—अब चलना चाहिये। मैंने तुमसे और पैडल से क्लब में आठ बजे मिलने का वादा किया है।'

ब्रायन को घर पर नहाने और कपड़े पहनने में अधिक समय नहीं लगा। जब वह बाहर निकले तो मोटर सामने आकर लग गई, किन्तु प्रेमसिंह अभी तक दिखाई न पड़ता था। उन्होंने नौकर को उसे तुरन्त भेजने की आज्ञा दी।

नौकर कुछ ही मिनट में दौड़ता हुआ आया। उसका चेहरा भय के कारण पीला पड़ गया था।

"साहब! साहब!! प्रेमसिंह मरा पड़ा है।'

ब्रायन ने तुरन्त सिविल सर्जन को फोन किया, जिनका बँगला निकट ही था और इसके बाद प्रेमसिंह के मकान की तरफ दौड़े।

प्रेमसिंह जमीन पर पड़ा हुआ था और उसमें जीवन के कोई चिह्न दिखाई नहीं पड़ते थे। पास ही थाली में उसका आधा खाया हुआ भोजन पड़ा था। ब्रायन ने घुटने के बल झुक कर उसकी नब्ज टटोली तो जान पड़ा उसमें कुछ गति अब भी मौजूद है, किन्तु उसे होश मे लाने के उनके सभी प्रयत्न बेकार गए।

सिविल सर्जन के आने पर ब्रायन ने उन्हें सब हाल बतलाया। सिविल सर्जन ने उसे देख कर बचे हुए भोजन को अपनी कार में रखवा लिया।

इसके बाद उन्होंने ब्रायन से पूछा—"इसे आप जानते तो अच्छी तरह हैं ?"

"बहुत अच्छी तरह। यह मेरा अर्दली है और बराबर साथ रहता है।"

"क्या यह कोई नशा भी करता है ?"

"कभी नहीं, यह आदमी बड़ा गम्भीर और विश्वसनीय प्रकृति का है। रात दिन यह मेरे साथ रहता है और अपने काम में कभी गफ़लत नहीं करता।"

"मेरे ख्याल में इसे जहर नहीं खिलाया गया। इसे कोई नशीली वस्तु अधिक मात्रा में दी गई है। कल खाने की चीजों की परीक्षा करके मैं आपको निश्चय कर के बतलाऊँगा। कम से कम अठारह घंटे तक यह इसी तरह पड़ा रहेगा। इसे हवा में ले आइये और देखभाल के लिए कोई विश्वसनीय व्यक्ति नियुक्त कर दीजिए। कोई विशेष आवश्यकता जान पड़े तो फोन कर दीजिएगा, किन्तु मुझे कोई खतरा नहीं जान पड़ता। शरीर हृष्ट पुष्ट और दिल मजबूत होने के कारण यह प्रात काल उठ बैठेगा, किन्तु उसकी तबीअत उदास अवश्य रहेगी।"

"धन्यवाद, मैं एक विश्वसनीय सब-इन्सपेक्टर ड्यूटी पर नियत किए देता हूँ। क्या करूँ एक पार्टी में सम्मिलित न होना होता तो मैं खुद ही इसकी देख भाल करता।"

"पार्टी क्या लालाजी की ?"

"हाँ, मैं मेजर मेटलैंड और कैप्टिन पैडल को भी साथ लिए जा रहा हूँ।"

"मुझे भी निमंत्रण मिला था। पर इसके पहले ही मैं मि० ओकले से ब्रिज खेलने का वादा कर चुका था। लालाजी बड़े भले आदमी हैं।"

"हाँ, बड़े भले हैं। उन्हें मैं निराश नहीं करना चाहता, नहीं तो फोन पर सूचना दे देता कि आज नहीं आ सकता।"

"नहीं इसकी जरूरत ही क्या है ? आपके रहने ही से क्या हो जायगा। एक बात और है। यदि आधी रात के पहले जरूरत पड़े तो मुझे मि० ओकले के यहाँ फोन किया जाय और उसके बाद बँगले पर। अब अधिक उम्र हो जाने के कारण मैं रात को देर तक जागता नहीं हूँ।"

सिविल सर्जन तब अपनी मोटर में बैठने चले। बैठते बैठते बोले—"आज कल आपको बड़ी मेहनत पड़ रही है मि० ओकोनर, अच्छा हो यदि आप कुछ दिनों की छुट्टी ले लें। यदि सावधानी से न रहेंगे तो आपको मेरी डाँट सुनना पड़ेगा।"

"अरे हटाइये, मुझे हुआ ही क्या है ? और कुछ दिनों में छुट्टी तो मैं ले ही रहा हूँ।"

"यह सुन कर मुझे सन्तोष हुआ। अच्छा गुडबाई।"

"गुड बाई, आपको कष्ट हुआ। इसके लिए धन्यवाद।"

ब्रायन ने इसके बाद प्रेमसिंह को अपनी चारपाई के पास ही लान पर लिटा दिया और पास ही एक सब-इन्सपेक्टर नियुक्त कर दिया।

"देखो मैं आधी रात तक वापस आ जाऊँगा। तुम काफ़ी मेहनत कर चुके हो इसलिए इस समय बुलाना उचित तो न था, क्योंकि यह आराम का वक्त है किन्तु—"

"अरे, इसकी फिक्र न कीजिए। साहब, बस आप मुझ पर विश्वास रखिए। मैं हमेशा आपके लिए जान देने को तैयार हूँ।"

ब्रायन जानते थे कि उनके सहकारी उन्हें कितना चाहते हैं, किन्तु इस वक्त वे यह सब सुनने को तैयार न थे। इसलिए झट कार में बैठ कर तेजी से क्लब की तरफ रवाना हो गए। उन्हें काफी देर हो चुकी थी। इसके सिवाय उन्हें पैडल और मेटलैंड के सम्बन्ध में भी निर्णय करना बाकी था। प्रेमसिंह के बेहोश होने के कारण वे भी परिस्थिति को गम्भीर समझने लगे थे। वे नहीं चाहते थे कि उनकी वजह से उनके मित्रों में से कोई भी खतरे में पड़े।

इस बीच में बनर्जी और गुप्ता घोष को अपने कमरे में ले आये। गुप्ता इस बात पर बिगड़ रहा था कि उसे ऐसा साधारण सा काम क्यों सौंपा गया, पर बनर्जी ने कह सुन कर उसका मुँह बन्द कर दिया। वार्डन से इस बात की अनुमति भी ले ली गई कि वे दोनों रात भर उसके पास ही कमरे में रहेंगे। इस तरह नाटक के अन्तिम दृश्य की सभी तैयारियाँ हो गईं।

लालाजी की पार्टी

"अरे, ब्रायन आगए"—उन्हें देखते ही पैडल ने कहा—"पर तुमने कुछ देर अवश्य कर ली। अब गपशप करने के लिए बहुत कम समय मिलेगा।"

"इसके लिए मुझे हार्दिक खेद है, किन्तु इसमें कसूर मेरा बिलकुल नहीं है। मेरा अर्दली प्रेमसिंह एक दुर्घटना में पड़ गया। आने के पहले मुझे उसका इन्तज़ाम भी करना पड़ा।

"क्या कोई गम्भीर दुर्घटना हो गयी ?"—मेजर मेटलैंड ने पूछा ?

"हाँ गम्भीर हो सकती है, किन्तु यह घटना नहीं, उसका परिणाम। इस हालत मे मैं चाहता हूँ कि आप लोग अपनी ही कार में लालाजी के यहाँ जायँ और वापस आते समय शहर से घूम कर आवें।"

"और तुम ?" पैडल ने पूछा।

"मैं रोड्स के रास्ते से ही आऊँगा। बात यह है कि इस मार्ग से आज मुझे कुछ खतरा जान पड़ता है। इस खतरे का सामना करने के लिए मैं खुद तो तैयार हूँ, किन्तु तुम दोनो को उसमें नहीं डालना चाहता।'

"खतरा!'—पैडल चिल्ला उठे—"वाह ब्रायन, तब तो खूब मजा आवेगा। पर हो बड़े स्वार्थी, यह सब का सब मजा तुम अकेले ही लूटना चाहते हो। नहीं, हम जरूर इसमे हाथ बटावेंगे, क्यो मेटलैड ?

मेटलैंड ने ब्रायन की तरफ देखा तो वे कुछ गम्भीर जान पड़े। उन्होने धीरे से कहा—"हम चाहते है कि इस परिस्थिति को तुम हमें समझा दो। सम्भव है कि तुम उसे गुप्त रखना चाहो या अकेले ही उसमे पड़ना चाहो, तो हम हस्तक्षेप नहीं करेंगे। कहोगे तो आज का भोजन भी क्लब में ही कर लेंगे। परन्तु तुम्हारे काम में यदि किसी प्रकार की सहायता दे सकते हैं तो ऐसा करने में हमें हार्दिक खुशी होगी।'

"अवश्य अवश्य"—पैडल बोल उठे—"देखो ब्रायन यदि तुमने अनावश्यक रूप से इस बात को छिपाया तो मैं आज से तुम से बोलना छोड़ दूँगा!'

पैडल की बात से एक क्षण के लिये मेटलैंड और ब्रायन के मुँह पर क्षीण हँसी की रेखाएँ अंकित हो गईं।

तब ब्रायन ने कहना आरम्भ किया—"इस मामले में तुम दोनों से छिपाने की कोई बात नहीं जान पड़ती। कल प्रातःकाल मुझे सूचना मिली कि आज मेरी जान खतरे में है और पार्टी से वापस लौटते समय मुझ पर आक्रमण भी किए जाने की सम्भावना है। इस सम्बन्ध में निश्चित जानकारी मुझे कुछ भी न थी, परन्तु आज सायंकाल को जब किसी ने मेरे अर्दली को कोई तेज नशा धोखे से खिला कर बेकाम कर दिया तो मैं सोचने लगा कि कोई असाधारण घटना हो जाने की काफी सम्भावना है। मेरा ख्याल है कि आक्रमणकारियों ने प्रेमसिंह को नाकाम करने का विचार इसीलिए किया होगा कि रात के समय अपने साथ ले जाने के लिये मुझे कोई दूसरा आदमी न मिल सके। उन्होंने शायद यह भी अनुमान कर लिया होगा कि लालाजी का मकान मेरे मकान से इतना नजदीक है कि वहाँ तक अकेला जाने में मैं हिचकिचाऊँगा भी नहीं।"

"आखिर यह आक्रमणकारी हैं कौन?"—मेटलैंड ने बड़ी उत्कंठा से पूछा।

"यही तो मैं जानना चाहता हूँ और इसीलिए यह खतरा भी उठा रहा हूँ, जिससे कि बिना किसी कठिनाई के मैं अपनी जान बचा सकता था। इस जिले में क्रान्तिकारियों का काम जोरों से चल रहा है। मेरा विचार है कि खतरा चाहे कितना भी क्यों न उठाना पड़े, इन लोगों का कुछ न कुछ पता मुझे अवश्य लगाना चाहिए।"

"प्रेमसिंह का नाकाम होना हमारे लिए अच्छा ही हुआ"—पैडल ने हँसते हुए कहा—"उसके स्थान पर हम तुम्हारी रक्षा

करेंगे। क्यों मेटलैंड कैसा रहा ? आयन तुम्हारे पास कुछ रिवाल्वर वगैरह है ?"

आयन ने उत्तर दिया—"दो हैं, एक मेरा दूसरा प्रेमसिंह का।"

"बस काफी है। एक मुझे दे दो और दूसरा मेटलैंड को—'

"—और मै क्या करूँगा ?"—आयन ने स्तब्ध होकर पूछा।

"तुम ड्राइव जो करोगे। बात यह है कि तुम्हारे छकड़े (पुरानी मोटर) को चलाना मेरी सामर्थ्य के बाहर है। मैं बगल में बैठ कर तुम्हारी बाईं तरफ़ से रक्षा करूँगा और मेटलैंड पीछे की सीट पर बैठे हुए दाहिनी तरफ का ख्याल रखेंगे।"

"लेकिन ·····"—आयन ने चाहा कि मित्रों की इस उदारता का विरोध करें, किन्तु मेटलैंड ने उन्हें आगे बोलने का अवसर न दिया।"

"बस आयन अब कुछ न कहो। पैडल ने स्थिति की कठिनाई का अनुभव करके जो सोचा है, उससे उत्तम और कुछ नहीं हो सकता। अच्छा, अब यह बतलाओ कि पीर्टी में शिष्टाचार की किन बातों का ध्यान हमें रखना होगा। हम नहीं चाहते कि हमारी किसी बात से दूसरों के दिल को व्यर्थ चोट पहुँचे।'

"बतलाऊँ क्या, कुछ भी तो नहीं है। लालाजी जब अपने यहाँ यूरोपियन मेहमानों को आमन्त्रित करते है तो उनके उठने बैठने और खाने पीने का सब प्रबन्ध यूरोपियन ढंग पर करते हैं। उनके यहाँ आपको लगभग आधे दर्जन बैरिस्टर मिलेंगे, जिनमें कुछ के साथ उनकी यूरोपियन पत्नियाँ भी रहेंगी और कुछ नगर के रईस भी होंगे। चलो अब चला जाय।'

लालाजी के यहाँ जब यह लोग पहुँचे तो उन्होंने इन

का बडे प्रेम से स्वागत किया। लालाजी स्वय भी डिनर का सूट पहने हुए थे। एक सजे सजाए और बडे ड्राइंग रूम मे मेहमान अपने स्थानों पर बैठे हुए बातें कर रहे थे। ब्रायन का अनुमान ठीक ही था। आगत सज्जनों में स्थानीय रईस, बैरिस्टरगण, लालाजी के रिश्तेदार और उर्मिला के सिवाय और कोई न था।

इन सभी ने ब्रायन का एक पुराने मित्र की हैसियत से स्वागत किया तथा उनके मित्र के नाते मेटलैंड और पैडल के साथ भी उपस्थित व्यक्तियों ने आदर और सौजन्यता का व्यवहार किया।

पैडल की बातें कुछ देर तक हाल में लंदन से लौटे हुए एक बैरिस्टर से होती रही।

मैटलैंड कई रईसों से बात करने लगे। इनमें से एक ने (जिसे अगरेजी बोलने में कुछ कठिनाई होती थी) उन्हे जाड़े के मौसम में अपनी जमीन्दारी में शिकार के लिए आमत्रित भी किया।

ब्रायन उर्मिला के बगल मे बैठ गये। उन्होंने मित्रों का परिचय देते हुए उसे बतलाया कि रात को दोनों उनके अगरक्षक का काम करेंगे। वे उर्मिला को प्रेमसिंह वाली घटना बताने ही वाले थे कि उन्हें ख्याल आगया कि ऐसा करने से वह बिलकुल घबरा जायगी।"

ब्रायन की रक्षा के लिये दो व्यक्ति उनके साथ रहेंगे यह सुन कर उर्मिला को बड़ी खुशी हुई, बोली—"दिन भर मैं बहुत घबरा रही थी अब सायंकाल से मेरे जी में कुछ शान्ति आई है। फिर भी आप सतर्क रहिएगा। क्यों, रहिएगा न ?

"जरूर, कल सुबह देखोगी कि मैं जाँच के लिए तुम्हारे यहाँ पहुँच गया हूँ।"

"कैसी जाँच ?"

"तुम्हारे कमरे की—यह देखने के लिये कि तुम सफाई से रहती हो या नहीं ?"

"बहुत अच्छा"—उर्मिला हँसती हुई बोली—"देखिये ठीक पाँच बजे पहुँच जाइयेगा। मुझे आपको देख कर बड़ी खुशी होगी।"

"अच्छा, पर सुनो इसके लिये खास तौर पर तैयारी करने की फिक्र में व्यर्थ परेशान न होना।"

"खास तो नहीं पर कुछ तैयारी तो अवश्य करूँगी। आपको चाय अवश्य पिलाऊँगी।"

इसके बाद दोनों बड़ी देर तक अन्य बातें करते रहे। भोजन के समय लालाजी ब्रायन और मेटलैंड के बीच में बैठे हुए थे। इनके सामने पैडल थे और उनके बगल में थी उर्मिला।

पैडल और मेटलैंड दोनों ही को लालाजी के यहाँ का अपटूडेट प्रबन्ध, उनका सौजन्यतापूर्ण व्यवहार और साजसामान को देख कर बड़ा आश्चर्य्य हुआ। उन्हें एक ऐसे भारतीय समाज का पता लगा, जिसके सम्पर्क में वे कभी न आए थे और जिसकी वे कल्पना तक न कर सकते थे।

पैडल पर उर्मिला के अनिद्य सौन्दर्य्य का बड़ा प्रभाव पड़ा। उर्मिला के निकट बैठने के कारण अपने हृदय के भीतर वे एक मीठी गुदगुदी का अनुभव कर रहे थे। परन्तु साथ ही वे झेंप भी रहे थे, सोच रहे थे कि किस तरह बात आरम्भ की जाय।

उर्मिला उनकी यह दुविधा देख कर मुसकरा उठी और पूछने लगी कि भारत उन्हें पसन्द आया या नहीं ?

पैडल उर्मिला की रूप-माधुरी का पान कर रहे थे। उसके बोलने से उन्हें ऐसा जान पड़ा मानो किसी ने कानों में अमृत

उँडेल दिया हो। उन्होंने उत्तर दिया—"भारत मे आ अवश्य गया हूँ, किन्तु यह बतलाना मेरे लिये असम्भव है।"

"क्या आप अभी विलायत मे आए हैं ?"

"नहीं काफी समय हो चुका लगभग पाँच वर्ष।"

"तब तो आप अवश्य जान गए होंगे कि यह देश कैसा है ?"

"नहीं, कठिनाई तो यही है। पहले मेरा ख्याल था कि भारत की जानकारी मुझे काफी है। खूब शिकार, सैर-सपाटा, पोलो और गजब की गरमी—इसी को मैं भारत समझता था। देखिये, यहाँ कितने सभ्य और सुसंस्कृत भारतीय है, किन्तु इनके बारे मे मुझे कुछ भी जानकारी न थी।"

पैडल ने उर्मिला की तेज दृष्टि से बचने के लिए आँखें नीची कर लीं और कहने लगे—"आप यह भी न समझियेगा कि इस सत्य को समझने की बुद्धि ईश्वर ने मुझे दी है। सच तो यह है कि देश में रहने वाले लोगो का परिचय प्राप्त करने की इच्छा मुझे कैप्टिन ब्रायन ओकोनर के ही कारण हुई है। इन दिनों उनके जैसे विवेकशील लोगों की आवश्यकता बहुत अधिक है।"

पैडल की बातो का उर्मिला पर इतना प्रभाव पडा कि ब्रायन ने यदि उसके हृदय में स्थान न कर लिया होता तो वह उनके तरफ अवश्य आकर्षित हो जाती।

"आखिर यह कांग्रेस क्या बला है ?"—पैडल ने तनिक हिचकिचाहट के साथ उर्मिला से प्रश्न किया।

उर्मिला ने प्रश्नकर्ता की तरफ मुड कर देखा। पैडल की आँखों मे स्निग्ध और निष्कपट भाव देख कर वह बोली—"मेरे पिता भी

कांग्रेस के एक नेता हैं। कुछ दिन हुए उन्हें छः मास कारावास का दण्ड दिया गया है।"

"हे भगवन्, कितनी लज्जा की बात है—पर आप मुझे सब बातें बतलाइये, मैं कुछ भी नहीं जानता।'

कैप्टिन पैडल की सरलता देख कर उर्मिला के मुख पर मुसकराहट की एक रेखा खिंच गई।

तब पैडिल ने टेबिल की दूसरी तरफ बैठे हुए ब्रायन को सम्बोधित करते हुए कहा—"देखो ब्रायन, जहाँ कहीं भी मैं यह शब्द मुँह से निकालता हूँ, मैं कठिनाई में पड़ जाता हूँ।"

"तुम्हारा मतलब शायद कांग्रेस से है"—ब्रायन ने हँसते हुए कहा—"यहाँ जितने भी लोग बैठे हुए हैं उनमें से अधिकाश या तो कांग्रेसवादी हैं या उसके प्रति सहानुभूति रखने वाले हैं।"

"हटाइये इस विषय को—मै काग्रेस के सम्बन्ध मे कहीं न कहीं से जानकारी प्राप्त कर ही लूँगा। समाचार पत्र तो मैं अब भी देखता हूँ, किन्तु उसमें से केवल वही चीजें पढ़ता हूँ, जिनमे मुझे दिलचस्पी रहती है।"

उर्मिला हँसते हँसते टेबिल की तरफ झुकती हुई बोली—"ब्रायन, सचमुच आपके मित्र बड़े आनन्ददायक हैं।"

"देखो, उर्मिला यदि यही हालत रही तो मुझे पैडल के भाग्य पर ईर्षा होने लगेगी।"

"नहीं, जनाब। इसका खतरा सिर्फ आपके दिमाग मे ही है। पैडल इस समय हार्लिंघम में पोलो खेलने की बात सोच रहे हैं"—मेटलैंड ने हँसते हुए कहा।

"क्या आप कभी हार्लिंघम गई हैं"—पैडल ने उर्मिला से पूछा।

"अकसर, मै अपने पिता के साथ जाया करती थी और लेडी आर्लिंगटन के यहाँ ठहरती थी। सभी बड़े मैच मै शौक से देखा करती थी।"

"वाह, यह खूब रही। लेडी आर्लिंगटन तो मेरी चाची हैं।"

इसके बाद उर्मिला और पैडल परस्पर बतलाने लगे कि एक दूसरे के किन किन मित्रों से उनका पुराना परिचय है।

"क्या आपको पोलो देखने का शौक है?"—पैडल ने प्रश्न किया।

"बहुत अधिक—"

"तब एक दिन हमारे यहाँ क्यों न चली आइये। हार्लिंघम का सा तो नहीं, किन्तु पोलो का साधारण खेल आपको यहाँ भी देखने को मिल जायगा। मैं आपको बँगले से आकर ले जाऊँगा।"

"देखा न उर्मिला? पैडल ने डींग हाँकना शुरू कर दिया"—ब्रायन बीच ही में बोल उठे—"अब यह तुम्हें अपनी रोल्सरायस कार और पोलो दिखाना चाहते हैं। क्या तुम जानती नहीं कि यह नगर में पोलो के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी हैं।"

पैडल पानी पानी हो गए, बोले—"देखो मेटलैंड, ब्रायन को यहाँ से हटाओ, मुझे यह बातें क़तई पसन्द नहीं हैं।"

उर्मिला को पैडल की घबराहट पर दया आगई और वह बोली—"मैं आपका खेल देखने अवश्य आऊँगी।"

'और जब तक यह खेलेंगे, मैं आपके साथ रहूँगा।"

उर्मिला ने टेबिल की दूसरी तरफ देखा और मेजर मेटलैंड को पहचान गई। पिता के मुकदमे के समय सैनिकों को लेकर यही

तो आए थे। उर्मिला की आँखों के आगे एक क्षण के लिए सब दृश्य उपस्थित हो गया—एक तरफ सैनिकों की तनी हुई बन्दूकें, दूसरी तरफ़ भीड़ और बीच में मूर्ति की तरह खड़े हुए पंडितजी। किन्तु, इसमे मेटलैंड का क्या दोष ? यदि गोली चलानी भी पडती तो ऐसा करके वे केवल अपने कर्तव्य का ही पालन करते।

मेटलैंड ने मन में कहा—"अच्छा ही हुआ, जो उस दिन मुझे गोली न चलानी पड़ी।"

कुछ देर तक शान्त रहने के बाद उर्मिला बोली—"इस कृपा के लिए धन्यवाद मेजर मेटलैंड—और ब्रायन, आप मेरे लिए क्या करेंगे।"

"मेरे लिए शेष ही क्या रहा है ? आप लोगो के बीच मे पड-कर मैं सब गुड़ गोवर नहीं करना चाहता। तीन आदमियो की अपेक्षा दो का रहना ही ठीक होता है। जो भी हो, मेरी छुट्टी मंजूर हो गई है। कुछ दिनो में मैं बाहर जा रहा हूँ।"

बाहर जाने का ख्याल उठते ही मिस मे की स्मृति ब्रायन के हृदय में उठ आई और उनका मन आनन्द से नाच उठा। उससे मिलने की खुशी का अनुभव वे अभी से करने लगे। उर्मिला ने भी देखा और सब कुछ समझ गई। उसके दिल मे एक टीस सी लगी और मुँह रुआँसा हो गया। वह सोचने लगी कि ब्रायन अपनी भावी पत्नी से प्रेम करते हैं, इस बात की जितनी ही जल्दी मेरे दिल में गाँठ बँध जाय उतना ही अच्छा है। इसी बीच में पैडल ने टोंक कर उसका स्वप्न भंग कर दिया।

"आप किस सोच में पड़ कर एकाएक गम्भीर हो गईं ? खुशी की ही बात है न ?"

"खुशी और रंज दोनो ही उसमें हैं, कैप्टिन पैडल' —यह कह कर वह मुसकराने लगी।

डिनर के वाद पैडल और ब्रायन दोनों ब्रिज खेलने लगे। मेजर मेटलैंड को ताश का शौक़ न था इसलिए वे उर्मिला के पास वैठकर उससे वातें करने लगे।

"डिनर के समय आप मुझे पहचान गई थीं, यह मैं जान गया था। भीड़ उस दिन आसानी से छट गयी इसके लिए मैं सदा परमात्मा का शुक्रिया करता रहूँगा। मुझे आशा है, उस दिन की घटना के कारण आप मुझसे रुष्ट न हुई होंगी ?"

उर्मिला उत्तर देने लगी तो उसकी वडी वड़ी आँखो में आँसू भर आये।

"मेजर मेटलैंड, यदि कोई अपना कर्तव्य करे तो उसके लिए रुष्ट होना मेरे लिए वड़ी क्षुद्रता की वात होगी। उस दिन का मामला शान्त हो गया इसके लिए मैं भी ईश्वर की अनुग्रहीत हूँ।"

इसके वाद दोनों अनेक विषय पर वातें करते रहे। मेजर मेटलैंड को उर्मिला की सूक्ष्म-बुद्धि और सहृदयता देख कर वड़ा आश्चर्य हुआ। साहित्य, कला, राजनीति, धर्म सभी विषयों पर वातें हुई। उन्हें वातों में इतनी दिलचस्पी आ रही थी कि ब्रायन ने जव उनसे चलने के लिए कहा तो उन्हें कुछ वुरा भी लगा।

पैडल ने कार में ब्रायन के वगल में वैठते हुए कहा—"अच्छा अव हिफाजत का प्रवंध करना चाहिए। कार को साधारण रफ़्तार यानी १० मील प्रति घंटे की तेज़ी से चलाओ।"

यद्यपि पैडल मज़ाक की वातें करते चलते थे, फिर भी ब्रायन या मेटलैंड की अपेक्षा वे कुछ कम सतर्क न थे। मोटर सड़क

पर चली जा रही थी और उसकी रोशनी दूर बैठे हुए दो व्यक्तियों को साफ दिखलाई पड़ रही थी।

घोष ने क्या किया ?

दस बजते ही बनर्जी और घोष होस्टल से चल दिए और बड़ी सतर्कतापूर्वक निश्चित स्थान पर पहुँच गए। रात्रि के अन्धकार में छिपे हुए वे अपनी जगह पर खड़े हो गये।

घोष ने अपना दिल पक्का कर लिया था। उसे उर्मिला की याद रह रह कर आ रही थी। मुशीजी के कमरे में उसकी जो छवि उसने देखी थी, वह अब तक उसके नेत्रो के आगे नाच रही थी। बनर्जी की अवज्ञा करते समय वह कितनी सुन्दर जान पड़ती थी और उस समय उसके सहायता के अनुरोध को टाल जाने के कारण वह अपने को कितना क्षुद्र समझ रहा था, यह भी उसके मस्तिष्क मे फिर गया।

"मुझे आशा है उर्मिला सब कुछ समझ जायेगी"—घोष के मुँह से अनायास निकल पड़ा।

"क्या ?"—बनर्जी ने कड़क कर पूछा।

"नहीं, कुछ नहीं।"

"मैंने जाना तुम कुछ कह रहे हो। अब तुम्हारा चित्त कैसा है ?"

"पूर्ण शान्त और दृढ़।"

बनर्जी ने निकट आकर घोष की आँखों में अपनी आँखें डाल दीं। उनमे तृप्ति की छाप देख कर वह सन्तुष्ट हो गया।

अब तक कार्यक्रम की सभी बातें ठीक हैं। हाकी के मैदान में चोट लगना, प्रेम सिंह को नशा पिला कर बेहोश किया जाना और घटनास्थल पर उपस्थित न रहने के बहाने आदि योजना की सभी बातें जैसी सोची थीं, ठीक वैसे ही हुई। यह विचार मन में आते ही घोष के आगे जो कार्य था उसके लिए उसमें अपूर्व दृढता आ गयी।

"घोष अब तुम्हारा समय हो गया। याद रखना कि शरीर के अन्य भागों के बजाय सिर में गोली लगने से सफलता की अधिक आशा रहती है।"

"याद रखूँगा"—कहते हुए घोष उठ खड़ा हुआ और सामने आती हुई मोटर के मार्ग में सड़क के मध्य में लेट गया।

मोटर में बैठे हुए तीनों आदमियों की नज़र एक ही समय उस सफेद चीज पर पड़ी।

पैडल ने ब्रायन से कहा—"मोटर धीमी करो। मैं और मेटलैंड दोनों तरफ से जाकर देखते हैं कि यह क्या है। आओ मेटलैंड।"

मोटर की स्पीड पाँच मील प्रति घंटा कर दी गई। पैडल और मेटलैंड दोनों तरफ से निकल कर आगे बढ़ने लगे। ब्रायन मोटर में बैठे बैठे ही आगे बढ़े। सामने उन्हें एक दर्द भरी आवाज़ सुनाई दी। ब्रायन ने यह समझ कर कि कोई घायल व्यक्ति सड़क पर पड़ा हुआ छटपटा रहा है, मोटर रोक ली और नीचे उतर कर वे उस व्यक्ति की तरफ दौड़े।

उधर घोष ने भी सामने से मोटर को आते हुए देखा। उसके दाहिने हाथ में रिवाल्वर था और उँगली घोड़े पर रखी

हुई थी । उसने यह भी देखा कि मोटर रुकने के बाद ब्रायन उसकी तरफ दौड़े हुए आ रहे है।

कैप्टिन ओकोनर ब्रायन जब आधी दूर आ चुके तो घोष एकाएक खड़ा हो गया और रिवाल्वर की नली का अगला सिरा अपनी कनपटी के पास रख कर उसने गोली छोड़ दी। इसी समय दो आवाजे और भी हुई। पैडल और मेटलैंड ने जब घोष के हाथ मे रिवाल्वर देखा तो उन्होने एक साथ अपनी आटोमेटिक पिस्तौलों से गोलियाँ छोड़ दीं, किन्तु घोष की गोली इसके पहले ही अपना काम कर चुकी थी और इन लोगो की गोलियाँ उसके निर्जीव शरीर मे घुस गई।

"धोखा !"—यह अप्रत्याशित कारड देख कर बनर्जी के मुँह से धीरे से निकाल पड़ा। वह इन लोगो से केवल दस कदम की दूरी पर पिस्तौल लिये खड़ा था।

मोटर की तेज रोशनी मे घोष के निर्जीव शरीर के चारो तरफ खड़े हुए तीनो व्यक्ति बनर्जी को साफ दिखलाई पड़ रहे थे। यदि वह चाहता तो बहुत आसानी से एक-एक करके उन तीनो को समाप्त कर सकता था और एक बार उसके मन मे यह विचार आया भी, किन्तु दूसरे ही क्षण दल के प्रधान की आज्ञा का स्मरण उसे हो आया कि हत्या करना स्वयं उसका काम नहीं है और रक्तपात जितना ही कम हो उतना ही अच्छा है। यह सोच कर उसने अपना इरादा छोड़ दिया। इसके बाद निराशा और क्रोध से पागल बनर्जी दबे पाँव होस्टल मे वापस आ गया।

निश्चित इशारा करने पर गुप्ता ने दरवाजा खोल दिया। बनर्जी की जलती हुई आँखें और गम्भीर मुँह देखकर वह समझ गया कि असफलता हुई है, किन्तु प्रश्न करने का साहस वह न कर सका। इस बीच मे बनर्जी खुद ही बोल उठा—"चलो, इसी तरह

मेरे साथ चले आओ। अधिक समय नहीं है, सिर्फ रोशनी बुझा कर दरवाजा बन्द कर दो।"

गुप्ता ने ऐसा ही किया। यह लोग कुछ कहे बिना गम्भीर अंधकार मे छिप गए।

इस बीच मे आयन ने घोष के शरीर की परीक्षा की तो पता चला कि उसमे जीवन शेष रहने का कोई भी लक्षण नही है।

घोष जिस समय खड़ा हुआ था उसी समय आयन ने उसे पहचान लिया था। वे इतने निकट पहुँच चुके थे कि उसके चेहरे की मुसकराहट भी उन्हे साफ दिखलाई पड़ रही थी। उस क्षण उनका जीवन घोष की दया पर निर्भर था, फिर भी घोष ने उन्हें छोड कर अपने ही प्राणों का उत्सर्ग किया। अब उनकी समझ मे यह भी आ गया कि सायंकाल को हाकी के मैदान में उसने उनसे क्यो विदा माँगी और कहा कि उसके लिए पहले ही से प्रबन्ध हो चुका है। इससे यह भी साफ हो गया कि घोष उसी समय अपना अन्त करने का निश्चय कर चुका था। आयन को यह भी स्पष्ट हो गया कि उन्हें मारने के लिये घोष को नियत किया गया था पर उसने स्वय ही अपनी जान दे दी।

आयन अपने विचारों में इतने लीन थे कि पैडल की आवाज से वे चौंक उठे।

"देखो आयन, अगर वह चाहता तो तुम्हारी जान आसानी से ले सकता था और उसने अपने काम मे जल्दी भी कितनी की। आज गोली चला कर मुझे वास्तव मे दुख हो रहा है। उसके हाथ में रिवाल्वर देखते ही मुझे तुम्हारी जान की आशका हुई और इसके लिए कोई खतरा उठाने के वास्ते मैं तैयार न था।

"यही तो—हमारी गोलियाँ शरीर मे लगने के पहले ही बेचारा मर गया। ब्रायन, इस सब का क्या मतलब है? क्या तुम इस रहस्य को खोल सकते हो?"

मेटलैंड की यह बात सुनते ही ब्रायन का चेहरा और भी उतर गया और वे धीरे से बोले—"अभी मैं कुछ बतला तो नहीं सकता, किन्तु इस रहस्य के अंधकार मे प्रकाश की ज्योति मुझे कुछ कुछ दिखलाई पड़ने लगी है। इस बोप को मैं बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ। यह कालेज का विद्यार्थी है। आज ही सायंकाल को मै इसके साथ हाकी खेल चुका हूँ। हम दोनों मे परस्पर मैत्री भी खूब थी। खेल के बीच "हाफ टाइम" के समय उसने मेरे पास आकर विदा ली थी और कहा था कि अगली साल वह कालेज न आवेगा। बेचारा सत्य ही कहता था।"

कुछ मिनट चुप रहने के बाद ब्रायन फिर कहने लगे—"यह तो निश्चित ही है कि यह सब मेरी जान लेने का षड्यंत्र था और क्रान्तिकारी दल ने हत्या के लिए मुझे ही चुना था। इन लोगों की आयोजना भी बिलकुल साफ है। यदि भाग्य उनका साथ देता तो वह सफल भी हो जाता। यह लोग जानते थे कि मैं लालाजी की पार्टी मे जाऊँगा। वहाँ से वापस आते समय इस सुनसान [illegible]न पर मेरी हत्या की बात भी निश्चय कर ली गई होगी। इसी [illegible] से प्रेमसिंह को नशीली चीज पिला कर नाकाम कर दिया गया ताकि आक्रमण किए जाने के समय मैं अकेला ही रहूँ। सड़क पर किसी आदमी को दर्द से कराहते देख कर मेरा मोटर खड़ा करना भी बिलकुल स्वाभाविक था। हत्या के बाद आक्रमण-कारियों को पास ही जंगल मे छिप जाने मे भी कोई कठिनाई न होती—न कुछ पता ही लगता और न कोई निशान ही मिलता।

परन्तु बेचारा घोष । इसी के कारण यह षड्यन्त्र असफल हो गया।"

"तुम्हारी हत्या करने के बजाय उसने अपने ही को गोली मार ली"—पैडल के नेत्रो मे सराहना का भाव झलकने लगा।

"परन्तु मामला केवल इतना ही नही है"—ब्रायन ने कहा—"इसके भीतर छिपे हुए रहस्यो का उद्घाटन अभी मुझे करना है। ईश्वर को धन्यवाद है कि क्रान्तिकारियो के सम्बन्ध में दो निश्चित प्रमाण तो मुझे मिल गए—प्रेमसिंह और घोष। परन्तु अभी तो हमे लाश हटवाने का प्रबन्ध करना चाहिए। मि० ओकले का बंगला नजदीक है। वे डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट हैं। इसलिए उन्हे इसकी खबर देना आवश्यक है। साथ ही यह भी सौभाग्य की बात है कि सिविल सर्जन भी उनके यहाँ ताश खेलते हुए मिल जायँगे। और यदि वे घर चले गए होगे तो फोन करके उन्हें और लाश ले जाने के लिए एम्बुलेंस को बुला लूँगा। जब तक वापस न आ जाऊँ आप यही खड़े रहें—अधिक देर न लगेगी।

ब्रायन जब मि० ओकले के यहाँ पहुँचे तो उनके यहाँ ब्रिज की पार्टी जमी हुई थी। सिविल सर्जन भी अभी घर न गये थे। मि० ओकले की हार पर हार हो रही थी, और उनके दिमाग का पारा पहले की ही बेतरह चढा हुआ था। ब्रायन को देखते ही नाक-भौंह सिकोड कर वे बोले—"क्यों क्या है ?"

"मैं आप से अकेले मे कुछ कहना चाहता हूँ।"

"देखो, खेल इस समय जोरों में है। बराबर हारने के बाद यह पहला ही खेल है, जिसमें जीत के आसार मुझे दिखाई पड रहे हैं। सिविल सर्जन, डिस्ट्रिक्ट जज और सुपरि-

"यही तो—हमारी गोलियाँ शरीर मे लगने के पहले ही बेचारा मर गया । ब्रायन, इस सब का क्या मतलब है? क्या तुम इस रहस्य को खोल सकते हो?"

मेटलैंड की यह बात सुनते ही ब्रायन का चेहरा और भी उतर गया और वे धीरे से बोले—"अभी मैं कुछ बतला तो नहीं सकता, किन्तु इस रहस्य के अंधकार मे प्रकाश की ज्योति मुझे कुछ कुछ दिखलाई पड़ने लगी है। इस घोष को मैं बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ। यह कालेज का विद्यार्थी है। आज ही सायकाल को मैं इसके साथ हाकी खेल चुका हूँ। हम दोनो मे परस्पर मैत्री भी खूब थी। खेल के बीच "हाफ टाइम" के समय इसने मेरे पास आकर विदा ली थी और कहा था कि अगली साल वह कालेज न आवेगा। बेचारा सत्य ही कहता था।"

कुछ मिनट चुप रहने के बाद ब्रायन फिर कहने लगे—"यह तो निश्चित ही है कि यह सब मेरी जान लेने का षड्यंत्र था और क्रान्तिकारी दल ने हत्या के लिए मुझे ही चुना था। इन लोगो की आयोजना भी बिलकुल साफ है। यदि भाग्य उनका साथ देता तो वह सफल भी हो जाता। यह लोग जानते थे कि मैं लालाजी की पार्टी मे जाऊँगा। वहाँ से वापस आते समय इस सुनसान स्थान पर मेरी हत्या की बात भी निश्चय कर ली गई होगी। इसी विचार से प्रेमसिंह को नशीली चीज पिला कर नाकाम कर दिया गया, ताकि आक्रमण किए जाने के समय मैं अकेला ही रहूँ। सडक पर किसी आदमी को दर्द से कराहते देख कर मेरा मोटर धीमा करना भी बिलकुल स्वाभाविक था। हत्या के बाद आक्रमण-कारियो को पास ही जगल मे छिप जाने मे भी कोई कठिनाई न होती—न कुछ पता ही लगता और न कोई निशान ही मिलता।

परन्तु बेचारा घोप   । इसी के कारण यह षड्यन्त्र असफल हो गया।"

"तुम्हारी हत्या करने के वजाय उसने अपने ही को गोली मार ली"—पैडल के नेत्रो मे सराहना का भाव झलकने लगा।

"परन्तु मामला केवल इतना ही नहीं है"—ब्रायन ने कहा—"इसके भीतर छिपे हुए रहस्यो का उद्घाटन अभी मुझे करना है। ईश्वर को धन्यवाद है कि क्रान्तिकारियो के सम्बन्ध मे दो निश्चित प्रमाण तो मुझे मिल गए—प्रेमसिंह और घोप। परन्तु अभी तो हमें लाश हटवाने का प्रवन्ध करना चाहिए। मि० ओकले का बंगला नजदीक है। वे डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट हैं। इसलिए उन्हे इसकी खवर देना आवश्यक है। साथ ही यह भी सौभाग्य की बात है कि सिविल सर्जन भी उनके यहाँ ताश खेलते हुए मिल जायँगे। और यदि वे घर चले गए होगे तो फोन करके उन्हें और लाश ले जाने के लिए एम्बुलेंस को बुला लूँगा। जब तक वापस न आ जाऊँ आप यहीं खड़े रहें—अधिक देर न लगेगी।

ब्रायन जब मि० ओकले के यहाँ पहुँचे तो उनके यहाँ ब्रिज की पार्टी जमी हुई थी। सिविल सर्जन भी अभी घर न गये थे। मि० ओकले की हार पर हार हो रही थी, और उनके दिमाग का पारा पहले की ही वेतरह चढा हुआ था। ब्रायन को देखते ही नाक-भौंह सिकोड कर वे बोले—"क्यों क्या है ?"

"मैं आप से अकेले मे कुछ कहना चाहता हूँ।"

"देखो, खेल इस समय जोरों में है। वरावर हारने के वाद यह पहला ही खेल है, जिसमें जीत के आसार मुझे दिखाई पड रहे हैं। सिविल सर्जन, डिस्ट्रिक्ट जज और सुपरि-

टन्डिंग इंजीनियर तीनों से हम परिचित हैं। जो कुछ कहना हो यहीं क्यों न कह डालो।"

मि० ओकले ने ब्रायन से बैठने तक का अनुरोध नहीं किया और उपेक्षा के भाव से खेलते रहे।

"कालेज के एक विद्यार्थी ने अपने को गोली मार ली है · '

"चलो अच्छा हुआ"—मि० ओकले बीच ही मे बोल उठे—"मैं चाहता हूँ यह सबके सब ऐसा ही कर लें तो किसी तरह पीछा छूटे।"

"यह काण्ड बड़ी संदिग्ध अवस्था मे हुआ है।"—ब्रायन ने मि० ओकले के व्यवहार की उपेक्षा करते हुए कहा।

यह सुनते ही सिविल सर्जन अपनी कुरसी से उठ बैठे और घटनास्थल की तरफ़ जाने के लिए उद्यत होते हुए पूछा—' वह है कहाँ ? '

ब्रायन ने कहा—' अभी चलने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह मर चुका है। मै केवल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट से इसकी इत्तला करना चाहता था। यह घटना यहाँ से थोडी ही दूर पर हुई है। '

मि० ओकले मजिस्ट्रेटी शान से बोले—'बहुत अच्छा, कल प्रात काल इसकी रिपोर्ट मेरे आगे पेश करना। मृत्यु के कारणों की जाँच भी हमे करनी पडेगी।

"क्या इसी समय घटनास्थल पर जाँच करना उचित न होगा ?'

' क्यो ?

"आप, सिविल सर्जन और मै उपस्थित हैं ही मेटलैंड और पैडल लाश के पास है ?'

"मेटलैंड और पेडल ?"—आश्चर्य से मि० ओकले ने कहा—"उन्हे इस मामले से क्या करना है।"

ब्रायन ने तब वह परिस्थिति बतलायी, जिसमे कि यह लोग उनके साथ गए थे।

"हाँ, तो यह कहिए कैप्टिन ब्रायन, बात को घुमा फिरा कर कहने की अपेक्षा उसे तुरन्त कह डालना कहीं अधिक अच्छा होता है।"

ब्रायन डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की यह बात सुन कर मुसकराये कि आखिर उन्होंने किसी न किसी चतुराई से उन्हे कसूरवार ठहरा ही दिया। परन्तु इसका ख्याल न करके वे डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के दफ़्तर मे गये और एम्बुलेसवालो को अपनी लारी भेजने के लिए फोन किया।

मि० ओकले बोले—"अच्छा तो पहले इस मामले को समाप्त कर लिया जाय। क्या आप दोनों साहब तब तक ठहरेंगे नहीं ? बरफ और सोडा पीजिये। हम लोग अपनी बाजी पूरी करेंगे।'

परन्तु जज और इजीनियर ने समय उपयुक्त न समझ कर मि० ओकले की उदारता का लाभ उठाने से इनकार कर दिया।

सिविल सर्जन ने लाश की अच्छी तरह परीक्षा करने के बाद कहा—"गोलियों के तीन घाव हैं। इनमें मृत्यु के लिये कोई एक भी काफी होता। इसलिये मृत्यु तत्काल ही हो गई होगी।"

इसके बाद एम्बुलेस की लारी आई और बोप की लाश को ले गयी।

मि० ओकले ने बडी गम्भीरता पूर्वक कहा—"मि० ओकोनर ब्रायन, मै आपसे यहीं और इसी समय बतला देना चाहता हूँ कि इस मामले मे आपने जो कुछ किया है वह मुझे पसन्द नहीं

आया। मैं एक बार और भी आपको बिना सोचे-विचारे काम न करने के लिए चेतावनी दे चुका हूँ। मान लीजिये दो या तीन बदमाश और होते और मेजर मेटलैंड या कैप्टिन पेंडल को कुछ हो जाता तब मैं आफत में फँस जाता या नहीं ?'

"नहीं, हुआ कुछ भी नहीं"—मेटलैंड ने धीरे से कहा,— "बल्कि हमने ही ब्रायन पर अपने साथ चलने के लिये दबाव डाला था।"

"हुआ नहीं यह सौभाग्य की बात है। फिर भी कैप्टिन ओकोनर को इस कारण मैं निर्दोष नहीं मान सकता। यदि वह मुझे इसकी सूचना पहले से दे देते तो मैं पूरी सड़क पर पहरा लगवा देता। तब इस खतरे की कोई आशंका ही न रहती।

"किसी आदमखोर चीते को पकड़ने के लिये फौज नहीं भेजी जाती, उसका पहले पता लगाया जाता है। मैं भी पहले इस चीते का पता लगाना चाहता था और इसमें मुझे सफलता भी मिली है।"—ब्रायन ने जरा ताने की आवाज में कहा।

"आप क्या कह रहे हैं मेरी समझ में नहीं आता"—मि० ओकले ने चिढ़ कर कहा—"और जिस लहजे में आप बोल रहे हैं उसे उचित नहीं कहा जा सकता।"

ब्रायन चुपचाप अपनी कार की तरफ बैठने चले गए। मि० ओकले ने पेंडल और बाद में मेटलैंड से अपने यहाँ चलकर लेमनेड-बरफ पीने के लिये चलने का अनुरोध किया, किन्तु उन्होंने ब्रायन के साथ ही जाना उचित समझा।

मि० ओकले खीज कर अपने बँगले की तरफ चल दिये। एक तो उनका खेल अधूरा रह गया और दूसरे पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट

ने उनसे दुबारा गुस्ताखी का व्यवहार किया। वे अपने मन मे सोचने लगे आखिर ब्रायन ने चीते का उल्लेख क्यों किया। क्या उन्होंने मुझे तो चीता नही कहा था। खैर, कुछ भी हो अब मेरी लडकी से इस व्यक्ति का विवाह कदापि नही हो सकता। आज ही पत्र लिख कर इस बात का निर्णय कर लूंगा।

मि० ओकले ने पत्र लिख भी दिया। परन्तु उनकी पत्नी ने पढते ही टुकडे-टुकडे करके उसे रद्दी की टोकरी मे फेंक दिया।

उधर ब्रायन घर पहुँचे। प्रेमसिह को अभी होश नही आया था। सब-इन्सपेक्टर को जाने के लिये कह कर वे अपनी चारपाई पर पड गये। वे बेहद थके थे, फिर भी उनका दिमाग इधर-उधर दौड रहा था।

उर्मिला की चेतावनी और उनका अपना सन्देह ठीक ही निकला। वे सोचने लगे कि कुछ बातें प्रेमसिह से मालूम होंगी और घोप के साथियो का हाल प्रिंसिपल से पूछताछ करने पर ज्ञात हो जायगा। हाकी मैच के समय की घटना भी उनके दिमाग मे आई। दो विद्यार्थियों ने घोप को मैदान के बाहर किया था, जिनमें एक दुबला-पतला और चश्मा लगाये हुये था और दूसरा हृष्ट पुष्ट शरीर का हँसमुख सा जान पड़ता था।

वह सोचने लगे—तो क्या वह हृष्ट पुष्ट शरीर का विद्यार्थी ही बनर्जी है। ऐसा जान पड़ता था मानो घोप को उठाने में उसे दूसरे साथी की आवश्यकता तक न थी। कुछ भी हो, कल प्रात काल इन दोनों से मैं मिलूँगा अवश्य। परन्तु घोप ने मुझे छोड क्यों दिया ? यह प्रश्न अधिक कठिन था। इसका उत्तर सोचते सोचते उन्हे नींद आ गई। कई घंटे बाद प्रेमसिंह की आवाज से उनकी नींद टूटी।

"पानी, साहब—ईश्वर के लिए थोड़ा पानी दीजिये।'

प्रेमसिंह ने पानी के कई बड़े बड़े घूँट लिए और फिर गहरी नींद में सो गया।

ब्रायन की जाँच

सुबह नहा-धो कर ब्रायन प्रिन्सिपल के बँगले पहुँचे।

"अरे ब्रायन"—प्रिन्सिपल ने उनका स्वागत करते हुए कहा—"सुबह ही सुबह कैसे निकल पड़े? जान पड़ता है कल के मैच की थकावट अभी दूर नहीं हुई।"

"इस बीच में इतनी बातें हो चुकी हैं कि मैच हुए एक युग सा जान पड़ता है"—ब्रायन ने उत्तर दिया।

इसके बाद ब्रायन ने बोप की मृत्यु का सब हाल बतलाया। प्रिन्सिपल के मुँह से एक ठंडी साँस निकल पड़ी।

"उफ, बड़ी भीषण घटना है। अब आप जो कुछ कहें मैं करने को तैयार हूँ। बतलाइये, आप क्या चाहते हैं?"

"बनर्जी के चाल चलन के सम्बन्ध मे जो बातें आपने मुझे बतलाई थीं उनकी सचाई का पता लगाने मे कितना समय लगेगा?'

बोप के बजाय बनर्जी के सम्बन्ध मे ब्रायन को प्रश्न करते देख प्रिन्सिपल को बड़ा आश्चर्य हुआ, वे बोले—'जवाबी तार भेज दूँगा और सम्भवत सायकाल तक सब बातें मालूम हो जायँगी।"

"बोप और उनके साथियों के बारे मे आप क्या जानते हैं?'

"यह तो आप भी जानते हैं कि घोप सभी खेलो का अच्छा खिलाडी था और कालेज की हाकी टीम का तो कप्तान ही था। विद्यार्थियो मे वह बहुत ही लोकप्रिय था। अभी मै बतला नहीं सकता कि उसके साथी कौन कौन थे, पर इसका पता लगाया जा सकता है। मैं अभी होस्टल के वार्डन को बुलवाता हूँ, वे आपको काफी बातें बता सकेंगे।"

प्रिन्सिपल ने तब एक कागज के टुकड़े पर कुछ लिखा और 'अर्जेन्ट' की मुहर लगा कर चपरासी को देते हुए कहा—"इसे मि० दास को जल्दी दे आओ।"

चपरासी के जाने के बाद ब्रायन बोले—"कल मैच मे घोष को चोट लगने की बात तो आपको याद है ?"

"हाँ"

"जिन दो विद्यार्थियो ने उसे खेल के मैदान से बाहर किया था, उनके क्या नाम हैं ? इनमें एक दुबला-पतला और चश्मा लगाए हुए था और दूसरा हृष्टपुष्ट और हँसमुख जान पडता था।"

"हृष्टपुष्ट बनर्जी था और दुबला गुप्ता।"

"मेरा भी यही ख्याल था कि हृष्टपुष्ट युवक ही बनर्जी है। अच्छा गुप्ता के सम्बन्ध मे आप क्या जानते हैं ?"

"गुप्ता बहुत ही शान्त और लोगों से कम मिलने जुलने वाला है, उसके सम्बन्ध में मैं अधिक नहीं बतला सकता। शायद वार्डन कुछ बतला सके। लीजिए वह आ ही रहे है।"

वार्डन मि० दास ने कमरे मे प्रवेश किया।

"गुड मार्निंग मि० दास, आप तो जानते ही हैं कि यह सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस हैं।"

ब्रायन और वार्डेन के हाथ मिला लेने पर प्रिन्सिपल ने जरा गम्भीर होकर कहा—" मि० दास बैठ जाइए। एक बड़ी भयानक दुर्घटना हो गई है। घोष ने कल रात को पोलो के मैदान के पास सड़क पर गोली मार कर आत्महत्या कर ली है।"

" सड़क पर आत्महत्या कर ली है!—असम्भव!!"—मि० दास ने चिल्ला कर कहा—" वह तो तेज बुखार में बिस्तर पर पड़ा हुआ है।"

"क्या आपको पूर्ण विश्वास है?"

"रात को हाजिरी के पहले गुप्ता मेरे पास आया और अपने और बनर्जी के लिए घोष के पास रात भर रहने की अनुमति माँगी थी, क्योंकि उसे हाकी मैच में चोट लगने के कारण बुखार चढ़ आया था। मैंने अनुमति दे दी और गुप्ता से कहा कि कुनैन ले जाओ, किन्तु उसने कहा कि कुनैन वगैरह सब कुछ उनके पास है।"

" किन्तु यह भी सत्य है कि घोष ने डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के बंगला के निकट सडक पर अपने को गोली मार ली है।"

"बड़ा भयानक काण्ड है। कुछ समझ में नहीं आता।"

"मैं भी परेशान हूँ। अच्छा आप यह तो बतलाइये कि घोष के खास साथी कौन कौन थे?"

"घोष कालेज भर में लोकप्रिय था, किन्तु हाकी टीम के खिलाड़ियों से उसका अधिक निकट का सम्पर्क था।"

"क्या कभी आप उसे बनर्जी के साथ भी देखते थे?"

"नहीं, अक्सर नहीं। बनर्जी भी बहुत ही लोकप्रिय व्यक्ति है. .."

मि० दास को एकाएक रुकते हुए देख कर प्रिन्सिपल ने कहा—"कहते चलिए।"

"मुझे एक बात याद आ गई। कुछ सप्ताह हुए बनर्जी के पास वाला कमरा खाली हुआ था। घोष ने उस कमरे मे जाने के लिए मुझसे अनुमति ली थी। घोष चूँकि पढ़ने-लिखने मे अधिक तेज न था इसलिए बनर्जी के निकट रहने की अनुमति मैने उसे खुशी से दे दी।"

"क्या इसके बाद कभी उसने बनर्जी के कमरे मे रहने की अनुमति माँगी थी?"

"नहीं, किन्तु कुछ ही दिन पहले आपके द्वारा लिखा हुआ अनुमति-पत्र वह मुझे अवश्य दे गया था।"

"हाँ, यह ठीक है। तीन या चार दिन की बात है घोष मुझे बनर्जी के कमरे मे मिला था। मैंने उन दोनो से कहा कि यह कालेज के नियमों के खिलाफ है, इसलिए यदि चाहो तो तुम्हे विशेष अनुमति लिखे देता हूँ। क्या आप गुप्ता के सम्बन्ध मे कुछ जानते हैं?"

"गुप्ता बड़ा विचित्र व्यक्ति है। वह अपनी ही धुन मे मस्त रहता है। अपने कमरे को वह सदा बन्द रखता है और किसी को उसके भीतर नही आने देता। वह बहुत ही सुस्त है। उस पर मुझे कभी विशेष तौर पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं हुई।"

"धन्यवाद मि० दास, आप एक तकलीफ और कीजिए। घोष के कमरे में ताला डलवा दीजिए और बनर्जी और गुप्ता को मेरे पास भेज दीजिए।"

"किस वक्त?"

"अभी, इसी समय।"

वार्डन के कमरे के बाहर जाने के बाद प्रिन्सिपल ने कहा—"ब्रायन, इन सब बातों से आप किस परिणाम पर पहुँचे ?"

"इस बात में तो सन्देह नहीं कि बनर्जी और गुप्ता का इस मामले से घनिष्ठ सम्बन्ध है। मेरे सामने समस्या केवल यही है कि घोष ने मुझ पर गोली चलाने के बजाय अपने ही आप को अपना शिकार क्यों बनाया ?"

"यह तो बिलकुल साफ है। आप दोनों में गहरी मित्रता थी। इसलिए उसने आपकी जान लेने के स्थान पर अपनी ही दे दी। विद्यार्थियों की मनोवृत्ति मैं जानता हूँ, वीरों का उनके हृदय में सहज ही आदर होता है और वे स्वयं भी वीर बन कर दूसरों से आदर पाने के लिए उत्सुक रहते हैं। इसके अलावा भाग्य में अटल विश्वास रहने के कारण वे मृत्यु से भयभीत भी जरा कम होते हैं।"

ब्रायन ने गम्भीरतापूर्वक सर हिला कर इङ्गित किया कि उनके विचार में घटना का यह कारण नहीं हो सकता।

"खैर, जो भी हो, बनर्जी और गुप्ता से और भी बातें मालूम हो जायँगी। कम से कम मेरा तो यह ख्याल न था कि घोष के साथ बनर्जी और गुप्ता की घनिष्टता हो सकती है।"

"मेरा सन्देह ठीक ही जान पड़ता है। अभी आपको उनसे कोई भी बात मालूम न हो सकेगी।"

ब्रायन के मुँह से यह निकला ही था कि मि० दास बड़ी उत्तेजित अवस्था में तेजी से आकर कमरे में दाखिल हो गए।

"साहब, घोष के कमरे में ताला लगा दिया गया है। परन्तु बनर्जी और गुप्ता मिल नहीं सके, वे गायब हैं।"

"यदि तीनो कमरो की मै चल कर तलाशी लूँ तो आपको आपत्ति तो न होगी ?"

"आपत्ति क्या हो सकती है ? चलिए, अभी चलिए। मि० दास आप उन कमरो को खुलवा दीजिए।"

कुछ ही समय बाद वे लोग घोष के कमरे मे थे।

होस्टल के सभी कमरे एक तरह के थे। सभी मे एक चारपाई, एक मेज और एक कुरसी थी। दरवाजे के सामने दीवार मे एक खिड़की थी। इसके अलावा कमरे की दीवारो में दो अलमारियाँ किताबें रखने के लिए भी थीं।

घोष की चारपाई पर बिस्तर बँधा हुआ था। चारपाई के के नीचे ट्रंक था, जिसमे पीतल का मज़बूत ताला लगा था। अलमारियों के खानों मे कोर्स की किताबे बेतरतीब पड़ी थीं और एक तरफ कोने मे दो हाकी स्टिक रखी हुई थी। टेबिल पर कुछ किताबें, और एक बन्द नोटबुक के सिवाय कुछ भी न था।

ब्रायन को कमरे की जॉच करने मे अधिक समय लगा। कोई भी आपत्तिजनक चीज उन्हे न मिली। वे कमरे के बाहर जाने ही वाले थे कि नोटबुक के पहले पन्ने पर उन्हें निम्नवाक्य लिखा हुआ मिला :—

"मैंने जो कुछ किया है, अपने एक मित्र को उस व्यक्ति के हितार्थ सुरक्षित रखने के लिए किया है, जिससे मैं प्रेम करता हूँ, और जिसका मेरे उस मित्र पर प्रेम है।"

सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस ने गम्भीरतापूर्वक नोटबुक को बन्द करके अपने जेब में रख लिया और बोले—"बस, अब इस कमरे में कुछ नहीं देखना है। चलिए, बनर्जी के कमरे मे चलें।"

वनर्जी के कमरे मे उन्हे सबसे अधिक निराशा हुई। अलमारियो के खाने मे किताबे तरतीबवार सजा कर रखी हुई थीं, सबसे अधिक आश्चर्य्य उन्हे वनर्जी के कमरे मे यह देखकर हुआ कि कपड़े रखने के लिए कोई ट्रंक या बक्स उसके कमरे मे नहीं था। खूँटी पर केवल कुछ साफ कमीजें और धोतियाँ टँगी थीं।

गुप्ता के कमरे का हाल इसके बिलकुल विपरीत निकला। बिस्तर बुरी तरह अस्त-व्यस्त था, उस पर किताबो और कागजो के ढेर लदे हुए थे। ऐसी अव्यवस्था उन्हे कहीं भी देखने मे नहीं आई।

ब्रायन ने फर्श पर पड़े हुए कागजो को ध्यान से देखा। खुली हुई अलमारी के नीचे रखे हुए दो ट्रंको को खोलकर उनका कोना कोना छान डाला। चारपाई से बिस्तर उठाकर देख डाला, किन्तु कहीं कुछ न मिला।

अन्त में निराश होकर वे जाने वाले ही थे कि एक आलमारी की बनावट पर उन्हे कुछ सन्देह हुआ। होस्टल भर की सभी अलमारियो मे चार खाने थे, किन्तु इसमे तीन ही दिखलाई पड़ते थे। उन्होंने पास जाकर आलमारी के उस स्थान की जाँच करना आरम्भ किया, जहाँ चौथा खाना होना चाहिए था।

वास्तव मे चौथा खाना था अवश्य, किन्तु उसे आलमारी के भीतर की दीवार के रग मे रंगी हुई काठ की बड़ी दफ्ती लगाकर ऐसी सफाई से छिपा दिया गया था कि आलमारी मे चौथा खाना होने का सन्देह तक किसी को न होता था। ब्रायन ने दफ्ती को जो हटाया तो उसके भीतर साइक्लोस्टाइल की एक अच्छी मशीन और उसके साथ की सभी चीजें निकलीं।

"इससे हमारी एक कठिनाई तो दूर हो गई"—ब्रायन ने प्रिन्सिपल से कहा—"महीनो से हम इस बात की तलाश मे थे

कि प्रत्येक सप्ताह यह क्रान्तिकारी पर्चे कौन वितरित करता है। इसे अब मैं अपनी देख रेख मे रखूँगा। यदि गुप्ता अपनी चीज वापस लेने आवे तो उसे मेरे पास भेज दीजिएगा।"

तब ब्रायन प्रिन्सिपल और वार्डन को धन्यवाद देकर अपने कार्य से सन्तुष्ट से होकर बगले पर वापस आ गए। प्रेमसिह लान से उठकर क्वार्टर में चला गया था। अभी तक वह सो ही रहा था, केवल कभी जभी बीच में जाग कर पानी अवश्य पी लेता था। ब्रायन ने देखा कि अभी उससे कुछ पूछताछ करना सम्भव नहीं, इसलिए वह मेज पर रखे हुए काम के पुलिन्दे को समाप्त करने में लग गए। काम इतना अधिक था कि दोपहर तक उन्हें सर उठाने की फुरसत न मिली। बीच में यदि टेलीफोन की घंटी न बजती तो शायद वे और भी कुछ देर तक काम मे व्यस्त रहते।

"हलो, मैं सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस बोल रहा हूँ।"

"गुडमार्निंग ब्रायन, मुझे अभी कैमिकल ऐनलिस्ट की रिपोर्ट प्राप्त हुई है। खाने की चीजो में बहुत ही तेज, किन्तु स्वाद-हीन अफीम मिली है। अर्दली अब कैसा है?"

"पाँच बजे सुबह उठा था और 'पानी पानी' चिल्लाता था। अब भी सो ही रहा है, केवल पानी पीने के लिए कभी कभी जाग उठता है।"

"बस, चिन्ता की बात नहीं, अब वह बिलकुल ठीक हो जायगा, किन्तु अफीम का असर धीरे धीरे दूर होगा। मैं एक दवा भेजता हूँ, जिससे उसकी प्यास शान्त हो जायगी। क्या उस काण्ड के सम्बन्ध मे और कोई बात ज्ञात हुई?"

"क्रान्तिकारियो के दल के दो और व्यक्तियो का पता चल गया।"

"वडी जल्दी सफलता मिली।"

"केवल संयोग ही था कि उनके नामो का पता चल गया।"

"क्या वे गिरफ्तार कर लिए गए ?"

"नहीं, फरार हैं। मैने उनके हुलिया की सूचना सव जगह भेज दी है। आशा है कुछ समय मे गिरफ्तार भी हो जायँगे।"

"मुझे भी यही आशा है, गुडवाई"

"गुडवाई और धन्यवाद"

सिविल सर्जन से वातें कर चुकने के वाद आयन प्रेमसिंह की तरफ गए। प्रेमसिंह हाथो पर सर रखे हुए चारपाई पर वैठा था। मालिक को देखकर उठने का असफल प्रयत्न किया, किन्तु फिर लड़खड़ाकर चारपाई पर वैठ गया। उसकी आँखें लाल हो रहीं थीं और कभी कभी शरीर काँप उठता था।

"क्या वहुत वुरा हाल है ?"—आयन ने प्रश्न किया।

प्रेमसिह ने सिर और गले की तरफ इशारा करते हुए टूटे फूटे शब्दों में कहा,—"वहुत खराव, साहव"

"यह सव कैसे हुआ ?"

"हाकी मैच से जव वापस आया तो हमेशा की तरह रसोइये विहारी ने मेरे सामने खाना रखा। मैंने खाना शुरू कर दिया इसके वाद मुझे कुछ याद नहीं।"

"किसी ने तुम्हारे खाने मे अफीम मिला दी थी। तुम चिन्ता न करो, सिविल सर्जन दवाई भेज रहे हैं, सायंकाल तक तुम विलकुल ठीक हो जाओगे।"

"बहुत अच्छा साहब।"

"इस बिहारी के बारे मे तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

"बहुत ईमानदार और नेक आदमी है, साहब।"

"क्या तुम्हारा ख्याल है उसने तुम्हारे खाने मे अफीम नहीं मिलाई ?"

"नही नहीं—साहब, बिहारी ऐसा काम नहीं कर सकता, यह किसी दूसरे ही आदमी की करतूत है।"

"परन्तु कोई दूसरा आदमी तुम्हारे खाने तक पहुँच ही कैसे सकता है ?"

" हाँ साहब अब मुझे याद आया। हाकी मैच मे बिहारी मेरे पास आकर पूछने लगा कि मैंने उसे क्यों बुलाया था। मैंने उससे झिडक कर कह दिया कि जाओ बेवकूफ न बनो मैने नहीं बुलाया। हो सकता है कि बिहारी मैच देखने के लिए ठहर गया हो और इस बीच में किसी ने मेरे भोजन में अफीम मिला दी हो। "

ब्रायन ने तब बिहारी को बुलवाया। वह आते ही उनके पैरो पर गिर गया।

"माफ माफ कीजिए हुजूर"

"उठो और चिल्लाना बन्द करो। जो कुछ हुआ हो साफ साफ बतलाओ।"—सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस ने जरा कड़ाई से कहा।

बिहारी उठने के बाद भी बहुत देर तक रोता रहा। बहुत डाटने-फटकारने के बाद वह शान्त होकर बोला—"मैं रोज की तरह कल भी अर्दली साहब का खाना तैयार कर रहा था। इतने मे कालेज के एक विद्यार्थी ने आकर मुझसे कहा कि तुम्हे अर्दली बुला रहा है, किन्तु (बाद में मालूम हुआ) वास्तव में उन्होंने

मुझे बुलाया न था। कुछ देर तक मैं हुजूर का खेल देखता रहा और तब वहाँ से आकर मैंने अर्दली साहब का भोजन तैयार किया। हुजूर सच कहता हूँ, इसमे कुछ भी झूठ नही।"

ब्रायन को बिहारी के बयान पर विश्वास न करने का कोई भी कारण न दिखलाई दिया, क्योंकि प्रेमसिंह की कही हुई बातो से उसका बयान बिलकुल मिलता था।

"यह विद्यार्थी कैसा था—तुम उसका नाम या हुलिया बतला सकते हो?"

'उसका नाम तो मै नही बतला सकता हुजूर, किन्तु यह कह सकता हूँ कि वह लम्बा, दुबला और आँखो पर चश्मा लगाए हुए था।"

ब्रायन के मन मे विचार उठा कि गुप्ता के सिवा और कोई नहीं हो सकता। परन्तु बनर्जी ने इस कार्य के लिए गुप्ता को नियत करने की गलती क्यो की, जब वह जानता था कि गुप्ता के पकड़े जाने की काफी सम्भावना थी। शायद नौकरो को मैच देखने मे व्यस्त देखकर ही उसके मन मे यह बात उठी हो। खैर, कुछ भी हो, ऐसा जान पडता है कि बनर्जी ने अपने को इस मामले से दूर रखने की काफी व्यवस्था कर ली थी।

इसके बाद बँगले मे आकर वे षड्यन्त्र के असम्बद्ध अंशो को मिलाने का उपक्रम करने लगे।

इसमे सन्देह नही कि बनर्जी ही वह संदिग्ध फरार है, जिसकी इतने दिनो से तलाश हो रही थी और ऐसा जान पडता है कि कहीं पास ही उसका सुरक्षित स्थान है, क्योंकि एक धोती और दो कमीज ही से किसी व्यक्ति का काम नहीं चल सकता। गुप्ता ने प्रेमसिंह को जो अफीम डालकर बेहोश किया इससे जान

पड़ता है कि उसे भी षड्यंत्र का पता होगा। परन्तु इन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बनर्जी ने घोष को मेरी हत्या के लिए नियत किया था।

इसके बाद वे घोष की नोटबुक पाकेट से निकाल कर इन शब्दों को बार बार दुहराने लगे—"मैंने जो कुछ किया है, अपने एक मित्र को उस व्यक्ति के हितार्थ सुरक्षित रखने के लिए किया है, जिससे मै प्रेम करता हूँ, और जिसका मेरे उस मित्र पर प्रेम है।"

आयन सोचने लगे कि इसमे जिस मित्र का जिक्र है यह मैं ही हूँ, किन्तु घोष ने मित्र होने ही के कारण मेरी जान नहीं बख्शी। घोष किसे प्यार कर सकता है, इसकी कल्पना करना भी मेरे लिए कठिन है। मिस मे मुझे प्यार करती है, परन्तु मे ओकले को घोष ने कभी देखा भी होगा इसमें सन्देह है। यह एक ऐसी समस्या है जिसका हल अभी तक नहीं हुआ है।

इसके बाद उन्होंने घड़ी देखी तो स्मरण हो आया कि उर्मिला के यहाँ जाना है। उर्मिला से मिलने के विचार से उनके मुख पर मुसकराहट की रेखा फूट पड़ी।

जब वे उर्मिला के कमरे में पहुँचे तो उसने बड़े उत्साह से उनका स्वागत किया। उस समय उसके कपोलों की लालिमा द्विगुणित हो रही थी, आँखें खुशी के कारण चमक रही थीं और हाथ स्वागत मे आगे बढ़े हुए थे।

"आपको देखकर मुझे इतना आनन्द हुआ है कि मै क्या कहूँ? बाजार में तरह तरह की अफ़वाहे उड रही हैं। कहा जा रहा है कि तीन विद्यार्थी मारे गए हैं, चार गिरफ़ार हुए हैं तथा होस्टल के कमरो की तलाशी ली जा रही है। कोई कोई कह रहा है कि दो साहब भी मारे गए हैं। आपके लिए मुझे बडी आशंका

थी। अब अपनी आँखो के आगे आपको जीता जागता देख कर मै हर्षित हूँ।"

उर्मिला यह कह कर इतनी बेताब होकर हँसने लगी कि उसकी आँखों मे आँसू आ गए।

उर्मिला की हँसी देख कर त्रायन एक क्षण के लिए तो चकित रह गए, किन्तु दूसरे ही क्षण उनका समाधान हो गया। यही नहीं, उन्हे घोष के अन्तिम सन्देश का रहस्य भी मालूम हो गया।

सन्देह की पुष्टि

त्रायन ने उर्मिला के बढे हुए हाथों को अपने हाथो मे ले लिया और उन्हे वे प्रेम से दबाने लगे। उसकी आँखो से आँख मिलते ही उन्हे ज्ञात हो गया कि वह उन्हे प्रेम करती है। उर्मिला उन्हे एक सोफे तक ले गई और आप भी उसी पर बगल मे बैठ गई।

"अच्छा यह घटना कैसे हुई यह मुझे आरम्भ से सुनाइये"—वह उत्तेजित आवाज में बोली।

"नहीं, हरगिज़ नहीं, जब तक चाय पीकर मैं निरीक्षण समाप्त न कर लूँगा तब तक कुछ भी न बतलाऊँगा।"

उर्मिला ने त्रायन के इस कथन का प्रतिवाद किया, पर वे अपनी बात पर अडे ही रहे। तब उर्मिला बोली—'अच्छा मै चाय बनाना आरम्भ करती हूँ और आप इस बीच मे अपना निरीक्षण समाप्त कर लीजिए।"

"वहुत अच्छा"—कह कर व्रायन सोफे से उठ कर इधर उधर की चीजें देखने लगे, और ऐसे गम्भीर हो गए, मानो सचमुच ही कमरे का निरीक्षण कर रहे हों।

उर्मिला का कमरा वड़े सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाया गया था। दीवार पर झील और पर्वतों के दृश्यों के सुन्दर चित्र टॅगे हुए थे। खिडकी के पास ही लिखने की मेज थी, जिस पर दो फोटो चाँदी के चौखटे में मढ़ी हुई रखी थीं। इनमें से एक उर्मिला के पिता पंडितजी की थी और दूसरा एक 'ग्रूप' था, जो व्रायन के पिता के वँगले के आगे ली गई थी। फोटो के ठीक वीच मे व्रायन स्वयं और उर्मिला छोटे टट्टुओ पर चढ़े खड़े थे। दोनों के सरों पर साफे थे और वदन पर खुले गले की रेशमी कमीजें पड़ी हुई थीं। व्रायन इस फोटो को उठा कर बड़े ध्यान से देख ही रहे थे कि उर्मिला पास आकर खड़ी हो गई।

"आपको याद है व्रायन, उस दिन हम लोगो को कितनी खुशी हो रही थी। क्रिसमस का दिन था। आपके पिता ने खरीद कर यह टट्टू हमें दिए थे।"

"हाँ, और तुम वरावर इस वात की जिद करती थीं कि तुम्हारा टट्टू मेरे से अच्छा है।"

"हाँ, अच्छा तो था ही। दौड़ होने पर मैंने तुम्हे हरा दिया था, जिसके इनाम में पिताजी ने मुझे चाँदी का कप दिया था। वह अव तक मेरे पास सुरक्षित रखा हुआ है।"

"अरे जाओ भी—तुम्हें वह कप केवल मेरी इनायत से ही मिला। पुरुष होने के कारण दया करके मैंने तुम्हें आगे निकलने का अवसर दे दिया था।"

"झूठे"—उर्मिला ने मुसकराते हुए कहा और दोनों हँसते हुए चाय की मेज के पास जाकर बैठ गए।

प्याले मे चाय उँडेलते उँडेलते उर्मिला ने पूछा—"आपके निरीक्षण का क्या परिणाम निकला ?"

"तुम्हारी आदत मे सुधार तो अवश्य आश्चर्यपूर्ण हुआ है, पर सच बतलाओ कहीं तुमने सफाई आज ही तो नहीं की है।"

"हाँ, कुछ तो अवश्य की है, पर अधिक नहीं।"

"स्त्रियो का हाल दुनिया भर में एक सा ही है। उन पर विश्वास तो कभी किया ही नहीं जा सकता।"

"देखो, व्रायन यह ठीक नहीं है। आप तो मुझ पर सदा विश्वास करते रहे हैं।"

"यह मैं जानता हूँ उर्मिला, तुम्हे कहने की जरूरत नहीं है। मैं तो सिर्फ मजाक कर रहा था। यदि विश्वास न करता तो जो कुछ तुमसे कहने जा रहा हूँ, वह कभी न कहता।"

इसके बाद दोनो ने चुपचाप चाय पी। इस बीच में उर्मिला को व्रायन की बाते सुनने के लिए एक-एक क्षण भारी हो रहा था।

"उर्मिला, तुम्हारी चेतावनी से मेरी जान बची है, या यह कहना चाहिए कि मुझे उसकी ही वजह से पहले से तैयार रहने का अवसर मिल गया। वास्तव मे मेरी जान घोष ने बचायी है।'

"घोष ने ? कैसे !"

"मेरे प्राण उसके हाथ मे थे, किन्तु उसने मुझे छोड़ कर अपने ही को गोली मार ली।"

उर्मिला के चेहरे का रंग एकाएक उड गया।

ऐसा जान पडने लगा, मानो वेसुध होकर वह गिरने ही वाली है।

"घोष!"—वह एका-एक चिल्ला उठी—"यह सब मेरी समझ मे नहीं आता।"

"और न मेरी ही समझ मे आता है।" ब्रायन ने कहा—"अब जैसा तुमने कहा था मैं सभी बातें शुरू से सुनाता हूँ।"

उर्मिला के पीले चेहरे पर मुसकराहट की रेखा खिच गई। कुछ ठहर कर ब्रायन ने फिर कहना आरम्भ किया।

"तुम जानती हो कल हम लोगों ने हाकी मैच खेला था। मैच के बाद प्रिन्सिपल ने मुझे और मेटलैंड को चाय के लिए अपने बँगले पर आमंत्रित किया। मैंने प्रिन्सिपल से कहा कि इस जिले में एक क्रान्तिकारी नेता के कार्य करने की खबर मिली है। मैंने होस्टलों के सम्बन्ध में अपना सन्देह भी उन पर प्रकट कर दिया और यह भी पूछा कि विद्यार्थियों के सम्बन्ध में उन्हे क्या कोई असाधारण बात ज्ञात हुई है? प्रिन्सिपल ने कहा कि एक बहुत साधारण घटना के सिवाय ऐसी कोई भी बात उनके देखने में नहीं आई। यह घटना बिलकुल साधारण ही थी। एक दिन बहुत रात को उन्होंने घोष और बनर्जी को एक ही कमरे में बैठा पाया, जो होस्टल के नियमों के बिलकुल विरुद्ध था। घोष को मैं उसके साथ हाकी खेलने के कारण काफी अच्छी तरह जानता था, यहाँ तक कि हम दोनों में मित्रता तक हो गई थी। और देखो! ताज्जुब तो यह है कि मैच में 'हाफ टाइम' के बाद वह मुझसे विदा माँगने भी आया और कहने लगा कि अगले वर्ष वह कालेज में न रहेगा। मैंने उससे कहा कि यदि चाहो तो मैं तुम्हें पुलिस मे ले लूँ। उर्मिला, इसके पहले ही घोष को मेरी हत्या के लिए नियत कर दिया गया था।"

उर्मिला आयन के प्रत्येक शब्द को साँस रोक कर सुन रही थी। उसकी आँखें नीची थीं और दोनो हाथ बेबसी की हालत में गोद मे पड़े थे। आयन के रुकते ही उर्मिला ने नजर उठा कर उनकी तरफ देखा। उसके मुँह की सहज मुसकराहट लुप्त हो चुकी थी।

"हाय, बेचारा घोष!"—उर्मिला के मुँह से निकल पड़ा।

"मैंने प्रिन्सिपल से बनर्जी के सम्बन्ध में पूछताछ की, किन्तु उसके सम्बन्ध में वे सिवाय इसके और कुछ नहीं बता सके कि इतना तेज विद्यार्थी उनके यहाँ पहले कभी न आया था। उन्होंने यह भी बतलाया कि वह इसी वर्ष कालेज में आया है। तब मैंने उनसे पिछला हाल पूछा।"

"परन्तु ....."—उर्मिला बीच ही मे चौंक कर कह उठी—"उसका पिछला हाल वे बतला ही कैसे सकते थे।"

"पिछले हाल से मेरा मतलब केवल यह जानने का था कि उसने पिछली परीक्षाएँ किस कालेज से और कब पास की हैं। कालेजों मे विद्यार्थी जब भरती किए जाते हैं तो उनके लिए पिछली शिक्षा संस्थाओं के सार्टिफिकेट पेश करना आवश्यक होता है? बनर्जी ने सब सार्टीफिकेट पेश तो कर दिए थे पर जाँच पड़ताल करने पर आज ही पता चला है कि वे सब के सब जाली हैं।"

यह सब सुनने के बाद उर्मिला ने शान्ति की साँस ली। उसे अब बिलकुल निश्चय हो गया कि कल की घटनाओं की पूरी जिम्मेदारी बनर्जी पर ही है। इसीलिए उसके मन मे बनर्जी के सम्बन्ध मे कुछ भी हाल छिपाने की इच्छा शेष न रह गई।

"प्रिन्सिपल के यहाँ हम लोग इतनी देर तक बैठे कि

मुझे अच्छी तरह नहाने-धोने का समय भी न मिला। लाला जी की दावत मे जाने के पहले मुझे मेटलैंड और पैडल को लेने के लिए क्लब भी जाना था। क्लब जाने को जैसे ही तैयार हुआ कि मुझे मालूम हुआ कि अर्दली को किसी ने नशीली वस्तु खिला कर बेहोश कर दिया है। उसके खाने में गुप्ता नामक विद्यार्थी ने बहुत तेज अफीम का अर्क मिला दिया था। यह सब बातें दूसरे दिन दोपहर के पहले मुझे नहीं मालूम थीं।"

उर्मिला ने पूछा कि पैडल और मेटलैंड को लाला जी की दावत में लाने की आवश्यकता कैसे पड़ गयी। ब्रायन ने बतलाया कि यह लोग भरतियों के उच्च सामाजिक जीवन से परिचय प्राप्त करना चाहते थे इसलिए वे उन्हें अपने साथ लाला जी की दावत में ले चलने का वायदा कर चुके। परन्तु जब यह नयी परिस्थिति उठ खड़ी हुई तब मैंने सब बातें उन्हें बतलाईं और कहा कि अब आप अपनी ही मोटर में जाइये। पर उन लोगो ने मेरी यह सलाह न मानी और इस बात की जिद करने लगे कि शरीर-रक्षक की तरह वे मेरे साथ रहेंगे और आखिर हुआ भी यही।

"वाह, यह बहुत अच्छा हुआ"—उर्मिला बीच ही में बोल उठी—"उन लोगों से ऐसी ही आशा की जा सकती थी। मैं उन दोनों सज्जनों को बहुत चाहती हूँ।"

"हाँ, दोनो ही भले आदमी हैं। यहाँ तक कि पैडल ने तो रक्षा की आयोजना तुरन्त तैयार करके मुझे कुछ कहने का अवसर ही न दिया। आखिर यह निश्चय हुआ कि मै तो कार चलाऊँ, पैडल सामने की सीट पर मेरी बायीं तरफ बैठें और मेटलैंड पिछली सीट पर दाहिनी तरफ से मेरी रक्षा करें। दोनो

के पास पिस्तौलें थीं। दावत के लिए जाते समय कोई बात नहीं हुई।"

"तो लाला जी की दावत मे तुम यह सब जानते थे, पर तुम ने वहाँ तो मुझे कुछ भी नही बतलाया।"

"बताने से लाभ ही क्या होता, उर्मिला ? तुम कुछ कर भी तो न सकतीं, परेशानी जरूर उठातीं।"

"हाँ, और तुम तीनो के तीनो यह जान कर भी कि वहाँ मृत्यु के मुँह मे प्रवेश करना होगा, हँसते हुए चले ही गए। पुरुषों की बातें कौन जाने ?"

"उस समय निश्चित कुछ भी न था, पर खतरे की आशंका अवश्य थी और हुआ भी वही। तुम उस स्थल को तो जानती ही हो, जहाँ मि० ओकले के बँगले के पास सड़क मुडती है ..."

"हाँ, वही जगह जहाँ तीन या चार दिन पहले मैं तुमसे अपनी कार मे मिली थी, और तुम पोलो का अभ्यास कर रहे थे।"

"हाँ, ठीक वही जगह। उससे लगभग २०० गज की दूरी मे मेरी कार की रोशनी सडक पर पडी हुई किसी सफेद चीज पर पडी। पैडल ने मुझसे कार धीमी करने को कहा और वे और मेटलैंड दोनो मोटर मे उतर कर उसके दोनो तरफ बडी सतर्कता से आगे बढने लगे। अधिक नजदीक आने पर मैंने देखा कि कोई सफेद चीज हिल रही है और ऐसा जान पडा मानो दर्द के कारण कोई व्यक्ति छटपटा रहा है। कार रोक कर मैं भी उतर कर आगे बढा। अभी आधा फासला भी मैंने तय न किया था कि वह चीज खडी हो गयी—और उसके खडे होते ही मैं पहचान गया कि यह घोष ही है। उसकी शक्ल मुझे मार-

दिखलाई पड़ रही थी। चेहरे पर एक अपूर्व शान्ति और मुस-कराहट खेल रही थी, हाथ मे रिवाल्वर था। मेरे दोनो साथियो ने रिवाल्वर देखते ही अपनी गोलियाँ दाग दीं। पर घोष इसके पहले ही अपना काम तमाम कर चुका था। उसने जान बूझ कर अपनी कनपटी में गोली मार ली। तीनों गोलियाँ लगभग एक साथ उसके शरीर में लगीं। सिविल सर्जन ने बाद में बतलाया कि उनमें से एक भी गोली घोष की मृत्यु के लिए काफी थी।"

यह सुन कर उर्मिला इतनी परेशान हो उठी कि उसके मुँह से एक शब्द भी निकलना मुश्किल हो गया। उसकी साँस जोरों से चल रही थी। उर्मिला को भी इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि घोष ने गोली त्रायन पर क्यों न चलाई। यदि चलाई होती तो त्रायन आज उसके सामने यह सब बातें सुनाने के लिए जीवित न होते।

त्रायन की मृत्यु के विचार मात्र से उर्मिला घबरा उठी। उसका वक्षःस्थल रह रह कर उठ रहा था। उसके लिए बैठा रहना असम्भव हो गया और सामने की खिड़की खोल कर उसके सामने खडी हो गई, किन्तु खिडकी से गरम हवा का झोका आने के कारण हार कर उसे भी बन्द कर देना पडा।

त्रायन पर उर्मिला के प्रेमावेश में आने का बहुत पभाव पडा और वे उसे कंधे पर हाथ रख कर सांत्वना देने लगे।

"प्रिय उर्मिला, तुम क्या सोच रही हो। घोष की मृत्यु के सिवाय और हुआ ही क्या है? उस बेचारे के लिए मुझे भी बहुत ही दुख हो रहा है।"

इसके उत्तर मे उर्मिला के मुँह से एक शब्द भी न निकला। उसने केवल त्रायन के कधे पर अपना सिर रख दिया और फफक फफक कर रोने लगी। त्रायन उसे अपने और भी निकट

खींच कर सांत्वना देने लगे। अब उन्हे इस बात मे कोई सन्देह न रह गया कि वह उनसे प्रेम करती है। ब्रायन के हृदय मे उर्मिला के लिए सौहार्द्र की भावना अवश्य थी, किन्तु प्रेम वे केवल मे ओकले से ही करते थे।

कुछ देर बाद उर्मिला की हिचकियाँ थमी और आँखें पोछ कर मुसकराते हुए बोली—"मैं यह क्या बेवकूफी कर बैठी। इसके लिए मुझे क्षमा करना, ब्रायन। अच्छा अब बाकी बातें बता कर इस किस्से को पूरा करो।"

"मेरा मि० ओकले से कल फिर कुछ झगड़ा हो गया।"

"क्यो उनका इस घटना से क्या सम्बन्ध है ?"

"बहुत कुछ। पहली बात तो यह कि जब मैंने उन्हे इस घटना का समाचार दिया तो उन्होंने समझा कि मैंने उनके ब्रिज के खेल को बिगाड़ने के लिए ही जानबूझ कर ऐसा किया था। जब मैंने उन्हे और सब बाते बतलाई तो वे इसका दोष भी मुझ पर लादने लगे और साथ ही पैडल और मेटलैंड का जीवन खतरे में डालने का आरोप भी उन्होंने मुझ पर किया। मै भी उस समय क्रोध में पागल हो रहा था। पर इसमे मि० ओकले का अधिक कसूर नहीं है। यदि उनके जितना मै भी भारत में रह लिया होता तो शायद मैं भी उनके ही समान चिडचिडे और झक्की स्वभाव का हो जाता। "

"नहीं, आप ऐसे कभी न होगे"—उर्मिला ने जोर देकर कहा।

'तुम्हे क्या मालूम है ?"

मालूम तो मुझे कुछ भी नहीं, किन्तु आपका स्वभाव ऐसा कभी न होगा, यह कह सकती हूँ।"

"खैर, आज प्रात काल मैं प्रिन्सिपल से फिर मिला। उनमें और मि० ओकले में कितना अन्तर है यह भी आज मुझे मालूम हुआ। प्रिन्सिपल ने मुझे हर तरह की सहायता दी। कल मैच मे घोष के घुटने मे चोट लग गई थी और बनर्जी तथा गुप्ता उसे मैदान के बाहर उठा कर ले गए थे। रात को उसे बुखार चढ़ आया और गुप्ता ने अपने और बनर्जी के लिए उसके पास परिचर्य्या के लिए रात भर रहने की अनुमति वार्डन से माँग ली थी। परन्तु, अब मुझे पता लगा है कि चोट लगने और बुखार आने की बातें केवल बनावटी थीं।"

"परन्तु इन बातों से हमें मतलब ही क्या है ?"

"यदि पार्टी के बाद मैं अकेला मकान वापस आता और घोष ने यदि अपना काम ठीक तरह से किया होता तो मेरी हत्या का कोई प्रमाण तक न मिलता। हत्या की बात प्रकट होने के बहुत पहले ही घोष अपने कमरे में पहुँच जाता और उसके बीमार बने रहने के कारण कोई उस पर सन्देह तक न करता।"

ब्रायन की हत्या की बात सुन कर उर्मिला एक बार फिर काँप उठी।

"प्रिन्सिपल ने बनर्जी और गुप्ता को बुलाने के लिए आदमी भेजा, पर वे पहले ही गायब हो चुके थे। बनर्जी के कमरे की तलाशी लेने पर बिस्तरे और किताब के सिवाय वहाँ कुछ भी न मिला। ऐसा जान पड़ता है कि उसके छिपने की जगह कहीं निकट ही है। गुप्ता के कमरे में एक 'साइक्लोस्टाइल' मशीन मिली। ऐसा जान पडता है कि जिन क्रान्तिकारी पर्चों के सम्बन्ध में मैं इतने दिनों से परेशान हो रहा था, उन्हे गुप्ता ही निकाला करता था। घोष के कमरे की भी तलाशी ली गई—उसमे भी कुछ न था।"

नायन के जेब मे घोप का अन्तिम सन्देश अभी तक रखा था और उसका मतलब भी अब उनकी समझ मे अच्छी तरह आ गया था, किन्तु उर्मिला से इसका जिक्र करना उन्हे ठीक न जान पड़ा। वे बोले—"बस यही हुआ है। इसमे कोई सन्देह नहीं कि बनर्जी, गुप्ता और घोप तीनो का क्रान्तिकारी दल से सम्बन्ध रहा है। इनका नेता बनर्जी है और मेरे ख्याल मे यह षडयंत्र भी उसी के दिमाग की उपज था। बनर्जी और गुप्ता की गिरफ्तारी के लिए आजकल मै अपने समस्त साधनो का उपयोग कर रहा हूँ।"

इसके बाद दोनो कुछ देर तक चुप रहे। नायन बहुत ही थके हुए जान पड़ रहे थे, जैसा २४ घंटे के कड़े परिश्रम और चिन्ता के बाद होना स्वाभाविक था। उन्होंने आरामकुरसी पर पैर फैला लिए और गहरे विचार मे पड गए। सोचने लगे कि बनर्जी और गुप्ता की गिरफ्तारी कहाँ तक सम्भव है? एकाएक उन्हे अपनी प्रियतमा का ध्यान आ गया। उसके वे पत्र उनके स्मृति-पटल पर अंकित हो गए, जिनमे वह उनसे बार बार आने का अनुरोध कर रही थी और लिख रही थी कि उनके आने पर वे दोनो क्या क्या आनन्द मनावेंगे, कहाँ कहाँ जायँगे। उन्हे इसकी भी याद उठ आई कि पहले पहल दोनो किन परिस्थितियों मे मिले थे और किस प्रकार जंगल के सुनसान मे एक दूसरे को दिल दे बैठे थे। इस मधुर स्वप्न में नायन अपने को कुछ समय के लिए ऐसे भूल गए कि उन्हे यह भी न जान पड़ा कि कब उनकी आंखे मिच गई। कुछ ही देर मे वे खूब गहरी नींद मे सो गए।

उधर बेचारी उर्मिला उनके शिशु समान सरल चेहरे की तरफ टकटकी लगा कर प्रेम से देख रही थी। आह, यदि वह

उनके सिर को छाती से लगा कर अपने बाहुपाश मे परिवेष्टित कर सकती तो क्या उनके मस्तिष्क की थकान न जाती, क्या उन्हे आराम न मिलता ? उसके मन मे हाथ बढ़ा कर उनके सिर, चेहरे और बालो का स्पर्श करने की कामना बलवती हो उठी पर वह अपनी जगह से हिली तक नहीं और साँस भी धीरे धीरे लेती रही कि कहीं प्रियतम की नींद उचट न जाय।

जंगल की गुफ़ा

त्रायन के पास बैठी बैठी उर्मिला उनकी बतलायी बातो पर गौर करती रही। उसे आश्चर्य्य तो इस बात पर हो रहा था कि त्रायन की हत्या का प्रयत्न स्वयं बनर्जी ने क्यों न किया और जब उसने घोष के जिम्मे यह काम सुपुर्द कर दिया तो घोष ने आत्महत्या क्यों कर ली। साथ ही इस बात का भी सन्तोष उसे हो रहा था कि त्रायन को स्वयं ही सब बातें मालूम हो गयी हैं और जो कुछ उन्हें नहीं मालूम हुआ उसे बताने का दृढ विचार भी उर्मिला के मन में जम गया। किन्तु कभी कभी उसके मन मे यह बात उठ कर अशान्ति अवश्य पैदा कर देती थी कि दल की गुप्त बातें प्रकट करके कहीं वह देश के प्रति विश्वासघात तो नहीं कर रही है।

त्रायन सोते से एकाएक चौंक कर जाग पड़े। सोने में वे इतने बेसुध हो गए थे कि स्थान और समय का अनुमान करने में उन्हें कुछ समय लग गया। परन्तु सामने उर्मिला को बैठे देख कर उन्हें सब परिस्थिति समझ मे आ गई।

"उर्मिला, माफ़ करो। मैं कितना मूर्ख हूँ। अभी कुछ समय पहले आराम के लिए मैंने आँख बन्द की थी और इसी बीच मे सो गया।"

' अरे माफी क्या ? ऐसा जान पड़ता है आप सोए नहीं हैं, इसीलिए नींद आ गई।"

"आज प्रात.काल कुछ घंटे मैं अवश्य सो लिया हूँ, किन्तु कुल मिला कर इस सप्ताह अवश्य कम सोया हूँ।"

ब्रायन ने ह्विस्की और सोडा मिला कर पिआ। इसके बाद जब दोनो फिर सोफ़ा पर आराम से बैठे तो उर्मिला बोली—"अभी मै आपकी कही हुई बातो पर विचार कर रही थी। मुझे इस बात पर आश्चर्य्य हो रहा है कि बनर्जी ने यह कार्य अपने ही हाथ मे क्यो न लिया।"

"बनर्जी शायद दल का नेता है और इसमे तो सन्देह नहीं है कि अपने गुट्ट का मस्तिष्क वही है। आयोजनाये तो वह खुद तैयार करता है, किन्तु उन्हे पूरा करने के लिए वह अन्य विश्वासपूर्ण व्यक्तियो को नियुक्त करता है।"

उर्मिला को मुशी जी के कमरे का वह दृश्य याद आ गया, जब उसने घोप से बनर्जी के विरुद्ध सहायता का अनुरोध किया था और घोप मे कुछ करते न बना था। बनर्जी ने कहा था कि घोप को पहले ही सबक मिल चुका है।

"हाँ यही सम्भावना है। अब सवाल उठता है कि घोप ने बनर्जी की आज्ञा का उल्लंघन क्यो किया।"

"मुझे मारने के लिए घोप ऐसे व्यक्ति द्वारा नियत किया गया था, जिसकी आज्ञा उल्लंघन करने की सामर्थ्य उसमें न थी, क्योंकि अनुशासन भंग करने का दण्ड मृत्यु के सिवाय और कुछ

न होता। मुझसे घोष की मित्रता थी। इसीलिए उसने मुझे बचाने के लिए अपनी जान दे दी।"

उर्मिला ने इसके बाद जो कुछ कहा उससे ब्रायन एकाएक चौंक पड़े। उसने उन्हे बतला दिया कि घोष और बनर्जी दोनो ही उसके प्रेमी रहे हैं।

"मैं घोष को तीन-चार वर्ष पहले से जानती हूँ। सार्वजनिक सभाओं और विद्यार्थी यूनियन की सभाओ मे वह मुझसे अकसर मिलता था और सदैव मेरी अाभ्यर्थना के लिए तैयार रहता था। स्वभाव से वह इतना शर्मीला था कि शायद ही कभी वह किसी से अपने प्रेम की बात प्रकट करता। परन्तु स्त्रियॉ प्रेम की दृष्टि को समझ जाती हैं, और मैं भी समझ गई। बनर्जी का स्वभाव उससे बिलकुल विपरीत है। उसने स्पष्ट शब्दो में मुझ पर अपना प्रेम प्रकट कर दिया, किन्तु साथ ही साथ उसने यह भी कहा कि अपना समस्त जीवन उसने देशसेवा के लिए उत्सर्ग करने का निश्चय कर लिया है और जहाँ तक उसकी व्यक्तिगत इच्छाओं अथवा आकाक्षाओ का सम्बन्ध है वे इस उसके निश्चय में बाधा नहीं डाल सकतीं।"

यह बातें कहते कहते उर्मिला को मुशी जी के कमरे की याद आ गई, जहॉ बनर्जी ने उस पर अपना प्रेम प्रकट किया था और साथ ही यह भी कहा था कि कम से कम उसकी (बनर्जी) वजह से उस (उर्मिला) पर किसी तरह की ऑच न आने पावेगी। बनर्जी के मुख पर उस समय कितनी सच्चाई और वेदना अंकित थी उसका स्पष्ट चित्र उर्मिला की कल्पना मे खिंच गया। उर्मिला ने तब अपने आप से प्रश्न किया, क्या ऐसे बनर्जी के प्रति मैं विश्वासघात करूँगी? परन्तु साथ ही मैंने उससे यह भी तो कह दिया था कि उसके किसी भी उग्रतापूर्ण कार्य

का मैं शक्ति भर विरोध करूँगी। पर मैं जो करने का विचार कर रही हूँ, यह तो बिलकुल विश्वासघात है। पर . . बनर्जी तो साफ ब्रायन की जान लेने पर उतारू है। जब तक बनर्जी जीवित रहेगा तब तक ब्रायन की जान भी सुरक्षित नहीं रह सकती।

अब उर्मिला के सामने बनर्जी और ब्रायन दोनों में से एक को जीवित देखने का प्रश्न रह गया और उर्मिला ने ब्रायन के पक्ष में अपना फैसला कर लिया।

उर्मिला की आँखे नीचे की तरफ लगी हुई थीं। उसकी आकृति से हृदय का अन्तर्द्वन्द साफ झलकता था। कैप्टिन ब्रायन समझ गए कि उर्मिला को कठिनाई क्या है।

"बरसों हो गए"—उर्मिला ने कहना आरम्भ किया,—"बनर्जी मुझसे प्रथम बार लंदन में मिला था। वास्तव में उसका नाम बनर्जी नहीं है, उसका नाम है "

"ठहरो, उर्मिला!"—बीच ही में ब्रायन ने उसे रोक दिया,—"उसका नाम चाहे कुछ हो, उसके बारे में तुम मुझे कुछ भी न बतलाओ। अभी जितनी बातें जानने की मुझे जरूरत है, मैं सब जानता हूँ। इससे अधिक कुछ जानने की यदि मुझे आवश्यकता होगी तो मैं खुद जान लूँगा।"

उर्मिला ने प्रश्न सूचक दृष्टि से पूछा—'क्यों?"

'मैं तुम्हें इस मामले में घसीटना उचित नहीं समझता। मैं जानता हूँ कि तुम अपनी इच्छा के विरुद्ध बनर्जी के बारे में बताने जा रही हो ताकि मुझे उसका पता लगाने में सहूलियत हो। उर्मिला इस भावना से मैं भी अपरिचित नहीं हूँ। अपने देश के किसी आदमी के खिलाफ बयान देना मेरे लिए भी बड़ा

अप्रिय कार्य होगा, जिसके स्वाधीनता प्राप्त करने के साधनों को यद्यपि मैं ठीक नहीं समझता, किन्तु जिसकी सच्चाई और नेकनीयती के लिए मेरे हृदय मे श्रद्धा है।"

"धन्यवाद"—उर्मिला ने कृतज्ञता भरे स्वर मे कहा—"किन्तु यह कह देने मे मै किसी के प्रति विश्वासघात नहीं समझती कि बनर्जी बहुत ही चतुर, हठी और निर्दय है और वह आपके पीछे लगा हुआ है। जब तक बनर्जी स्वतंत्र रहेगा, तब तक आपका जीवन खतरे में ही रहेगा।"

"मैं बनर्जी और गुप्ता दोनों ही की गिरफ्तारी के लिए प्रयत्नशील हूँ ."

--और मुश्किल से ४०० गज की दूरी पर बनर्जी डाकिए के वेश मे मुंशीजी के कमरे मे उनसे निर्भयतापूर्वक बातचीत कर रहा था।

उस दिन बनर्जी और गुप्ता जब होस्टल से निकल कर जंगल की तरफ चले तो गुप्ता को आश्चर्य होने लगा कि आखिर बनर्जी कहाँ जा रहा है। सघन वन में वह इस तरह चला जा रहा था मानो यह मार्ग उसका परिचित हो। गुप्ता के पैर कई जगह काँटे इत्यादि के कारण छिल गए। चलते चलते कई बार बनर्जी उसकी आँखों से बिलकुल ओझल हो जाता था किन्तु उसकी पदध्वनि और पत्तों की खड़खड़ाहट के इशारे के कारण गुप्ता उसके पीछे चला बराबर ही जा रहा था।

"क्या तुम इस जगह को जानते हो?"—बनर्जी ने एकाएक एक जगह खडे होकर गुप्ता से पूछा। गुप्ता को अब अँधेरे में कुछ दिखलाई पडने लगा था। हर तरफ पेड़ ही पेड़ नजर आते थे। जिस जगह वे खडे हुए थे, घास उगी हुई थी और पगडंडी वगैरह का निशान तक किसी तरफ न था।

"नहीं"—उसने उत्तर दिया।

"क्या तुम यहाँ फिर आ सकते हो ?"

'नहीं"

"यहाँ से बाहर निकल कर जा सकते हो ?"

"कह नहीं सकता।"

"यह रास्ता तुम्हें जानना ही होगा, क्योंकि अब कुछ दिनों तक हमें इसी तरफ रहना है। सावधानी से मेरे पीछे चले आओ।"

बनर्जी कुछ दूर आगे जाकर हाथ और घुटनों के बल बैठ गया और उसने गुप्ता से भी वैसा ही करने को कहा। यह लोग एक गहरे नाले के करारे से रेंग रेंग कर नीचे उसके सूखे तले पर आकर खडे हो गए। यहाँ बहुत से पत्थर के टुकडे पडे हुए थे, जो किसी समय पानी के थपेडों के कारण तरह तरह की शकलों के हो गए थे। इनके बीच से लगभग २० कदम चलने के बाद यह लोग किसी गुफा के पास आ गए, जिसका मुँह बडी चतुराई से बेल और पौधों के द्वारा छिपा दिया गया था। गुफा के मुँह के भीतर कुछ कदम चलने के बाद एक दरवाजा दिखलाई दिया, जिसे बनर्जी ने अपनी धोती के छोर से कुंजी निकाल कर खोल लिया। गुप्ता के भीतर आते ही बनर्जी ने दरवाजा धीरे से बन्द कर दिया। गुप्ता के छिले हुए पैरों में पीडा हो रही थी और वह बुरी तरह थका हुआ था। कुछ ही सैकिंड में बनर्जी ने टेबिल पर रखी हुई तेज हरीकेन लालटेन को जला दिया। लालटेन की रोशनी में गुप्ता को भीतर का दृश्य देखकर बडा आश्चर्य हुआ। गुफा देखने में एक बडा हाल सा जान पडती थी। एक तरफ चार लोहे के मजबूत सन्दूक रखे थे और बाकी तीन तरफ छः या सात

चारपाइयाँ बिछी हुई थीं। बीच मे एक छोटी टेबिल थी, जिसके चारों तरफ कुछ कुरसियाँ पड़ी थीं।

बनर्जी ने अपने थके हुए शरीर को एक कुरसी पर डाल दिया और टेबिल पर कुँहनी टेक कर तथा हाथों पर सर रखकर गहरे विचार में डूब गया। कुछ समय बाद बनर्जी ने गुप्ता की तरफ दृष्टिपात किया। वह बेचारा अभी तक खड़ा था।

गुप्ता के कुरसी पर बैठने के बाद बनर्जी ने उससे कुछ हँसकर कहा—"यह सब देखकर तुम्हे आश्चर्य्य हो रहा है, क्यो न ?"

बनर्जी इस बीच में पूर्ण स्वस्थ हो गया और उसने अपना अगला कार्यक्रम भी सोच लिया।

"बडी विचित्र जगह है"—गुप्ता ने चारों तरफ देखते हुए कहा। अन्त में उसकी नजर सन्दूकों पर जाकर ठहर गई और वह सोचने लगा कि इनमें क्या हो सकता है।

बनर्जी गुप्ता के मन की दुविधा को समझ गया और बोला—"इनमें रिवाल्वर, गोली, कपड़े, भोजन इत्यादि आवश्यक चीजे भरी हुई हैं। यहाँ हमें किसी प्रकार का भय नहीं है। शहर में हर बाजार, हर गली और हर मुहल्ले में तलाश हो रही होगी। जिस जगह घोष ने हमारे साथ विश्वासघात किया उससे केवल आधी मील की दूरी पर हम यहाँ पूर्ण रूप से सुरक्षित बैठे हुए हैं यह बात किसी के ध्यान मे भी न आई होगी और यदि उन्होंने इस तरफ खोजा भी तो क्या हम उन्हें कभी मिल सकेंगे।"

घोष का नाम आते ही गुप्ता चौंक उठा और उसने काँपते हुए पूछा--"घोष का क्या हुआ ?"

"घोष ने ओकोनर ब्रायन की हत्या करने के स्थान पर अपनी

ही कनपटी मे गोली मार ली। परन्तु जहाँ तक घोष का सम्बन्ध है उसके ऊपर मुझे कुछ सन्देह नहीं होता, क्योंकि ब्रायन के साथ के दोनों साहबो ने भी उसपर गोली चलायी थी।"

"तब घोष ने हमारे साथ कैसे विश्वासघात किया ?"

"घोष ने उन लोगो को कोई खबर तो नहीं दी, क्योंकि वह यदि खबर देता तो उस पर गोली कभी न चलाई जाती। उसका विश्वासघात यही है कि उसने आज्ञा का उल्लङ्घन किया। सुपरिन्टे-न्डेन्ट पुलिस पर गोली चलाने के लिए अपनी अनिच्छा वह पहले भी प्रकट कर चुका था, पर मुझे यह आशा न थी कि एक बार वचन देकर इस तरह धोखा दे जायगा। मेरी समझ मे यह नहीं आता कि ओरोनर के साथ दो अन्य साहब क्यो थे। जब हमे लालाजी की दावत मे केवल सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस के ही जाने की सूचना मिलो थी और दूसरी बात यह कि उनके हाथ मे पिस्तौलें कहाँ से आई ? इससे साफ जाहिर होता है कि वे हमारा सामना करने के लिए पहले से तैयार हो कर आये थे। सम्भव है कि प्रेमसिह के बेहोश किए जाने के कारण ब्रायन के मन मे सन्देह पैदा हो गया हो और इसीलिए वे आत्म-रक्षा के लिए तैयार होकर आए हो। मुंशी जी से पूछा जाय शायद वे इस सम्बन्ध में कुछ बतला सकें।"

'यदि तुम्हारे ख्याल मे घोष ने खबर नहीं दी तो फिर हमारे होस्टल मे भागने दी की क्या आवश्यकता थी।"

"शायद जगल की दौड़धूप के कारण तुम्हारा दिमाग बिगड़ गया है। सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस सुबह होते ही पहला काम यह करेंगे कि प्रिन्सिपल से घोष और उनके साथियो का पता लगावेंगे। क्या तुम नहीं जानते कि प्रिन्सिपल ने एक बार मुझे और घोष को कमरे के अन्दर अनियमित रूप मे पकड़ा था

और कल ही घोष की देखरेख करने के लिए तुम अपने और मेरे लिए वार्डन से अनुमति ला चुके हो। और बातो को छोड़ो सिर्फ मेरा और तुम्हारा मिल कर घोष को फील्ड से कमरे तक ले जाना ही यह प्रकट करने के लिए काफी नही है कि हम उसके साथी हैं। क्या सुबह हम दोनों से तरह तरह के प्रश्न न पूछे जाते ? क्या हमारी तलाशी न ली जाती ? ओकोनर को मेरे कमरे मे कुछ न मिलेगा, किन्तु कुछ न रहने ही से उनका सन्देह और भी बढ़ जायगा। घोष के कमरे मे भी उन्हे कोई चीज न मिलेगी, किन्तु तुम्हारे कमरे से वे साइक्लोस्टाइल मशीन ले जायँगे।"

"ऊँह ले जायँ"—गुप्ता लापरवाही से बोला—"मैं तो कल सुबह ही निकल कर ब्रायन पर दिन दहाड़े गोली चलाने को तैयार हूँ। जो कुछ दंड मिले उसे भी मैं खुशी से सह लूँगा और तुम्हारे आगे यहीं शपथ लेता हूँ कि मेरे मुँह से अदालत में ऐसा एक भी शब्द न निकलेगा, जिससे दल को किसी तरह नुकसान पहुँचने की सम्भावना हो।"

"हाँ, अन्त में यह काम तुम्हारे जिम्में भी किया जा सकता है, पर अभी नहीं। मैं इस कार्य को खुद करने की अनुमति प्रधान से प्राप्त कर रहा हूँ। यदि उन्होंने मुझे अनुमति प्रदान न की तो तुम्हीं इसे अपने हाथ में ले लेना। तब तक हम लोगों को यहीं रहना पडेगा।"

बनर्जी इसके बाद चारपाई पर लेट गया और कुछ ही मिनट मे गहरी नींद में सो गया। गुप्ता भी दूसरी चारपाई पर जाकर पड रहा पर उसे कुछ देर से नींद आई।

बनर्जी ने जागने पर गुप्ता के साथ एक सन्दूक में से खाने की चीजें निकाल कर भोजन किया। भोजन समाप्त करने

के बाद उसने गुप्ता को कुछ कपड़े देकर कहा—"इन्हे पहनो तो—यहाँ तुम्हे लकड़ी बीनने वाली बुड्ढी औरत के वेश में रहना होगा।"

गुप्ता ने सफेद बालो की एक टोपी सर मे लगा ली। बदन पर छींट की फटी हुई कुरती पहनी और ऊपर से मैली धोती पहन कर बनर्जी को दिखाता हुआ कमर झुकाकर चलने लगा।

"हाँ, ठीक है"—बनर्जी ने खुश होकर कहा—"अब तुम जाओ। रास्ते का ध्यान रखना, मुझे भी अभी बहुत काम करना है।"

गुप्ता जब जंगल मे घूम फिर कर गुफा के आगे पहुँचा तो यह देख कर उसे बडा आश्चर्य्य हुआ कि वरदी पहने हुए एक डाकिया दरवाजा खोल रहा है।

"बेवकूफ न बनो और भीतर चले आओ"—डाकिया बने हुए बनर्जी ने हँस कर कहा—"मै मुशीजी के पास चिट्ठियाँ भिजवाने के लिए गया था।"

बनर्जी ने मुंशीजी के यहाँ उनसे यह भी पूछा कि ब्रायन के साथ अन्य दो साहब किस प्रकार आ गए।

मुंशीजी ने बतलाया कि निमन्त्रण केवल ओकोनर ने ही स्वीकार किया था। अन्य दोनो साहबो के आने की व्यवस्था सम्भव है ब्रायन ने फोन द्वारा लालाजी से कर ली हो।

बनर्जी ने अपने मन मे कहा कि प्रेमसिंह को बेहोश किया जाना वास्तव मे एक गलती थी। यदि ऐसा न होता तो ब्रायन इतने सतर्क कभी न होते।

क्लब में बातचीत

ब्रायन जब उर्मिला के घर से रवाना हुए उस समय करीब ७ बज चुके थे। उन्होंने अपनी मोटर बंगले के बजाय क्लब की तरफ मोड़ दी कि शायद मेटलैंड या पैडल में से कोई मिल जाय।

मेटलैंड और पैडल लान में बैठे हुए लालाजी की दावत और रात की घटना के विषय में बातें कर रहे थे।

पैडल—लालाजी की दावत ने सचमुच मेरी आँखें खोल दीं। यदि मैं खुद मौजूद न होता तो इन सब बातों पर कभी विश्वास न करता। सभी व्यक्तियों ने हमारी अभ्यर्थना की। मैं तो कहता हूँ मेटलैंड, इतना आनन्द मुझे अपने समाज की भी किसी पार्टी में न आता।

"अब शायद तुम्हें विश्वास हो गया है कि भारतीय समाज में भी सुसंस्कृत स्त्री-पुरुष होते हैं।"—मेजर मेटलैंड ने कहा।

"मैं तो खुद ही इसके लिए शर्मिन्दा हूँ। सोच रहा हूँ कि पहले ब्रायन ने न जाने मुझे कितना बड़ा गधा समझा होगा।"

"ब्रायन मनुष्य को पहचानते हैं। इस सम्बन्ध में उनसे बहुत कम गलती होती है।"

"जब तुम्हारी तरह मेरे बाल सफेद हो कर झुर्रियाँ पड़ जायँगी और तुम्हारी ही तरह बुड्ढा और कुरूप हो जाऊँगा तो मैं भी बुद्धिमान हो जाऊँगा।"

मेटलैंड न तो बुड्ढे थे, न कुरूप, न उनके बाल ही सफेद हुए थे—और झुर्रियों का तो कहीं नाम निशान भी न था, इसलिए पैडल के इस मजाक पर वे ठहाका मार कर हँस पडे।

"वास्तव में लालाजी की उदारता और प्रबंध देख कर मैं ताज्जुब में रह गया। जब हम चलने लगे तो उन्होंने मुझसे कहा कि हम लोगों को अपने परिवार वालों की तरह ही समझिए और जब जी चाहे इधर चले आइये। इस घर का द्वार आपके स्वागत में सदैव खुला रहेगा।"

"इसमें शक नहीं कि लालाजी ने बहुत ही सज्जनता का व्यवहार किया है। मैं तो उनके यहाँ अक्सर जाने का विचार कर रहा हूँ विशेषकर उस समय जब उर्मिला वहाँ हो। उर्मिला बहुत ही सुसंस्कृत लड़की है।"

"उर्मिला इतनी सुन्दरी और सुसंस्कृत है कि किसी भी समाज में वह चमक उठेगी और वह समाज भी उसे अपनाने में गौरव ही समझेगा।"

"और देखो ब्रायन ने मुझसे क्या चाल चली। वे कहने लगे कि मैं डींग हाँक रहा हूँ। मुझे जब ज्ञात हुआ कि उर्मिला हर्लिंघम गयी है और उसे पोलो का शौक है तो वहाँ खेल देखने के लिए यदि मैंने उसे निमंत्रण ही दे डाला तो क्या बुरा किया। यदि मेरे पास 'रान्स रायस' है तो उसमें मेरा क्या कसूर है? हाँ इसका बखान करने लगता तब दूसरी बात होती।"

"नहीं तुम्हारा तो इसमें भी कोई कसूर नहीं कि तुम [illegible] में पोलो के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी हो।"

"कुछ भी हो मैंने खुद तो यह कहा न था और जब एक बार इस बात को मिसी ने कह दिया तो उसका खण्डन करके मैं नाहक झगड़ा क्यों करता। लो भई ब्रायन भी आ पहुँचे।"

ब्रायन धीरे धीरे आकर उनके पास खड़े हो गए। इसी बात पर [illegible] अपने मित्रों के लिए [illegible] भी न हुए थे, किन्तु इस

वीच मे न जाने कितनी घटनाएँ हो चुकी थीं। थकान के चिह्न उनके चेहरे से प्रकट हो रहे थे।

"बड़े सुस्त हो जी"--पैडल ने कहा—"जान पड़ता है कि सीधे चारपाई से उठ कर चले आ रहे हो।"

"नही यह वात नही है। वल्कि यह कहिए कि मै चारपाई पर जाने की तैयारी मे हूँ और इतना सोना चाहता हूँ कि हफ़्ते भर तक न जागूँ।"

"हे ईश्वर!"—पैडल चिन्ता की वनावटी मुद्रा वना कर वोले—"यदि मैं तुम्हारे स्थान पर होता तो अभी डाक्टर के पास दौड़ा हुआ जाता। तुम्हे देखने से वैरीवैरी, नींद न आने और न जाने कितनी ही वीमारियों के लच्तण प्रकट हो रहे हैं। हॉ, मेटलैंड मै तुमसे कह रहा था कि ”।

"चुप रहो"—मेटलैंड ने पैडल को डपट कर चुप किया और साथ ही वैरा को सोडा तथा ह्विस्की लाने की भी आज्ञा दी। इसके वाद वे ब्रायन से वोले—"ऐसा जान पड़ता है कि कल से तुम वहुत कम सोये हो। कोई नई खवर?"

"कोई क्या वहुत। मुझे ज्ञात हुआ है कि घोष को मेरी हत्या के लिए नियत किया गया था, जैसा मैं पहले ही अनुमान कर चुका था। घोष के दल का नेता और उसके एक दूसरे साथी का मुझे पता तो लग गया है, किन्तु वे दोनों भाग गए हैं। फिर भी कम से कम जॉच का आधार तो मिल ही गया है।"

इस वीच में पैडल वरावर मेजर मेटलैंड की वात काट कर अपनी मजाक भरी वातों से ब्रायन का मनोरंजन करते रहे, जिसके कारण गम्भीरता पूर्वक वातें करते रहने पर भी उन दोनों को अपनी हँसी रोकना असम्भव हो जाता था। ब्रायन ने तव

उन्हे बतलाया कि जिस बनर्जी का जिक्र उस दिन प्रिन्सिपल के आगे चल रहा था वही इस जिले मे क्रान्तिकारियो का नेता बन कर उनका सगठन कर रहा है।

पैडल ने सहसा गम्भीर होकर कहा—"यदि घोष अपना काम ठीक तरह करता तो तुम किसी तरह भी न बच सकते। क्या तुम्हे मालूम पडा कि उसने तुम्हे गोली मारने के बजाय अपनी ही आत्म हत्या क्यो कर ली ?"

"यह भी पता मुझे लग चुका है। घोष अपने कमरे मे एक अन्तिम सन्देश छोड गया है, जिसका स्पष्टीकरण मै केवल संयोगवश कर सका हूँ। उसने मेरा जीवन अपने एक ऐसे मित्र के लिए बचाया है, जिसे वह प्यार करता था और जो उसके स्थान मे मुझे प्यार करता है या करती है।"

'विरोधी प्रकृतियो का कैसा असाधारण मिश्रण है"—पैडल ने कहा—"यह व्यक्ति पहले तो एक ऐसे क्रान्तिकारी दल मे सम्मिलित होता है, जिसका मुख्य कार्य कायरतापूर्ण हत्याएँ करना है और वही अन्त मे सिडनी कार्टन' की तरह अपने जीवन का अन्त करता है। महान आश्चर्य!"

इसके बाद ब्रायन ने क्रान्तिकारियो के षड्यन्त्र की सभी बाते इन लोगो को बतलायी कि घोष ने किस तरह चोट लगने का बहाना किया किस तरह बनर्जी और गुप्ता ने वार्डन से रात भर

घोष के पास रहने की अनुमति प्राप्त की तथा गुप्ता ने किस तरह प्रेम सिंह को अफीम खिला कर बेहोश किया। इस बीच मे पैडल बराबर इधर-उधर की बाते करके बाधा डालते रहे। मेटलैंड सब हाल सुनने को उत्सुक थे इसलिए उन्होंने पैडल के आगे ह्विस्की और सोडा रख कर कहा कि आप अपने को इससे सन्तुष्ट कीजिए।

इसके बाद उन्होंने ब्रायन से कहा—"तुमने कहा था कि बनर्जी और गुप्ता फरार हो गए हैं। उनकी गिरफ्तारी का तुमने क्या प्रबंध किया है ?"

"इनकी गिरफ़्तारी मे अभी कुछ समय लगेगा। मैंने इन लोगों की हुलिया सब ज़िलो मे भेज दी है और गिरफ्तारी के लिए इनाम की भी घोषणा कर चुका हूँ। मेरा ख्याल है कि यह लोग अभी कुछ उपद्रव न करेंगे, क्योंकि इस समय तो वे छिपे रहने ही मे अपनी सारी शक्ति खर्च कर रहे होंगे। इसके लिए मैं उनका हृदय से कृतज्ञ भी हूँ, क्योंकि मुझे प्रात काल ही छुट्टी लेकर १० दिन के लिए बाहर जाना है।

"क्या मैं अब बोल सकता हूँ"—पैडल ने शरारत भरी आजिजी के साथ कहा—"देखो, मैं कितना योग्य हूँ ?"

" न भई, इतनी देर तक चुप रहने मे तुम्हे जो कष्ट हुआ है उसके बदले मे सोडा और ह्विस्की तुम मेरी तरफ से और पी लो।"

"सेना मे जितने भी अफसर हैं उनमें अकृतज्ञता के लिए मेटलैंड तुम्हे पहला इनाम मिलना चाहिए। दूसरों की बातें जानने की जो तुम्हारी अनन्त अभिलाषा है वह कुछ शान्त हो सके इस-लिए चुप रह कर मैंने अपने स्वभाव का दमन किया और मैंने ।"

"ऐसा जान पडता है, पैडल कि तुम्हारे दिमाग मे फितूर उठा करते हैं"—ब्रायन ने हँसते हुए कहा।

"यह बेवकूफी की बात मै मेटलैड से सुनने की आशा तो कर सकता था पर तुमसे नही। खैर, यह जान लो कि जो कुछ कह रहा था मै तुम्हारे ही भले के लिए कह रहा था, मेजर मेटलैड का इसमे कुछ भी सम्बन्ध न था। देखो तुम पहाड ही जा रहे हो न? पहले कुछ दिन तो तुम्हे वहाँ अच्छा लगेगा, इसके बाद तबीयत ऊबने लगेगी। वहाँ तुम्हे एक साथी की जरूरत होगी और मै एक सप्ताह की छुट्टी लेकर वहाँ तुम्हारा साथ देने को तैयार हूँ।

"हे भगवन्!"—मेटलैंड ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा—"अभी तो तुम दो महीने की छुट्टी से आए हो और अब फिर एक सप्ताह की छुट्टी लेना चाहते हो। जिस समय तुम छुट्टी माँगोगे मै भी कमान्डिग अफसर के सामने उपस्थित रह कर देख लूँगा कि वे तुम्हें किस तरह छुट्टी देते है।"

"हाँ-हाँ, तुम यह तो करोगे ही—मै पहले ही तुम्हारे स्वभाव की तारीफ कर चुका हूँ। दूसरे के दूध मे मक्खी बन कर गिरना तुम्हें बहुत पसन्द है। पर मैं यह जानता हूँ कि जब कमान्डिग अफसर को यह मालूम होगा कि मै ब्रायन के मनोरंजन के लिए [illegible] जा रहा हूँ तो वे निश्चय ही इसकी अनुमति दे देगे।"

ब्रायन और मेटलैंड ने जब उनका यह तर्क स्वीकार नहीं किया तब पेटन ने फिर यह कहना आरम्भ किया—"मै मानता [illegible] कि इस आधार पर छुट्टी देने मे शायद कमान्डिग अफसर [illegible]। पर इस हालत मे मै दूसरी चाल चल सकता हूँ, मै [illegible] स्वार्थ की बात [illegible] और सभी मानव स्वार्थी होते है।"

"[illegible] पेटन भी स्वार्थ-परमार्थ का उपदेश देने लगे। इनका [illegible] हुआ है।"—मेजर मेटलैंड ने बीच ही मे [illegible]।

पैडल ने बात काटी जाने की परवाह न करके गम्भीरतापूर्वक कहा—"मै कह रहा था कि सभी मनुष्य स्वार्थी होते हैं। इसी लिए मुझे कमान्डिङ्ग अफसर की स्वार्थपरता से लाभ उठाना होगा और यह लाभ मैं अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरे के लिए उठाऊँगा, क्योंकि मैं खुद स्वार्थी नहीं हूँ।"

मेटलैंड ने इस पर कहकहा लगाया और कहने लगे—"अब पैडल राजनीतिज्ञ का रूप धारण कर रहे हैं।"

"मैं कमान्डिङ्ग अफसर को बतलाऊँगा कि दो महीने की छुट्टी मैं अवश्य ले चुका हूँ, जो मुझे मिलनी ही चाहिए थी। अब इसके अलावा एक सप्ताह की छुट्टी मिलनी चाहिए या नहीं इस सम्बन्ध में कमान्डिङ्ग अफ़सर का मुझसे मतभेद हो सकता है, किन्तु उनका इस विषय में कोई मतभेद नहीं हो सकता कि मेरी अनुपस्थिति में वे मुझसे सम्बन्ध रखने वाली सभी चिन्ताओं से मुक्त रहते हैं। मैं उनसे कहूँगा कि अभी आप को एक सप्ताह और भी चिन्ताओं से मुक्त रहने की आवश्यकता है। हे ईश्वर! मि० ओकले इस तरफ क्यों तशरीफ ला रहे हैं।'

मि० ओकले ने आते ही कहा—'ब्रिज में मैं अपने लिए एक साथी खोज रहा हूँ। क्या आप लोगों में से कोई साहब खेल सकते हैं? आइये न, कैप्टिन पैडल?"

ब्रायन और मेटलैंड एक दूसरे की तरफ देख कर मुसकराने लगे। ब्रायन ने कहा—"कैप्टिन पैडल कुछ समय से ब्रिज खेलने को उत्सुक भी थे।"

"हाँ, आज मेस में भोजन देर से बनेगा, इस लिए उन्हें जाने की भी जल्दी नहीं है।"—मेजर मेटलैंड ने भी उन्हीं की "हाँ में हाँ" मिला कर कहा।

"वाह खूब"—मि० ओकले उत्साह मे चिल्ला उठे,—"जल्दी कीजिए कैप्टिन पैडल, मेरे अन्य दोनो मित्र प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

"वस एक मिनट मे आता हूँ। मैं इन लोगो से एक बात कर लूँ।"

मि० ओकले कुछ दूर जा कर पैडल की प्रतीक्षा करने लगे।—

कैप्टिन पैडल ने बनावटी क्रोध के स्वर मे कहा—"मैं तुम दोनों से इसका बदला लूँगा। ब्रायन, तुमसे तो इस तरह कि तुम्हारे भावी ससुर का साथी बन कर उन्हे इतना हराऊँगा कि वे भी याद रखेंगे और मेटलैंड तुमसे इस तरह कि मि० ओकले से कहूँगा कि मेजर मेटलैंड ने मुझे इतनी शराब पिला दी कि खेल मे कुछ होश-हवास ही न रहा।"

"आवो पैडल, काफी देर हो चुकी है"—उधर से मि० ओकले ने चिल्ला कर कहा।

"अभी आ रहा हूँ। यह दोनो मुझे जुए के विरुद्ध उपदेश दे रहे हैं" मेरा कहना है कि ब्रिज के खेल को जुआ कहा ही नहीं जा सकता है।"

"नहीं, कभी नही।"—मि० ओकले ने तनक कर उत्तर दिया और ब्रायन की तरफ इस तरह देखने लगे मानों उन्हे खा ही जायँगे।

पहाड़ की यात्रा

दूसरे दिन प्रात काल ब्रायन की आँखें खुली तो उनका दिल बाँसो उछल रहा था। उषाकाल की सुखदायिनी वायु के शीतल झोकों के बीच जब उनकी कार आगे बढ़ने लगी तो इतने दिनों की चिन्ताएँ उनके मन से क्षणमात्र में विलीन हो गई और वे प्रियतमा से सुखद-मिलन के कल्पना-सागर की तरंगों में डूबने-उतराने लगे।

झुटपुटे का समय था। प्रकृति में सर्वत्र निश्चलता और शान्ति छाई थी। दाहिनी तरफ सुदूर क्षातिज पर अरुण रवि एक थाली के रूप में निकलता आ रहा था। जैसे जैसे वह ऊपर चढता आता था उषाकाल की रङ्गत भागती जाती थी। पेड़ अपने काले चोले उतार रहे थे और जंगल में शनै शनै रोशनी फैलती जा रही थी। गरमी से झुलसे हुए खेतो में किसान बड़ी मेहनत से पानी दे रहे थे। सड़क के एक किनारे पर चरवाहा पशुओं को हाँकता हुआ ऐसी जमीन की तलाश में था, जिसमें घास काफी हो। दूर दूर बसे हुए गाँवों में जीवन का उदय होता जा रहा था और ब्रायन को बार-बार सड़क पर जाती हुई बकरियों या सुअरों के झुंड से बचने के लिए कार की चाल धीमी करना आवश्यक हो रहा था।

जिस समय ब्रायन ने पहाडी जमीन पर चढना आरम्भ किया सूर्य्य आकाश मे काफी चढ़ चुका था। सामने की पहाड़ियाँ पेड़ो और झाडियों के जगल से ढकी थीं, जिनमें जङ्गली जानवर बहुतायत से पाये जाते थे। पिछले अस्सी या नब्बे मील का जो फासला उन्होने तय किया था उसमें सड़क लगभग सीधी लाइन में जाती हुई जान पडती थी, किन्तु वहाँ अब वृत्ताकार होती हुई

ऊपर चढ़ने लगी। हर घुमाव के बाद नया दृश्य दिखलाई पड़ता था। कहीं गहरी गहरी घाटियाँ चक्कर खाती हुई नदियो के किनारों तक जङ्गलो से ढकी थीं तो कहीं सूखे वृक्षहीन खड्ड अपनी भयानक गहराई से देखने वालो के हृदय कँपा रहे थे।

अन्त मे एक बड़े घुमाव के बाद ब्रायन एक सुरङ्ग के निकट पहुँचे। अब तक उन्होंने आरम्भ की पहाड़ियाँ ही तय की थीं। सुरङ्ग के एक तरफ मैदान दिखलाई पड़ते थे और दूसरी तरफ हिमालय की अनन्त पर्वत श्रेणी आकाश को छूती हुई खड़ी थी।

ब्रायन ने ६००० फीट की चढ़ाई आरम्भ करने के पूर्व होटल मे उतर कर आराम करने का निश्चय किया। अभी उन्होंने भोजन आरम्भ भी न किया था कि होटल के खिदमतगार ने आकर सूचना दी कि उन्हे फोन पर बुलाया जा रहा है।

"जान आफत में है"—खीज कर उन्होंने कहा—"मैं तो यह समझ रहा था कि इन सब बातों से कुछ समय के लिए पीछा छूटा, पर रास्ते ही से यह आफत फिर शुरू हो गयी।"

रिसीवर उठा कर उन्होने कड़ी आवाज मे कहा—"एस० पी० स्पीकिङ्ग—क्या है ?"

उधर से खिलखिलाहट भरी आवाज मे उत्तर मिला—"जान पड़ता है कि एस० पी० का मिजाज आज ठिकाने नहीं हैं, क्यों, यही बात है न ?"

"अरे मे, तुम बोल रही हो। फोन पर तुम होगी इसकी मुझे कल्पना भी न थी।"

"यह बात आनन्दप्रद अवश्य है, पर ऐसी नहीं जिसके लिए मैं अपने आप को बधाई दे सकूँ।"

"आज प्रात.काल जब से चला हूँ बराबर तुम्हारी ही याद कर रहा हूँ और तुमसे मिलने की सुखद कल्पना का आनन्द ले रहा हूँ। खाने के लिए बैठा ही था कि "

"तुरन्त मुझे भूल गए, क्यों यही न ?"

"नहीं, बिलकुल नहीं। बात यह थी कि मैं फोन से कुछ दिनों के लिए मुक्त होना चाहता था और खाना खाने के लिए बैठते ही यह बला फिर मेरे सर पर आगई।"

"खैर, इसके लिए मुझे खेद है, मैं तो केवल तुम्हें एकाएक चौंका देने के लिए ही यह कर रही थी।"

"इस समय इतने मधुर अनुभव की मैं कल्पना भी न कर सकता था।"

"अच्छा अच्छा, सारा वक्त खाने ही मे न निकाल दो और जल्दी आओ। मैं तुम्हें मोटरों के अड्डे पर मिलूँगी और तब वहाँ से हम लोग साथ-साथ होटल चलेंगे।"

"बहुत खब, मैं तो चाहता हूँ कि अभी वहाँ उड़ कर पहुँच जाऊँ।"

"बस, अब जितनी ही जल्दी बातें बन्द करोगे उतनी ही जल्दी पहुँचोगे।"—यह कह कर ब्रायन के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही मे ओकले ने रिसीवर रख दिया।

दस मिनट में ब्रायन वहाँ से रवाना हो गए। चढ़ाई के कारण मोटर को उन्हें १५ मील प्रति घंटा की रफ़्तार से चलाना पड़ रहा था। सडक दायें-बायें मुडती हुई पहाड़ों पर गहरे खड्डों के किनारे चली जा रही थी। जैसे-जैसे वे ऊपर चढ़ते जाते थे, दूर-दूर तक फैली हुई दृश्यावलि की मनोरमता भी बढ़ती जाती थी। कहीं-कहीं छोटी नदियाँ और नाले भी बीच मे मिलते थे।

वायु की शीतलता और ताजगी का आनन्द लेते हुए ब्रायन मोटर टर्मिनस पर पहुँच गए। मे पहले ही से वहाँ खड़ी थी।

गुलाबी कपोल, चमकती हुई आँखें और मुसकराते हुए चेहरे से वह यौवन, स्वास्थ्य और आनन्द की सजीव प्रतिमा सी जान पड़ती थी। मोटर रुकने के पहले ही वह उसके बगल में आकर खड़ी हो गई।

" अरे ब्रायन, तुमने तो अपना सत्यानाश कर डाला। देखते हो, कैसी भूत सी शक्ल बना रखी है। अरे, मोटर से उतरोगे या तुम्हें उतारने के लिए भी सहायता की आवश्यकता है। "

ब्रायन ने उतर कर मे को अपने बाहुपाश मे आबद्ध कर लिया।

" बस तुम मे कुछ भी शक्ति शेष रह गई है, तुम्हें उसकी रक्षा करनी चाहिए। जाओ उस रिकशा मे जाकर बैठो। तब तक मैं यहाँ का सब प्रबन्ध करती हूँ। "

ब्रायन का अर्दली कुलियो के बीच घिरा हुआ था। उससे जाकर मे ने कहा—" अब्दुल, तुमने साहब की कैसी देखभाल की है? देखो तो अधमरे हो गए है। "

" साहब, काम ही काम करते रहते हैं। रात को सोने क भी काफी समय नही मिलता और न खाना ही अच्छी तरह खाते हैं। "

" वाह, फिर तुम्हारे जैसे अर्दली के रहने से लाभ ही क्या जब तुम साहब के स्वास्थ्य का ध्यान भी नही रख सकते। "

" साहब से मैने जब जब सोने और खाने के लिए क तो उन्होने मेरा कहना माना ही नही और हँस कर मुझे 'जाओ जाओ' कहकर टाल दिया। "

मे ने तब कुलियो की भीड मे से दो-तीन को चुन कर अब्दुल के हवाले किया और उससे सब सामान लेकर होटल आने के लिए कहा और फिर खुद ब्रायन के बगल मे रिकशा मे आकर बैठ गई।

"ब्रायन तुम बडी देर से आये। तुमने अपना शरीर तो बिलकुल चौपट कर डाला। खैर, यहाँ आ तो गए ही हो, अब मै तुम्हे महीनो तक रोक रखूँगी।"

"पर मैं तो ज्यादा से ज्यादा दस दिन रह सकता हूँ।"

"नहीं, इतनी जल्दी पहाड़ से भेज कर मैं तुम्हारी हत्या नहीं करना चाहती। मैं तुम्हारे अफसर, गवर्नर, वायसराय या सभी अधिकारियों को लिखूँगी। मैं कम उम्र में विधवा होने या बीमार पति की सेवा सुश्रूषा करने वाली नर्स बनने को तैयार नहीं।"

यह सब बातें तो सेना में ही चलती हैं"—ब्रायन ने हँसते हुए कहा—"हमारे विभाग मे अर्जियाँ चाहे कितने भी जोरदार शब्दों में क्यों न लिखी जायँ, उनका कुछ प्रभाव नहीं पड़ता। अच्छा तो यह है कि इन सब अधिकारियों से तुम खुद जाकर मिलो। मैंने सुना है कि गवर्नर महोदय बड़े सौन्दये-प्रेमी है और आज तो तुम बडी ही सुन्दरी लग रही हो।"

"जानते नहीं, आज सुबह से उठकर इतना साज-सामान करके तुम्हारे ही लिए तो सुन्दरी बनी हूँ। अरे, इधर दाहिनी तरफ चलो"—मे ने चिल्ला कर कुलियों से कहा।

"कहाँ चल रही हो"—ब्रायन ने आश्चर्य्य में आकर मे से प्रश्न किया।

"डाक्टर की दुकान पर तुम्हारे लिए टानिक खरीदने।

देखो, अब तुम कुछ नही कह सकते, मैं जो चाहूँगी करूँगी। लो हम लोग पहुँच गए।"

रिकशा से उतरते ही उन्हे आरचेस्ट्रा की एक मधुर ध्वनि सुनाई दी। यह एक रेस्टराँ था। नृत्य के कमरे मे ऊँचे स्थान पर बैंड बज रहा था, जिसके चारो तरफ छोटी छोटी टेबिलो पर बैठे हुए लोग खा-पी रहे थे। चार जोड़े संगीत की ताल पर नृत्य भी कर रहे थे।

मे आयन को एक खाली टेबिल की तरफ ले जा रही थी कि बीच की एक टेबिल पर बैठे हुए कुछ लोगो ने उनका आह्वान किया। इन लोगो को स्थान देने के लिए हलचल सी मच गई। परन्तु मे को यहाँ ठहरना ही न था। वह बोल उठी—"नहीं, कैप्टिन ओकोनर को इस शोरगुल में शान्ति नही मिल सकती। इतने सवेरे तुम लोगो का यह व्यवहार बड़ा लज्जाजनक प्रतीत होता है।"

"हे भगवन!"—बैठी हुई युवतियो मे से एक ने ताने से कहा "हसोड़ो की रानी, मे ओकले यही हैं क्या?"

"मैं जरा भी नहीं समझती तुम क्या कह रही हो"—मे ने अपनी गम्भीरता बनाये रखने का प्रयत्न करते हुए कहा,—"कैप्टिन ओकोनर की थकान के कारण जान निकली जा रही है और तुम लोगों का मुँह एक क्षण को भी बन्द नहीं होता। आओ आयन।"

मे की गम्भीरता की अन्तिम परीक्षा लेने के लिए सूखे आलुओं के छिलके फेंके गए, किन्तु उस पर इसका भी प्रभाव न पड़ा और वह सबसे अलग कोने मे बिछी हुई एक टेबिल के पास आयन को बैठा कर खुद भी वहीं बैठ गई।

"यह सब तुम्हे अपने रूप-जाल में फँसाने का प्रयत्न करें, कम से कम पहले दिन तो मैं यह न देख सकूंगी। वे दोनों युवतियाँ मेरी सखी हैं और गजब की सुन्दरी हैं। तुम्हारे सम्बन्ध में मैं उनका भी विश्वास नहीं करती।

"या मेरा ही विश्वास नहीं करती?"—ब्रायन ने बात काट कर कहा।

"कुछ समय के लिए मैं तुम्हे केवल अपने ही लिए सुरक्षित रखना चाहती हूँ"—ब्रायन से इतना कह कर मे ने बैरा से बीयर लाने को कहा।

ब्रायन धीरे धीरे बीयर से अपने मस्तिष्क को ताजा कर रहे थे कि उनके पीछे वाली टेबिल पर बैठे हुए युवकों में से एक आकर वहीं खड़ा हो गया।

"क्या फ्रांस में आप फुसीलियर्स ब्रिगेड मे थे, क्यो, थे न?"

"हाँ"—ब्रायन ने उत्तर दिया—"मैं भी आपके साथ उसी ब्रिगेड में था। आपको याद......"

उसी पहली वाली टेबिल पर बैठी हुई एक सुन्दरी भी इस बीच में आगई। उसने अपने प्रेमी की बात को बीच ही में काट दिया—"कैप्टिन ओकोनर, यह जो कुछ कहे उसका ख्याल न कीजिए। बहाना तो हजरत पुराने दोस्त से मिलने का कर रहे हैं, किन्तु वास्तव में यहाँ इन्हें मे का आकर्षण खींच लाया है।"

उसने अभी अपनी बात पूरी भी न की थी कि अन्य लोग भी आ पहुँचे।

"इन के साथ अगर मुझे अकेला बैठा रहना पड़ गया तब तो मेरी जान गई"—दूसरी सुन्दरी ने अपने प्रेमी पर कटाक्ष करते हुए कहा—"आखिर मुझे अपनी बदनामी का भी तो डर है।

अन्य लोगो के बीच मे इनके साथ बैठने मे मुझे कोई उज्र नहीं . . . "

"या नृत्य की रात को उनके साथ आराम की जगह मिल सके तो बैठने मे उज्र नही है ?"—मे ने कहा।

"तुम बड़ी शोख हो मे। मुझे ताज्जुब न होगा अगर तुमने अभी से ईर्षा करना शुरू न कर दिया हो।"

इतनी बातें होने तक दोनो युवतियाँ अपने प्रेमियो के साथ कुरसियों पर आकर बैठ गयीं और परस्पर व्यंगों की वर्षा होने लगी। यहाँ तक कि ब्रायन भी उससे न बच सके।

अन्त मे मे अपनी घड़ी की तरफ देखकर उठ पड़ी। युवतियाँ एक स्वर से चिल्ला उठीं—"व्याख्यान, व्याख्यान, मे का व्याख्यान होगा।"

मे ने गम्भीरता पूर्वक हाथ उठाकर सबसे चुप रहने का इशारा किया और बड़ी नपी तुली आवाज मे बोली—"लेडीज एन्ड जैन्टलमैन।"

उसके इतना कहते ही "वाह मे, वाह मे" की आवाजो से कमरा गूँज उठा। एक बोली—"देखो तो—मे व्याख्यानदाता होकर ही दुनिया मे जन्मी है।"

जब शोर करने का ताव किसी को न रहा तो वह फिर कहने लगी—"मुझे आप सबसे एक बड़ी गुप्त बात बतानी है। होटल मे मैं एक बहुत ही महत्व का काम करने वाली हूँ। आप मे मे कोई बता सकता है क्या ?"

"टिफिन, टिफिन"—सब चिल्ला उठे।

"हाँ, यही बात है। अब केवल एक बात शेष रह गई है और वह निमंत्रण तत्काल ही स्वीकार करने के लिए आप सबको

धन्यवाद देना और यह करने के बाद वडे खेद के साथ मैं आपसे विदा लेती हूँ।"

भाषण समाप्त होते ही सब चिल्ला उठे—"मे हम तुम्हें छोड नहीं सकते, क्योंकि हम सबको वहीं जाना है, जहाँ तुम खुद जा रही हो।'

वास्तव में वे सब भी उसी होटल में ठहरे हुए थे, इसलिए सब साथ ही चल पड़े। इसके बाद होटल तक रिकशाओं की दौड़ हुई।

कैप्टिन पैडल भी--

पैडल कमान्डिग अफसर के कमरे में पहुँचे।

"गुड मार्निंग, पैडल"—कमान्डिग अफसर ने कहा।

"गुड मार्निंग, सर"—पैडल ने उत्तर दिया।

"आज मेरे पास कुछ काम न था और मैं अपने को इसीलिए बड़ा भाग्यवान समझे हुए था। इधर तुम टपक पडे, कहो क्या बात है ? किसी को गोली मार दी है ?"

पैडल चौंक उठे। बात यह थी कि पिछला रात को कमान्डिग अफसर ने मेटलैंड के साथ भोजन किया था और मेटलैंड ने उन्हे पैडल के कार्यक्रम से पहले ही परिचित करा दिया था।

"बोलो पैडल, मैं यहाँ दिन भर बैठा नहीं रह सकता।"

"मैं छुट्टी चाहता हूँ।"

"परन्तु दो सप्ताह पहले ही तो तुम दो महीने की छुट्टी मना कर लौटे हो।"

"जी हाँ "

"अब तुम छुट्टी क्यों चाहते हो ?"

"ब्रायन ओकोनर को मैं वचन दे चुका हूँ कि पहाड़ पर उनकी मदद करने के लिए उपस्थित रहूँगा।"

अब कमान्डिग अफसर के लिए अपनी मुसकराहट दवाना असम्भव हो गया।

"यह वहाना काफी नही है, दूसरा वतलाओ।"

"तेज गरमी पड रही है। मैं चला गया तो कुछ समय के लिए आप परेशानी से वचेंगे।"

"निश्चय, पर यह भी अपर्याप्त है। तुम्हारी तवीअत भी तो ठीक नहीं है।"

पैंडल की समझ मे नही आया कि आखिर कमान्डिग अफसर का मतलब क्या है ?

"तुम्हे आवहवा वदलने की जरूरत है ?"

"हाँ, साहव यही वात है।"—पैंडल की वाछें खिल गयी।

"—तो तुम्हे शनिवार से सोमवार तक की छुट्टी की आवश्यकता है।"

"हाँ, साहव।"

"अच्छा तो सोमवार को परेड के समय ठीक समय हाजिर रहना।"

"धन्यवाद साहव मैं ठीक वक्त पर मौजूद रहूँगा।"

"अच्छा एक बात और सुनो। ओकोनर से मेरा सलाम कहना और मेरी तरफ से सलाह देना कि उन्हे यदि कुछ भी बुद्धि हो तो तुमसे और तुम्हारी सहायता से अपने को मुक्त कर ले।"

"कह दूँगा, साहब।"

"मुझे जान पडता है कि तुम कभी न कहोगे।"

पैडल न इसके बाद ब्रायन को निम्न आशय का तार दे दिया—"कमाडिंग अफसर ने मुझे तुम्हारी मदद के लिए स्पेशल ड्यूटी पर नियुक्त किया है। शुक्रवार को सायंकाल तक पहुँचूँगा।"

ब्रायन के दिन बड़े आनन्द में गुजर रहे थे। प्रातःकाल मे के साथ वे घोड़े पर सवार होकर घूमने जाते थे, सायंकाल उसके साथ टेनिस खेलते थे। अक्सर पिकनिक भी होती थी। कभी दोनो प्रेमी अकेले ही जाते और कभी अन्य मित्रों को भी साथ में ले लेते थे। सबसे आश्चर्य्य की बात तो यह थी कि मे की माता का व्यवहार उनके प्रति बड़ा प्रेमपूर्ण हो गया था।

"माँ के व्यवहार पर मुझे आश्चर्य्य हो रहा है। आज कल तुम्हारे साथ वह जैसी घनिष्टता का व्यवहार कर रही हैं वैसा मैंने उन्हें किसी के साथ करते नहीं देखा।"—एक दिन मे ने ब्रायन से कहा।

"इसका कारण शायद मेरा शिष्टतापूर्ण व्यवहार हो।"

"नहीं ब्रायन, तुम्हारा व्यवहार तो सदा से शिष्टतापूर्ण रहा है। माँ के व्यवहार में परिवर्तन का यह कारण नहीं जान पडता। कुछ भी हो यदि वे तुमसे इसी तरह खुश रहें तो अच्छा ही है।"

"अच्छा मे सुनो, मुझे कैप्टिन पैडल का तार मिला है कि वे शुक्रवार की शाम को आ रहे हैं।"

"वाह, तब तो शनिवार की रात को उनके साथ नृत्य मे बड़ा आनन्द रहेगा। और ब्रायन तुम तो बड़े सुस्त हो—तुम मुझ से नाचना सीख क्यों नहीं लेते। सचमुच नाचने मे कुछ भी नहीं है और तुम तो बहुत ही अच्छा नाच सकोगे।"

नहीं मे, मैं अपनी कमजोरियों को जानता हूँ और नृत्य न सीख सकना भी उन्हीं मे एक है। नाचने वाले कमरे मे जब जाता हूँ तो मेरे माथे पर पसीना आ जाता है। मैं सोचता हूँ कि नर्तक तथा नर्तकियों के दल मुझे चुप बैठे देख कर दया का अनुभव कर रहे हैं।"

"सचमुच ब्रायन, नृत्य मुझे बहुत अच्छा लगता है। तुम्हारे साथ नाचने का अवसर मिलने पर तो मेरा यह आनन्द दोगुना हो जायगा। नृत्य के कमरे मे तुम्हारा चुप बैठा रहना मुझे जरा भी नहीं भाता।"

"मुझे तुम्हारी छवि सुधा का पान करने मे कैसा अनिर्वचनीय आनन्द आता है—मे इसे तुम न समझ सकोगी।"

कैप्टिन पैडल भी आगए। मिसेज ओकले ने उन्हे एक दिन भोजन के लिए आमन्त्रित किया।

"आपने मुझे बुला कर बहुत ही अच्छा किया है, मिसेज ओकले"—पैडल ने कहा—"इससे मेरा कार्य बहुत आसान हो गया।"

"कौन कार्य?"—मिसेज़ ओकले ने पूछा।

"मेरे कमान्डिंग अफसर ने मुझे ब्रायन की देखरेख के लिए विशेष ड्यूटी पर नियुक्त किया है।"

"पैडल, तुम झूठे हो।"—मे ने कहा।

मे के इस बेतकल्लुफी के व्यवहार पर मिसेज़ ओकले चौंक पड़ीं—"मे इतनी बेहूदगी तुम्हें शोभा नहीं देती।"

बेहूदगी नहीं, बिलकुल सच"—पैडल ने कहा—"कमान्डिंग अफसर ने मेरा स्वास्थ्य खराब देख कर मुझे जलवायु-परिवर्तन के लिए भेजा है।"

"क्या तुम्हारे कमान्डिंग अफसर की आँखें खराब हो गई हैं ? मैं तो उन्हें बात ताड़ लेने मे बहुत चतुर समझता था।"

"ब्रायन तुम्हारा यह कथन बहुत ही अनुचित है।"

मिसेज़ ओकले ने सहानुभूति का प्रदर्शन करते हुए कहा—"मेरा तो सचमुच ही यह ख्याल है कि जब पिछली बार कैप्टिन पैडल यहाँ आये थे तो अब की अपेक्षा कहीं अच्छे थे।"

"धन्यवाद, मिसेज़ ओकले। मुझे इस बात का सन्तोष है कि इन दोनो के खिलाफ यहाँ मेरा पक्ष लेने वाली आप तो कम से कम हैं। अच्छा, मुझे आपको हाल ही के कुछ विचित्र अनुभवों का हाल बताना है।'

ब्रायन ने तुरन्त सिर हिला कर पैडल की तरफ इशारा किया, किन्तु मे की तेज आँखों से यह इशारा छिप न सका और उसने भी इसे समझ लिया।"

"पैडल आज रात को नृत्य है।" मे ने बात टालने के लिए कहा।

"हाँ, है तो जरूर"—पैडल ने संक्षेप में उत्तर दिया और मन में इस बात पर सन्तोष का अनुभव करने लगे कि अब उन्हे अपने विचित्र अनुभव न बताने के लिए कोई नया बहाना न खोजना पड़ेगा।

मिसेज़ ओकले इस बीच में पूछ बैठीं—"हाँ वे कठिन अनुभव क्या थे ?"

"ओकोनर मुझे एक भारतीय दावत में ले गए थे, मैं वहाँ

बड़े डरते डरते गया क्योंकि वहाँ का वातावरण कैसा होगा, इसकी मुझे कुछ भी जानकारी न थी। परन्तु हुआ इसके बिलकुल विपरीत, वहाँ का वातावरण हमे पूरी तरह अपने अनुकूल मिला। इसके सिवाय वहाँ मेरा परिचय एक परम सुन्दरी भारतीय युवती से भी हुआ। आश्चर्य की बात तो यह है कि वह मेरी चाची के यहाँ ठहरा करती थी और मैने कभी उसे देखा तक न था। अब मैं उसे पोलो का खेल दिखाने के लिए निमंत्रित कर आया हूँ।"

पैडल ने इसके बाद ब्रायन से सब बाते बताने की अनुमति माँगी और उन्होंने कुछ अनिच्छा पूर्वक हँसते हुए यह अनुमति दे भी दी। श्रीमती ओकले बडी उत्सुकता से आगे की बातें सुनने की प्रतीक्षा करने लगी। उनके मन मे यह विचार जम गया कि पैडल ने जिस सुन्दरी भारतीय युवती का जिक्र किया है, यह वही है जिसका उल्लेख उनके पति ने ब्रायन के सम्बन्ध मे किया था।

"बात यह है"—पैडल ने कहना आरम्भ किया—"एक क्रान्तिकारी ने, जिसे ब्रायन की हत्या के लिए नियुक्त किया गया था, अपने ही को गोली मार-कर आत्महत्या कर ली।"

"हाँ तब . "—मै ने बड़े धैर्य पूर्वक प्रश्न किया।

"—और क्या जानना चाहती हो, क्या यह कुछ कम आश्चर्य्यपूर्ण है ?"

"भई, तुमने घटना की तारीख, परिस्थिति समय इत्यादि कुछ नहीं बतलाया। मै मानती हूँ कि इन सब बातो के जानने मे कुछ लाभ न होगा, पर घटना के विषय मे पूरी जानकारी के लिए इन्हे जानने की आवश्यकता है।"

पैडल ने उत्कठित मे को वतलाया कि किस तरह आधी रात को उसके पिता के वँगले से केवल ३५० गज की ही दूरी पर ब्रायन की जान लेने का षड्यंत्र किया गया था। उन्होने यह भी कहा कि घोष यदि वास्तव मे जान लेने का इरादा करता तो ब्रायन उनके वीच जीवित मौजूद न रहते।

मे जव घटना का विवरण आद्यन्त सुन चुकी तो उलाहने भरे स्वर में ब्रायन से वोली—"इतना भीषण कृत्य हो चुका, जान जाने से वाल वाल वची और तुमने मुझे यह सव वतलाया भी नहीं ?"

"इससे लाभ ही क्या होता मे ? तुम केवल व्यर्थ के लिए चिन्तित होतीं।"

"अच्छा आज रात के नृत्य के सम्बन्ध में क्या रहा मे ?"—पैडल ने उत्सुकता से पूछा।

"ब्रायन के साथ मेरा कार्यक्रम समाप्त हो जाय, वस फिर जितनी देर चाहो मैं तुम्हारे साथ नाचने को तैयार हूँ।"

"परन्तु मे तुम जानती ही हो कि ब्रायन नाचते तो हैं नही।"—मिसेज ओकले ने कहा।

"हाँ, पर वे नृत्य देखने में वड़े पटु हैं।"

उपरोक्त कथन के वाद मे खिलखिला कर हँस उठी, किन्तु मिसेज ओकले ने उसकी तरफ ध्यान न देकर गम्भीरता पूर्वक कहा—"क्या तुम कैप्टिन ब्रायन को एक दिन मेरे साथ नहीं छोड सकतीं—हाँ, पर साथ ही उन्हें भी एक वुढ़िया के साथ रहना मंजूर हो तव न ?"

"जरूर, वडी खुशी से"—ब्रायन ने कहा, यद्यपि अपने दिल

मे वे मिसेज ओकले की गम्भीरता को देख कर कॉप रहे थे—
" पर यह सुनते सुनते तो मैं बहरा हो जाऊँगा।"

" क्यो ?"

" आप अपने को बुढ़िया कह रही थी, यह असम्भव है।"

" धन्यवाद ब्रायन, शायद अपने जीवन मे मेरी ऐसी प्रशंसा किसी ने नहीं की।"

ब्रायन और मे मिसेज ओकले की यह बात सुन कर चकित रह गए। उन्होंने पहली बार उन्हे 'ब्रायन' के बेतकल्लुफाना सम्बोधन से सम्बोधित किया था।

फैंसी ड्रेस नृत्य

फैंसी ड्रेस नृत्य के लिए होटल खूब सजाया गया था। जिस कमरे मे भोजन का प्रबन्ध था उसमे रोशनी बहुत ही मन्द थी, क्योंकि वह केवल मेजों पर रखी हुई छोटी छोटी लाल लेम्पो मे हो रही थी। भीतर बैठे हुए लोगो की बातो और फुसफुसाहट की आवाज बाहर तक सुनाई देती थी। आरकेस्ट्रा की मधुर ध्वनि कभी कभी बोतलो के कार्क खोलने और गिलासो के खट-खटाने की आवाज मे डूब जाती थी और कभी स्पष्ट सुनाई देने लगती थी।

डिनर के बीच मे बिजली के सभी स्विच एकाएक खोल दिए गए और लोग आँखें फाड़-फाड़ कर हाल की सजावट देखने लगे। तरह तरह की झंडियो और वन्दनवारो से दीवारो को

सजाया गया था और कागज के रंग विरंगे लम्बे टुकड़े छत के एक छोर से दूसरे तक लटके हुए थे और हवा मे इधर-उधर उड़ रहे थे।

एक क्षण के लिए कमरा शोरगुल से गूँज उठा। कागज के रंग-विरंगे टुकड़े पाने के लिए लोगों में प्रतियोगिता होने लगी, यहाँ तक कि लोग अपनी अपनी मर्यादा भूल कर छीना-झपटी करने लगे।

ब्रायन और मिसेज ओकले अपनी सादी पोशाक में आए थे। पैडल एक रूसी काउन्ट की पोशाक मे थे, जो उनके शरीर पर खूब फबती थी। मे एक स्पेनिश नर्तकी वन कर आई थी और अपने गुलाबी कपोल और हँसती हुई आँखों के कारण वहुत ही सुन्दर जान पड़ती थी।

" ए गम्भीरता की मूर्ति ! "—उसने चिल्ला कर ब्रायन से कहा—"जाओ तुम भी कपड़े वदल आओ। "

इस वीच में पैडल ने मजाक की फुलझड़ियाँ छोड़ दी और मे वेतकल्लुफी से उनका उत्तर देने लगी।

" माँ तुम भी जाकर कोई वेश वना आओ "—मे ने हँसते हुए कहा—" तुम नेकर और खुले गले की कमीज में नृत्य करती हुई कैसी लगोगी। "

मे की इस उक्ति पर कमरा कहकहे से गूँज उठा, जिसमे मिसेज ओकले ने भी शिष्टता वश योग दिया, किन्तु उन्हे मे का यह व्यवहार अच्छा न लगा और उन्होंने इसके लिए उसकी कुछ भर्त्सना भी की। इसके वाद उन्होंने वड़ी गम्भीर आवाज में कहा—" मुझे इस वात का सन्तोष है कि मुझे और ब्रायन को इस शोरगुल से शीघ्र ही छुटकारा मिल जायगा। डिनर के वाद

मैं उन्हे अपने कमरे मे शान्तिपूर्वक बातें करने के लिए ले जाऊँगी।"

भोजन समाप्त होने पर हाल का दृश्य और भी चित्ताकर्षक हो गया। लोग तरह तरह के वेश मे युवतियो के साथ नाचने लगे। कुछ लोग एक दल मे नाच चुकने के बाद दूसरे मे जाकर मिल रहे थे। चारो तरफ हलचल ही हलचल दिखलाई पड रही थी।

मिसेज ओकले के एक सखी से बातो मे व्यस्त हो जाने के कारण ब्रायन कुछ देर के लिए इस आह्लाद और हलचल के वातावरण में भी अपने को अकेला अनुभव करने लगे। अचानक अपनी कुहनी मे किसी के स्पर्श से वे चौंक उठे, और जो मुडे तो देखा कि वे उनकी तरफ दयार्द्र दृष्टि से देखती हुई हँस रही है।

' ब्रायन, सचमुच तुम्हारा समय बडी मुश्किल से कट रहा होगा। पर नाचना न सीखने के लिए तुम्हारी यही सजा है। खैर, कल और परसो अधिक समय देकर इस कमी को पूरा कर दूँगी।"

वह ब्रायन के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही एक तरफ मे चली गई। कुछ ही देर मे उनके आगे पैडल और उनकी प्रियतमा एक दूसरे के हाथ मे हाथ डाले कमरे के एक छोर से दूसरे तक नृत्य करने लगे। यह दृश्य देखकर उनके मन मे पहले जो सन्देह और कठिनाइयाँ उठी थी, वे फिर ताजी हो उठी। आखिर मुझमें मे को मिलता ही क्या? पैडल हर तरह मुझसे अच्छा है। उसने डिनर के समय मुझे 'गम्भीर मिजाज' का कहा था, पर इसमे असत्य ही क्या है? और मिसेज ओकले

जब वापस आई तो उनको इस भावना मे और भी वृद्धि हो गयी।

"इतने गम्भीर क्यो हो ब्रायन ? मेरा ख्याल है कि मेरी तरह तुम्हे भी यह थोथी उछल-कूद पसन्द नहीं है। चलो हम लोग बाहर चलें।"

दोनो इसके बाद मिसेज ओकले के कमरे मे आकर बैठ गए। अन्य बातों के बाद मिसेज ओकले ने पैडल की चर्चा छेड़ी। उनका व्यवहार इस समय सच्चे सहृदय का सा स्पष्ट और मनोहर था। ब्रायन भी वैसा ही करने लगे। पैडल की तारीफ उन्होंने खूब खुले दिल से की और मिसेज ओकले को यह भी बतलाया कि पैडल के सम्बन्ध मे जो विचार उनके पहले थे, उनमें अब बिलकुल परिवर्तन हो गया है।

"अच्छा यह सुन्दरी भारतीय युवती कौन है, जिसके विषय मे पैडल डिनर के वक्त बातें कर रहे थे ?"

"यह पंडितजी की कन्या उर्मिला है, जिन्हे कुछ दिन पहले सजा हुई थी। उर्मिला वास्तव में बडी सुन्दरी है और वह जितनी सुन्दरी है उतनी ही मिलनसार और आकर्षक भी है।"

"सचमुच ही उसे तो गजब की सुन्दरी होना चाहिए, जो उसने पैडल और तुम्हारे जैसे दो व्यक्तियों को मोहित कर लिया।"

ब्रायन हँसने लगे।

"हाँ, मैं उर्मिला को बहुत चाहता हूँ। उसने मुझे बरसों पहले ही से आकर्षित कर लिया था"

"—लो तुमने तो स्पष्ट शब्दों में ही स्वीकार कर लिया।"—मिसेज ओकले ने हलकी मुसकान के साथ कहा।

"स्पष्ट शब्दों में तो है, किन्तु परिस्थिति देखते हुए आपको

इसमे कुछ आश्चर्य्य न होगा। उर्मिला का और मेरा बाल्यकाल एक साथ बीता था। मेरे और उसके पिता मे गहरी दोस्ती थी। यूनिवर्सिटी मे वे साथ-साथ पढ़े थे। ऐसा कोई भी दिन न बीतता था, जिस दिन हम एक दूसरे से न मिले हो। घोड़े की सवारी करने हम दोनो साथ ही जाया करते थे और एक ही गवर्नेस हमारी देखरेख के लिए रखी गयी थी। उर्मिला बडी भावुक बालिका थी। अकसर वह मुझसे लड जाती थी, पर हमारे बीच अनबन अधिक दिन न चल पाती थी। उसमे जितनी ही जल्दी नाराज होने की आदत थी उतनी ही वह क्षमाशील भी थी। इसके कितने ही साल बाद उर्मिला से मेरी मुलाकात भारत आते समय जहाज पर हुई। उसके बाद बडी अप्रिय परिस्थिति मे मैं उससे मिला था।"

उर्मिला से हाल की मुलाकात का जिक्र करते करते आयन कुछ देर के लिए रुक गए। हाल ही मे पडितजी की गिरफ्तारी के समय उर्मिला से उनकी जो पहली भेट हुई थी उसके बाद कचहरी का दुखद दृश्य उपस्थित हुआ। इसके बाद अपने बरामदे मे सुबह चाय पीने और पुरानी सहृदयता को पुन जाग्रत करने वाली बातो का स्मरण उन्हें हो उठा। लालाजी की दावत मे भी वह उनसे मिली थी। और सब से अन्तिम मुलाकात की याद करके, जिसके बीच वह कुरसी पर सो गये थे, लज्जा से आयन का चेहरा लाल हो उठा।

' मेरे पति ने भी मुझे इन परिस्थितियो के सम्बन्ध मे लिखा है। तुम्हें वास्तव मे बडी कठिनाई का सामना करना पडा होगा। मेरा अनुमान है कि तुम उर्मिला से अकसर मिलते रहे होगे।"

नहीं, अभी तो नहीं, पर यहाँ से वापस जाने पर मैं उससे

जितनी बार भी सम्भव हो, मिलना चाहता हूँ, क्योकि अब हम लोगों मे फिर मित्रता हो गई है।"

मिसेज़ ओकले को इस समय आपने पति के उस पत्र की याद आई, जिसमे ब्रायन के एक भारतीय लडकी के गले मे हाथ डालकर बैठने के दृश्य का उल्लेख था। अब उन्हें विश्वास हो गया कि यह भारतीय लड़की उर्मिला ही है, क्योकि ब्रायन ने उससे घनिष्ठ सम्पर्क रखने की बात को भी स्वीकार कर लिया है। इस बात को उन्होंने अपने मन के कोने मे सुरक्षित करके रख लिया ताकि भविष्य में आवश्यकता पड़ने पर उसका उपयोग किया जा सके।

वे उठ कर खड़ी हो गयीं और बड़ी नफासत के साथ ब्रायन की सोडा, ह्विस्की और सिगरेट देकर खातिर करने लगीं।

इसके बाद फिर कुरसी पर बैठकर बोलीं—"ब्रायन, यदि मैं तुम से कुछ बातें खुले दिल से करूँ तो तुम्हें बुरा तो न लगेगा?"

"नहीं, बुरा क्यो लगेगा? मैं तो चाहता हूँ कि आप ऐसा करें।"

"शायद तुम जान गए होगे कि आरम्भ मे तुम्हारा और मे का विवाह सम्बन्ध पक्का होने देने मे मैंने विशेष उत्साह नही दिखलाया था।"

ब्रायन श्रीमती ओकले की इस स्पष्टवादिता से चौंक पडे, क्योंकि उनकी इस स्पष्टवादिता के साथ ही प्रतिशोध की भावना भी झलकती थी।

"इसका कारण तुम्हें पहले ही समझ लेना चाहिए था। मैं जानती थी कि मे अभी बच्ची है, उसे अपने मन की बात तक का पता नहीं रहता। इधर मैं भी तुम्हारे सम्बन्ध में अधिक न जानती

थी। मे मेरी एकमात्र सन्तान है, उसका सुख मेरे जीवन की सब से बड़ी कामना है और ब्रायन, जब से मैं तुम्हारे सम्पर्क मे आई हूँ मेरी प्रीति तुम्हारे प्रति भी बढ़ गयी है। इसलिए तुम्हारे सुखी होने से मुझे निस्सन्देह बडा आनन्द होगा। मुझे आशा है मेरी बातो पर तुम विश्वास कर रहे हो।"

"अवश्य, सच तो यह है कि यह पहला ही अवसर है जब कि मै यह अनुभव कर रहा हूँ कि आप मुझसे अपने परिवार के व्यक्ति की तरह व्यवहार कर रही है।"

"हॉ यही तो—और चूँकि मै तुम्हे एक सगे-सम्बन्धी की तरह मानने लगी हूँ इसीलिए एक महत्वपूर्ण बात कहने का साहस भी तुम से कर रही हूँ। मे पैडल से प्रेम करती है।"

अब की बार ब्रायन ने जो कुछ कहा, उसमे से केवल कुछ शब्द ही सुनाई दिए और शेष उनके मुँह मे ही रह गए।

"क्या यह सच है? आप कैसे जानती हैं?"

"तुम्हारे दिल को यह सुन कर भारी सदमा पहुँचना स्वाभाविक है ब्रायन, पर मुझे तो यह बात केवल संयोगवश ही ज्ञात हुई है। मैं जानती हूँ कि तुम वास्तव मे सच्चे हृदय से मे को प्रेम करते हो और केवल इसीलिए अपने मन मे बहुत सोचने समझने के बाद मैंने तुमसे खुल कर यह बात कह देना उचित समझा है। मैं चाहती हूँ कि जीवन मे तुम दोनो को सुख मिले और मेरी जिन्दगी की तरह तुम्हारा भी जीवन बरबाद न हो।"

मिसेज ओकले इसके बाद एक खेदपूर्ण मुसकराहट मुँह पर लाकर ब्रायन की तरफ देखने लगी, मानो कहने को उन्हें कोई शब्द ही नहीं मिल रहा है।

"मेरा तो ख्याल था कि आपका जीवन इतना सुखी है कि उसे अपना आदर्श बनाया जाय।"

कितने ही लोगों का यह ख्याल है, किन्तु वास्तव मे बात यह है नहीं। पति के और मेरे बीच मे कभी सच्चा प्रेम रहा ही नहीं। मे को देख कर हमने एक दूसरे को तलाक नही दिया। इसके अलावा तलाक देने से मेरे पति के ओहदे की वृद्धि भी रुक जाती। मेरा जीवन वास्तव मे विशेष उद्देश्य से किए हुए सामाजिक उत्सवों (पार्टी इत्यादि) का अविश्रान्त चक्र रहा है, जिसमे प्रेम तो क्या समवेदनापूर्ण साहचर्य्य का भी अभाव रहा है। संसार में मैं केवल दो ही व्यक्तियो से प्रेम करती हूँ—एक तो मे और दूसरे तुम। तुम दोनों के लिए मेरा प्रेम इतना अधिक है कि तुम्हारे सुख और समृद्धि के लिए जो कुछ भी करूँ मेरे लिए थोड़ा ही होगा। यही कारण है मैं तुमसे कह रही हूँ कि मे तुमसे प्रम नहीं करती। इस बात का विचार करके वास्तव मे मेरा अंत'करण काँप उठता है कि दो युवा हृदय जो थोड़ी सी सतर्कता से सुखी हो सकते हों, केवल छोटी सी गलती के कारण कुछ ही समय में शोकाकुल न हो जायँ।

ब्रायन पर मिसेज ओकले की बातों का प्रभाव खूब पड़ा, क्योंकि वे इस समय सत्य और करुणा की साक्षात् अवतार बनी हुई थीं। ब्रायन के दिमाग में इस समय आँधी उठ रही थी। कितनी ही बार उन्होंने इस बात पर अपने मन में आश्चर्य किया था कि मे ने ऐसी क्या बात देखी जो मुझ पर रीझ गई। परन्तु साथ ही साथ उनके हृदय में यह सन्देह कभी न उठा कि वह उनसे प्रेम नहीं करती।

"मैं जानती हूँ ब्रायन इस समय तुम्हारे हृदय पर

क्या बीत रही है। तुम्हारे लिए मेरे दिल मे सच्चा दर्द है। जिस दिन से मे ने मुझ से कहा है कि उसने यदि तुम्हारी पत्नी बनना स्वीकार न कर लिया होता तो पैडल से शादी वह खुशी से कर लेती उसी दिन से मै विचार कर रही थी कि तुमसे मुझे यह बात कहनी ही होगी, पर इतने दिन से मै इससे जी चुरा रही थी। कितनी ही बातो मे मे बड़ी विचित्र लड़की है। उसके विचार बहुत ही आधुनिक है, किन्तु साथ ही उसका अपनी मर्यादा के सम्बन्ध मे ऐसा ख्याल है, जिसे हम विगत दृष्टिकोण कह सकते है। वह जानती है कि तुम उसे प्यार करते हो, इसीलिए तुम्हारे सिवाय इस दुनिया मे कोई भी शक्ति ऐसी नही जो तुमसे विवाह करने मे उस के इरादे को पलट सके। ब्रायन, परिस्थिति सचमुच बहुत कठिन है।"

मिसेज ऑकले ठडी साँस लेकर चुप हो गई। ब्रायन के मन मे यह विचार एक क्षण के लिए भी न उठा कि वे जो कुछ कह रही है, सच नही है। उन्होंने सोचा कि मेरी उम्र मे की अपेक्षा काफी अधिक है और साथ ही अपने सिवाय मेरे पास कोई ऐसे अन्य साधन भी नही, जिनके जरिए मै उसे सुखी बना सकूँ। दूसरी तरफ पैडल घुड़सवार सेना का उन्नतिशील अफसर है। वह लार्ड खान्दान का ही नही है, बल्कि जिसकी निजी आय भी काफी अधिक है। वास्तव मे मेरा उससे कोई मुकाबला ही नही है। इसके बाद ब्रायन के मस्तिष्क मे पैडल और मे के एक साथ नृत्य करने का दृश्य खिच गया—अहा, क्या ही अच्छी जोड़ी है। उन्होंने अपने मन ही मन निश्चय किया कि अन्तर की पीड़ा चाहे कितनी भी दुखदायिनी क्यो न हो कम से कम मै मे के सुखी-जीवन के मार्ग मे रोड़ा बन कर नही अटकूँगा।

अन्त मे रॉबिन्स ऑकले के शान्त और सयत स्वर ने कहा

की शान्ति को भंग किया—"मेरे विचार में स्थिति अब यह है, जैसा कि मैं अपने अनुभव से जान सकी हूँ। पैडल के साथ मे बहुत ही सुखी रहेगी। तुम्हारे साथ उसे जीवन का सच्चा आनन्द न मिलेगा, क्योंकि अब वह तुमसे प्रेम नहीं करती और ब्रायन, तुम्हारे जीवन से भी रस का स्त्रोत उस दशा में सूख जायगा जब कि तुम यह अनुभव करने लगोगे कि जिसे तुम प्यार करते हो वह बदले में तुमसे प्रेम नहीं करती। अब तुम्हारे ही हाथ में दो व्यक्तियों के भावी जीवन की सुख और शान्ति कायम रखने का दायित्व है।"

ब्रायन को मिसेज़ ओकले के कथन की सत्यता में कुछ भी सन्देह न रह गया, वे बोले—"मुझे निर्णय करने में अधिक देर न लगेगी। मैं मे से प्रेम करता हूँ और जिस किसी भी तरह उसके मन का क्लेश दूर होने की सम्भावना हो, वही हर हालत में करने के लिए तैयार हूँ, चाहे ऐसा करने में मुझे खुद कितना ही कष्ट क्यों न उठाना पड़े। इन सब बातों में आपको अनुभव है, मैं अनुभवहीन हूँ। मैं कम से कम यह तो कभी न कह सकूँगा कि मे तुम पैडल से प्रेम करती हो, इसलिए मैं तुमसे विवाह करने को तैयार नहीं हूँ। मीसेज़ ओकले, मैं आपको अपनी सच्ची मददगार समझता हूँ। आप ही बतलावें कि इस हालत में मैं क्या करूँ?"

मिसेज़ ओकले का हृदय आनन्द से नाच उठा। विजय प्राप्त करने के लिए दृढ़ता से निश्चय तो वे कर ही चुकीं थी, किन्तु उनका ख्याल न था कि सफलता उन्हें इतनी शीघ्रता और आसानी से मिल जायगी। ब्रायन की सदाशयता पर उन्हें पहले ही विश्वास था और उसी के कारण उन्हे सफलता भी मिली।

"ब्रायन मैंने जो बात सोची है उसमे तुम्हे मानसिक कष्ट तो बहुत होगा पर इसके सिवाय और कोई चारा नहीं है। तुम्हे मे के साथ अपना सम्बन्ध तोड़ देना होगा और उसका दोष भी अपने माथे लेना होगा। मै यह समझती है कि तुम उसे प्यार करते हो, जो ठीक भी है। तुम्हे उसके मन से इस विचार को निकालना पड़ेगा।"

"मे के सुख के लिए मै यह भी करने को तैयार हूँ। पर आप मुझे बतलाइए तो कि ऐसा किया कैसे जाय?"

"क्या तुमने अपने मन को पक्का कर लिया है?"

"हाँ"

"क्या तुम मेरी सलाह के अनुसार कार्य करने को तैयार हो?"

"हाँ, अवश्य"

"अच्छा तो यहाँ आओ"—मिसेज ओकले ने उनसे एक लिखने की मेज की तरफ इशारा करते हुए कहा—"मै तुमसे एक पत्र लिखाती हूँ और यदि तुम उचित समझोगे तो वह मे को दे दिया जायगा।"

ब्रायन मेज के पास की कुरसी पर बैठकर मिसेज ओकले द्वारा पत्र लिखाए जाने की प्रतीक्षा करने लगे—

"प्रिय मे—मुझे अफसोस, निहायत ही अफसोस के साथ लिखना पड़ रहा है कि जब हम लोगो का सम्बन्ध पक्का हुआ था उस समय और अब की परिस्थितियो मे काफी अन्तर आ गया है। दोष मेरा है, पर सम्बन्ध को जारी रखने मे हम दोनो को क्लेश के सिवाय और कुछ हाथ न आवेगा। मुझे क्षमा करने का प्रयत्न करना यदि कर सको—और भूल जाना। ब्रायन।"

व्रायन ने कागज को मोड़ कर लिफाफे मे रखा और पता लिख कर मिसेज ओकले को दे दिया।

"धन्यवाद, मिसेज ओकले। मेरे भी ख्याल मे इसी तरह वह समस्या हल हो सकती है। वर्तमान स्थिति मे मेरी और मे की मुलाकात हम दोनों के लिए ठीक न होगी। इसीलिए कल सुवह और शायद आपके जागने के पूर्व ही मैं यहाँ से चल दूँगा। गुडवाई और इसके लिए धन्यवाद।"

मिसेज ओकले ने व्रायन का आगे वढ़ा हुआ हाथ अपने दोनों हाथों में ले लिया।

"व्रायन, मैं जानती हूँ कि तुम्हारे दिल पर इस समय कैसी वीत रही होगी। तुमने एक ऐसा काम किया है कि "

मिसेज ओकले फूट फूट कर रोने लगीं और उन्होने व्रायन के आगे वढ़े हुए हाथ को चूम लिया।

व्रायन शीघ्रता से कमरे के वाहर हो गए।

समस्या जटिल हुई

उधर होटल में फैंसी ड्रेस नृत्य होता रहा। वैंड तो अच्छा था ही, साथ ही नृत्यालय का फर्श भी नाचने के लिए उत्तम था। युवक-युवतियों को और चाहिए ही क्या? एक के वाद दूसरा, दूसरे के वाद तीसरा इस तरह नृत्यों के ताँते लग रहे थे। मे को नाचने का विशेप शौक था इसलिए वह वरावर व्यस्त रही। आज अधिकांश नृत्यों में वह पैडल के साथ नाची थी। इसके वाद वे खाने के लिए एक मेज के पास वैठ गए।

मेरी ने खाते खाते कहा—"जार्ज, मुझे उस भारतीय सुन्दरी के सम्बन्ध में और भी बातें बतलाओ, जिससे तुम्हारा प्रेम हो गया है।"

"हे ईश्वर! स्त्रियाँ बड़ी जल्दी किसी परिणाम पर पहुँच जाती हैं। मैंने कब कहा था कि मैं उससे प्रेम करता हूँ।"

"बात यह है कि चाहे कोई स्त्री संसार की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी ही क्यों न हो, पुरुष उसकी तरफ तब तक आकर्षित नहीं होंगे जब तक उसके प्रति उनके हृदय में प्रेम का अंकुर न फूट पड़ा हो।"

"परन्तु, मैंने तो केवल यही कहा था कि इतनी सुन्दरी भारतीय महिला मैंने कहीं नहीं देखी।"

"परन्तु तुमने भारतीय सुन्दरियाँ अभी देखी ही कितनी हैं?"

"हाँ, उर्मिला के सिवाय और किसी भी भारतीय सुन्दरी से मिलने का अवसर मुझे नहीं मिला है।"

"और बस, पहिली ही मुलाकात में तुम उस पर इतने रीझ गए कि पोलो का खेल दिखाने के लिए निमंत्रण तक दे डाला।"

"अगर तुम जानना ही चाहती हो तो सुनो मुझसे भी अधिक ब्रायन इस विषय में दोषी हैं।"

"हाँ यदि वह तुम्हें भी अवसर देती तो शायद तुम भी इस रूप पर आसक्त होते।"

"उसने मुझसे तो कुछ नहीं कहा, लेकिन . . ."—यहाँ पेटल एकाएक रुक गए। वे सोचने लगे कि ब्रायन के सम्बन्ध में इस तरह की बात करना उनके लिए उचित नहीं है। सम्भव है बातों के सिलसिले में मुझसे कोई ऐसी बात निकल जाय, जो न कहना चाहिए।

"लेकिन कह कर चुप हो जाना तो बहुत अनुचित है"—मे ने जरा कड़ाई के साथ कहा—"कहो न, क्या बात है ?"

"नहीं, बात कुछ नहीं है। ब्रायन ने मुझे उर्मिला को आमंत्रित करते हुए देख लिया था। बस वे मुझे चिढ़ाने लगे कि मैं उसको अपनी रोल्स राइस कार और पोलो का खेल दिखा कर आकर्षित करना चाहता हूँ। उर्मिला ने तब दया करके मुझे इस कठिन स्थिति से छुड़ाया।"

"शायद उसने तुम्हारी तारीफ मे कुछ शब्द कहे।"

"हाँ, उर्मिला ने मेरी तारीफ तो अवश्य की, किन्तु उसका कारण केवल दया था, प्रेम नहीं।"

"तारीफ करने हुए उसने तुम्हे 'आनन्द दायक' कहा, क्यों जार्ज ?"

"हाँ, पर तुम्हे कैसे ज्ञात हुआ ?"

"जार्ज तुम सचमुच बड़े 'आनन्द दायक' हो।"

"इस कथन में भी प्रेम की अपेक्षा दया का भाव ही अधिक है।"

उपरोक्त वाक्य पैडल ने मे के सुनाने के लिए नहीं कहा था, पर उसने उसे सुन अवश्य लिया। जिस गम्भीरता से यह शब्द पैडल के मुँह से निकले थे उसके कारण मे एकाएक चौंक उठी। वह "जार्ज" को अपना घनिष्ट मित्र ही मानती थी और उसका ख्याल था कि वे भी उसे इससे अधिक और कुछ न मानते होंगे। परन्तु आज उनकी बातों की ध्वनि और दृष्टि से साफ प्रकट होता था कि यदि वह बंधन में न फँस गई होती तो उससे और भी निकट का सम्बन्ध स्थापित करने में वे तनिक भी न हिचकते।

मे ने खाते खाते कहा—"जार्ज, मुझे उस भारतीय सुन्दरी के सम्बन्ध मे और भी बातें बतलाओ, जिससे तुम्हारा प्रेम हो गया है।"

"हे ईश्वर! स्त्रियाँ बड़ी जल्दी किसी परिणाम पर पहुँच जाती हैं। मैंने कब कहा था कि मैं उससे प्रेम करता हूँ।"

"बात यह है कि चाहे कोई स्त्री संसार की सर्वश्रेष्ट सुन्दरी ही क्यों न हो, पुरुष उसकी तरफ तब तक आकर्षित नहीं होंगे जब तक उसके प्रति उनके हृदय मे प्रेम का अंकुर न फूट पड़ा हो।"

"परन्तु, मैंने तो केवल यही कहा था कि इतनी सुन्दरी भारतीय महिला मैंने कहीं नहीं देखी।"

"परन्तु तुमने भारतीय सुन्दरियाँ अभी देखी ही कितनी हैं?"

"हाँ, उर्मिला के सिवाय और किसी भी भारतीय सुन्दरी से मिलने का अवसर मुझे नहीं मिला है।"

"और बस, पहिली ही मुलाकात मे तुम उस पर इतने रीझ गए कि पोलो का खेल दिखाने के लिए निमंत्रण तक दे डाला।"

"अगर तुम जानना ही चाहती हो तो सुनो मुझसे भी अधिक ब्रायन इस विषय मे दोषी हैं।"

"हाँ, यदि वह तुम्हे भी अवसर देती तो शायद तुम भी इस पथ पर अग्रसर होते।"

"उसने मुझसे तो कुछ नहीं कहा, लेकिन . "—यहाँ पैडल एकएक रुक गए। वे सोचने लगे कि ब्रायन के सम्बन्ध में इस तरह की बात करना उनके लिए उचित नहीं है। सम्भव है बातो के सिलसिले में मुझसे कोई ऐसी बात निकल जाय, जो न कहना चाहिए।

"लेकिन कह कर चुप हो जाना तो बहुत अनुचित है"—मे ने जरा कड़ाई के साथ कहा—"कहो न, क्या बात है ?"

"नहीं, बात कुछ नहीं है। ब्रायन ने मुझे उर्मिला को आमंत्रित करते हुए देख लिया था। बस वे मुझे चिढ़ाने लगे कि मैं उसको अपनी रोल्स राइस कार और पोलो का खेल दिखा कर आकर्षित करना चाहता हूँ। उर्मिला ने तब दया करके मुझे इस कठिन स्थिति से छुड़ाया।"

"शायद उसने तुम्हारी तारीफ मे कुछ शब्द कहे।"

"हाँ, उर्मिला ने मेरी तारीफ तो अवश्य की, किन्तु उसका कारण केवल दया था, प्रेम नही।"

"तारीफ करते हुए उसने तुम्हे 'आनन्द दायक' कहा, क्यों जार्ज ?"

"हाँ, पर तुम्हे कैसे ज्ञात हुआ ?"

"जार्ज तुम सचमुच बड़े 'आनन्द दायक' हो।"

"इस कथन में भी प्रेम की अपेक्षा दया का भाव ही अधिक है।"

उपरोक्त वाक्य पैडल ने मे के सुनाने के लिए नहीं कहा था, पर उसने उसे सुन अवश्य लिया। जिस गम्भीरता से यह शब्द पैडल के मुँह से निकले थे उसके कारण मे एकाएक चौंक उठी। वह "जार्ज" को अपना घनिष्ट मित्र ही मानती थी और उसका ख्याल था कि वे भी उसे इससे अधिक और कुछ न मानते होंगे। परन्तु आज उनकी बातों की ध्वनि और दृष्टि से साफ प्रकट होता था कि यदि वह बंधन में न फँस गई होती तो उससे और भी निकट का सम्बन्ध स्थापित करने में वे तनिक भी न हिचकते।

मे ने अपनी मुख-मुद्रा गम्भीर वनाए हुए पैडल की तरफ आँखें उठा कर कहा—"मुझे क्षमा करो जार्ज, पूछताछ करने मे मैं जरा सीमा का अतिक्रमण कर गयी। चलो, अव हम इस सम्वन्ध में मौन रहेंगे। क्यो ठीक है न ?"

"ना, यह नहीं होगा। जो वात मैंने उठायी है उसे पूरा कर लेने दो, क्योंकि ऐसा न कर सका तो मुझे रात भर नींद न आवेगी। वात कुछ भी नहीं है पर तुम शायद न जाने क्या सोचती रहो। ब्रायन ने कहा कि उन्हे मुझ पर ईर्षा है, किन्तु उर्मिला ने यह कहकर कि ईर्षा करने की कोई आवश्यकता नहीं उन्हे मौन कर दिया। वस, सिर्फ यही तो वात थी।"

मे अनुभव करने लगी कि अव उससे और नाचा न जायगा। उसे अपने पिता का कहना याद आया कि ब्रायन ने एक भारतीय युवती से अपना सम्बन्ध कर लिया है। पहले उसे उर्मिला के सम्वन्ध मे विलकुल सन्देह न उठा था पर अव उसके मन मे यह भाव उत्पन्न हुआ कि सन्देह का जो किञ्चित अंश भी उत्पन्न हुआ है उसे ब्रायन से तत्काल मिल कर मिटा क्यों न लिया जाय।

"जार्ज, क्या तुम एक वात मानोगे ?"

"क्या है सुन्दरी। जवान से निकलते ही न मानूँ तो कहना।"

"अव मैं और नहीं नाचना चाहती।"

"क्यों, कोई गम्भीर वात हो गई है क्या ?"

"नहीं, गम्भीर वात तो कोई नहीं है, पर मेरा दिल नहीं लगता, और जार्ज "

"मैं ब्रायन से प्रेम करती हूँ।"

"हाँ, सो तो है ही—ब्रायन जैसा भला आदमी मैंने तो कोई

देखा ही नहीं। तुम सचमुच बड़ी भाग्यवान हो और वह भी बड़े भाग्यवान हैं। वास्तव मे तुम दोनो का ही नसीब अच्छा है।"

"प्रिय जार्ज, तुम सचमुच बड़े आनन्द दायक हो। और देखो यह मैं तुमसे दया नहीं, बल्कि प्रेम के कारण कहती हूँ। इसकी सचाई सिद्ध करने के लिए मैं तुम्हें एक बार आलिंगन भी कर सकती हूँ, किन्तु तुम्हे मुझे माँ के कमरे तक पहुँचाना होगा।

"अच्छा, तो आओ।"

होटल की इमारतें एक चौकोर के रूप मे थी। सामने दरवाज़े से घुसने पर एक तरफ नृत्यालय, भोजनालय और बातचीत करने के हाल पडते थे। अन्य दो तरफ होटल मे ठहरने वालो के लिए कमरे बने हुए थे। चारो तरफ की इमारतों के बीच में चार बड़े पेड थे, जिनकी डालियाँ एक दूसरे से ऐसी लिपटी हुई थीं कि एक बड़ा सा कुज बन गया था, जिसके भीतर लोगों के बैठने के लिए बेंच पड़ी थीं।

मिसेज़ ओकले का कमरा नृत्यालय के ठीक सामने की तरफ ऊपरी मंजिल में पड़ता था। ब्रायन मिसेज़ ओकले के कमरे से निकल कर अपने कमरे के लिए जाते हुए बीच के चौकोर स्थान को पार कर रहे थे। उन्होंने मे और पैडल को भोजनालय से निकल कर अपनी तरफ आते हुए देखा। मिसेज़ ओकले के यहाँ जो कटु अनुभव उन्हे हुआ था उसके बाद मे और लोगों की नजर बचा कर छिपते हुए निकल जाना उनके लिए स्वाभाविक ही था। वे कुज की घनी छाया में एक जगह छिप गए किन्तु वे और पैडल भी उसी तरफ को बढे। ब्रायन ने सोचा कि वह दोनों अगर एकाएक मेरे सामने आ गए तो मेरे लिए उनसे बचना और भी मुश्किल होगा। फिर भी वे जहाँ छिपे थे वहीं खड़े रहे।

आख़िर मे और पैडल भी उसी कुंज मे घुस गए। ब्रायन उनसे कुछ ही दूरी पर खड़े थे। उन्होंने इन्हे जो आते देखा तो एक पेड़ के तने के पीछे छिप गए।

"जार्ज देखो, हमारे काम के लिए यह वड़ी निराली जगह है।"—यह कह कर मे ने पैडल के गले मे अपनी वाहे डाल दीं और उनके ओठो को चूम लिया।

"वस लो, मैंने अपना वादा पूरा कर दिया। तुम वड़े भले आदमी हो।"

इसके वाद मे चौकोर भाग के शेष स्थान को अकेले पार करके अपनी माँ के कमरे को चली गई और पैडल भोजनालय की तरफ चले गए।

ब्रायन इन लोगों के हटने तक वहीं छिपे रहे। इसके वाद वे भी अपने कमरे को चले गए।

"अरे माँ"—मे ने कमरे मे आते ही चिल्ला कर कहा—"ब्रायन, कहाँ गए?"

मे इस समय ब्रायन से मिलने के लिए छटपटा रही थी। मिसेज़ ओकले यह देख कर घवरा गई। उन्हे आशा न थी कि मे अपना नृत्य इतनी जल्दी समाप्त कर लेगी। उन्हे यह भी आशंका होने लगी कि ब्रायन उससे कहीं मार्ग ही मे न मिल लिए हो। मिसेज़ ओकले के नकली आँसू तव तक सूख चुके थे किन्तु ब्रायन का पत्र अभी तक उनके हाथ में था।

"अभी एक मिनट भी नहीं हुआ ब्रायन यहाँ से गए हैं। क्या वे तुम से रास्ते मे नहीं मिले?"

'नहीं,"—मे ने उत्तर दिया—"शायद वे मेरी तलाश मे होंगे और मैं उन्हे इधर खोज रही हूँ।"

मिसेज ओकले ने शान्ति की साँस ली। यदि संयोग वश मे ब्रायन को मिल जाती तो उनका समस्त षडयंत्र एक क्षण मे धूल मे मिल गया होता।

"प्रिय मे, मैं तुम्हे विश्वास दिलाती हूँ कि ब्रायन इस वक्त तुम्हारी तलाश मे नहीं हैं। मुझे एक बहुत ही दुखद समाचार तुम्हें सुनाना है। उसके लिए तुम अपना दिल पक्का कर लो। आओ, यहाँ पास आकर बैठो।"

"ठीक है माँ, सुनाओ। तुम्हारी गम्भीर मुख-मुद्रा से जान पड़ता है कि जो बात तुम सुनाने जा रही हो, वास्तव में बड़ी ही भयानक है। अच्छा यही है कि तुम उसे शीघ्र ही कह डालो। मेरी चिन्ता न करो। मैं उन भयत्रस्त होकर चिपट जाने वाली या शोकाकुल होकर बेसुध हो जाने वाली युवतियों में नहीं हूँ, जैसी तुम्हारे यौवन काल में हुआ करती थीं।"

मे द्वारा कड़े शब्दों का प्रयोग किए जाने पर मिसेज ओकले दिल में काँप उठीं। उसने जिस प्रकार स्पष्ट शब्दों में पूछना आरम्भ किया उससे भी वे कुछ अप्रतिभ हो उठीं। यदि मे चिपटने और बेसुध होने वाली कमजोर दिल की होती तो उनके उद्देश सिद्ध होने में कोई कठिनाई न होती।

"तुम्हें याद है कि तुम्हारे पिता ने कुछ दिन पहले अपने एक पत्र मे लिखा था कि ब्रायन का एक भारतीय युवती से सम्बन्ध हो गया है।"

"हाँ"—मे ने बिना किसी हिचकिचाहट के कहा—"अपने बंगले के सामने वाले बरामदे में ब्रायन को उन्होंने उर्मिला के साथ बैठे देखा था, जिसमे चोरी की बात कुछ भी न थी। पिताजी सदा ऐसी बातों में हाथ डाला करते हैं, जिनसे उन्हें अलग

रहना चाहिये। माँ, मै तो अकसर यही सोचा करती हूँ कि यदि तुम्हारा पिता जी से विवाह न हुआ होता तो वे अपना काम किस तरह चलाते।"

"यहाँ इस बात का जिक्र ही क्या है मे ?"—मिसेज ओकले ने जरा कड़ाई से कहा—"तुम्हारे पिता ने जो कुछ कहा है ठीक ही कहा है।"

"देखो माँ, इस तरह की बातें मुझे अच्छी नहीं लगती। जो कुछ तुम कहना चाहो सीधी सादी भाषा मे कह डालो—और तुम चाहो तो मुझे भला-बुरा भी कह सकती हो। ऐसी बातों मे काम की बात बहुत जल्द निकल आती है।"

"मेरा मत तुमसे नहीं मिलता। मै जिस वातावरण मे बचपन से रखी गई हूँ, उसमे ऐसी बातें करना नीच लोगो का काम समझा जाता था।"

"माँ मुझे दया आती है कि बचपन मे तुम न जाने किस अवाञ्छनीय वातावरण मे रखी गयी होगी—पर इसमे तुम्हारा दोष कुछ भी न था। अच्छा वह बात सुना कर इस अप्रिय विषय को शीघ्र ही समाप्त करो।"

मिसेज ओकले ने बडी कठिनाई से अपने आप पर संयम किया। उन्हें मे से अपने पिछले मोर्चे का स्मरण हो आया, और उन्होंने सतर्कता पूर्वक आगे बढ़ने का इरादा मन मे कर लिया। वे सोचने लगीं कि किस तरह आरम्भ किया जाय।

"हाँ तो माँ कहती चलो। साधारणत मैं उत्तेजित नही होती, किन्तु तुम्हारे कारण कुछ अशान्ति अवश्य हो रही है। पिताजी ने कहा था कि ब्रायन का किसी भारतीय युवती से प्रेम है—तुमने यहाँ तक कहा था न ? अब तुम शायद यह बतलाओगी कि यह युवती उर्मिला है।"

मिसेज़ ओकले अभी आश्चर्यपूर्ण दृष्टि से मे की तरफ देख ही रही थी।

"अब अपनी गलती मै समझी। माता-पिता दोनों ने मिलकर मेरे विरुद्ध षडयत्र रचा है। सुन्दरी कन्या—हाँ मैं जानती हूँ कि मैं सुन्दरी हूँ—ने अपने लिए अवाञ्छनीय वर चुना है। इसी समय वाञ्छनीय वर सामने आकर उपस्थित होता है। बस इस वाञ्छनीय वर का गठबंधन सुन्दरी कन्या से कराने के लिए तरह तरह की चालाकियाँ की जा रही हैं। नहीं माँ, यह सब चालें मुझसे न चलेंगी। मुझे और ब्रायन को भी इस सम्बन्ध मे कुछ न कुछ कहने का हक है।"

मे की बातों को मिसेज़ ओकले जबान हिलाये बिना सुन तो रही थीं, पर क्रोध के कारण उनका शरीर जला जा रहा था। बहुत प्रयत्न करने के बाद ही वे अपने आपको नियंत्रण मे रख सकीं। मे के अन्तिम वाक्य को सुन कर उनके दिमाग में एकाएक यह बात आ गयी कि किस तरह आगे बढ़ना चाहिए।

"प्रिय मे, मैं तुम्हारी बात से पूरी तरह सहमत हूँ कि तुम्हें और ब्रायन ही को इस सम्बन्ध में निर्णय करने का अधिकार है। देखो, ब्रायन ने तुम्हारे लिए इस पत्र में क्या लिखा है।"

मिसेज़ ओकले ने मे के हाथ मे वह पत्र दे दिया। लिखावट पर नज़र डालते ही मे समझ गयी कि अक्षर ब्रायन के हैं। जिस मेज पर बैठ कर ब्रायन ने पत्र लिखा था, उसी के निकट लिफाफे को खोल कर मे पत्र पढने लगी।

मे उस समय बिजली की लेम्प के ठीक नीचे खडी हुई थी, इसलिये उसकी मुख मुद्रा के किञ्चित परिवर्तन को भी मिसेज ओकले बिना किसी कठिनाई के देख सकती थीं। भौंह में बल देकर

उसने पत्र को दो वार आद्योपान्त पढ़ डाला। यह देख कर मिसेज़ ओकले के चेहरे पर सन्तोष की हलकी रेखा खिंच गई। आखिर उन्होंने वेटी के हृदय से विश्वास के किले को ढा ही तो दिया। मे यही समझेगी कि ब्रायन ने उसके प्रेम को ठुकरा दिया।

"ब्रायन की लिखावट तो साफ है। पर क्या ब्रायन हजार साल में भी कभी ऐसा पत्र लिख सकते हैं ? इसकी प्रत्येक लाइन मे तुम्हारे पुराने ढंग की भाषा साफ झलकती है। यह तुम्हारा ही लिखाया हुआ है न ?"

"हाँ मे"—मिसेज़ ओकले ने उत्तर दिया।

"उन्हे यह पत्र लिखने को मजबूर करने के लिए तुमने उनसे क्या क्या बातें कहीं ?"

"पास बैठो तो बता दूँ किस परिस्थिति मे यह सब हुआ"—बात वडी खेदपूर्ण है।"

मे उनके पास ही कुरसी पर वैठ गयी।

"अच्छा माँ, सुनाओ। जान तो यह पड़ता है कि सब कुछ तुम्हारी तैयार की हुई योजना के अनुसार हुआ है। कहो, मै वीच में न वोलूँगी।"

मिसेज़ ओकले ने सोचा कि यहाँ उन्हे अपनी उदार हृदयता प्रकट करनी चाहिए और वे लडकी की ढिठाई पूर्ण वातों पर मुसकराने लगीं।

"तुम्हे यह सुन कर वहुत आश्चर्य्य होगा कि अब मैं ब्रायन को वहुत चाहने लगी हूँ। अन्य जितने भी व्यक्तियों से मै मिली हूँ उनकी अपेक्षा ब्रायन मे कितना अन्तर है, कितना आकर्षण है, यह मैं जान गई हूँ। उनका सर्वोत्तम गुण शायद स्पष्टवादिता है। उनसे मेरी वडी देर तक वाते हुई हैं, जिनके वीच मैंने उनसे

उर्मिला के सम्बन्ध में भी पूछा था । पहले तो वे कुछ घबराये, किन्तु अन्त में उन्होंने स्वीकार कर लिया कि उर्मिला के साथ उनका पुराना सम्बन्ध फिर से जारी हो गया है। उन्होंने यह भी मान लिया कि ऐसा करके उन्होंने तुम्हारे प्रति अनुचित व्यवहार किया है। इस हालत में उनके लिए तुम से सम्बन्ध तोड़ देना ही उचित है। परन्तु उन्हे कठिनाई यह हो रही थी कि यह किस प्रकार किया जाय, इसलिए सलाह लेने वे मेरे पास आए। बहुत विचार करने के बाद मैंने उन्हे एक ऐसा पत्र, तुम्हारे नाम लिखने की सलाह दी, जिससे कि तुम दोनो को कम से कम कष्ट उठाना पड़े । इस पत्र का मजमून भी मैंने उन्हें बोल दिया।"

मे एक क्षण के लिए स्तब्ध हो गयी। मिसेज ओकले ने उसे अपनी तरफ ताकते हुए देखा तो पुत्री की मनोव्यथा शान्त करने के लिए मे को छाती से लगाने के लिये वे उठीं।

"मेरी प्यारी लाड़ली, तुम जानती हो मुझे इस समय कितना दुख ..."

मे छिटक कर अलग हो गई—"हटो माँ, यह सब मुझे अच्छा नहीं लगता। तुम मुझे उतना ही प्यार करती हो, जितना कि मैं तुम्हें करती हूँ। हम दोनों के जीवन अलग अलग बीते हैं और हमारे दृष्टिकोण भी एक दूसरे से बिलकुल भिन्न हैं। देखो कृपा करके कुछ देर चुप रह कर मुझे सोचने का अवसर दो। मैं बहुत कड़े शब्दों का प्रयोग कर रही हूँ, पर क्या करूँ इसके सिवाय मेरे आगे और कोई चारा ही नहीं है।"

मे अपना सर दोनों हाथों के बीच में रख कर बैठ गयी और मिसेज ओकले जहाँ थी, वहाँ मुसकराती हुई बैठी रहीं।

आधा किला उन्होंने फतह कर लिया था—यानी पुत्री का सम्बन्ध अवाञ्छनीय वर से तोड़ना । अब शेष जो बचा है, उसमे तो उन्हे कुछ कठिनाई होनी ही न चाहिए ।

मिसेज़ ओकले अपने कल्पना के घोड़ो को दौड़ाने लगीं—लदन मे शान्त किन्तु फैशनेबुल विवाहोत्सव, वैसा ही जैसा कि एक भावी लार्ड और भारतीय सिविल सर्विस के प्रसिद्ध अफसर की सुन्दरी कन्या का होना चाहिए । कितने ही लार्ड, अर्ल और ड्यूकों की उपस्थिति और शायद—शायद क्यों अवश्य—सम्राट् से सद्कामना का सन्देश । कल्पना के सुन्दर दृश्यों को देखने में वे इतनी व्यस्त थीं कि पुत्री लिखने की मेज से उठ कर जब उनके सामने आकर खड़ी हो गई तो वे चौंक उठीं ।

"माँ तुमने मुझे सचमुच हरा दिया । ब्रायन ने मेरे प्रेम को ठुकरा दिया है तो मैं कुछ नहीं कर सकती । कल सुबह बतलाऊँगी कि अब मैं क्या करने का विचार कर रही हूँ ।"

"आखिर तुम्हारा मतलब क्या है ?" मिसेज़ ओकले ने उठ कर उत्तेजित होते हुए कहा—"तुम करोगी ही क्या ? तुम्हारा पागलपन मै बहुत देख चुकी हूँ । इतने दिन नरमी का व्यवहार किया है, इसीलिए न ? मैं कहे देती हूँ बेटी, जैसा कहती हूँ, वैसा तुम्हे करना पडेगा नहीं तो ’

" नहीं तो... ."—मे ने शान्त स्वर मे पूछा ।

मिसेज़ ओकले चुप रहीं ।

"आओ माँ, यहाँ बैठ जाओ । मैं सब बात तुम्हे समझाती हूँ ।"

मिसेज़ ओकले चुपके से आकर उसके पास बैठ गईं ।

"देखो माँ मेरे और तुम्हारे दृष्टिकोण मे जमीन आसमान का अन्तर है। तुम्हे एक आधुनिक युवती की भावनाओं का तनिक भी ज्ञान नहीं है। उसके हृदय तो होता है, किन्तु साथ ही अपनी इच्छा भी होती है और स्वतन्त्रता को तो वह जान से भी अधिक चाहती है। पिछले दस-बारह साल से मेरा लालन-पालन अजनबी व्यक्तियों के बीच होता रहा, जिसके परिणाम स्वरूप माता-पिता भी मेरे लिए अजनबी से हो गए हैं। शायद इसीलिए इतनी कम उम्र में मुझे इस बात का ज्ञान हो गया है कि मनुष्य के सुख-दुख की जिम्मेदारी मुख्यतः उसकी अपनी होती है। इसी उद्देश को ध्यान में रख कर मैंने टाइप का काम सीखा और लदन की एक प्रसिद्ध कपड़े की दूकान में काम आरम्भ कर दिया। इस तरह भारत आने के पूर्व मैं प्रति सप्ताह एक अच्छी रकम कमा लिया करती थी। अब मैं जब जी चाहे तभी उस दूकान में जाकर काम आरम्भ कर सकती हूँ। सच बात तो यह है कि मैं केवल सैर-सपाटे और तुमसे मिलने के इरादे से आयी थी। संयोगवश मेरी भेंट ब्रायन से हो गयी और उनके प्रेम में पड़ कर अपने स्वतन्त्रता सम्बन्धी विचारों को भूल गई। तुमने शायद सोचा होगा कि मैं स्कूल से निकली हुई नादान लडकी हूँ, जिसे तुम्हारी देख-रेख और नियंत्रण की आवश्यकता पडेगी। विवाह के लिए मुझसे दर्जनों प्रस्ताव किए भी जा चुके हैं, जिनमें कई तो आर्थिक दृष्टि से बहुत ही आकर्षक थे। प्यारी माँ, तुम्हें यह सब सुन कर अफसोस हो रहा होगा, क्यों न ? परन्तु मेरे कार्यक्रम में कुछ भी अन्तर इससे नहीं आ सकता। अपने विचार से माँ तुम अपने को बहुत सफल समझ रही होगी, किन्तु वास्तव में तुमने अपनी पुत्री के भावी सुख को नष्ट करने ही में सफलता प्राप्त की है।"

मे सोफ़ा से थकी और उद्विग्न सी मुद्रा लिए उठ बैठी—"अच्छा माँ, गुड नाइट। आशा करती हूँ आज रात को तुम मुझसे अधिक चैन से सोओगी।"

मे जब चली गई तो मिसेज़ ओकले आज की घटनाओं पर विचार करने लगीं। उन्हे अपनी पुत्री का सम्बन्ध ब्रायन से तोड़ने मे सफलता मिली, यहाँ तक तो ठीक है। मे ने जो कुछ कहा उससे वे कुछ चिन्तित तो अवश्य हुईं, फिर सोचने लगीं कि कोई भी नवयुवती अपने प्रेमी से विछोह कराये जाने पर इसी तरह की बातें कहेगी, जैसी मे ने आज कही हैं। पैडल उसे समझा-बुझा कर राजी कर लेंगे। अच्छा तो यह है कि मे से भेंट होने के पहले ही मैं पैडल को सब बातें समझा दूँ। यह विचार करके और दूसरे दिन प्रातःकाल जल्दी उठने का इरादा करके वे अपने बिस्तर पर सोने चली गईं।

दूसरे दिन मिसेज़ ओकले नाश्ते के कमरे मे रोज से कुछ जल्दी ही पहुँची थीं, किन्तु पैडल वहाँ पहले से मौजूद थे।

साधारण बातो के बाद श्रीमती ओकले मुख्य विषय पर आईं—"पैडल आज मैं तुम्हे एक ऐसी बात सुनाने जा रही हूँ, जिससे तुम आश्चर्य-सागर मे डूब जाओगे।"

आप मुझे इसके लिए पहले से तैयार किये दे रही हैं, इसके लिए धन्यवाद। अब यह देखना है कि यह बात खुशी की है या रंज की।

"मेरी पुत्री और ब्रायन का सम्बन्ध एक दूसरे की स्वीकृति से टूट गया है।"

पैडल वास्तव मे आश्चर्य के सागर मे डूब गए। केवल कुछ ही घंटे पूर्व मे उनसे स्पष्ट शब्दों मे ब्रायन के प्रति अपना प्रेम

प्रकट कर चुकी थी। उन्हे सन्देह हुआ कि "एक दूसरे की स्वीकृति" मे अवश्य कुछ न कुछ रहस्य है। कुछ भी हो, कम से कम यह परिवर्तन मेरे कारण तो हुआ नहीं है, मुझे अब इन बातो से बिलकुल अलग रहना चाहिए।

उन्होंने मन के वास्तविक भाव को छिपाते हुए इस तरह उत्तर दिया मानो इसमें उन्हें कोई दिलचस्पी ही नहीं है—"वास्तव मे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ है।"

मिसेज़ ओकले को ऐसी आशा न थी। वे उम्मीद करती थी कि कैप्टिन पैडल वास्तविक आश्चर्य प्रकट करते हुए प्रश्नों की झड़ी लगा देंगे। उन्हे ऐसा जान पड़ा कि इस घटना की अपेक्षा पैडल को इस बात पर अधिक आश्चर्य्य हो रहा है कि इसकी सूचना उन्हे क्यों दी गई है।

मिसेज ओकले बड़ी चतुर स्त्री थीं। अपनी गलती महसूस करके बोलीं—"तुमसे मैंने यह बात तीनों की मैत्री देख कर ही कही थी ताकि कोई अप्रिय परिस्थिति न उठ खड़ी हो। मुझे निश्चय है कि मे इस सम्बन्ध में तुम्हें कुछ भी न बतलायेगी।"

सदा की तरह हँसी और ताज़गी की प्रतिमा बनी हुई मे ने कमरे में प्रवेश किया। मिसेज़ ओकले और पैडल को उसकी आँखों में असाधारण चमक भी दिखलाई दी।

"गुडमार्निंग माँ, गुडमार्निंग जार्ज। क्या बात है? भोजन के समय भी तुम लोग इतने चिन्तित दिखलाई पड़ते हो। यह बुरे लक्षण हैं। जार्ज जान पड़ता है माँ तुम्हे सबसे ताज़ा समाचार सुना रही हैं।"

मे अपनी माँ की घबराहट पर मुसकराने लगी।

"ब्रायन ने तो मेरी कन्नी ही काट दी। मुझसे मुलाकात का

साहस न होने के कारण तड़के ही उठ कर चले गए। जार्ज, तुम कब जा रहे हो ?

"करीब दो बजे।"

"क्या तुम मुझे साथ ले चल सकते हो।"

"हाँ हाँ, क्यों नहीं ?"

"अच्छा मैं दो बजे तैयार रहूँगी।"

"मैं अपनी कार को इतनी तेज चलाऊँगा कि हम लोग दिन छिपे के पहले ही पहुँच जाँयगे।"

मिसेज ओकले बिना कुछ कहे गम्भीरता पूर्वक कमरे के बाहर चली गईं।

शाम की चाय

ब्रायन तड़के ही रवाना हो गए। वापस लौटते समय रास्ते में उन्हें स्थिति पर गौर करने का काफी समय मिल गया। उन्हें ऐसा जान पड़ने लगा मानो अब तक वे बड़ी मूर्खता मे पडे हुए थे। जैसा वे मे को जी-जान से प्यार करते हैं, वैसा ही वह भी उन्हें प्रेम करे ऐसा उनका भाग्य ही न था। स्थिति को देखते हुए पैडल और मे का एक दूसरे के प्रति आकर्षित होना स्वाभाविक ही है। चलो, इस पचडे का जल्दी ही अन्त हुआ और सन्तोप की बात तो यह है कि मे सुखी रहेगी। पैडल बडा भला आदमी है। मेरे लिए वैसे तो सारा संसार ही सूना हो गया, पर इस कष्ट को किसी तरह सहन करना ही पडेगा।

क्या बनर्जी और गुप्ता का पता इस बीच कुछ मिला होगा ?

जब तक उनकी गिरफ़ारी न हो जाय तब तक मेरा जीवन कुछ खतरे मे अवश्य रहेगा। वे दोपहर के पहले ही अपने बँगले पर पहुँच गए।

रात के बाद पहली बार ब्रायन के मुँह पर मुसकराहट आई। बँगले के आगे मोटर अभी अच्छी तरह रुकी भी न थी कि उनका बुड्ढा नौकर आकर पास ही खड़ा हो गया। उन्हे देख कर उसने पहले तो सतरी के एक फटकार बतलाई और फिर जोर से चिल्ला कर सब को सूचित किया कि साहब आ गए। नौकरों को बुरा भला कहते हुए उसने सबको विविध कामो पर भेज दिया।

ब्रायन सीधे अपने कमरे मे चले गए और सोचने लगे कि आधे घंटे में उनके नहाने और भोजन का पूरा प्रबध हो जायगा।

मि० ओकले को अपने आगमन की सूचना देने के लिए फोन का रिसीवर उन्होंने अपने हाथ में उठा लिया। दूसरी तरफ से मि० ओकले की अधीर आवाज उन्हें सुनाई दी—"हलो, डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, क्या बात है ?"

"सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस, मैं आपको अपने आगमन की सूचना दे रहा हूँ।"

"क्या ब्रायन, तुम हो ?"

"हाँ, साहब।"

"पहले से सूचना दिए बिना ही छुट्टी समाप्त होने के पहले आने से तुम्हारा मतलब क्या है ? तुम जब से गए तब से यहाँ सब कुछ ठीक ठाक है। अब तुमने आते ही गडबड़ शुरु कर दी।"

"इसका मुझे खेद है साहब, पर आपकी बाते मेरी समझ

में आ नहीं रही हैं। मैंने अपनी छुट्टी मे कमी कर ली है तो इससे आपको कोई हानि नहीं हो सकती।"

"यही तो तुम्हारी गलती है। मैंने तुम्हारे सहकारी को काम के विषय मे हिदायतें दे दी हैं। अब उन्हीं बातो को मुझे तुम्हें भी दुहराना होगा।"

"नहीं, इसकी आवश्यकता न होगी, साहब। एक चतुर सहकारी से आशा की जा सकती है कि आपकी दी हुई हिदायतो को मुझे ठीक ठीक बतला सके।"

"बस फिर तुम दूसरो के काम मे टॉग अड़ाने लगे। क्या और भी कुछ कहना है?"

"नहीं साहब"—ब्रायन ने कहा—"आपको तो कुछ नहीं कहना।"

मि० ओकले ने झुँझलाहट भरी अवाज मे उत्तर दिया—"नहीं, अभी कुछ नहीं कहना"—किन्तु उनकी ध्वनि से साफ प्रकट होता था कि कहना तो बहुत कुछ है पर वे कहेंगे नहीं।

ब्रायन रिसीवर को रखते रखते आपने मन मे मि० ओकले की मनोरजक बातो पर हँसे बिना न रह सके। यही व्यक्ति उनका श्वसुर होने जा रहा था। किन्तु ब्रायन को मि० ओकले की मनोवृत्ति पर क्रोध नहीं आया। यह बुड्ढा आई० सी० एस० अफसर सचमुच क्रोध की अपेक्षा सहानुभूति का ही अधिक पात्र है। उसकी पत्नी और पुत्री पहाड मे शीतल जलवायु का आनन्द ले रही हैं और वह बडे बंगले मे अकेला काम करते करते अपने को खपाये डालता है। अब कुछ ही वर्ष मे वे पेंशन पाने के भी हकदार हो जायँगे। इस परिस्थिति मे अनावश्यक झझट से ऊब उठना उनके लिए स्वाभाविक ही है।

ब्रायन ने अपनी मेज़ में दराज खोल कर देखा कि उनके कागजपत्र यथास्थान ठीक रखे हैं या नहीं और एक सिगरेट जला कर वे अपनी आराम कुरसी पर लेट गये। लेटते ही उन्हें मे का स्मरण हो आया। ब्रायन ने सिगरेट मुँह से निकाल कर फेक दी और कुरसी से उठ कर खड़े हो गए।

"काफी मूर्ख बन चुके हो। अभी तक तुमने मे का ख्याल नहीं छोड़ा।"—ब्रायन अपने को मन मे धिक्कारने लगे। उधर से ध्यान हटा कर बनर्जी और गुप्ता को खोजने की तदबीर पर वे विचार कर ही रहे थे कि टेलीफोन की घंटी बज उठी। मि० ओकले को किसी बात का स्मरण हो आया यह विचार कर वे फिर मुसकरा उठे।

"हलो, सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस"

"अरे ब्रायन! छुट्टी समाप्त होने के दो दिन पहले ही आप कैसे आ गए?"

"आज अचानक ही मैं पहाड़ से आ गया हूँ।"

"क्यों?"

"फोन पर नहीं बतला सकता। परन्तु यह तो बतलाओ कि फोन क्यों किया था?"

"आप के आने की तारीख और समय मैं जानना चाहती थी।"

"क्यो?"

"फोन पर नहीं बतला सकती। मेरे यहाँ आकर शाम को चाय पीजिए न?"

"नहीं, तुम्हीं आकर मेरे यहाँ चाय पियो।"

"मेरी कार विगड़ी हुई है। ५ बजे जरूर आइयेगा।"

"अच्छा मैं ठीक ५ वजे आऊँगा और तुम्हें चाय के लिए ले आऊँगा।"

"आप फिर जिद करने लगे। तव मुझे आपको वापस करने के लिए भी आना पड़ेगा।"

"खैर, इस कठिन परीक्षा के वाद मैं जिन्दा तो अवश्य रह सकूँगा। और सुनो उर्मिला ..."

" हाँ "

"आज मै जरूर तुम्हारे यहाँ आकर सोऊँगा।"

"देखिए इस वात को वार वार कह कर मुझे शर्मिन्दा न किया कीजिए। उस दिन आप वेहद थके हुए थे। खैर, आप जव कभी भी आना चाहे, आइए अवश्य।"

"नहाने का सामान तैयार है साहव"—अब्दुल ने आकर कहा। उसने अपने मन में झुँझला कर सोचा कि साहव रात दिन काम ही मे लगे रहते हैं और वह क्रुद्ध दृष्टि से फोन की तरफ देखने लगा।

"अच्छा अब्दुल। तुमने अभी तक कुछ खाया नहीं बुड्ढे, क्यों?"

अब्दुल ने सम्मानपूर्वक साहव को सलाम किया। उसकी आखों मे आँसू भर आए—"साहव का आराम मेरा आराम है। साहव की आवश्यकताएँ पूरी हो जायँगी तभी मैं खाना खाऊँगा।"

"वहुत अच्छा, नहाने-खाने मे मुझे अधिक समय न लगेगा। इसके वाद मैं कुछ देर के लिए सो जाऊँगा। तुम मुझे ४ बजे उठा देना।"

"वहुत अच्छा साहव।"

पौने पाँच वजे व्रायन अपनी कार मे वैठने चले तो देखा कि प्रेमसिह वहाँ पहले ही से 'एटैन्शन' की आवस्था मे अकडा हुआ खडा है।

"तुम किधर से टपक पड़े, प्रेमसिह ? मैंने तो तुम्हें १० दिन की छुट्टी दी थी, वीच ही में तुम कैसे आ गए ?"

"मैने सुना था कि आप आ गए, इसीलिए मैं भी चला आया।"

व्रायन को यद्यपि भारत में रहते हुए काफी समय हो चुका था फिर भी वे इस रहस्य का पता न लगा पाये थे कि यहाँ के लोगों में खवर इतनी जल्दी कैसे फैलती है। कोई व्यक्ति यह तो जान ही न सकता था कि वे आज ही पहाड से वापस आ रहे है, क्यों कि कल रात के पहले स्वय उन्हें भी इसका कोई अन्देशा न था। फिर भी आने के ५ ही घंटे वाद उनका अर्दली यह समाचार जान कर अपनी ड्यूटी पर उपस्थित हो गया और वह भी कहीं पास से नहीं, वल्कि २० मील दूर अपने गाँव से।

"तुम्हें मालूम कैसे हुआ"

"साहव, मैं जान गया"

व्रायन ने अर्दली से इस सम्वन्ध में और प्रश्न नहीं किए, वे उर्मिला के वँगले के तरफ रवाना हो गए। वह अपने वरामदे में खडी हुई उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। उर्मिला और व्रायन पिछली सीट पर वैठ गए और प्रेमसिंह ड्राइवर की सीट पर वैठ कर कार चलाने लगा। कुछ ही देर में सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस का वँगला आ गया। रास्ते में व्रायन और उर्मिला के वीच कोई विशेप वात नहीं हुई।

ब्रायन को उर्मिला दुबली प्रतीत हुई, उसका रंग भी उड़ गया था, किन्तु आज वह उन्हें ऐसी सुन्दर लग रही थी, जैसी कभी न लगी थी। उर्मिला को ब्रायन पहले से कुछ स्वस्थ दिखलाई पड़े, यद्यपि चिन्ता के कारण उनकी भी मुखश्री क्षीण हो रही थी।

ड्राइंग-रूम मे चाय का सामान पहले से तैयार था। ब्रायन ने कमरे में घुसते ही उर्मिला से कहा—"देखो तुम जानती हो कि किस मे क्या कितना मिलाना चाहिए, जल्दी चाय तैयार करो। मैं बहुत प्यासा हूँ।"

"पर आप दो प्याले से ज्यादा नही पी सकते। मै आपको आसानी से हरा सकती हूँ।"

"अच्छा तो चलो शुरू करो।"

"इस बीच मे आप अपने अचानक आने का कारण बतला दीजिए।"

"तुम्ही न बतला दो कि मेरे आने की निश्चित तारीख और समय तुम क्यों जानना चाहती थी? तुम तो जानती ही हो लेडीज़ फर्स्ट।"

"अच्छा ब्रायन, आज मैं आप से झगड़ा न करूँगी। अपनी बात बताने मे मैं जितनी ही जल्दी करूँगी उतनी ही जल्दी आपका उत्तर मुझे मिल सकेगा।"

"नही उर्मिला, मै तो मजाक कर रहा था बतलाता हूँ सुनो ..."

"अब नहीं मानूँगी। स्त्री जाति को पहले कार्य करने की जो सुविधा दी गई है, उस पर मैं दृढ हूँ।"

"मैंने तो समझा कि तुम झगडा किये बिना न मानोगी"—ब्रायन ने हँसते हुए कहा—"अच्छा तुम्ही पहले बताओ।"

"बात सुनकर मेरी बेवकूफ़ी पर आप हँसेंगे। पिछले कुछ दिनों से बनर्जी और गुप्ता की तरफ से आप के जीवन की आशंका मुझे बराबर लगी रहती है। मैं नहीं कह सकती कि वे इस समय कहाँ होंगे, किन्तु यह मैं अनुभव कर रही हूँ कि वे कहीं यहीं पास में छिपे होंगे। कल रात को मैंने एक बड़ा भयानक स्वप्न देखा था। मैंने देखा कि आप और बनर्जी सड़क पर मरे हुए पड़े हैं। ताज्जुब की बात तो यह है कि आपके स्थान पर बनर्जी बरदी पहने हुए है। बात कितनी असम्भव और उपहासणीय है। सुबह मैं जब उठी तो इस स्वप्न पर मन ही मन हँसी कि अरे सपना ही तो है इसके लिए चिन्ता करना बड़ी मूर्खता होगी। परन्तु अब तक मुझे बराबर सपने की ही याद आ रही है। इस बात को दिमाग से भुलाने की मैंने हर तरह कोशिश की, पर वह भूलती ही नहीं। इसलिए कम से कम अपने मन को शान्ति देने के लिए मैंने तुम्हारे बँगले को फोन किया। आप समझ सकते हैं कि आपकी आवाज को सुन कर मुझे कितना आश्चर्य हुआ होगा। यही बात है बस—बेवकूफी की है न ?"

"नहीं, इसमें बेवकूफी तो कुछ भी नहीं है। बनर्जी और गुप्ता का पता लगाने के लिए मैं काफी प्रयत्नशील हूँ। आश्चर्य है कि उनका पता ही न चला। इससे मैं इसी परिणाम पर पहुँचा हूँ कि वे यहीं कहीं छिपे हैं।"

"ब्रायन, इस हालत में मुझे शान्ति थोड़े ही मिल सकती है। इसका मतलब है कि यह लोग अभी तक आपके पीछे पडे हैं और आपका जीवन खतरे में है।"

"वर्तमान परस्थिति में मेरा जीवन सदा खतरे में ही रहेगा।

पर उर्मिला, खतरे ही मे तो जीवन का आनन्द है। सभी को अपना समय आने पर दुनिया से विदा होना है। अच्छा अब मेरी बात सुनो।"

"परन्तु आप कहना न चाहे तो न कहिए, त्रायन। शायद सरकारी काम की कुछ ऐसी बातें हो, जिन्हे आप न बताना चाहते हो।"

"नहीं उर्मिला, मेरा अप्रत्याशित आगमन का कारण सरकारी नहीं बल्कि व्यक्तिगत और गोपनीय है।"

"—तो इस हालत मे भी मुझे कारण जानने का कोई अधिकार नहीं है।"

त्रायन ने देखा कि चाय उनके प्याले मे उँड़ेलते समय उर्मिला का हाथ पत्ते की तरह थर-थर काँप रहा है और उन्होंने गलतफहमी मिटाने के लिए अपनी बात तुरन्त बतला देना ही उचित समझा।

"मेरे अप्रत्याशित आगमन का कारण बहुत ही सादा है। मिस ओकले के साथ मेरा सम्बन्ध टूट गया है। इस हालत मे उस होटल मे एक मिनट भी रहना हम दोनों के लिए बड़ी परेशानी की बात होती।"

उर्मिला का हृदय खुशी के कारण एकाएक नाच उठा, किन्तु त्रायन की खेदपूर्ण मुख-मुद्रा देख कर वह कुछ सहमी हुई सी रह गयी।

'आप उन्हे प्यार करते हैं?"

"जी-जान से।"

कुछ देर तक दोनो मौन रहे।

"त्रायन प्यारे, मै भी आप को जी-जान से प्यार करती हूँ।"

ब्रायन उर्मिला की इस स्वीकारोक्ति पर चौंक उठे। वे कुछ कहने जा ही रहे थे, किन्तु उर्मिला ने मुँह पर हाथ रख कर उन्हें रोक दिया।

"जब तक मैं बात पूरी न कर लूँ, आप एक शब्द भी मुँह से न निकालिए। शायद जीवन भर मैं आप से प्रेम करती रहती और आपको इसका पता न चलता। पर विशेष परिस्थिति होने के कारण इसका मैं बहुत शीघ्र ही अनुभव करने लगी। मैं आपके लिए कोई भी काम कर सकती हूँ—केवल एक को छोड़ कर और वह है विवाह। देश सेवा में जीवन लगाने का मैंने दृढ़-व्रत कर लिया है। मेरे पिता जेल मे हैं। उनके छूटने तक मैं उनकी प्रतीक्षा करती रहूँगी और इसके बाद जी-जान से देश की स्वतंत्रता के संग्राम में शरीक हो जाऊँगी। यह सब मैं आपसे इसलिए कह रही हूँ ताकि सदा की तरह मुझ में आपका विश्वास बना रहे। मैं आपकी कुछ सहायता भी करना चाहती हूँ। मैं इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकती कि कोई युवती आप से विवाह करने का वचन दे कर उसे इस तरह वापस ले लेगी, जैसा मै ने किया है।"

ब्रायन कुरसी पर लेटे हुए आन्तरिक पीड़ा से छटपटाने लगे। उर्मिला ने पीछे खड़े होकर हँसते हुए उनके गले में हाथ डाल दिए और उनके गाल से अपना कपोल टिका दिया—"बहन के नाते मुझे यह सब तो करने का अधिकार है न ? अच्छा अब मुझे अपना सब हाल बतलाइए। क्या मिस ओकले ने आपके सामने आकर स्वीकार कर लिया कि वह आपको प्यार नहीं करतीं।"

"यहाँ आने के पहले मैं उससे मिला ही नहीं।"

"तब आप लोगों का सम्बन्ध कैसे टूटा ?"

"मिसेज ओकले ने मुझसे कहा कि मे पैडल को प्यार करती है और मै उन दोनो के सुखी जीवन के मार्ग मे बाधा बन कर खडा हुआ हूँ।"

"तब आपने क्या किया ?"

"मैंने मे के नाम पत्र लिख कर उसे सम्बन्ध तोड़ने की सूचना दे दी।"

"मिसेज ओकले के कहने पर ?"

"हॉ।"

"आपने इस सम्बन्ध मे मिस ओकले से कुछ पूछताछ भी न की ?"

"यह मै कैसे कर सकता था। इसका मतलब तो यह होता कि मै मिस ओकले को ही झूठा सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।"

"हॉ—यदि मिसेज ओकले का कथन विश्वसनीय होता।"

"तुम्हारा मतलब क्या है।"

"यही कि मुझे तो यह सब किस्सा झूठा जान पड़ता है। मि० ओकले से आपका निकट का सम्पर्क तो नही रहता।"

"नही, बिलकुल नही"—ब्रायन ने हँसते हुए कहा,—"वे तो मुझसे इससे पहले भी दो बार कह चुके है कि मुझे उनकी लडकी से अपना सम्बन्ध टूटा हुआ समझना चाहिए।"

"यही तो—इसी तरह मिसेज ओकले भी पुत्री का विवाह अपनी इच्छा के अनुकूल करने के लिए उत्सुक हैं। इसमे पति-पत्नी का व्यक्तिगत स्वार्थ भी तो है। पुलिस के साधारण अफसर के बजाय लार्ड बर्गने के सम्पन्न युवक से अपनी पुत्री का विवाह करने की अभिलाषा रखना उनके लिए स्वाभाविक ही है।"

ब्रायन के मन मे यह विचार उठा ही न था। उनके मन मे मे के स्नेहपूर्ण व्यवहार की याद आई और उसकी सचाई का पता लगाने के लिए वे उसके हर पहलू पर विचार करने लगे। वे अनुभव करने लगे कि मे का हृदय भी उन्हीं की तरह सच्चा और पाक है।

पर होटल के लताभवन का वह दृश्य ? कुछ समय पहले तक उनके विचार स्थिर थे, किन्तु उर्मिला की बातों से उनका मन फिर दुविधा में पड़ गया। यह दुविधा किसी तरह मिटनी ही चाहिए। उन्होंने उर्मिला के वाहुपाश से अपने को मुक्त कर लिया और खड़े हो गए। पर उर्मिला को कुरसी पर बैठने का अवसर न मिल सका। ब्रायन ने वचपन की तरह आज फिर उसके कंधे अपने हाथों से कस लिए।

"उर्मिला हो सकता है शायद तुम्हीं ठीक हो, पर मेरा सन्देह एक घटना के कारण और है। उसे भी सुन लो।"

उन्होंने लताभवन वाली घटना उर्मिला को सुना दी।

"आप तो विलकुल वच्चों की सी वात करते हैं। यदि मे पैडल को प्यार करती तो उस आनन्दमय नृत्य के वीच ही मे न चली आती। जो न हो, उस समय भी वह आप ही की खोज मे थी।"

ब्रायन सोच-विचार मे पड़ गये।

"क्या आप मेरी सलाह न मानेंगे ? मै आपसे कोई वचन नहीं माँगती, केवल यही कहती हूँ कि आपके और मे के प्रति परस्पर न्याय केवल एक ही दशा मे हो सकता है और वह यह कि आप उससे सभी परिस्थितियो को स्पष्ट करते हुए एक पत्र लिखें। उससे आप स्पष्ट शब्दों मे पहला प्रश्न यही कीजिए की वह आपसे प्रेम करती है या नहीं ? अपनी तरफ

'शायद आपको स्मरण होगा कि ऐसी ही परिस्थिति मे कुछ वर्ष पहले क्या हुआ था ?"

मि० ओकले ने कुछ विचार के वाद कहा—"शायद तुम्हारा मतलव जलियानवाला वाग की घटना से है।"

"हाँ, मेरा मतलव उसी घटना से है, जिसमे सवक सिखाने के ही इरादे से निरस्त्र भीड़ पर आवश्यकता से अधिक वल-प्रयोग किए जाने के कारण एक जनरल को वरखास्त कर दिया गया था।"

"यही तो मेरा भी कहना है"—मि० ओकले वोले—"कोई भी कार्य करने के पहले हमें अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए। तुम जो करना चाहते थे, उसे तुरन्त ही करने का निश्चय तुमने कर लिया। यदि तुम चाहते तो वहुत आसानी से मुझे भी अपनी राय से सहमत कर सकते थे। मुझे आशा है भविष्य मे तुम अपने इस दूसरे सवक का भी ध्यान रखोगे।"

आयन जलियानवाला कण्ड का उल्लेख करके विलकुल दूसरे ही परिणाम पर पहुँचना चाहते थे, किन्तु मि० ओकले की वात सुनकर उन्होने कुछ कहा नहीं।

"तुम्ही देखो न, सरकार मुझे अस्थिर और कमजोर ही समझेगी। पहली वात तो यह है कि आवश्यकता न रहने पर भी वलप्रयोग के लिए सेना वुलाई गई और दूसरी यह कि वलप्रयोग आवश्यक होने पर भी क्यो नही किया गया। मैं नही जानता कि अव रिपोर्ट मे क्या लिखा जाय ?"

"कहिये तो मै वतलाऊँ ?"

"हाँ, जरूर"—मि० ओकले ने उत्सुकतापूर्वक कहा।

'लिख दीजिए कि पडितजी की गिरफ़ारी और उनके नामज़

पर विचार होने के समय शहर मे वड़ी उत्तेजना फैल गई। गिरफ़्तारी के दिन सायकाल को मैदान मे तथा दूसरे दिन कचहरी के अहाते मे वहुत वडी भीड़ जमा हो गई। दोनो ही अवसरो पर वलप्रयोग के विना ही भीड़ को तितर वितर कर दिया गया।"

मि० ओकले ने कुछ देर विचार करने के वाद कहा—"तुमने जो राय दी है ठीक ही है। मै खुद भी यही लिखने का विचार कर रहा था। इससे सरकार समझेगी कि दोनो कठिन अवसरो मे मैंने कैसी चतुराई और दृढ़ता से काम किया। हॉ, और तुम्हारी गलतियों के वारे मे कुछ न लिखूँगा।"

"धन्यवाद, साहव"—व्रायन ने जरा मुसकराते हुये कहा।

मि० ओकले ने कागज पर अपनी रिपोर्ट लिखी। इसके वाद वे फिर पहले की तरह गम्भीर हो गए और वोले—"अच्छा अव उस घटना पर विचार करें, जो आज ही सुवह तुम्हारे वँगले पर हुई थी।"

व्रायन ने समझा कि डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट अपने दुर्व्यवहार के लिए क्षमा मॉगना चाहते हैं और वे वीच ही मे वोल उठे—"नहीं साहव, उस वात को भूल जाइये।"

परन्तु मि० ओकले ने गम्भीर स्वर मे उत्तर दिया—"नहीं जनाव, यह नहीं हो सकता। मुझे तो कम से कम यह आशा न थी कि सेना मे इतने दिन रह लेने पर भी अपने ऊपर वाले अफसर के साथ तुम इतनी ढिठाई से पेश आओगे। विशेष परिस्थिति का ध्यान रखा जाय तो तुम्हारा अपराध अक्षम्य है।"

तव व्रायन समझे कि परिस्थिति क्या है और अपने मन मे

कहने लगे कि यदि इस समय मेरे मुँह से कोई भी असगत वात निकल गई तो सव वना वनाया खेल विगड़ जायगा।

"तुम जानते हो कि समय वड़ा खराव है। सुवह मैं तुम्हारे पास जरूरी सरकारी काम से सलाह लेने गया था और तुम मुझे एक नेटिव लड़की के गले मे हाथ डाले मिले। साधारणत. मैं तुमसे कुछ न कहता, क्योंकि मेरा दृष्टिकोण सदा उदार रहता है। अफसर को हैसियत से तुम्हारे निजी मामलो से मेरा उस समय तक कोई सरोकार नहीं जब तक कि तुम्हारे आचरण से जनता में सरकार की वदनामी नहीं होती। परन्तु तुम्हारे भावी श्वशुर के नाते मैं पूछ सकता हूँ कि आखिर माजरा क्या था?"

व्रायन के मुँह से कोई वात न निकली। वे समझ गये मि० ओकले किस दृष्टिकोण से सुवह वाली घटना को ले रहे हैं। यदि उनके दिल में यह विचार जम चुका है कि उर्मिला से मेरा अनुचित सम्वन्ध हो गया है तो यह कहने से कोई लाभ नहीं कि हम एक दूसरे से भाई-वहन का रिश्ता मानते हैं। इसके सिवाय उस समय हम लोग जिस हालत में थे उसे देख कर अन्य कोई भी व्यक्ति वही मतलव निकालता जो मि० ओकले ने निकाला था।

"तुम कुछ कहते क्यो नही?"

व्रायन फिर भी चुप रहे, उनका दिमाग इस वक्त जोरो से काम कर रहा था।

'जव तक इस घटना का सन्तोपजनक स्पष्टीकरण न मिलेगा तव तक मुझे अपनी पुत्री के विवाह-प्रस्ताव को रद्द करने के प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना पड़ेगा।"

मि० ओकले ने जिस घृणा के भाव से उर्मिला को 'नेटिव"

कहा था उस के कारण ब्रायन का क्रोध लगातार बढ़ता ही जा रहा था। उन्हें ऐसा अनुभव हो रहा था मानो इस शब्द का प्रयोग मि० ओकले ने उर्मिला का अपमान करने के लिए ही किया हो। यद्यपि वह मि० ओकले से कई बार पार्टियों में मिल चुकी थी, फिर भी उसका परिचय उन्होंने विशेष तौर पर उनसे करा दिया था। पंडितजी के मुकद्दमे के समय भी उन्होंने उसे अवश्य देखा ही था। अन्त मे उन्हे विवाह सम्बन्ध रद्द करने की बात का खयाल आया। वे क्रोध से काँपने लगे।

"पहले भी आपने उर्मिला के प्रति अपशब्द कहे थे, अब आप फिर 'नेटिव' कह कर उसका ही नहीं, बल्कि मेरा भी अपमान कर रहे हैं। मैं इस घटना के सम्बन्ध मे अपनी कोई भी सफाई देने से इनकार करता हूँ। इसकी सफाई सरल है, किन्तु उस पर आप विश्वास न करेंगे। बस मैं आपसे केवल यही निवेदन करना चाहता हूँ कि मेरे आचरण से सरकार की मर्यादा पर कोई लाच्छन नहीं लगा है और इस हालत मे आपने जो कुछ कहा है बहुत ही अनुचित कहा है।

"यदि तुम्हारा यह दृष्टिकोण है"—मि० ओकले ने गुस्से मे उबल कर कुर्सी को पीछे हटाते हुए कहा—'तो मेरी लड़की से अपना सम्बन्ध तुम्हे निश्चित रूप मे टूटा हुआ समझना चाहिये।"

ब्रायन उत्तेजित होकर खड़े हो गये—"नहीं, मै तो ऐसा नहीं समझता। मिस मे और मुझमे प्रेम है और मे के सिवाय इस सम्बन्ध को कोई नहीं तोड़ सकता। सौभाग्य की बात है कि पिताओं के स्वेच्छाचार का कभी का अन्त हो चुका है।"

मि० ओकले भी गुस्से मे इस उक्ति के जवाब मे कोई कड़ी बात कहने जा रहे थे कि इस बीच मे एक कार्ड लिये हुए चपरासी

ने प्रवेश किया। कार्ड लेते ही मि० ओकले का चेहरा सहसा प्रफुल्लित हो गया और ब्रायन की उपेक्षा करके आगन्तुक की अभ्यर्थना के लिए वे बाहर चले गए।

ऐसे उजड्ड आदमी के यहाँ मे जैसी सुशील पुत्री कैसे हुई ? इस समस्या पर विचार करते हुए ब्रायन भी बाहर की तरफ चले। उन्होंने देखा कि बरामदे मे डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट बड़े उत्साह-पूर्वक पैडल से हाथ मिला रहे है। बात यह थी कि एक लार्ड घराने के युवक के आगमन से वे अपने को गौरवान्वित समझ रहे थे।

भीतर आते आते मि० ओकले ने कहा—"हॉ, कैप्टिन ब्रायन मैंने परिस्थिति स्पष्ट कर दी है, क्यो न ? मुझे आशा है तुम सब कुछ समझ गए होगे।"

"हॉ साहब, बहुत अच्छी तरह।"—ब्रायन ने उत्तर दिया।

पैडल ने उन्हे देखते ही हँस कर कहा—"हाँ ओकोनर, क्रान्तिकारियो के विषय मे कोई नई बात हो तो बतलाओ।"

"नहीं, आपके मतलब की कोई बात नही है।"—कहते हुए ब्रायन झुँझलाते हुए बाहर चले गए।

मि० ओकले गम्भीरता पूर्वक बोले—"अभी मैं ब्रायन को कुछ समझा रहा था, पर वह उन्हे अच्छा नहीं लग रहा था। काम के देखते हुए वे बहुत अच्छे हैं, पर अपनी बात के आगे दूसरो की कुछ चलने नहीं देते। यहाँ तक कि अपने अफ्सरो की भी वे कुछ नहीं सुनते।"

मि० ओकले ने अपने नये मेहमान के सत्कार का विशेष प्रबन्ध किया। खानसामा सोडा लैमनेड और सिगरेट उनके आगे रख गया। पैडल की कुर्सी उन्होने ऐसी जगह रखाई

जहाँ पंखे की हवा उन्हे खूब लगती रहे और गरमी की परेशानियों का वे बखान करने लगे।

पैडल बोले—"हाँ, जून के महीने मे गरमी तो होती ही है किन्तु आपको तो सभी प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त हैं—रहने को ठडा बँगला, पखे, बरफ मिला लैमनेड। मुश्किल तो उन गरीबो की है जो दोपहर का वक्त बाहर गुजार देते हैं।"

"उन्हे इसकी आदत पड जाती है।"

"हाँ यह तो है ही। खैर, मै इस समय जिले के एक जमींदार की सिफारिश करने आपके पास आया हूँ, जिसकी बन्दूक का लाइसेन्स अभी कुछ दिन हुए जब्त कर लिया गया था।"

"इस विषय मे मुझे सरकार की तरफ से कडी हिदायते मिली हैं और कुछ दिन के लिए अधिकांश लाइसेंसो को रद भी कर दिया गया है। अगर उस व्यक्ति का नाम मालूम पडे तब बतला सकता हूँ कि लाइसेंस जारी हो सकता है या नहीं?"

"उमराव सिह। बडा ही खुशमिजाज और सच्चे निशाने का आदमी है। अभी कुछ दिन हुए उसने मुझे अपने यहाँ शिकार खेलाया था।"

'उमराव सिह—हाँ मै जानता हूँ। बिलायतपुरा गाँव का रहने वाला है। उस पर काग्रेस से सहानुभूति रखने का सन्देह किया जाता है।"

'यह काग्रेस क्या बला है। क्या यह कोई बहुत बडा अपराध है? देखिए मै आपको अनुचित स्थिति मे नहीं डालना चाहता। परन्तु यह व्यक्ति मुझे तो बडा ही [illegible] और पहले दर्जे का शिकारी जान पडा, इसी से मैं आप से इसकी सिफारिश करने आया हूँ।'

"कांग्रेस सरकार के खिलाफ है।"—मि० ओकले ने कहा।

"खैर, सरकार के खिलाफ तो हम सभी हैं, क्योंकि वह हम पर टैक्स लगाती है और मन्दी के जमाने में वेतन कम कर देती है। एक बन्दूक का लाइसेंस देने न देने में सरकार के विरोध में अन्तर नहीं पड़ सकता।"

"देखिए, शायद मैं आपका काम कर सकूँ।"—मि० ओकले ने जरा परेशानी से उत्तर दिया।

"बड़ी कृपा होगी। अच्छा, पहाड़ पर मैं आपकी पुत्री से मिला था। बड़ी अच्छी लड़की है। यदि उसका सम्बन्ध पक्का न हो गया होता तो मैं स्वयं उसे अपनी जीवन-सहचरी बनाने के लिए यत्न करता। मि० ओकोनर वास्तव में बड़े भाग्यशाली हैं। अच्छा, विवाह कब हो रहा है?"

"अभी काफी समय तक न होगा। सच बात तो—"

"खेद है, मैं आपके परिवार से सम्बन्ध रखने वाली निजी बातें नहीं जानना चाहता। आपने जो खुले दिल से मेरा सत्कार किया है उसके और लाइसेंस के लिए धन्यवाद। उमराव सिंह को लाइसेंस मिलने से मुझे बड़ी खुशी होगी, गुडमार्निंग।"

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट महोदय अपने अतिथि को पहुँचाने बँगले के फाटक तक आये और उनसे कभी कभी भोजन करने के लिए आने का अनुरोध भी आपने किया।

पैंडल ने अपनी रोल्स राइस कार स्टार्ट करते समय शान्ति की साँस ली और मन में सोचने लगे कि यह आदमी कितना अभिमानी है। ब्रायन का दुर्भाग्य है कि उन्हें ऐसे आदमी के नीचे काम करना पड़ता है। मैं मानता हूँ कि ब्रायन के विचार

कुछ निराले हैं। परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह उन बहुत ही कम व्यक्तियों में हैं, जो अपने काम में पूर्ण दक्ष होते हैं। और ...कांग्रेस क्या चीज़ है, यह भी मुझे अवश्य जानना चाहिए।

इतने में ब्रायन का बँगला दिखलाई पड़ा। पैडल ने सोचा चलो ब्रायन से पूछते चलें कि १३ तारीख को वे हमें कहाँ से अपने साथ ले जायँगे। एकाएक उन्होंने मोटर इतनी तेजी के साथ भीतर मोड़ी कि बाहर खड़े हुए सन्तरी को चोट लगते-लगते बची। उस पर अपना हार्दिक खेद प्रकट करते हुए पैडल भीतर चले गए।

"ब्रायन, बस, आधे मिनट तक तुमसे दो बातें करने के लिए आया हूँ।"

ब्रायन के चेहरे पर परेशानी और उद्विग्नता के भाव साफ दिखलाई पड़ते थे। पैडल बोले—'क्या तुम बराबर काम में व्यस्त रहते हो। मैं उस बुड्ढे गधे मि० ओकले के पास से आ रहा हूँ—पर माफ करना मैं यह तो भूल ही गया था कि वह तुम्हारा अफसर है।"

'तो क्या हुआ? जब तुमने मेरे मन की बात कही है तो बुरा मानने का प्रश्न ही नहीं उठता।"—ब्रायन ने कुछ हँस कर कहा।

'अच्छा, यह तो बतलाओ यह कांग्रेस क्या बला है?"

'अरे, कांग्रेस के सम्बन्ध में भी नहीं जानते?"

मैं मानता हूँ कि मेरे इस अज्ञान से तुम्हें आश्चर्य अवश्य होगा। अब मेरा यह ख्याल हो चला है कि भारत आने वाले प्रत्येक अंगरेज को इस देश के सम्बन्ध में कुछ न कुछ अवश्य

जानना चाहिए। आज काग्रेस की चर्चा इस तरह चल पड़ी कि मैंने मि० ओकले से उमराव सिह का लाइसेंस फिर जारी करने का अनुरोध किया तो उन्होंने बतलाया कि उसका लाइसेंस कांग्रेस के प्रति सहानुभूति रखने के कारण छीना गया है। ब्रायन, मैं तुमसे पूछता हूँ क्या एक पुरानी बन्दूक का लाइसेंस जारी करने से यह विशाल साम्राज्य तहस-नहस हो जायगा।'

पैडल की बातो पर ब्रायन को हँसी आ गई, वे बोले—"मैं खुद उमराव सिंह को जानता हूँ। राजनीति मे उसके विचार चाहे कुछ भी क्यो न हो, व्यक्तिगत व्यवहार मे वह बड़ा ही सज्जन है।"

"यह बात मेरी समझ मे नहीं आती। सेना मे सैनिक यदि अपने अफसरो से खुश होते हैं तो उनके लिए जान तक देने को तैयार रहते हैं, परन्तु राजनीति में जब कोई बात करने को कहा जाता है तो किया कुछ जाता है और मतलब उन दोनो से अलग एक तीसरी ही बात से होता है। मुझे तो खुशी है कि मैं सेना ही में रहा हूँ। एक बात तो बतलाओ कि १२ तारीख को तुम मुझे और मेटलेंड को कहाँ से अपनी कार मे ले जाओगे।

"क्लब से, सवा आठ बजे"—ब्रायन ने उत्तर दिया।

"आठ का वक्त रखो। बाकी वक्त में कुछ बातचीत कर लेगे।"

पैडल के चले जाने के बाद ब्रायन अपनी कुर्सी पर बैठ कर सोचने लगे कि पैडल वास्तव में धोखेबाज बिलकुल नहीं जान पड़ता, वह तो सीधे और सच्चे स्वभाव का आदमी है। इस पर कोई भी विश्वास कर सकता है। मिस मे ने जो कहा ठीक ही था। ऐसे आकर्षक व्यक्तित्व वाले युवक के सामने मेरी दाल क्या गलेगी? यह सोचकर उन्हे अपना जीवन भार

जान पड़ने लगा। उनके सामने मेज पर काम का ढेर रखा हुआ था, जिसे उन्हें पूरा करना था। ठंडी साँस लेकर वे उसमें जुट गए।

दूसरी तरफ मि० ओकले अपने बँगले में बैठे हुए सुबह की घटनाओं पर विचार कर के खुश हो रहे थे। भविष्य की एक मधुर कल्पना उनके मन में रह रह कर उठ रही थी। यदि पैडल से विवाह होने पर उनकी पुत्री को लार्ड-पत्नी बनने का सौभाग्य प्राप्त हो सके। उन्होंने अपनी पत्नी के नाम एक लम्बा पत्र लिखा और उसमें अपनी समस्त आयोजना उन्हें बतलायी कि अपनी पुत्री का विवाह लार्ड-घराने के एक युवक के साथ करने के लिए वे क्या प्रयत्न कर रहे हैं।

वापसी डाक में उस पत्र का जो उत्तर मिला उसे पढ़ कर वे दंग रह गए—"ईश्वर के लिए इस काम को मेरे लिए छोड़ दो। शायद तुमने सब बना बनाया खेल बिगाड़ दिया है। तुम ।"

मिसेज़ ओकले की आयोजना

मि० ओकले की पत्नी ने अपने पति को जिस समय [illegible] रहस्यपूर्ण पत्र भेजा, उस समय वे कुछ क्रुद्ध थीं।

युवावस्था में मिसेज ओकले का परिचय जिस समय मि० ओकले से हुआ वे बड़ी ही चतुर और सुन्दरी युवती थीं। मि० ओकले युनिवर्सिटी के छात्र थे और साथ ही सिविल सर्विस की परीक्षा में प्रथम आये थे। सभी का [illegible]

भविष्य की आशाएँ थीं। जिस समय मिसेज़ ओकले उनसे मिलीं वे भारत से पहली बार छुट्टी लेकर इंगलैंड आये थे। मिसेज़ ओकले का उनसे जो थोड़े ही दिनों में सम्बन्ध पक्का हो गया इसका मुख्य कारण शारीरिक आकर्षण न होकर मि० ओकले की कुशाग्र बुद्धि और उनके सम्बन्ध मे उज्वल भविष्य की कल्पना ही था।

इस विवाह से सन्तान भी एक ही हुई—मे। कुछ वर्ष बाद ओकले दम्पति के आगे भी वही समस्या उठी जो भारत मे काम करने वाले सभी यूरोपियन सिविलियनों के परिवारो मे उठा करती है। वह यह थी कि मिसेज़ ओकले इंगलैंड जाकर पुत्री की शिक्षा-दीक्षा की देख रेख करें या पतिदेव की सेवा मे रहें। उन्होंने पति के निकट ही रहने का निश्चय किया, यद्यपि बाद में कई बार अपने निश्चय के औचित्य पर उन्हे पश्चात्ताप भी हुआ। बात यह हुई कि पति से उन्हे जो आशाएं थीं, वे सभी निर्मूल सिद्ध हुईं और दूसरी तरफ पुत्री को अलग रखने का परिणाम यह हुआ कि वह उनके निकट अपरिचित रह गयी। उन्होंने पुत्री को सात वर्ष की अवस्था ही मे इंगलैंड भेज दिया था। गत वर्ष जब वह भारत आई तो उसकी उम्र २० साल की हो चुकी थी। इस बीच मे मिसेज़ ओकले को केवल छुट्टियो ही मे और वह भी कभी कभी ही अपनी पुत्री के साथ रहने का अवसर मिला था।

इस तरह मिसेज़ ओकले का पारिवारिक जीवन निराशामय रहा। उनकी आकांक्षाएँ बहुत ऊँची थीं। वे पति के किसी प्रान्त का गवर्नर बनाये जाने या "सर" की उपाधि दिए जाने की सुखद कल्पना मे उड़ा करती थीं। इसीलिए पति के सरकारी काम मे उन्होंने आरम्भ से ही गहरी दिलचस्पी लेना आरम्भ कर दिया

जान पड़ने लगा। उनके सामने मेज़ पर काम का ढेर रखा हुआ था, जिसे उन्हें पूरा करना था। ठंडी साँस लेकर वे उसमें जुट गए।

दूसरी तरफ मि० ओकले अपने बँगले में बैठे हुए सुबह की घटनाओं पर विचार कर के खुश हो रहे थे। भविष्य की एक मधुर कल्पना उनके मन में रह रह कर उठ रही थी। यदि पैडल से विवाह होने पर उनकी पुत्री को लार्ड-पत्नी बनने का सौभाग्य प्राप्त हो सके। उन्होंने अपनी पत्नी के नाम एक लम्बा पत्र लिखा और उसमें अपनी समस्त आयोजना उन्हें बतलायी कि अपनी पुत्री का विवाह लार्ड-घराने के एक युवक के साथ करने के लिए वे क्या प्रयत्न कर रहे हैं।

वापसी डाक से उस पत्र का जो उत्तर मिला उसे पढ़ कर वे दंग रह गए—"ईश्वर के लिए इस काम को मेरे लिए छोड़ दो। शायद तुमने सब बना बनाया खेल बिगाड़ दिया है। तुम ।"

मिसेज़ ओकले की आयोजना

मि० ओकले की पत्नी ने अपने पति को जिस समय वह रहस्यपूर्ण पत्र भेजा, उस समय वे कुछ क्रुद्ध थीं।

युवावस्था में मिसेज़ ओकले का परिचय जिस समय मि० ओकले से हुआ वे बड़ी ही चतुर और सुन्दरी युवती थीं। मि० ओकले यूनिवर्सिटी में बहुत तेज़ थे और भारतीय सिविल सर्विस की परीक्षा में प्रथम आये थे। सभी को उनके उज्वल

भविष्य की आशाएँ थी। जिस समय मिसेज ओकले उनसे मिलीं वे भारत से पहली बार छुट्टी लेकर इंगलैड आये थे। मिसेज ओकले का उनसे जो थोडे ही दिनो मे सम्बन्ध पक्का हो गया इसका मुख्य कारण शारीरिक आकर्षण न होकर मि० ओकले की कुशाग्र बुद्धि और उनके सम्बन्ध मे उज्वल भविष्य की कल्पना ही था।

इस विवाह से सन्तान भी एक ही हुई—मे। कुछ वर्ष बाद ओकले दम्पति के आगे भी वही समस्या उठी जो भारत मे काम करने वाले सभी यूरोपियन सिविलियनों के परिवारों मे उठा करती है। वह यह थी कि मिसेज ओकले इगलैड जाकर पुत्री की शिक्षा-दीक्षा की देख रेख करें या पतिदेव की सेवा मे रहे। उन्होंने पति के निकट ही रहने का निश्चय किया, यद्यपि बाद में कई बार अपने निश्चय के औचित्य पर उन्हें पश्चात्ताप भी हुआ। बात यह हुई कि पति से उन्हे जो आशाएं थीं, वे सभी निर्मूल सिद्ध हुई और दूसरी तरफ पुत्री को अलग रखने का परिणाम यह हुआ कि वह उनके निकट अपरिचित रह गयी। उन्होने पुत्री को सात वर्ष की अवस्था ही मे इगलैड भेज दिया था। गत वर्ष जब वह भारत आई तो उसकी उम्र २० साल की हो चुकी थी। इस बीच में मिसेज ओकले को केवल छुट्टियो ही मे और वह भी कभी कभी ही अपनी पुत्री के साथ रहने का अवसर मिला था।

इस तरह मिसेज ओकले का पारिवारिक जीवन निराशामय रहा। उनकी आकाक्षाएँ बहुत ऊँची थीं। वे पति के किसी प्रान्त का गवर्नर बनाये जाने या "सर" की उपाधि दिए जाने की सुखद कल्पना मे उड़ा करती थीं। इसीलिए पति के सरकारी काम में उन्होंने आरम्भ से ही गहरी दिलचस्पी लेना आरम्भ कर दिया

था। उनकी हार्दिक कामना थी कि मि० ओकले बराबर उन्नति की सीढी पर चढ़ते जायँ। मि० ओकले के टेनिस खेलने का प्रबंध उन्होंने स्वयं बहुत उत्साह से किया था। अफसरों को पार्टियाँ देने में वे कभी भूल कर भी न चूकती थीं और उन पार्टियों मे बड़े उत्साह और फक्र के साथ मेहमानो की आवभगत किया करती थी।। परन्तु प्रारम्भिक काल मे मि० ओकले के जिस उज्वल भविष्य की कल्पना उन्होंने की थी, वह कभी यथार्थ न हो सकी। व्यावहारिक दृष्टि से वे पूरे असफल रहे। उनमे साहस का अभाव, अनिश्चितता और जिद्दीपन आदि जो दुर्गुण थे उन्हे भी वे समझ गईं। इसीलिए पार्टियों का प्रबन्ध करने के सिवाय मि० ओकले की व्यक्तिगत देखरेख करने मे भी उनका कुछ कम वक्त न जाता था।

परन्तु, पति के तरफ से निराश होकर भी मिसेज ओकले की आकाक्षाएँ मिटी नहीं—अभी उनकी पुत्री जो शेष थी। पति को उन्होंने सलाह दी कि उन्हे अपनी सुन्दरी और गुणवती कन्या का विवाह ऐसी जगह करना चाहिए, जिससे उसका और अपना दोनों का लाभ हो।

परन्तु मे ने ब्रायन पर रीझ कर उनकी इस आयोजना को भी व्यर्थ कर दिया। मि० ओकले ने जब सुना कि उनकी पुत्री ने ब्रायन से विवाह करने का निश्चय कर लिया है तो वे क्रोधित होकर बोले - "नहीं, यह कभी नहीं हो सकता। इस गरीब पुलिस अफसर को मैं अपनी लड़की कभी न दूँगा। आखिर यह कहाँ तक उन्नति कर सकता है ?"

परन्तु उनकी पत्नी बोली—'देखो, मूर्खता न करो। मे इस युवक से कभी शादी न करेगी, बशर्ते इसे रोकने का प्रयत्न करके तुम उसकी जिद को बढ़ा न दो। तुम्हारा जिद्दीपन कुछ

उसे भी तो मिला है न ? प्रसन्नचित्त होकर अपना काम करते चलो और इस मामले को मुझ पर छोड दो ।"

इसी उद्देश्य से मिसेज़ ओकले पुत्री को लेकर पहाड गई थी, क्योंकि जैसा वर वे पुत्री के लिए चाहती थीं, वैसा उस छोटे जिले मे मिलने की सम्भावना अधिक न थी । इसी ख्याल से उन्होंने अपनी पुत्री को पैडल से मेल जोल बढाने का अवसर भी दिया। मिसेज़ ओकले मन मे सोच रही थीं कि मामला मजे में चल रहा है । इसी समय पति का मूर्खतापूर्ण पत्र उन्हे मिला और वे इस आशंका से कॉप उठी कि कहीं यह महाशय सब गुड-गोबर न कर दे ।

दिन के ११ बजे थे । मिसेज़ ओकले अपने होटल के बरामदे में कुरसी पर बैठी थीं । वायु के शीतल झकोरे आ कर उन्हे बारबार लग रहे थे। सुदूर क्षितिज पर हिमालय की बरफ से ढकी चोटियाँ उन्हें दिखाई दे रही थी । देखने वाले इसके सिवाय और क्या अनुमान करते कि मिसेज़ ओकले पहाड की शीतल वायु और शान्तिमय वातावरण से पूरा आनन्द उठा रही हैं, किन्तु वे जिस चिन्ता में थीं उसे हम जानते हैं। इसी समय मे एक खुला हुआ पत्र लिए उनके आगे आ धमकी ।

"बडी अच्छी खबर है"—हॉफते हुए उसने कहा—"ब्रायन छुट्टी लेकर कुछ दिनो में यहॉ आने वाले हैं। अहा, क्या मजा रहेगा ।"

"हॉ, बड़ी अच्छी बात है। मे जरा बैठ जाओ। तुम अपने आप ही यहाँ आ गई, यह अच्छा हुआ। मैं तुमसे एक गम्भीर विषय पर बात करने का विचार कर रही थी ।"

मे माता के पास कुरसी पर बैठ गई। पहाड़ो की ताज़गी

देने वाली हवा का प्रभाव उस पर अवश्य पड़ रहा था, पर सुदूर पर्वतों की चमकती हुई चोटियों की तरफ उसका ध्यान भी नहीं गया। उसके विचार इस समय ब्रायन के आगमन की सुखद कल्पना में केन्द्रित थे।

"अच्छा माँ तो जल्दी करो। १५ मिनट मे मुझे एक पिकनिक में जाना है। हाँ, और आज मै भोजन मे भी शरीक न हो सकूँगी।"

मिसेज ओकले ने समझ लिया कि आज उनका उद्देश सफल नहीं हो सकता। उन्हे अनुभव होने लगा कि जिस बेतकल्लुफी के साथ उनकी पुत्री ने वातें आरम्भ की हैं उसमे वे कुछ भी न कह सकेंगी। वात यह थी कि मिसेज़ ओकले साधारण से साधारण वात को भी विना चतुराई के कहना न जानती थी।

"तुम्हारे पिता अभी कुछ दिन हुए ब्रायन से नाराज हो गए हैं।"

"वस पिताजी को तो यही आता है। वह पहले तो किसी वात मे टाँग अड़ा देते है और बाद मे यह सिद्ध करने की चेष्टा करते हैं कि इसमे दूसरे की गलती है।"

मिसेज ओकले सन्न रह गयीं। पुत्री के कथन मे सत्य का जो अंश था, उससे स्वय वे भी इनकार न कर सकती थीं। मे की अन्तर्दृष्टि और विवेक देख कर वे झुँझला उठीं। कहने लगीं—"ब्रायन गुप्त रूप से अनुचित सम्बन्ध रखने लगे है। तुम्हारे पिता ने एक दिन उन्हे किसी नेटिव लडकी के गले मे हाथ डाले पकडा है।"

"ओह!"—कहती हुई मे कुरसी पर सीधी तन कर बैठ गई। ब्रायन के सम्बन्ध मे ऐसी वात कही जाने पर उसे कैसे

विश्वास होता। वह सोचने लगी कि आखिर माँ भी तो झूठ नहीं बोल सकतीं।

कुछ देर ठहर कर उसने कहा—" 'पकडा' शब्द से साफ जाहिर होता है कि इसके लिए पहले ही से जाल रचा गया है।"

"नहीं, जाल-वाल कुछ नहीं। तुम्हारे पिता एक दिन प्रात काल सरकारी काम से ब्रायन से मिलने गए थे। वहाँ उन्होंने देखा कि ब्रायन अपने बँगले के बरामदे मे एक नेटिव लडकी के साथ चाय पी रहे हैं। लड़की जिस कुरसी पर बैठी थी, उसकी बाँह पर वे बैठे हुए थे और उनके हाथ उसके गले मे पडे हुए थे।"

"बस यही न ?"—शान्ति के साथ मे ने कहा—"इसका मतलब तो बिलकुल साफ है। ब्रायन ऐसे आदमियो मे नहीं हैं जो दूसरी लड़कियों से प्रेम करने लगते हैं। जब वे बिना संकोच के अपने बंगले के बरामदे मे उस लड़की के साथ चाय पी रहे थे तो इससे साफ जाहिर है कि उनका व्यवहार अनुचित या अपवित्र बिलकुल न था।"

यह कहकर वह निश्चिन्तता के साथ कुरसी से पीठ लगा लेट गयी और फिर पर्वतमाला पर दृष्टिपात करती हुई बोली—"आज का दिन कैसा सुन्दर है। पिकनिक मे बडा मजा आवेगा। माँ पन्द्रह मिनट हो गए।"

मिसेज ओकले ने देखा कि क्रोध दिखलाने पर खेल सब बिगडा जाता है। इसलिए वे मुसकराती हुई मीठी आवाज में बोलीं—"मेरा ख्याल है तुम्हीं ठीक हो, बेटी। इस मामले मे शायद सन्देह की गुँजाइश नहीं है। पर एक बात है। क्या तुमने कभी सोचा है कि ब्रायन के साथ तुम्हारा वैवाहिक जीवन कैसा रहेगा ?"

"क्यों, कैसा रहेगा ?"—मै ने अपनी स्वाभाविक सरलता से पूछा।

"मि० ओकोनर का जीवन-क्रम बड़ा ही कठोर है। तुम उनके साथ अधिक समय तक न रह सकोगी। इसके सिवाय उनके पास वेतन के अलावा आय का और कोई भी साधन नहीं है और वेतन भी अधिक नहीं है। इसका परिणाम यह होगा कि वे तुम्हारे लिए सुख-सामग्री काफी न जुटा सकेंगे। तुम्हें काम मे इतना व्यस्त रहना पड़ेगा कि मनोरंजन के लिए समय ही न निकाल सकोगी।"

"हाँ, ऐसा तो है।"—मै ने स्वीकार किया।

"मेरा ख्याल है कि यह सम्बन्ध पक्का करने मे तुमने कुछ जल्दबाजी से काम लिया है। ऐसे कितने ही अन्य युवक हैं जो तुम्हारे लिए कहीं अधिक उपयुक्त होते और जो शायद तुम्हें सुखी भी अधिक रख सकेंगे।"

"जैसे एक कैप्टिन पैडल भी हैं।"—मै ने शरारत भरी मुसकराहट से कहा।

मिसैज ओकले यह नाम सुनते ही चौंक उठी।

"माँ, सच तुम बड़ी अच्छी हो। तुम्हारी बातों मे दुराव कुछ नहीं होता। पैडल से मेरी बहुत ही बनती है और मैं भी उसे बहुत चाहती हूँ। सच तो यह है कि यदि कैप्टिन ओकोनर से मैं पहले से न मिली होती तो अवश्य पैडल से प्रेम करने लग गयी होती। पर आयन आयन ही हैं और जार्ज (पैडल) जार्ज हैं। उन दोनो मे यही तो अन्तर है। अब मैं जाती हूँ। अरे! मेरे साथी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।"

यह मिसेज ओकले की दूसरी हार हुई।

मे के चले जाने के बाद वे बड़ी देर तक दूर के पर्वतो की तरफ देखती हुई सोचने लगी कि आज की बाते बिलकुल निराशापूर्ण तो नहीं कही जा सकती। कम से कम मे ने यह तो स्वीकार कर ही लिया कि वह आसानी से पैडल से प्रेम कर सकती थी।

कुछ देर बाद उनके मुख पर मुसकराहट की एक रेखा खिच गई। वे सोचने लगी—चलो ब्रायन आ रहे हैं, यह अच्छा ही हुआ। मैं उन्हे भी अपना दृष्टिकोण समझा दूंगी। शायद वे ही मान जायँ।

इधर ब्रायन पैडल के मेस मे खाने के लिए जाने की तैयारी कर रहे थे। वे ठीक साढ़े आठ बजे वहाँ पहुँच गए। कैप्टिन पैडल पहले ही से वहाँ मौजूद थे। उन्होंने बडे उत्साह से ब्रायन का स्वागत किया और उनका परिचय कमान्डिग अफसर से भी करा दिया।

ब्रायन हरी लान मे बिछी हुई कुर्सियो मे से एक पर बैठ गए। वातावरण की शीतलता, उपस्थित लोगो का मैत्रीपूर्ण व्यवहार और बैंड की मधुर लय मे दिन भर की चिन्ताएँ और थकावट को वे भूल गए। सौभाग्य से कमान्डिग अफसर से उनका पहला परिचय भी निकल आया। महायुद्ध में दोनो ने कुछ समय एक साथ काम किया था। टेबिल पर भोजन करते करते फ्रांस के रणक्षेत्र की चर्चा छिड़ गई।

"युद्ध के दिनों मे कैसा मजा रहा होगा"—कैप्टिन पैडल बोल उठे—"उन दिनो यदि मैं होता—"

पोलो पर बातें छिड़ीं और इसके बाद बिलियर्ड होने लगा। खेल ही खेल में कमान्डिग अफसर पैडल और ब्रायन दोनों से बहुत खुश हुआ।

आधी रात बीतने पर आयन घर जाने के लिए उठ खडे हुए। पैडल उन्हें पहुँचाने कार तक आये।

मुसकराते हुए आयन ने कहा—"धन्यवाद, आज मुझे तुम्हारे व्यवहार से बड़ा आनन्द आया। पहले मैं तुम्हारे सम्बन्ध में न जाने क्या ख्याल करता था। पर तुम सचमुच बहुत ही भले आदमी हो।"

पैडल को आज कमान्डिग अफसर और आयन दोनों ने भलमनसाहत के लिए दाद दी थी। आयन ने उनकी तरफ से अपना मत पहले ही कुछ कुछ बदल लिया था, बाद में इस विषय में उनका रहा सहा सन्देह भी मिट गया। मेस में पैडल की सहृदयता देखकर आयन के इस मत की और भी पुष्टि हो गई।

तब क्या मिसेज़ ओकले की आयोजना सफल होगी?

मुंशीजी और उर्मिला

आयन सोने के पहले अपने बँगले के लान मे बैठ कर सिगरेट पीने लगे। सामने होस्टल के कमरो मे अब भी रोशनी हो रही थी। वे सोचने लगे कि कालेज के विद्यार्थी आधी रात तक जाग कर केवल पढ़ते-लिखते ही है, या और भी किसी अवाञ्छनीय कार्य मे व्यस्त हैं। इनमे कहीं राजनीतिक षड्यन्त्र की गुप्त आयोजनाएँ तो नहीं बनाई जा रही हैं? इन अज्ञात विरोधियों से एक बार भी मुकाबला हो जाय तो फिर मेरे चगुल के बाहर यह नहीं जा सकते।

इसके बाद उर्मिला सम्बन्धी विचार उनके मन मे आये। बड़ी अच्छी लडकी है। इससे मेरी फिर पहले की तरह मित्रता हो गई, यह अच्छा हुआ। तेरह तारीख को उससे फिर भेंट होगी। देखें मेटलैंड और पैडल पर उससे मिलने का क्या प्रभाव पडता है? लालाजी की दावत देख कर भारतीयो के सम्बन्ध में उनकी आँखें खुल जायँगी। पैडल से क्लब मे मैंने न जाने क्या-क्या कह डाला। वेचारा वडा भला आदमी है। देखें, उर्मिला की उससे कैसी पटती है?

सिगरेट फेंक कर वे अपने विस्तर पर चले गये। उर्मिला से आखिर क्रान्तिकारियो का सम्बन्ध कैसे हुआ? इस सम्बन्ध में तरह तरह के अनुमान वे कर ही रहे थे कि नींद आ गई।

ब्रायन का अनुमान वहुत कुछ ठीक ही था। होस्टल मे कमरा वन्द करके वनर्जी और घोष वातचीत कर रहे थे। वनर्जी अगले दिन के कार्यक्रम के प्रत्येक अंश पर विचार कर रहा था—"पहले हाकी मैच, उसमें घोष को चोट लगना, हत्या और अन्त में कमरे मे रहने का वहाना करके वचाव।"

वह घोष से वोला—"वस कठिनाई कुछ भी नहीं है। यदि तुम अपना होश हवास दुरुस्त रखो तो सफलता निश्चित है।"

घोष ने सिर झुका लिया। वनर्जी फिर एक एक करके सभी वातों पर विचार करने लगा।

"अच्छा, यह तो वतलाओ कि उस समय तुम कपड़े क्या पहनोगे?

"कुछ भी हों। मैने इस प्रश्न पर विचार ही नहीं किया था। मेरे ख्याल में यही खाकी नेकर और कमीज ठीक रहेगी। कपड़े कैसे ही क्यों न हों, कोई अन्तर न होगा।"

"मेरे ख्याल मे कपड़ो का महत्व कम नहीं। अच्छा हो यदि तुम सफेद कमीज़ और धोती पहन लो। सफेद कपडे रात मे जल्दी दिखाई दे जायँगे। खाकी कपड़े पहन कर तो तुम कार के नीचे दब सकते हो ?"

"वशर्ते फौरन मर जाऊँ, इसमे भी मुझे कोई उज्र न होगा।"

बनर्जी चारपाई से उठ बैठा और कमरे मे चहलक़दमी करने लगा। घोष उस समय पैर के घुटनो पर दोनो कुहनी और हाथों के बीच में ठोड़ी रखे हुए विचार मे ऐसा डूवा था मानो ससार की किसी वस्तु से उसका सम्पर्क नही रह गया है।

वनर्जी ने पास आकर घोष के गले में अपनी बाहे डाल दीं—"घोष क्या बात है। बतलाओ न ? तुम यह कार्य करना चाहते हो या नहीं ?"

"नही, यह बात नहीं।"—घोष ने अपने को बनर्जी के प्रेम-पूर्ण आलिंगन से मुक्त करते हुए कहा।

"तब बतलाओ कि तुम चाहते क्या हो ?"

"मैंने जो भी वादे किये उन सभी को पूरा करने को मै तैयार हूँ। पर क्या तुम मेरी एक कठिनाई दूर न कर सकोगे ?"

"बोलो, क्या चाहते हो ?"

"मैं हाकी मैच नही रखना चाहता।"

"क्यो ?"

घोष उत्तर देने के पहले कुछ हिचकिचाया—"बात यह है कि सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस से मेरी हमेशा दोस्ती रही है। इसे भूलना मेरे लिये आसान नहीं। गोली मारने के कुछ ही घटे पूर्व हाकी मैच मे उनसे मिलना मेरे लिये कभी मुयस्सर न होगा।"

"घोष, यह नहीं हो सकता। तुम्हारे आयन से सदा की भाँति मिलने और मैच मे चोट लगने का परिणाम कम से कम यह होगा कि सन्दिग्ध व्यक्तियों मे तुम्हारा नाम तो रखा ही न जा सकेगा। मैं तुमसे सच कह रहा हूँ। मुझे तुम्हारी जान बचाने की भी उतनी फिक्र नहीं जितनी इस वात की कि कोई गलती न होने पावे, क्योंकि इससे हमारे समस्त दल का भंडा फोड़ हो सकता है। तुम वतला सकते हो इस काम के लिये मै तुमसे ही क्यों कह रहा हूँ ?"

"मैं क्या जानूँ ?"

"क्या तुम्हारा ख्याल है मैं कायर हूँ ?"

"मुझे विश्वास है तुम कायर नहीं हो सकते।"

"अपने महान कार्य की सिद्धि के लिये मि० ओकले या सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस की हत्या स्वयं करने के वरावर मुझे और किसी भी कार्य से खुशी न होगी। परन्तु तुम तो जानते ही हो कि हमे किन कठिन परिस्थितियों के बीच काम करना पड़ता है। सच वात तो यह है कि मैं इस कार्य का जिम्मा अपने ही कंधों पर लेना चाहता था किन्तु दल के प्रधान ने पहले ही से चेतावनी दे दी है कि मुझे उनकी आज्ञा के अनुसार केवल अपना कार्य ही करना चाहिये। मेरा काम निश्चित समय के अन्दर जिले के किसी न किसी वड़े अफसर की हत्या कराना है। चूँकि मैं इस प्रान्त के कार्यकर्ताओं में प्रमुख हूँ इसलिये मुझे खोने का खतरा उठाने के लिये वे तैयार नहीं है। किन्तु साथ ही साथ सब काम की देख-रेख करते रहने की भी मेरी जिम्मेदारी है, ताकि अव्यवस्था के कारण ध्येय पर आँच पहुँचने की आशंका न रहे।"

"तब हाकी मैच हटाया नहीं जा सकता।"

"नहीं, ऐसा करने से सब आयोजना ही बिगड़ जायगी। तुम काम से हटना चाहो तो अब भी मैं दूसरा प्रबंध कर सकता हूँ।"

"नहीं"—घोष ने उत्तर दिया—"मैं सब कर लूँगा।"

यह कह कर चुपचाप वह कमरे के बाहर निकल आया और अपने कमरे में आते ही सीधा चारपाई पर लेट गया और सोचने लगा। उफ, मैं उन ब्रायन को मारने जा रहा हूँ, जिन्हें उर्मिला अपना सर्वस्व अर्पण कर चुकी है। इसके सिवाय मुझे हाकी के मैदान में उनसे मैत्रीपूर्ण बातें भी करनी पड़ेंगी। यह सब कैसे हो सकता है ?

हत्या की बात स्मरण करते ही घोष का दिल काँप उठा। वह सोचने लगा कि उर्मिला को—जिसके लिए मैं जी-जान से निछावर होने को तैयार हूँ—इस कृत्य से कितना सदमा पहुँचेगा।

रात भर वह परेशानी में करवटें बदलता रहा। यहाँ तक कि सूर्य्य की प्रारम्भिक किरणें उसके कमरे में प्रवेश करने लगीं। एकाएक वह खुशी से चिल्ला उठा—"उर्मिला, हृदय की देवी, अंधकार में आशा की ज्योति मुझे दिखलाई दे गयी।" इसके बाद बेसुध सा होकर वह सो गया।

जिस दिन की बात अभी ऊपर हम कर चुके हैं उसके एक रोज पहले दिन में ब्रायन से भेंट करने के बाद उर्मिला को भी उतने ही जोर की नींद आयी थी। उसी दिन सायंकाल को जब वह सो कर उठी तो उसका चित्त प्रसन्न था। वह आराम में बैठ कर घटनाओं पर विचार करने लगी। सब से पहले उसके मन में ब्रायन के सद्व्यवहार की याद आई। उसे अनुभव होने लगा मानो अब भी वे उसके हाथ को अपने हाथों में लिए बैठे हैं।

एकाएक अपने प्रेम का ख्याल आते ही उसे बेहद लज्जा का अनुभव होने लगा। वह सोचने लगी कि अभी तक ब्रायन को भी मेरे इस विचार परिवर्तन का ज्ञान नहीं है। वे, तो अब तक मुझे छोटी बहन की तरह मानते हैं। इन बारह महीनो के अन्दर न जाने कितने सरकारी अफसर मारे जा चुके, कुछ रात मे और कुछ बिलकुल दिन दहाड़े। ब्रायन के जीवन के खतरे का विचार आते ही उसका सारा शरीर काँप उठा। यह ठीक है कि उन्हें चेतावनी दे दी गयी है, किन्तु जान पर खेल जाने वाले क्रान्तिकारियों की चालो से बचने के लिए वे विशेष सतर्क रहेंगे इसकी आशा कम से कम ब्रायन जैसे आदमी से तो करना ही व्यर्थ है। तेरह तारीख को एक बार मुझे फिर चेतावनी देना चाहिए, उस दिन रात को लालाजी के यहाँ भोजन करने के बाद वे सुनसान सड़क से अपने बँगले को जायँगे। उस समय भी हमला हो सकता है।

विचारों की गुत्थियो मे फँसी हुई वह बहुत देर तक बैठी रही। क्या मैं ब्रायन को बनर्जी का कार्यक्रम बतला कर सतर्क कर दूँ? उसे बनर्जी द्वारा किए गए अनुरोध का भी स्मरण हो आया कि व्यक्तिगत ईर्षा और मोह के वश उसे कोई कार्य न करना चाहिये। पर इससे ब्रायन समझेंगे ही क्या? इसके बाद वह सोचने लगी कि यदि कोई निश्चित जानकारी हो भी तो क्या वह भेदिये का काम करने को तैयार है।

"नहीं, मैं देश से प्रेम करती हूँ।"—उसके मुँह से एकाएक निकल पड़ा—"उसके प्रति विश्वासघात करने का विचार भी मेरे मन में नहीं उठ सकता। हाय! तब क्या करूँ?"

उसकी आँखों के आगे मुंशीजी के कमरे वाला दृश्य फिर

गया । वनर्जी ने उसका अपमान किया था। किन्तु—किन्तु अन्त में सच्चे हृदय से उसकी पूर्ति भी कर दी थी। उसने मुझ से कहा था कि तुम चाहे जो करो, मैं कुछ भी न कहूँगा। वनर्जी का मुझ पर इतना विश्वास है। उफ़, तब मैं क्या करूँ।

कभी उर्मिला त्रायन के साथ अपनी वाल्यकाल की स्मृतियों में डूबती-उतराती और कभी उनकी जान के खतरे की आशंका से उद्विग्न हो उठती।

अन्त में मुंशीजी को बुलवाने के लिए उसने आदमी भेज दिया।

मुंशीजी के अभिवादन का उत्तर देने के बाद उर्मिला ने बैठने के लिए उन्हें कुर्सी दी और कहा—"आपको कष्ट न देती, पर बात बहुत जरूरी थी इसलिए—"

"उर्मिला बेटी, यह सब क्या कहती हो ? क्या नहीं जानती कि तुम्हारी इच्छा मेरे लिए आज्ञा से बढ कर है। तुम्हारे लिए मेरी जान तक हाजिर है।"

उर्मिला जानती थी कि मुंशीजी के इस कथन में सन्देह के लिए लेशमात्र भी स्थान नहीं है। सचमुच ही वे उसे अपनी पुत्री के समान मानते थे।

"प्रात काल आपके कमरे में जो कुछ हुआ सो तो आप जानते ही हैं।"

मुंशीजी ने सिर हिला कर स्वीकार किया।

"वहाँ मैंने कहा था कि सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस से मैं प्रेम करती हूँ।"

"बेटी, यह बात मैं जानता हूँ और शायद तुमसे भी पहले से—"

उर्मिला यह सुनते ही चौंक उठी, किन्तु इसके वाद उन्होंने जो कुछ कहा उससे उसे और भी आश्चर्य हुआ।

"तुम्हे आशका है कि कैप्टिन व्रायन ओकोनर की जान खतरे में है और तुम जिस तरह भी हो सके उन्हे वचाना चाहती हो। तुम्हारा ख्याल है कि इस काम मे मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। पर वेटी तुम्हारा ख्याल गलत है। जो कुछ मैं जानता हूँ तुम्हें वतलाए देता हूँ पर इसके लिए इतना ही काफी नहीं है।"

कुछ मिनट रुकने के वाद मुंशीजी फिर वोले—"वनर्जी के जिम्मे प्रान्त भर के क्रान्तिकारियों की देखरेख का भार है। वह किसी गुप्त आयोजना के अनुसार कार्य कर रहा है। जहाँ तक मेरा ख्याल है इसका सम्वन्ध लालाजी की दावत से है। उसने मुझसे मेहमानों और विशेषकर यूरोपियन मेहमानों के नाम और उनके जाने के समय की पूछताछ की थी। यह सब वातें मैंने उसे वतला दी हैं। यूरोपियन मेहमानो में केवल सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस ही आ रहे हैं। वे लगभग साढे ग्यारह वजे यहाँ से अपने वँगले के लिए रवाना होंगे।"

मुशीजी कुछ देर के लिए उर्मिला के चेहरे पर भय की मुद्रा देखकर रुक गए। उर्मिला को भय इसलिए हुआ कि उसे जिस वात की आशका थी, उसकी पुष्टि हो गयी।

"मेरे ख्याल में सुपरिंटेन्डेन्ट साहव के जान के खतरे की जो आशका तुमने की है, उचित ही है। वहुत सम्भव है कि उन पर तेरह तारीख की रात को ही आक्रमण किया जाय। वेटी, मेरी सलाह सुनोगी?"

"हाँ, जरूर—और इसके लिए मैं आपकी जन्म भर ऋणी रहूँगी।'

"कैप्टिन ओकोनर ब्रायन को चेतावनी दे दो कि उनके जीवन का ख़तरा है।"

"यह तो मैं पहले ही कर चुकी हूँ।"

'उन्हे इस बात की सूचना दे दो कि उनके लिए विशेष ख़तरा तेरह तारीख की रात को है। उस समय उन्हे खास तौर पर सतर्क रहना चाहिए।"

"परन्तु मुँशीजी, कठिनाई तो यह है कि जब तक मै उन्हे कोई निश्चित बात न बतलाऊँ वे खास तौर से सावधान कभी न रहेगे।"

"परन्तु कोई निश्चित बात तो हम बतला ही नहीं सकते। पहले तो यह कि हम कुछ जानते ही नहीं, केवल सन्देह है और दूसरे यदि जानते भी हो तो सरकारी गुप्तचर या भेदिये का काम तो नहीं कर सकते। पुलिस सुपरिंटेन्डेन्ट को मैं खुद जानता हूँ। बेचारे बड़े भले आदमी हैं। फिर भी यदि तुम न कहतीं तो उन्हे बचाने के लिए मैं इतनी बात भी किसी को न बतलाता। देश के काम में हम व्यक्तियो के बीच भेदभाव नहीं रखते। अकसर ऐसा होता है कि पहले भले आदमी को ही मरना पड़ता है।"

इसके बाद मुँशीजी ने चिन्तित उर्मिला के हाथ अपने हाथों मे ले लिए और कहने लगे—"उर्मिला, मेरी बच्ची, यह मेरी सलाह है। मानो या न मानो यह तुम्हारी मर्जी है। तुम्हे सुखी देखने के लिए ससार का ऐसा कोई भी काम नहीं जिसे करने के लिए मै तैयार न हो जाऊँ, पर यह असम्भव है। बेटी, दुख-सुख कोई किसी को नहीं देता यह तो मनुष्य की अपनी करनी का फल है। मैं जानता हूँ कि देश को स्वतत्र देखने की कितनी उत्कट इच्छा तुम्हारे मन मे है, किन्तु इस समय वह पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट के

प्रेम के कारण कुछ दब गयी है। मै जानता हूँ, बेटी कि तेरह तारीख तक तुम्हारा समय चिन्ता मे कटेगा। भगवान तुम्हारा भला करे।"

इतना कहकर मुँशीजी कमरे से उठकर चले गए। दूसरे दिन उर्मिला ब्रायन के बँगले पर पहुँची। उसे अचानक आया देख-कर वे बोल उठे—"अरे उर्मिला! तुम सुबह ही सुबह आज कैसे निकल पड़ी।"

उर्मिला लजाती हुई कार से उतर पड़ी।

"सीधी भीतर चली आओ। यहाँ पंखे के नीचे बरामदे की अपेक्षा कहीं अधिक ठंडक है।"

उर्मिला ने ब्रायन के कमरे की सफाई से प्रभावित होकर कहा—"क्या आपको याद है गन्दी आदतें छोडने के लिए आप मुझे सदा दुतकारा करते थे।"

ब्रायन हँसने लगे—"मेरा ख्याल है अभी तक तुम्हारी वे आदतें छूटी नहीं हैं।"

"नहीं, अब तो काफी सुधार हो गया है, आप चाहे तो एक दिन खुद आकर देख भी सकते हैं।"

"जरूर, एक दिन तुम्हारे यहाँ आऊँगा। अच्छा, चाय या लैमनेड मगाऊँ।"

"नहीं धन्यवाद, आज तो मै आपसे एक भिक्षा माँगने आई हूँ।"

"यदि वह मेरी शक्ति के बाहर नहीं है तो माँगने के पहले ही मै देता हूँ।'

"तेरह तारीख को आप लालाजी की दावत मे जायेंगे?"

"हाँ, उस दिन की मैं बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

"आपसे मैं केवल यही भिक्षा चाहती हूँ कि आप उस दावत मे न जायँ।"

"यह खूब रहा उर्मिला, तुम सदा कोई न कोई आश्चर्य्यपूर्ण बात छेड़ने से बाज नहीं आती। बचपन मे भी तुम सेना मे भरती होने की जिद किया करती थी।"

"आयन, मजाक नहीं, मैं सचमुच आपसे लालाजी की दावत में न जाने का अनुरोध करती हूँ।"

"खेद है उर्मिला, तुम्हारी यह बात मैं नहीं मान सकता। लालाजी मेरे घनिष्ट मित्र हैं। मैंने उनके निमन्त्रण को स्वीकार कर लिया है। अब यदि मैं न जाऊँगा तो इसमे वे अपना व्यक्तिगत अपमान समझेंगे।'

"आपसे यह अनुरोध मैं क्यो कर रही हूं, क्या यह भी जानते हैं?"

"नहीं, बतलाओ।"

"क्या आप मेरा विश्वास करेंगे?"

"तुम्हारे हाथो मे अपना जीवन तक निसकोच रख सकता हूँ।"

"लालाजो की दावत मे जाने से आपकी जान का खतरा है। इसे प्रमाणित करने के लिए मैं कोई निश्चित बात नहीं बतला सकती, फिर भी मेरी आशका है कि उस रात को आप पर आक्रमण होगा।"

आयन यह सुन कर बड़े प्रभावित हुए, इस कारण नहीं कि खतरे की आशंका सुन कर घबराए हो, बल्कि इसलिये कि

उर्मिला उनके लिये इतनी चिन्तित रहती है। कुछ ठहर कर वे बोले—"देखो उर्मिला, मेरा तो काम ही ऐसा है कि उसमें जीवन का खतरा सदा लगा रहता है। उससे मैं कहा तक भागता फिरूँ। केवल आशंका के ही कारण लालाजी का निमंत्रण अस्वीकार कर बैठना कहाँ तक उचित होगा ?"

"अच्छा, तब क्या तुम रात को मुझे अपनी मोटर मे बँगले तक पहुँचाने की अनुमति दोगे ? तुम्हारी मोटर को सभी जानते हैं।"

उर्मिला की यह बात सुन कर त्रायन फिर बड़े प्रभावित हुए और कुछ देर सोचने के बाद कहने लगे—"उर्मिला तुम यह नही सोचतीं कि यदि खतरा है तो उस रात को अपने साथ में तुम्हें कैसे ले जा सकता हूँ। मैं तुम्हारा यह अनुरोध कभी नहीं मान सकता, किन्तु इसके लिए मैं हृदय से सदा तुम्हारा आभारी रहूँगा।"

"तब क्या करूँ, त्रायन ? यदि उस रात को तुम्हें कुछ हो गया तो मैं अपने आपको कभी क्षमा न कर सकूँगी।"

"बस यही होगा कि उस रात को मैं विशेष रूप से सतर्क रहूँगा। बहुत दिनों से मुझे भी आशंका रहती है कि कोई न कोई गुप्त षड्यंत्र चल रहा है। मुझे तहकीकात करने के लिए कोई प्रमाण अभी नहीं मिले हैं, किन्तु प्रिन्सिपल से मैं इस सम्बन्ध में बातें करूँगा। अभी तक मुझे इस विषय में कुछ भी जानकारी नहीं है।"

उर्मिला को इससे कुछ ढाढस हुआ, किन्तु अन्तिम बार एक और प्रयत्न करने का लोभ वह संवरण न कर सकी—"क्या तुम यह भी नही कर सकते कि दावत के बाद शहर की तरफ से चक्कर लगा कर बँगले पर आओ ?"

चुके थे। कालेज की टीम तीन बार जीत चुकी थी और पुलिस दो बार, किन्तु प्रत्येक बार जीत बहुत थोड़े गोलों से हुई थी।

एक तरफ विद्यार्थी एकत्रित हो रहे थे और दूसरी तरफ पुलिस के जवान। टीम भी आ चुकी थीं। कालेज वाले एक गोल पर "प्रैक्टिस" कर रहे थे और पुलिस वाले दूसरे पर। दर्शकों मे दोनों तरफ बातों के दौरान चल रहे थे और कभी कभी अच्छा "शाट" लगने पर "शाबाश" या "वैल प्लेड" की आवाजें भी सुनाई दे जाती थीं।

ठीक साढ़े पाँच बजे प्रिन्सिपल और मेजर मेटलैंड फील्ड मे आये। प्रिन्सपल अपने समय खुद भी हाकी के अच्छे खिलाड़ी रह चुके थे और यह उन्हीं के प्रोत्साहन का परिणाम था कि कालेज की टीम ने इतना नाम कमा लिया था। मेटलैंड भी अच्छे खिलाडी थे, इसलिए कैप्टिन ओकोनर ब्रायन ने उनसे दूसरा "रैफरी" बनने का अनुरोध किया था। प्रिन्सिपल के सीटी बजाते ही सर्वत्र शान्ति छा गयी।

पुलिस टीम के कप्तान थे ब्रायन और कालेज टीम का घोष। "टास" करने के लिए रैफरी की तरफ साथ साथ जाते हुए ब्रायन्न ने घोप से कहा—"घोप, कैसे हो? तुम शायद हमे हराने के लिए पक्का इरादा करके 'फील्ड' में आये हो? किन्तु आज हम तुम्हारी एक न चलने देंगे।"

घोप ने इसके उत्तर में कुछ नहीं कहा, वह केवल मुसकराता ही रहा।

प्रिन्सपल ने एक पैसा ऊपर फेंक कर कहा—"घोष बोलो।"

घोप ने कहा—"हैड्स"

"मिसेज़ ओकले ने मुझसे कहा कि मे पैडल को प्यार करती है और मैं उन दोनो के सुखी जीवन के मार्ग मे बाधा बन कर खडा हुआ हूँ।"

"तब आपने क्या किया ?"

"मैंने मे के नाम पत्र लिख कर उसे सम्बन्ध तोड़ने की सूचना दे दी।"

"मिसेज़ ओकले के कहने पर ?"

"हाॅ।"

"आपने इस सम्बन्ध मे मिस ओकले से कुछ पूछताछ भी न की ?"

"यह मैं कैसे कर सकता था। इसका मतलब तो यह होता कि मै मिस ओकले को ही झूठा सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।"

"हाॅ—यदि मिसेज़ ओकले का कथन विश्वसनीय होता।"

"तुम्हारा मतलब क्या है।"

"यही कि मुझे तो यह सब किस्सा झूठा जान पड़ता है। मि० ओकले से आपका निकट का सम्पर्क तो नहीं रहता।"

"नहीं, बिलकुल नहीं"—ब्रायन ने हँसते हुए कहा,—"वे तो मुझसे इससे पहले भी दो बार कह चुके हैं कि मुझे उनकी लडकी से अपना सम्बन्ध टूटा हुआ समझना चाहिए।"

"यही तो—इसी तरह मिसेज़ ओकले भी पुत्री का विवाह अपनी इच्छा के अनुकूल करने के लिए उत्सुक हैं। इसमे पति-पत्नी का व्यक्तिगत स्वार्थ भी तो है। पुलिस के साधारण अफसर के बजाय लार्ड घराने के सम्पन्न युवक से अपनी पुत्री का विवाह करने की अभिलाषा रखना उनके लिए स्वाभाविक ही है।"

व्रायन के मन मे यह विचार उठा ही न था। उनके मन मे मे के स्नेहपूर्ण व्यवहार की याद आई और उसकी सचाई का पता लगाने के लिए वे उसके हर पहलू पर विचार करने लगे। वे अनुभव करने लगे कि मे का हृदय भी उन्हीं की तरह सच्चा और पाक है।

पर होटल के लताभवन का वह दृश्य ? कुछ समय पहले तक उनके विचार स्थिर थे, किन्तु उर्मिला की बातो से उनका मन फिर दुविधा में पड़ गया। यह दुविधा किसी तरह मिटनो ही चाहिए। उन्होंने उर्मिला के वाहुपाश से अपने को मुक्त कर लिया और खडे हो गए। पर उर्मिला को कुरसी पर वैठने का अवसर न मिल सका। व्रायन ने वचपन की तरह आज फिर उसके कंधे अपने हाथों से कस लिए।

"उर्मिला हो सकता है शायद तुम्हीं ठीक हो, पर मेरा सन्देह एक घटना के कारण और है। उसे भी सुन लो।"

उन्होंने लताभवन वाली घटना उर्मिला को सुना दी।

"आप तो विलकुल वच्चो की सी वात करते हैं। यदि मे पैडल को प्यार करती तो उस आनन्दमय नृत्य के वीच ही मे न चली आती। जो न हो, उस समय भी वह आप ही की खोज मे थी।"

व्रायन सोच-विचार मे पड़ गये।

"क्या आप मेरी सलाह न मानेंगे ? मै आपसे कोई वचन नहीं माँगती, केवल यही कहती हूँ कि आपके और मे के प्रति परस्पर न्याय केवल एक ही दशा मे हो सकता है और वह यह कि आप उससे सभी परिस्थितियो को स्पष्ट करते हुए एक पत्र लिखें। उससे आप स्पष्ट शब्दों मे पहला प्रश्न यही कीजिए की वह आपसे प्रेम करती है या नहीं ? अपनी तरफ

से आप लिखिए कि अभी तक आप उसे दिल से चाहते हैं और उसकी सुख-साधना के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने को तैयार हैं। वास्तव में यदि आप लोग प्रणय के सूत्र में नहीं बँधते तो इसकी जिम्मेदारी मे की ही होनी चाहिए, न कि आपकी। जरा कल्पना कीजिए कि उसका भी आप पर प्रेम हो तो उसके साथ कितना भारी अन्याय हो रहा है। प्रिय त्रायन, यदि वह आपको अब भी दिलोजान से चाहती हो तो मुझे तो इसमे तनिक भी आश्चर्य्य न होगा। खूब सोच-विचार लो। अच्छा अब मैं जाऊँगी।"

उर्मिला जैसे जाने को हुई कि त्रायन ने उसका हाथ पकड लिया—"यह क्या पागलपन, अभी तो तुमने चाय ली भी नहीं है।"

"क्या करूँ? इस वक्त मेरे गले के नीचे कोई भी चीज न उतरेगी।"

भावावेश में उर्मिला काँप रही थी। आखों मे आँसू भरे हुए थे। अपने को संयत रखने के लिए जो कशमकश उसे करनी पड़ रही थी, वह त्रायन की आँखों से छिप न सकी।

"आइए, मुझे घर पहुँचा दीजिए। मैं बहुत थक गयी हूँ। आराम करूँगी।"

इसके बाद दोनों कार मे बैठ गए। उर्मिला सामने की तरफ़ टकटकी लगाकर देख रही थी और हाथ गोद में जकडे हुए पड़े थे। त्रायन उसकी बगल मे अपने विचारो में डूबे हुए बैठ गए। सभी बातों को अपने मन में वे फिर से दुहराने लगे। अचानक किसी की काँपती हुई उँगलियों के द्वारा अपना हाथ पकड़ लिए जाने के कारण उनका ध्यान भंग हो गया।

"हे भगवन् ! ब्रायन देखो तो वह बनर्जी !"

मोटर डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के बँगले से निकल कर शहर की तरफ जाने वाले मोड़ पर मुड़ रही थी। मोड़ के दूसरी तरफ बगल की ओर वरदी पहने एक डाकिया चला जा रहा था। डाकिये ने आँख उठाकर उर्मिला की तरफ देखा और उससे उसकी आखे चार हो गई। आँखें मिलते ही डाकिया कुछ चौंक कर रुक गया। उसकी आँखों मे प्रेम का रस छलछला आया। बनर्जी ने यद्यपि बहुत चतुराई से वेश बदला था किन्तु उर्मिला की आँखों से वह छिप न सका।

ब्रायन ने भी कार मे से उसे देखा था। परन्तु एक साधारण डाकिया समझ कर उन्होंने उसकी तरफ विशेष ध्यान देना आवश्यक न समझा। परन्तु उर्मिला को भयत्रस्त देखकर उन्हें उसके बनर्जी होने में कुछ भी सन्देह न रह गया।

ब्रायन ने प्रेमसिंह की कमर से रिवाल्वर खींच लिया और उसे कार का इंजिन रोकने की आज्ञा दी। कार अभी रुकी भी न थी कि वे उसमें से कूद पड़े। गिरते गिरते वे बचे ही थे कि बनर्जी की गोली उनके शरीर से कुछ ही इंच की दूरी से सनसनाती हुई निकल गयी।

ब्रायन ने भी गोली चलाई और उसके चलाते ही बनर्जी के हाथ का पिस्तौल छूटकर गिर गया। शराबी की तरह उसके पैर एक चण के लिए लड़खडाए और वह सड़क के किनारे गिर गया।

अब ब्रायन हाथ में रिवाल्वर पकड़े हुए बड़ी सतर्कता से आगे बढे। बनर्जी दाहिनी करवट निश्चल पडा हुआ था। वे धीरे धीरे निकट आ गए। बनर्जी से एक कदम की दूरी

रहने पर उन्होंने देखा कि उसकी आखे वन्द हैं और शरीर के किसी अवयव या अंग मे नाम मात्र के लिए भी गति के लक्षण दिखलाई नहीं पड़ते।

वनर्जी का रिवाल्वर लेने के लिए वे जैसे ही नीचे झुके कि एकाएक विजली की सी तेजी से वनर्जी ने अपने वायें हाथ से जेब से पिस्तौल निकाला और त्रायन की तरफ दाग दिया। वे उसके पैरो पर गिर पड़े।

वनर्जी फिर गोली चलाने वाला था कि उसने प्रेमसिंह को अपनी तरफ आते हुए कुछ ही कदम की दूरी पर देखा। पिस्तौल की नली तुरन्त उसने अपनी कनपटी पर रखी और जीवन का अन्त कर लिया।

यह भीषण काण्ड एक मिनट के ही भीतर हो गया। प्रेमसिंह मोटर रोक कर अपने मालिक की सहायता के लिए दौड़ा चला आ रहा था। कार खुली हुई थी। उर्मिला ने अभी अपना हाथ या पैर भी न हिलाया था कि उसकी भयत्रस्त आँखों के आगे यह दुर्घटना हो गयी।

परन्तु त्रायन के गिरते ही न जाने उसमें कहाँ से शक्ति आ गई। वह भी प्रेमसिंह के पीछे दौड़ी और त्रायन के शरीर पर झुक गयी। छाती के घाव में खून धीरे धीरे निकल रहा था। उर्मिला के मुँह से चीख निकली और वह उनके ही शरीर पर वेहोश होकर गिर पड़ी।

प्रेमसिंह दुविधा मे पड़ा हुआ था कि क्या करे? त्रायन वनर्जी के पैरो पर गिरे हुए थे और उर्मिला उनके शरीर पर पड़ी हुई थी। उसके मन में मोटर लेकर एम्बुलेन्स वुलाने के लिए जाने का विचार उठा, पर वह मालिक को इस दशा मे अकेला छोड़

कर भी जाना नहीं चाहता था। इधर उधर उसने नजर दौड़ाई तो लकड़ियो का गट्ठर सिर पर रखे एक बुढ़िया के सिवाय और कोई भी कहीं दिखाई न दिया।

प्रेमसिंह इसी दुविधा मे पड़ा था कि सड़क पर किसी के दौड़ने की पदध्वनि उसे सुनाई दी। उसने देखा कि एक यूरोपियन उसी की तरफ दौड़ा हुआ आ रहा है।

"ओह, साहव आ गए"—उसने शाति की साँस लेते हुए कहा—"वे अवश्य मेरी सहायता करेंगे।"

यह साहव थे पैडल। उनके पीछे मे और काफी दूरी पर मि० ओकले चले आ रहे थे।

हत्या का प्रयत्न

मै ठीक दो वजे नियत स्थान पर पहुँच गई। पैडल हाथ में घड़ी लिए उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उसके आते ही उन्होंने हँसते हुए कहा—"अरे, मैं हार गया।"

"क्या हार गए, जार्ज ? तुम्हारी हँसी से जान पडता है कि हारने मे तुम्हे खुशी ही अधिक हुई है।"

"मैंने अपने मन मे वाजी वदी थी कि तुम जरूर देर से आओगी, किन्तु आई तुम ठीक वक्त पर। वाजी जीतने के कारण तुम्हे चाकलेट का एक वक्स मिलेगा।"

"धन्यवाद जार्ज, इस होटल मे चाकलेट वहुत अच्छा मिलता है।"

पैडल ने सर झुका लिया और मे खिलखिला कर हँस पड़ी।

"तुम्हें उस रेस्टराँ में एक बोतल बीयर खरीदनी है। चलो यह बोतल मैं खरीद दूँगी ? तुम मेरे लिए चाकलेट का बक्स खरीद देना। बदला चुक जायगा। बोलो मंजूर है न ?

" नहीं मे, यह नहीं हो सकता। बीयर की बोतल तो तुम कुछ आने देकर ही खरीद लोगी, पर मुझे काफी अधिक खर्चना पड़ेगा।"

"पर यह भी तो ख्याल करो कि मैं तुम्हे कितनी आसानी से छोड़े दे रही हूँ।"

"जी हाँ, मै बाजी हारा हूँ, उसकी शर्त मुझे पूरी करनी चाहिए। कर्ज अदा करने के लिए अब जेब खोलनी ही पड़ेगी। परन्तु तुम्हारे साथ मैंने कल रात को जो उपकार किया उसे भूल ही गई। तुम्हारे कहने से मैंने अपने शेष नृत्यों का कार्यक्रम रद्द कर दिया।"

"जार्ज, तुम तो लुटेरे हो। क्या उसका बदला मैंने तुम्हें नहीं चुका दिया। परन्तु मैं तुमसे झगड़ा नहीं करना चाहती। मुझे अगले जहाज से घर (इंगलैंड) जो जाना है।"

इसके बाद वे लोग रिकशा में बैठ कर रेस्टराँ के लिए रवाना हो गए।

"जार्ज, हम एक दूसरे के हार्दिक मित्र हैं न ?"

"हाँ, निस्सन्देह "

मे ने कुछ हिचकिचाने के बाद कहा—"तुम्हे याद है, मैंने कल कहा था कि ब्रायन को मैं प्यार करती हूँ।"

"हाँ।"

"उस समय मैंने जो कुछ कहा सत्य था और आज भी वह उतना ही सत्य है। आज यदि मैं तुमसे एक प्रश्न पूछूँ तो बुरा तो न मानोगे ?"

"तुम कोई भी प्रश्न पूछो मै उत्तर देने को तैयार हूँ"

"जो कुछ मैं पूछ रही हूँ केवल अपनी उत्सुकता मिटाने के लिए ही नहीं पूछती, इससे मेरा कल्याण भी हो सकता है।"

"यदि वह बात मुझे मालूम होगी तो अवश्य बतलाऊँगा, किन्तु मालूम न हुई तो लाचारी है।"

"आज सुबह मेरे आने के पहले मा ने तुमसे सम्बन्ध टूटने के विषय में क्या कहा था।"

"बस यही—? उन्होंने कहा था कि सम्बन्ध दोनों की रजा-अन्दी से तोड़ दिया गया। उनके इस कथन को मैंने असत्य समझा था, क्योंकि छ या सात घंटे पहले तुमने ब्रायन के प्रति प्रेम करने की बात मुझसे कही थी। इस मामले से अलग रहने की मेरी सदा से इच्छा रही है, इसीलिए इस बात को सुन कर भी मैं चुप्पी साध गया।"

रेस्टराँ में उस समय अधिक भीड़-भाड़ न थी और मिस मे तथा पैडल को कोने में एक शान्त स्थान प्राप्त करने मे कोई कठि-नाई भी न हुई।

पैडल ने एक आदमी को बुला कर उस से कुछ चीजें लाने के लिए कहा, मे मौन थी। यहाँ तक कि खिदमतगार के द्वारा चाक-लेट का बक्स सामने रख दिया गया, तब भी उसके भाव में कुछ परिवर्तन नहीं हुआ। पैडल ने अच्छी तरह खाया-पिया। वे अनुभव कर रहे थे कि मे असाधारण रूप से उदास है। उनके आगे समस्या यह थी कि उसके इस भाव को किस तरह दूर किया जाय।

पैडल कुछ कहने ही वाले थे कि मे बीच ही मे बोल उठी—"इंगलैंड जाने के पूर्व मैं एक बार उर्मिला से अवश्य मिलना चाहती हूँ।"

"इंगलैंड तुम कब जा रही हो ?"

"शायद अगले शुक्रवार को। आजकल जहाज मे तुरन्त स्थान मिलने मे कोई कठिनाई न होगी।"

"उर्मिला ने एक दिन पोलो देखने के लिए आने का वायदा किया था। मैं उससे तुम्हारी मुलाकात कल ही करा सकता हूँ—पर बुधवार को कैसा रहेगा ?"

"हाँ, बुधवार को मुझे भी कोई असुविधा न होगी।"

"अच्छा तो पहले मैं उर्मिला को बुलाऊँगा। इसके बाद सायं-काल चार बजे आकर तुम्हे ले जाऊँगा। निस्सन्देह तुम उर्मिला से मिलकर बहुत खुश होगी।"

"क्या तुम्हारा ख्याल है ब्रायन उर्मिला से प्रेम करते हैं ?"

"नहीं, कभी नहीं—ऐसा नहीं हो सकता।"

"क्यो ?"

"देखो, मैं ब्रायन को अच्छी तरह जानता हूँ। दिल के वे बहुत साफ हैं। मुझे इसमे कुछ भी सन्देह नहीं कि उर्मिला को प्रेम करते होते तो सबसे पहले इसकी सूचना वे तुम्हे ही देते।"

"यह दुनिया भी बड़ी मजेदार जगह है, जार्ज"—मे ने एक लम्बी साँस लेते हुए कहा—"आओ चला जाय। दिन छिपे के पहले पहुँचने के लिए तुम्हे मोटर को बहुत ही तेजी से चलाना पड़ेगा। मैंने पिता जी को फोन से सूचित कर दिया है कि छ. बजे के लगभग पहुँच रही हूँ।"

पैडल ने अपनी कार के शक्तिशाली इंजन को छोड़ दिया। ६० मील प्रति घटे की रफ़ार से सड़क के लम्बे मार्ग को तय करती हुई मोटर आगे बढ़ी। जहाँ मार्ग काफी दूर तक सीधा मिलता वहाँ उसकी रफ़ार ७० मील प्रति घंटा भी हो जाती थी। इस तरह छः बजे के कुछ पहले ही पैडल की कार डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के बँगले के आगे आकर धीरे से खड़ी हो गई।

मि० ओकले ने बँगले के आगे लान पर कुरसियाँ बिछवा रक्खी थीं। मेज पर सोडा-बरफ वगैरह भी रखवा दिया था। वे बड़ी उत्सुकता से अपनी पुत्री और पैडल के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। श्रीमती ओकले की तरह उन्होंने भी कल्पना में किले बनाना आरम्भ कर दिया था। उन्होंने सोचा कि ब्रायन छुट्टी समाप्त होने के दो दिन पहले कैसे आ गए। अवश्य कोई रहस्यपूर्ण घटना हुई होगी?

अब मे पैडल के साथ आ रही है। मि० ओकले को तो यह भी नहीं मालूम था कि पैडल पहाड़ पर हैं, वे सोचने लगे कि आखिर मे ब्रायन के साथ ही क्यों न चली आई। उसने फोन पर कुछ बतलाया भी नहीं केवल यही कहा कि पैडल के साथ आ रही हूँ। मि० ओकले सोचने लगे कि आखिर पत्नी को उनकी बात मानना ही पड़ा और अपनी विजय पर मुसकराने लगे। उसने चतुराई से आखिर वही तो किया जो मैं आरम्भ में दृढ़ता का प्रदर्शन करके करना चाहता था। कभी कभी औरतों की बात भी मान लेना अच्छा होता है।

मि० ओकले ने नया सिगार जलाया ही था कि मे और पैडल आ गए। खड़े होकर उन्होंने कई प्रश्नों की झड़ी एक साथ लगा दी।

मे ने कार से उतर कर पिता के गाल को थपथपाया। इसके

बाद उनकी बाँह को अपने दोनों हाथो मे कस कर वह उन्हें मेज के पास ले गई।

"पिताजी, मुझे आप से एक ऐसी बात कहनी है, जिसे सुन कर आप आश्चर्य्य में डूब जायँगे। परन्तु जब तक मेरी और जार्ज की प्यास शान्त न होगी तब तक आप कुछ भी न सुन पायँगे। जार्ज, क्या कहते हो ?"

"मैं कुछ कह ही नही सकता। ऐसा जान पड़ता है मानों युग-युग को गर्द फाँके हुए चला आ रहा हूँ।"

मि० ओकले आगन्तुको की अभ्यर्थना मे बेहद दिलचस्पी दिखाने लगे। बैरा को उन्होंने चिल्ला कर बुलाया और उसके आने के पहले खुद ही पेय की व्यवस्था करने लगे।

"आप क्या लेंगे कैप्टिन पैडल—ह्विस्की या सोडा ?"

"हाँ ह्विस्की और सोडा—सोडा कुछ अधिक मात्रा में।"

पैडल के अधैर्य्य पर मि० ओकले ने जोर का कहकहा लगाया। परन्तु मे ने चुप रहने को कह कर उनका उत्साह ठडा कर दिया।

मि० ओकले तब अनिच्छापूर्वक बैठ गए और तब बैरा, जिसे जिस चीज की आवश्यकता थी, देने लगा।

जार्ज पैडल अपने ओठो से गिलास लगाने जा ही रहे थे कि एक के बाद एक दो बार गोलियाँ चलने की आवाज सुनाई दी।

"रिवाल्वर की आवाज"—पैडल ने कहा—"यहीं कहीं नजदीक ही में तो है।"

"नहीं, कुछ नहीं"—मि० ओकले ने उन्हे शान्त करने का प्रयत्न करते हुए कहा—"रिवाल्वर अब हैं ही कहाँ ? मैंने सबका

लाइसेंस रद्द कर दिया है। टामी (अँगरेज सैनिक) जंगल मे किसी पक्षी का शिकार कर रहे होगे।

पैडल कुछ सैकिंड तक और भी आवाजें सुनने के लिए सतर्क हो कर वैठ गए। यद्यपि मि० आकले का खडन करना वे नही चाहते थे, किन्तु उनके कथन पर उन्हे विश्वास न हुआ था। रिवाल्वर और वन्दूक की आवाज में जो भेद होता है, उससे वे अच्छी तरह परिचित थे।

"मे पी-पा कर जल्दी खतम करो।"

मि० ओकले ने अनुरोध भरे स्वर मे कहा—"मै तुम्हारी वात सुनने के लिए उत्सुक हूँ। शायद वह वात जितना तुम ख्याल करती हो उतनी मेरे लिए आश्चर्य्यपूर्ण न होगी।"

इसके पहले कि मे उत्तर के लिए जवान खोले दो और गोली को आवाजें गूँज उठीं और साथ ही साथ सहायता के लिए दर्द-भरी चिल्लाहट भी सुनाई दी। पैडल यह सुनते ही खड़े हो गए और क्षणमात्र में वंगले के कम्पाउन्ड के वाहर हो गए।

मे भी खड़ी होकर उनके पीछे जाने लगी, किन्तु उसके पिता ने रोक कर कहा—"क्या मूर्खता कर रही हो? वैठ जाओ। परेशान होने की कोई वात नहीं है। देखो, पैडल भी नहीं है। इस समय मुझे वह वात वतला दो।"

"पिताजी, आप किसी वात को समझते नहीं। मैं देखने जा रही हूँ कि हुआ क्या है। आपको भी आना चाहिए।"

मे पेडल के पीछे वॅगले के वाहर चली गई। मि० ओकले इन लोगो के व्यवहार पर असन्तुष्ट होकर कुर्सी से खडे हो गए। वे अपने मन मे कहने लगे। इन युवक-युवतियो मे आजकल दूसरो के लिए सम्मान की भावना किञ्चित मात्र भी नही रह गई है।

स्वार्थ इनमे कूट-कूट कर भरा हुआ है। हर एक बात मे अपनी टाग अड़ाना इनका स्वभाव है। यदि वास्तव में कोई भीषण घटना हुई है तो इन्हे क्या ? आखिर पुलिस किस लिए है ?

मि० ओकले सड़क के मोड़ पर पहुँचे तो देखा कि पैडल और प्रेम सिह किसी के शरीर को सड़क से एक तरफ उठा कर ला रहे हैं और दूसरी तरफ मे किसी भारतीय स्त्री की परिचर्य्या मे व्यस्त है।

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट महोदय ने अब अपनी गलती महसूस की। उनका इस मामले मे स्वयं ही कुछ कर वैठना कायदे के खिलाफ कार्यवाही होगी। सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस को तहकीकात करके इसकी रिपोर्ट वाकायदा उनके पास भेजना चाहिए, तव कहीं वे विचार करेंगे। मे और पैडल का इस मामले में पड़ जाना कितनी वुरी वात है, मेरे लिए उचित यही है कि वॅगले पर वापस जाकर रिपोर्ट को प्रतीक्षा करूँ। साथ ही मे और पैडल को भी हलके शब्दों में चेतावनी देना उचित होगा।

वे वापस जाने के लिए उलटे पावो लौटने ही वाले थे कि पैडल ने उन्हें देख लिया।

"ईश्वर के लिए जरा आगे वढ़िये"—पैडल ने चिल्लाकर कहा—"वडी भीषण घटना हो गयी है। जल्दी आइए।"

मि० ओकले का शरीर क्रोध से जल उठा। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट को वुलाने का यह ढग है ? लार्ड खान्दान के युवक और भावी जामाता तक की ऐसी गुस्ताखी अक्षम्य है। अभी तो मैं कुछ नहीं कहता पर पीछे मुझे गम्भीरता पूर्वक स्पष्ट कर देना होगा कि उनका यह व्यवहार वहुत ही अनुचित है।

'कैप्टिन, आप तो जानते हैं कि मेरे पास सवसे पहले सुप-

रिन्टेन्डेन्ट पुलिस को · ” “कैप्टिन ब्रायन तो वेचारे यह पड़े हैं ? देखिए न ?”

“पिताजी शीघ्रता कीजिए”—उर्मिला के पास से मे ने चिल्ला-कर कहा—“जार्ज जैसा कहते हैं, वैसा ही कीजिए। हमें क्या करना चाहिए था यह आप पीछे बता सकते हैं।”

मे ने पैडल को इस तरह कार्य करते हुए कभी न देखा था। उसने एक पल में निश्चय कर लिया कि क्या करना चाहिए। होटल के नाच रंग में मस्त रहने वाले युवक और इस कर्तव्यशील “ जार्ज ” में कितना अन्तर है।

मे जब घटनास्थल पर पहुँची तो पैडल बनर्जी, ब्रायन और उर्मिला के शरीरों पर झुके हुए इस बात की जाँच कर रहे थे कि कौन मरा है और कौन जीवित है।

“अरे मे तुम भी आ गई। बड़ी मुश्किल हुई—खैर, अपने आपको शान्त रखना। उर्मिला तो केवल बेहोश हुई है। ब्रायन भी साँस ले रहे हैं, किन्तु उनकी छाती में गोली का बड़ा खतर-नाक घाव हुआ है। और वह आदमी—उसकी कलाई उड़ गयी है और सर में भी गोली लगी है। वह मर चुका है। आओ ज़रा उर्मिला को उठाने में मेरी सहायता करो। देखो उसकी देखभाल का काम तुम्हारे सुपुर्द है, उसे होश में लाने का प्रयत्न करना। समझ गईं न—तुम्हें क्या करना है ? मैं और प्रेमसिंह ब्रायन को उठाते हैं। तुम अपना काम कर सकोगी ?”

“ हाँ, जरूर। ”

मे ने दिल कड़ा करके सब कुछ देखा। बनर्जी का चेहरा आसमान की तरफ फिरा हुआ था और आँखें खुली हुई चमक रही थीं, जिनसे साफ प्रकट होता था कि उनमें जीवन लेश-

मात्र भी नहीं है। बनर्जी के पैरों पर ब्रायन सिकुड़े हुए पड़े थे। उनकी आँखे बन्द थीं पर साँस धीरे धीरे चल रही थी और ब्रायन के शरीर पर उर्मिला औंधे मुँह पड़ी थी।

उर्मिला को पैडल और मे उठाकर सड़क के किनारे ले आए और धीरे से जमीन पर लिटा दिया।

"मे अब तुम इसके पास रहो। देखो हिम्मत न हारना। जैसी परिस्थिति है, उसमे हमें अधिक से अधिक काम करना है।"

"हाँ, जार्ज जाओ। पर देखो ब्रायन का हाल जल्दी बताना।"

हरी घास पर बेसुध पड़ी हुई उर्मिला पर मे ने नजर डाली। इस असाधारण स्थिति में भी मे को यह जानने मे देर न लगी कि युवती छरहरे बदन की और सुन्दरी है। मुख, आँख नाक सभी साँचे मे ढले हुए से जान पड़ते हैं। बेहोशी मे भी उसके मुख पर कौमार्य्य का तेज झलक रहा था, किन्तु "अनुचित सम्बन्ध" की बात याद आते ही वह काँप उठी।

मे उर्मिला को होश मे लाने का प्रयत्न कर रही थी कि इसी बीच में उसे पैडल और अपने पिता की बातें सुनाई दी। अपने पिता की दिखावे और हिचकिचाहट की आदत से परिचित होने के कारण मे ने खीज कर कुछ अधैर्य्यपूर्ण आवाज मे जो कुछ कर्तव्य है, करने को कहा।

मि० ओकले जो आगे बढ़े तो वहाँ का दृश्य देखकर स्तब्ध रह गए। ब्रायन को सामने बेहोश पड़ा देखकर उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ।

"यह बड़ी भयानक, नहीं भीषण घटना है। मेरे बंगले के

कुछ ही दूर पर सरकारी अफसर को गोली मारी जाय। जरूर इस मामले मे कुछ न कुछ करना ही होगा।"

"पहली बात तो आप यह कीजिए"—पैडल ने कहा—"कि जितनी जल्दी दौड़ सकें दौडकर अपने बँगले से जाकर सिविल सर्जन, एम्बुलेंस और असिस्टेंट सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस को फोन कीजिए। ठीक है न ?"

"हाँ, अवश्य।"

और मि० ओकले दौड़े भी—उन्होने पैडल के कहे अनुसार सभी जगह सूचना दे दी। इसके बाद मेज के पास बैठ कर एक शान्ति की साँस ली कि उस भयानक दृश्य को देखने के लिए उन्हे फिर घटनास्थल पर जाने की आवश्यकता न पडेगी। जीवन मे यह पहला ही अवसर था जब मि० ओकले को वास्तविक घटनाओ का सामना करना पड़ रहा था। उनका शेष जीवन केवल रिपोर्ट और फाइलों मे बीत गया था।

उनके मन में विचार उठने लगे कि आखिर इतनी कड़ी मेहनत करके मैंने क्या किया ? मेरा काम रिपोर्ट पर रिपोर्ट देखना और गुप्त सूचनाओं के आधार पर निष्पक्ष भाव से आज्ञाएँ निकाल देने के सिवाय और कुछ भी न था। मुझ से कहा जाता कि आज्ञाओ का पालन किया गया, मैं सन्तुष्ट हो जाता। मैंने आज्ञा दी कि सभी लाइसेंस बन्द कर दिए जायँ और सभी बन्दूकें और रिवाल्वर ले लिए जायँ। रिपोर्ट मिली कि यह भी हो गया। मैं जानता था कि क्रान्तिकारी दल के लोगों का काम जोरों पर है, साल के अन्दर एक दर्जन से अधिक अफसरो की हत्याएँ हो चुकी हैं, किन्तु मैं अपने दिल को यही समझ कर ढाढ़स देता रहा कि इस जिले की हालत अन्य जगहो से

अच्छी है । मेरा विश्वास था कि मैं दृढ़ता से शासन करना जानता हूँ ।

इस घटना से मि० ओकले के आत्म-विश्वास की भावना का गहरी ठेस पहुँची । मेरे बँगले के पास ही एक सरकारी अफसर की हत्या ! तब क्या जिन रिपोर्टों पर अपने जिले के शासन के सम्बन्ध में मैं इतना विश्वास करता था, वास्तव मे ठीक न थीं ? यदि ठीक न थी—यदि ऐसा ही है तो अब तक मैं कितनी भारी गलतफहमी मे था ।

उन्होंने हाल की राजनीतिक घटनाओ पर विचार किया । ब्रायन ने मैदान मे उपद्रव रोकने के लिए मुझसे बिना पूछे ही सेना बुला ली थी, उन्होंने कचहरी के अहाते में मेरी अनुमति लिए बिना ही पंडितजी को उत्तेजित भीड के बीच भाषण करने दिया था तथा एक क्रान्तिकारी का पता लगाने के लिए अपने जीवन तक को खतरे मे डाला था । प्रत्येक बार मैंने उन्हे बुरा-भला कहा और उनके कार्यों की कड़ी आलोचना की । तब क्या ब्रायन का ही दृष्टिकोण ठीक था और मेरा गलत ?

मि० ओकले के लिए बैठा रहना अब असम्भव हो गया । मे और पैडल के सम्बन्ध मे उनकी सभी चिन्ता जाती रही । वे उत्तेजित से होकर अपने कमरे मे चहलकदमी करने लगे । अब प्रश्न यह था कि सरकार के आगे वे अपनी स्थिति किस प्रकार स्पष्ट करेंगे । उच्च अधिकारियो को वे किस तरह इस बात का विश्वास करावेंगे कि जिले मे शान्ति रहने की जो रिपोर्टें वे भेजा करते थे, सर्वथा सही ही रहती थीं ।

बाहर उन्होंने कुछ धीमी आवाजें सुनीं । देखा, कि लोग स्ट्रेचर पर ब्रायन को ला रहे है और सिविल सर्जन स्वयं उन लोगों को निर्देश करते हुए इसी तरफ आ रहे है ।

हत्या

कुछ देर बाद उर्मिला को होश आया। उसने अपनी आँखे मे के चेहरे पर गड़ा दीं। मे अभी तक नीचे झुक कर कपडे से हवा करती हुई उसे होश में लाने का प्रयत्न कर रही थी। उर्मिला के अनिंद्य सौन्दर्य्य को देख कर वह स्तब्ध रह गई। उसके ललित लोचन, जिनकी अगाध गहराई का पता लगाना आसान न था, किसी चीज को उत्सुकता से खोज रहे थे—शायद वे मे के हृदय तक पहुँचने का प्रयत्न कर रहे थे।

'अच्छी हो!"—मे ने मुसकराते हुए कहा।

"तुम्हीं मिस ओकले हो न?"

मे ने स्वीकृति-सूचक ढग से सिर हिला दिया।

"मे जरा सुनो तो—"उधर से पैडल ने चिल्ला कर कहा—"उर्मिला जैसे ही होश में आने लगे उसे ब्रायन की कार मे घर भेज दो। यहाँ से वह जितनी ही जल्दी हटाई जाय उतना ही अच्छा है।"

"क्या तुम चल सकोगी"—मे ने पूछा—"या अभी और आराम की जरूरत है।"

"नहीं मैं बिलकुल ठीक हूँ।"

मे की सहायता से उर्मिला कार मे जाकर बैठ गई और प्रेमसिंह ड्राइव करने लगा। बीच मे कोई बात नहीं हुई। बँगला पहुँचने तक उर्मिला को हालत और भी सुधर गई।'

"मेरे साथ कुछ देर के लिए ठहर सकोगी, क्यो?"

"हाँ-हाँ जरूर। मैं तो स्वय ही आ रही हूँ कि और कोई काम हो तो उसमे तुम्हारी सहायता करूँ।"

दोनो उसी जगह आकर बैठ गईं, जहाँ उर्मिला ब्रायन के साथ घोष की मृत्यु के दूसरे दिन बैठी थी। उसने अपनी कुहनी घुटने पर रखी और ठोड़ी हथेलियो पर रख कर गम्भीरता पूर्वक बोली—"मिस ओकले, हम एक दूसरे से अपरिचित हैं।"

"मुझसे मे कहो, उर्मिला।"

उर्मिला ने मे का हाथ अपने हाथ मे ले लिया और बोली—"मे इसके लिए धन्यवाद! मैं कुछ ऐसी बातें करना चाहती हूँ, जिनका तुमसे निकट का सम्बन्ध है। पर तुम बुरा न मानो तो—"

मे ने उर्मिला की तरफ देखा। उसकी आँखो मे सहानुभूति, उदारता और प्रेम की नदी उमड़ रही थी।

"कहे चलो, मैं भी स्पष्ट बातें करना पसन्द करती हूँ।"

एक घंटा भी नहीं हुआ मैं ब्रायन के साथ चाय पी रही थी। देखो मे, ब्रायन का और मेरा बचपन साथ-साथ बीता है। भाई-बहन की तरह हम एक दूसरे के साथ खेले हैं। वे मुझसे बतला चुके हैं कि उन्हो ने तुमसे अपना सम्बन्ध तोड़ लिया है, फिर भी तुम्हारे प्रति उनके हृदय मे प्रेम किञ्चित मात्र भी कम नहीं हुआ है। बल्कि अब भी वे तुम्हे जी-जान से चाहते हैं। तब ब्रायन की सहायता करने के इरादे से मैंने उनका विश्वास प्राप्त किया। वह इस तरह कि मैंने उनके प्रति अपने सच्चे प्रेम को स्वीकार कर लिया। परन्तु साथ ही मैंने उनसे यह भी स्पष्ट कर दिया कि उनके कल्याण के लिए मैं संसार का प्रत्येक कार्य कर सकती हूँ, सिवाय एक बात के और वह बात है विवाह। अपने जीवन को मैं एक दूसरे ही कार्य के लिए अर्पण कर चुकी हूँ।"

इतना सब उर्मिला एक साँस मे कह गई। किन्तु कह चुकने के बाद उसके लिए अपने भावों को रोकना कठिन हो गया। वह फफक फफक कर रोने लगी। मे यह सब देख कर चित्र लिखी सी रह गई। उर्मिला के ओठ से निकले हुए प्रत्येक शब्द को वह बड़े ध्यान से सुन रही थी।

"देखो, कुछ कहो न। मुझे जो कुछ कहना है, कह लेने दो। इसके पहले एक शब्द भी न बोलना। मैं नहीं जानती थी कि यह सब इतना कठिन होगा बस अब कुछ ही मिनट का समय लगेगा।"

मे किं-कर्तव्य-विमूढ़ सी बैठी रही।

"ब्रायन ने मुझे अपनी सब बातें बतलाई। उन्होंने मुझसे यह भी कहा कि तुम्हारी मा के कहने ही से उन्होंने यह सम्बन्ध तोड़ा है। तुम्हारी मा ने उनसे कहा कि मे पैडल से प्रेम करती है। ब्रायन ने सहज स्वभाव से उनकी बात पर विश्वास कर लिया और इस सम्बन्ध में सन्देह का जो लेश उनके मन मे रह गाय था, वह कल रात की कुंज वाली घटना से जाता रहा।"

"उस समय मैं उन्हीं की खोज तो कर रही थी।"

"यही तो मैंने भी उनसे कहा था। मैंने सलाह दी थी कि साफ साफ शब्दो में चिट्ठी लिख तुम्हारे प्रति अपने प्रेम को स्वीकार कर लें, पर उन्होंने तुम्हें कुछ कहने का अवसर तक न दिया। पर अब क्या हो—होना था सो तो हो चुका। वे तो चल बसे—ब्रायन! ब्रायन!!"

वह फिर रो पड़ी और अंतर की पीड़ा के कारण, सरोवर मे वायु के कुटिल झकोरों से टूट कर गिरे हुए कमल की तरह छट-पटाने लगी।

मे ने उसे अपनी बाहो मे ले लिया और छोटे बच्चे की तरह सान्त्वना देने लगी। उर्मिला के शान्त होने पर उसने कहा—"प्रिय उर्मिला, तुमने जो कुछ मुझे बतलाया उसका महत्व अब भी कम नहीं हुआ। आयन मरे नहीं हैं—कम से कम जब हम लोग वहाँ से रवाना हुए उस समय तो वे साँस ले ही रहे थे।"

"आयन अभी जीवित हैं!"—उर्मिला खुशी से चिल्ला उठी।

उसके शरीर मे न जाने कहाँ से बल आ गया और मे के बाहुपाश से अपने को मुक्त करती हुई बोली—"जाओ, अभी उनके पास जाओ! तुम्हे मेरे पास नहीं, उनके पास रहना चाहिए। यदि वे जीवित हो तो उनसे कह देना कि तुम उन्हीं को चाहती हो—इससे उन्हें आराम मिलेगा। मे क्षमा करना, मै बड़ी स्वार्थी हूँ।"

इसके बाद उर्मिला ने मे की कमर मे अपने हाथ डाल दिए और जबरन कमरे के बाहर लाकर उसे कार पर बैठा दिया।

× × × ×

उर्मिला और मे के जाने के बाद घटनास्थल पर सिविल सर्जन, असिस्टेंट सुपरिन्टेडेन्ट पुलिस और एम्बुलेंस वाले आ पहुँचे। पैडल को जो कुछ मालूम था, सिविल सर्जन को बतला दिया। सिविल सर्जन ने आयन के घावो को अच्छी तरह जाँच की।

जाँच समाप्त होने के बाद वे खड़े हो गए, बोले—"बाल-बाल बचे। छाती पर लटके हुए तमगे के कारण गोली दिल को छेदते छेदते जरा ही रह गयी। यह इनकी खुशनसीबी है! फिर भी दशा काफी गम्भीर है। भीतर ही भीतर खून बह रहा है। गोली को शीघ्र ही निकालना होगा। अब जरूरत इस बात की है कि यह हिलें नहीं।"

तब सिविल सर्जन ने अस्पताल वाले कर्मचारियों से कहा—"देखो, एम्बुलेंस में से एक स्ट्रेचर लेकर कैप्टिन ओकनर ब्रायन को डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के बँगले ले चलो। बहुत ही होशियारी की जरूरत है। मरीज का जीवन एक धागे में लटक रहा है, जरा सा झटका भी उनकी मृत्यु का कारण हो सकता है।"

सिविल सर्जन ने ब्रायन को स्ट्रेचर पर रखने में खुद भी सहायता दी।

बनर्जी की लाश की तरफ देखते हुए उन्होंने असिस्टेंट सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस से कहा—"स्ट्रेचर वालों के वापस आने पर इसे एम्बुलेंस में रख कर थाने ले जाइए।"

स्ट्रेचर के साथ ही साथ वे खुद भी चल दिए।

बँगले में घुसते ही उन्होंने कहा—"मि० ओकले, यह जीवन-मरण का प्रश्न है। मैं अभी आपरेशन करना चाहता हूँ।"

"हाँ-हाँ, उन्हें मेरे कमरे में ले जाइए। मैं दूसरे में चला जाता हूँ।"

ब्रायन मि० ओकले के कमरे में बिस्तरे पर धीरे से लिटा दिए गए। सिविल सर्जन ने अपने एक सहकारी को बुला लिया और कोट उतार कर जी-जान से काम में लग गए। सिविल सर्जन ब्रायन की कठिनाइयों से परिचित थे और मन ही मन उनके हृदय में पुलिस के इस युवक अफसर के प्रति सहानुभूति उदय होने लगी थी।

मि० ओकले और पैडल दूसरे कमरे में चले गए। पैडल ने कहा—"अभी मैं कुछ समय रहूँगा। शायद कार से कोई चीज लाने का काम पड़ जाय।"

"हाँ, अवश्य। आपकी तो बहुत जरूरत है। अवश्य ठहरिये।"

चुपचाप अपनी अपनी जगह पर सब बैठ गए। एक-एक मिनट घंटे-घंटे भर का हो रहा था। मि० ओकले के लिए यह नागवार गुजरने लगा। अचानक मे की याद उन्हे आ गई।

मे आ ही रही थी। पिता की उपेक्षा करके वह सीधे पैडल के पास पहुँची।

"जार्ज, कैसा हाल है ? वे हैं कहाँ ? जीवित हैं ?"

"हालत खतरनाक है। सिविल सर्जन उस कमरे में आपरेशन कर रहे हैं। धीरज धरो, मे। उर्मिला का कैसा हाल है ?"

वह तो बिलकुल ठीक है। जार्ज, तुम्हारा कहना बिलकुल सच था—"उर्मिला बड़ी ही आश्चर्य्यपूर्ण है।"

वहाँ फिर पहले की सी शान्ति छा गई। दूसरे कमरे मे सिविल सर्जन और उनके सहकारी की पदध्वनि उन्हें साफ सुनाई पडती थी। सिविल सर्जन ने जब इन लोगो के कमरे मे पदार्पण किया तो सब अपनी कुरसियो से उछल कर खड़े हो गए। उन्होंने सिर्फ धीरे से मे की तरफ इशारा किया और उसे अपने साथ लेकर पुन. आपरेशन वाले कमरे मे चले गए।

"क्या तुममे साहस है ?"—सिविल सर्जन ने पूछा।

"आयन के लिए मैं सब कुछ कर सकती हूँ। मैं उनसे प्रेम करती हूँ।"

"देखो, बात यह है कि मैंने आपरेशन करके गोली को उनकी छाती से निकाल लिया है। सब मार्मिक स्थान सुरक्षित हैं। आशका केवल यही है कि शान्त न रहने पर कहीं उनकी दिमाग की नस न फट जाय। इस समय वे बेसुध हैं और

विस्तरे पर छटपटा रहे हैं। बार-बार उनके मुँह से तुम्हारा ही नाम निकल रहा है। क्या तुम उनके पास जा कर कुछ देर रह सकती हो। इससे उन्हे शान्ति मिल सकती है। यदि शान्त हो गए तो समझ लो कि उनके प्राण बच गए। बोलो, तैयार हो ?"

मे ने सर हिला कर "हाँ" कहा।

सिविल सर्जन ने धीरे से दरवाजा खोला और मे के साथ कमरे के अन्दर प्रवेश किया। उनके सहकारी ब्रायन के सिरहाने कंधो को पकड़े हुए बैठे थे, ताकि वे हिल न सके। सिविल सर्जन के इशारे पर मे उनकी जगह पर बैठ गई। ब्रायन ने बिस्तरे से उठने का प्रयत्न किया पर मे ने उन्हे फिर धीरे से तकिए के सहारे लिटा दिया। इसके बाद उनके चेहरे के बिलकुल निकट वह अपना मुँह ले गई।

"ब्रायन, डार्लिंग—देखो मैं हूँ। तुम मुझे नहीं पहचानते ?"

ऐसा जान पड़ा मानो मे की चिरपरिचित आवाज उनके अव्यवस्थित दिमाग में प्रवेश कर गई। अपना शरीर उन्होंने निश्चेष्ट और ढीला करके विस्तरे पर छोड़ दिया।

यद्यपि मे को पहचानने का कोई लक्षण उनके चेहरे पर दिखाई न पड़ता था पर बेचैनी और हिलना-डुलना बन्द हो गया था। मे की आवाज का शान्तिपूर्ण प्रभाव उन पर पड़ रहा था।

"ब्रायन"—मे ने आवाज में और भी दृढता लाते हुए कहा।

सिर मे हलकी गति होती दिखलाई पड़ी, आँखें खुलकर उसकी तरफ मुड़ी—उनमे एक ज्योति सी चमक उठो। ओठो से निकल पडा—"मे।"

विना किसी हिचकिचाहट के मे ने जरा झुककर ब्रायन के ओठों का पूर्ण चुम्बन ले लिया।

"ब्रायन, मैं तुम्हे प्यार करती हूँ ! अच्छे होकर मुझे मिल जाओ, प्रियतम !"

ब्रायन ने अबकी बार अपने शरीर को और भी निश्चेष्ट कर दिया, शान्ति की साँस ली और तकिये पर आँख मूँद कर पड़ गए।

सिविल सर्जन चारपाई के दूसरे तरफ खड़े हुए सब कुछ देख रहे थे।

"बस अब ठीक है। मेरा विश्वास है कि यह अब शीघ्र ही अच्छे हो जायँगे। मे तुम बड़ी बहादुर लड़की हो।"

"मैं . ।"

मे के पैर लड़खड़ा गए। यदि सिविल सर्जन उसे अपने हाथों मे न ले लेते तो वह जमीन पर गिर पड़ती। एक घंटे से वह अपने साहस को सुरक्षित रखे हुए थी, किन्तु अन्त में वह उसके हाथ से जाता ही रहा।

× × × ×

कुछ ही सप्ताह के अन्दर कई परिवर्तन हो गए। बरसात के लगते ही वर्षा की जीवनदायिनी बूँदो से मनुष्य, पशु-पक्षी और पेड़-पौधो पर सर्वत्र ही शीतलता और ताजगी दिखलाई पड़ने लगी। गरमी मे जो वृक्ष धूल से लथपथ और रुग्ण से जान पड़ते थे उनमें नई पत्तियाँ निकल आईं। आकाश मे बादल छाये रहने के कारण सूर्य्य की गर्मी कम हो गई और लोगो मे नवीन उत्साह का सञ्चार होता सा जान पड़ने लगा।

ब्रायन की दशा तेजी से सुधरती जा रही थी, किन्तु अभी तक वे बहुत कमजोर थे। बिस्तरा छोड़ने की इजाजत अभी उन्हे नहीं मिली थी। मे के साथ उनका मन फिर मिल गया था

और अच्छा होते ही विवाह के पवित्र बंधन मे बँधने का उन दोनों ने निश्चय कर लिया था। उच्च अधिकारी ब्रायन की कर्तव्यशीलता और साहस से इतने प्रसन्न हुए थे कि उन्होने उन्हे छ महीने की छुट्टी देना मजूर कर लिया था।

मि० ओकले में भी बड़ा परिवर्तन हो चला था। गवर्नर से उन्हें एक तार मिला कि ब्रायन तक उनकी समवेदना का सन्देश पहुँचा दिया जाय। इसके बाद गवर्नर का एक लम्बा पत्र मि० ओकले के नाम भी आया, जिसमें जिले का शासन योग्यतापूर्वक करने के लिए उन्हें बधाई दी गई थी। मि० ओकले का आत्म-विश्वास पुन जाग्रत हो उठा।

उन्होंने मन में सोचा कि यदि मैं ब्रायन को अपने नियंत्रण में न रखता तो परिस्थिति और भी बिगड़ गई होती और फिर गवर्नर की बधाई का पात्र कोई भी न हो सकता।

उन्होंने गवर्नर के पत्र की एक प्रतिलिपि अपनी पत्नी के पास भेज दी। मिसेज़ ओकले समझ गईं कि उनके पति को तो बधाई केवल शिष्टतावश ही दी गई है, किन्तु ब्रायन का भविष्य अवश्य पहले से उज्वल हो गया है। उन्हें इस सम्बन्ध में कोई सन्देह न रह गया कि सरकार के उच्च पदाधिकारियों ने उन्हें आगे बढाने का निश्चय कर लिया है। पति के पत्र का तो उन्होंने ख्याल तक न किया, किन्तु ब्रायन को एक लम्बा और प्रेमपूर्ण पत्र लिखना वे न भूलीं।

पैडल और उर्मिला बराबर मि० ओकले के यहाँ आते रहे। चारो साथ बैठकर तरह तरह के मनोरजन और मजाक में अपना समय व्यतीत करते। कभी कभी मि० ओकले भी उन लोगों के बीच आ जाते तो घंटों तक छूटने वाले हँसी के फव्वारे

भविष्य में भी निभाती रहूँगी। परन्तु मैं अपने ही प्राणों का बलिदान करने को तैयार हूँ अन्य लोगो के प्राणों का नहीं।"

उसके रुकते ही बनर्जी बोल उठा—"अपने और दूसरो के प्राणों के बलिदान मे क्या अन्तर है, मुझे तो यह समझ मे नहीं आता। जीवन का मूल्य कुछ भी नहीं है, हमे तो केवल अपने ध्येय तक पहुँचना है।"

उर्मिला ने उत्तर दिया—"यह ठीक है कि ध्येय का प्रश्न सबसे प्रधान है, फिर भी एक अन्तर अवश्य है। अपने जीवन के साथ जो कुछ भी इच्छा हो, करने का मनुष्य को अधिकार है, किन्तु अन्य प्राणियों के जीवन को नष्ट करने का नहीं। अपने पिता को छुड़ाने के लिए भीड़ को मैंने अदालत के बाहर इकट्ठा कर लिया था। पर जब सैनिको की टोली बन्दूकें और मशीनगनें लिए निर्दोष जनता को भून डालने के लिए तैयार दिखलाई पडी तब मैं पछताने लगी कि उफ, क्या कर डाला। मैं उन लोगो को हत्या के मार्ग की तरफ बढ़ा ले गई थी। बाद मे जब निहत्थे लोगों और उनकी तरफ तनी हुई बन्दूकों के बीच पिता को खडा हुआ देखा तब कहीं मुझे जान पड़ा कि हिंसा और रक्तपात का मार्ग कितना निरर्थक है। मेरे पिता के विचार बिलकुल सही हैं। हिंसात्मक उपायों से स्वतंत्रता-प्राप्ति का कार्य पीढियो के लिये टल जायगा। उपद्रव और उग्र उपायों का परिणाम यही हो सकता है कि देश में खून की नदियाँ बह निकलें और अव्यवस्था फैल जाय। इसकी अपेक्षा धीरे धीरे ध्येय की तरफ बढ़ने का मार्ग कहीं उत्तम है और इसी से देश को स्वतंत्रता और शान्ति की प्राप्ति हो सकती है।"

बनर्जी ने कहा—"आप के विचारों मे परिवर्तन हो गया है। शायद आप आयर्लैंड के उदाहरण को भी भूल गई हैं।

आयर्लैंड को दस वर्ष मे बलप्रयोग के द्वारा वह चीज प्राप्त हो गई जो उसे वैध आन्दोलन द्वारा सौ से भी अधिक सालों मे प्राप्त न हुई थी।"

"मेरे ख्याल में आप गलती पर हैं।"—उर्मिला बोली—"यदि आयर्लैंड कुछ धैर्य्य रखता तो वही चीज उसे बगैर रक्तपात के भी मिल सकती थी। इसके अलावा, भारत और आयर्लैंड की तुलना नहीं हो सकती। आयर्लैंड की ९० प्रतिशत जनता शिक्षित है, भारत की दस प्रतिशत भी नहीं। आयर्लैंड पश्चिम के लोकतन्त्रवादी वातावरण में रहा है, भारत पूर्वीय एकछत्र शासन का आदी है। इस समय क्रान्ति की सफलता का परिणाम यह होगा कि वर्तमान स्वेच्छाचारी शासन हट कर एक दूसरे वैसे ही शासन की स्थापना हो जायगी और यह स्पष्ट है कि स्वाधीनता तथा स्वेच्छाचार दोनों एक साथ नहीं रह सकते।"

"तब आपने हमारे साथ न रहने का निश्चय कर लिया है ?"

"हाँ, निश्चित रूप से।"

"परन्तु अभी तक आपने विचार-परिवर्तन के सच्चे कारण नहीं बतलाए हैं।"

"आपका मतलब क्या है ?"—उर्मिला ने कुछ कड़ाई के साथ कहा।

"वास्तविक कारण हैं कैप्टिन ब्रायन ओकोनर। आप उन्हे प्यार करती हैं।"

उर्मिला की आँखो से आग की चिनगारियाँ निकलने लगीं, वह खड़ी होकर बोली—"कायर! नीच! जीवन भर मे तुमसे घृणा करती रहूँगी। घोष, क्या तुम मुझे इस तरह अपमानित होते देख कर चुप रहोगे ?"

घोष अपने स्थान वैठा छटपटा रहा था। एक बार ऐसा जान पडा कि वह उठेगा किन्तु दूसरे ही क्षण सँभल कर वैठ गया और वडी दयनीय अवस्था मे हाथ मींजने लगा।

वनर्जी ने ताने के साथ कहा—"उन्हे पहले ही सवक मिल चुका है।"

उर्मिला ने घोष की तरफ देखा—उसकी आँखें जमीन की तरफ लगी हुई थीं। तव उसने मुशीजी को दरवाजा खोलने की आज्ञा दी।

"मुंशीजी मेरी आज्ञा मानते हैं"—वीच ही मे वनर्जी ने कहा—"जव तक मैं न कहूँगा, वे दरवाजा न खोलेंगे।"

उर्मिला ने फिर मुशीजी की तरफ देखा, उन्होंने हाथ फैला कर इगित किया कि वे विलकुल असमर्थ हैं।

उर्मिला वड़ी हिम्मत वाली युवती थी। वह समझ गई कि इस समय वह पूरी तरह वनर्जी के कब्जे में है। वह यह भी जानती थी कि वनर्जी अपने इरादे का पक्का और कितना निर्दय है। इसलिये अपने स्थान पर वह पुन: वैठ गई और कुछ ही देर में उसकी मुद्रा से क्रोध के चिह्न भी मिट गए। कुछ देर वाद वह शान्त और संयत स्वर मे वोली—"मैं त्रायन से प्रेम करती हूँ। वात यह है कि वचपन में हम एक दूसरे के सम्पर्क मे रह चुके है। पहले मेरा ख्याल था कि उनसे मेरा केवल भाईचारे का प्रेम है, किन्तु आज तुम्हारे अपमानजनक प्रश्न ने स्वयं मुझ पर भी यह प्रकट कर दिया कि मैं उनसे वास्तव मे प्रेम करती हूँ—और मेरा यह प्रेम एक साधारण व्यक्ति के प्रति नहीं वल्कि एक ऐसे व्यक्ति के प्रति है, जिसे अपने विचारो के अनुसार कार्य करने का साहस है, जो लड़ता है तो खुल कर लड़ता है और जिसे धोखेवाजी और

कायरता के प्रति हृदय से घृणा है। और घोष! तुमसे मुझे बहुत कुछ आशा थी पर तुम भी वनर्जी के सत्यानाशी प्रभाव मे आ गए हो, जिसे किसी जमाने में मैं उच्चाशय और उत्साही युवक के रूप मे जानती थी किन्तु आज वह नीच और कायर हो गया है।"

उर्मिला का प्रत्येक शब्द वनर्जी को कोड़े की मार के समान लगा। वह कुछ कहने ही वाला था कि उर्मिला ने हाथ का इशारा करके उसे चुप कर दिया और बोली—"यह मै मानती हूँ कि अभी कुछ समय पहले तक इस दल मे सम्मिलित होने का मै विचार रखती थी। पर अब ऐसा न करने के लिये ईश्वर को धन्यवाद दे रही हूँ। मुझे तुम्हारी कितनी ही बातो की जानकारी है इसी लिए अपने मार्ग से मुझे काँटे के समान हटा देने का तुम्हारा विचार भी उचित ही है। मै तुम्हे किसी बात का वचन नहीं देती और तुम जो भी कुछ करना चाहो कर सकते हो। मेरा भी जहाँ तक वश चलेगा हिंसात्मक कार्यों को वन्द करने के लिये प्रयत्न करती रहूँगी। अब वतलाइये आप लोग क्या करना चाहते हैं?"

वनर्जी ने मुंशीजी से चाभियाँ ले ली और कमरे के दरवाजे का ताला खोल कर उर्मिला को अपने पीछे आने का इशारा किया। यह लोग एक अँधेरे रास्ते से वाहर की तरफ चले। वनर्जी ने निकलते समय कमरे का ताला वाहर से वन्द कर दिया और वाहरी दरवाजे के ताले मे चाभी लगा दी और खोलने के पहले वह उर्मिला से वोला—"इस वक्त तुम मेरे कब्जे मे हो। पर इस स्थिति मे रख कर मैं तुमसे कोई अनुचित व्यवहार नहीं करना चाहता, मैं केवल कुछ वातें सुनने के लिए तुम्हे वाध्य करना चाहता हूँ।"

वनर्जी का हाथ अभी तक ताले की कुन्जी पर था और उर्मिला उससे कुछ पीछे दीवार के सहारे खड़ी हुई थी।

"पहली वात तो यह है कि अपने अपमानजनक व्यवहार के लिए मैं तुमसे माफी चाहता हूँ। मेरा यह व्यवहार सर्वथा अनुचित था। इसकी सफाई मे मैं केवल यही कह सकता हूँ कि मैं तुम्हे प्रेम करता हूँ—उस समय से जब कि मैंने तुम्हे पहले पहल लंदन में देखा था।"

उर्मिला चौंक उठी और दरवाज़े की तरफ जाने को उद्यत हुई, किन्तु वनर्जी ने कहा—"तुम शायद सोचती होगी कि मैं फिर तुम्हारा अपमान कर रहा हूँ। तुम्हारा अपमान करने का इरादा मेरा कभी नहीं हुआ और न कभी भविष्य ही मे तुम्हे इस ख्याल से चिन्तित होना चाहिए कि किसी भी तरह का नुक-सान मेरे द्वारा तुम्हे पहुँच सकता है। तुम मेरे प्रति घृणा प्रकट कर चुकी हो किन्तु उस पर भी मैंने विश्वास नहीं किया है।"

एकाएक वनर्जी का चेहरा तमतमा उठा और वह ज़रा जोर से कहने लगा—"तुम जानती हो कि शपथ लेकर देश की स्वाधीनता के लिए उद्योग करते रहना मे अपना एकमात्र कर्तव्य निर्धारित कर चुका हूँ। ससार में ऐसी कोई भी शक्ति, कोई भी चीज़ नहीं जो मुझे इस मार्ग से विचिलित कर सके।"

अव उर्मिला की घवराहट कुछ कम हो गई और वह अधिक ध्यान से वनर्जी की वातें सुनने लगी।

"तुमने मुझे कायर कहा है। हमारी परिस्थिति इतनी प्रतिकूल है कि जिन उपायो का हमें अवलम्वन करना पड़ता है, उन्हे वीरतापूर्ण नहीं कहा जा सकता। दूसरे मेरा काम तो सिर्फ आज्ञा पालन है, यदि आज्ञा कभी मैदान मे आकर लड़ने की हुई तो उस मे भी मैं कभी आगापाछा न सोचूँगा। तुमने इस वात का भी इशारा किया है कि मैं तुम्हे नुकसान पहुचाने का प्रयत्न करूँगा। तुम मुझसे घृणा करती हो यह विचार निस्सन्देह

मैं सहन नहीं कर सकता। मेरे हाथों तुम्हारा बाल भी बाँका हो, तुम्हारा यह सोचना ही मेरे हृदय के टुकड़े टुकड़े करने के लिए काफी है। पिछले अपमान के लिए मैं तुमसे माफी माँग चुका हूँ और इस समय तुम्हे यह सब सुनने के लिए मैंने जो बाध्य किया है उसके लिए भी मैं क्षमा का प्रार्थी हूँ। अब तुम जा सकती हो, पर यह याद रखना कि जो कुछ भी करना चाहो उसके लिए तुम सदा स्वतंत्र हो। नमस्ते, भगवान करे तुम उतने ही सुख से रहो, जितना कि मैं तुम्हारे लिए चाहता हूँ। उस समय तुम्हे पता लगेगा कि वास्तविक सुख क्या होता है।"

बनर्जी ने दरवाजा खोल दिया। उर्मिला खुले हुए दरवाज़े की तरफ बढ़ी और फिर कुछ झिझक कर ठहर गयी। प्रात काल की शीतल वायु उस समय बह निकली थी और उसमे उर्मिला की सुन्दर साड़ी फहरा रही थी। पूर्व की तरफ क्षितिज में उषा की लाली फैलने लगी थी। यह समय वास्तव में शान्ति और सद्-भावना का था। चारों तरफ पेड़ की पत्तियों की खड़ाखड़ाहट तथा चिड़ियों के मधुर कलरव का संगीत व्याप्त था।

"उर्मिला"—बनर्जी ने मीठी आवाज मे उसके कान के पास अपना मुँह करके कहा—"अन्तिम अनुरोध करने को मेरी हिम्मत नहीं हो रही है। देखो, भविष्य में चाहे कुछ भी हो तुम कोई कार्य केवल मेरे प्रति ईर्षा या द्वेष के भाव से न करना।"

उर्मिला इस तरह खड़ी हुई थी मानो उसने कुछ सुना ही न हो। अभी जिस उत्तेजनामय वातावरण में वह रह चुकी थी, उसकी प्रतिक्रिया का अनुभव उसे हो रहा था। उसका मन व्यथा के सागर मे डूब गया। वह सोचने लगी क्या बनर्जी के प्रति उसने अन्याय नहीं किया? कुछ भी हो—बनर्जी ने अपने उज्ज्वल भविष्य का क्या देश के लिए उत्सर्ग नहीं कर दिया?

जीवन मे मनुष्य का क्या कर्तव्य है इस सम्बन्ध मे लोगों के अपने अलग अलग दृष्टिकोण होते हैं। किसी को क्या करना चाहिये और क्या नहीं इस सम्बन्ध में मुझे किसी को वाध्य करने का अधिकार ही क्या है ? क्या वह अब तक कर्तव्य पथ से विचिलित नहीं रही है ? वनर्जी चाहे गलत ही हो, फिर भी सच्चा है, जो कुछ वह कहता है वही करता है। और मैं ?—क्या में भी सच्ची हूँ, क्या मेरा दिल भी उसी की तरह साफ है ?

उर्मिला की आँखों में आँसू भर आये। उसने वडी वेवसी से हाथ आगे की तरफ वढ़ा दिया—"वनर्जी, मुझे क्षमा करो।"

वनर्जी ने उर्मिला के उस वढ़े हुए हाथ को अपने दोनों हाथों मे लेकर माथे से लगा लिया, जैसी कोई अपने आराध्य देव की आराधना करता है।

इसके वाद उसने दरवाजा भीतर से वन्द कर लिया और दीवार पर जिस स्थान से टिक कर उर्मिला खड़ी हुई थी उसके आगे अपने हाथों पर सिर रख कर फफक फफक कर वच्चे की तरह रोने लगा।

"मेरी मातृभूमि—देश ! अव सहन नहीं होता, इस व्यथा को कैसे सहूँ ? परन्तु—मैंने जो शपथ ली है उसे किसी तरह मैं भंग नहीं कर सकता।"

भीतरी कमरे के दरवाजे पर लोगों के खटखटाने की आवाज से उसे अपनी स्थिति का ज्ञान हुआ।

रिहर्सल

बनर्जी के मन मे भावुकता का जो तूफान आया था वह भीतर वाले कमरे के दरवाजे की खटखटाहट से एकाएक शान्त हो गया और वह उसे खोलने के लिए पीछे की तरफ चल पडा। ऐसा जान पड़ता था कि भीतर से कोई लातों और घूँसों से किवाड़ों पर लगातार वार कर रहा है। यह वार इतने जोरों के थे कि किसी भी तरह की आवाज़ यदि होती तो बनर्जी को सुनाई न देती।

बनर्जी ने दरवाज़ा खोला तो उसे विचित्र दृश्य दिखलाई दिया। घोष और बनर्जी बहुत ही उत्तेजित अवस्था मे दरवाज़े के पास खडे हुए थे। मुँशी जी अपने जिस हाथ का वार दरवाज़े पर कर रहे थे, वह बुरी तरह लोहू लुहान हो गया था। घोष हाँफ रहा था।

बनर्जी ने भीतर घुसते ही दरवाज़ा बन्द कर दिया। मुँशी जी पीछे से उस पर टूट पड़े और उसके कंधे को झकझोरने का निष्फल प्रयत्न करते हुए कहा—"जल्दी बतलाओ, उर्मिला कहाँ है? जहाँ तक उर्मिला का सम्बन्ध है, मैं दल में प्रवेश करते समय ली गई शपथ का भी कुछ ख्याल न करूँगा। यदि उर्मिला का बाल भी बाँका हुआ तो तुम्हारी जान की खैर नहीं।"

मुंशी जी ने एक बार फिर बनर्जी से जूझने का असफल प्रयत्न किया। घोष ने भी नज़दीक आकर कहा—"हाँ, यदि उर्मिला को कुछ भी हुआ तो आज तुम्हारी लाश तड़पती ही दिखलाई देगी।"

बनर्जी ने मुंशीजी के काँपते हुए हाथों को धीरे से अपने

कंधे से हटाया और उन्हें अपने स्थान पर बैठा दिया। घोष किंकर्त्तव्यविमूढ सा उसके पीछे खड़ा था। वनर्जी ने पीछे मुड़ कर उसके कंधे पर अपना हाथ रख दिया और शान्त स्वर से बोला—"घोष, तुम जानते हो कि मैं चाहे जो कुछ भी करूँ, झूठ न बोलूँगा"

घोष ने स्वीकृति सूचक सर हिला दिया।

"अच्छा, तब बैठ कर सुनो मैंने क्या किया है।"

घोष बैठ गया। अभी तक उत्तेजना के कारण उसका अङ्ग-प्रत्यंग काँप रहा था। उर्मिला के लिए वह सभी कुछ निछावर करने को तैयार था। उर्मिला ने वनर्जी के दल में सम्मिलित न होने के सम्बन्ध में जो कारण बतलाये थे उनकी वजह से भी वह बहुत प्रभावित हो चुका था। वनर्जी जानता था कि घोष उसे बहुत काम दे सकता है इसलिए वह उसे कम से कम नाराज़ तो नहीं करना चाहता था।

मुंशीजी और घोष मेज़ के एक तरफ बैठे हुए थे। वनर्जी घूम कर उनके सामने आकर बैठ गया और जरा झुक कर इस तरह नपी तुली आवाज़ में अपने कार्य का विवरण देने लगा, कि सुनने वालों पर पूरा प्रभाव पड़े।

"उर्मिला के साथ मैंने पहली बात तो यह की कि उससे अपने व्यवहार के लिए माफ़ी माँगी। मेरी यह क्षमा याचना हार्दिक थी, क्योंकि मैं उसे प्रेम करता हूँ।"

घोष और मुंशीजी वनर्जी की यह बात सुन कर कुछ परेशानी की हालत में अपनी जगह पर छटपटाते हुए उसकी तरफ देखने लगे।

वनर्जी ने इसके उत्तर में अपनी शान्त और स्थिर दृष्टि एक

चण के लिये दोनों पर डाली और बोला—"दूसरी बात मैंने जो की है उसके लिए घोष, मुझे तुमसे माफी माँगना है। अपने कमरे में मैंने तुमसे कहा था कि उर्मिला को मेरी जबानी यह कभी न मालूम होगा कि मैं उसे प्रेम करता हूँ, आज मैंने उस पर यह प्रकट कर ही दिया। परन्तु साथ ही मैंने उसे यह भी जता दिया कि इस सम्बन्ध में उसे चिन्तित होने की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि मैंने अपना सम्पूर्ण जीवन, अपनी सम्पूर्ण शक्ति मातृभूमि के लिये लगाने का निश्चय कर लिया है। इस हालत में उर्मिला के प्रति अपना प्रेम स्वीकार कर लेने पर भी मेरा वचन भङ्ग हो सकने की कोई सम्भावना नहीं है, क्योंकि तुम्हारे सामने ही वह अभी कुछ देर पहले मेरे प्रति घृणा प्रकट कर चुकी है।"

वनर्जी फिर कुछ भावावेश में आ गया। जैसे था उसी तरह बैठे हुए उसने मुट्ठी बाँध ली और कहने लगा—"मैंने उससे अपना प्रेम यह विश्वास दिलाने के लिए प्रकट किया है कि उसकी मेरे या दल के प्रति कुछ भी जिम्मेदारी नहीं है और वह स्वच्छन्दतापूर्वक जो कुछ भी करना चाहे करने को स्वतन्त्र है। मैं उसे यह विश्वास दिलाना चाहता था कि कम से कम मुझसे उसे कोई भी हानि पहुँचने की आशङ्का न होनी चाहिये। उर्मिला अब अपने बँगला सकुशल वापस चली गयी है।"

वनर्जी के शब्दों मे सच्चाई की ध्वनि इतनी स्पष्ट थी कि मुंशी जी को अपनी गलती महसूस होने लगी और वे सजल नयन होकर बोले—"मुझे माफ करो, शायद तुम नहीं जानते कि उर्मिला को मैं जीवन भर अपनी पुत्री के समान प्यार करता आया हूँ।"

अब वनर्जी घोष की तरफ देख कर बोला—"घोष, तुम क्या कहते हो ?"

घोष बड़ी दुविधा मे पड़ा हुआ था। वनर्जी के प्रति यद्यपि उसका विश्वास वहुत अधिक था, पर साथ ही उर्मिला के विचारों ने भी उसे काफी प्रभावित किया था। क्या उर्मिला का ही कथन उचित है, वनर्जी का नहीं ? दोनो के हृदय में मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम है, उसके लिये दोनो ही अपने जीवन का दान करने को तैयार हैं किन्तु अपने अपने ढङ्ग से। वनर्जी ने घोष के आन्तरिक संघर्ष का पता पा लिया और उसे समाप्त करने की एक नयी तदवीर निकाली। हाथ आगे वढा कर उसने कहा—"घोष, मैं दो वार सच्चे हृदय से क्षमा माँग चुका हूँ। क्या तुम अव भी मुझसे हाथ मिलाने को तैयार नहीं हो ?"

घोष ने वनर्जी से हाथ मिलाया। वनर्जी उसके हाथ को आग्रह से अपने हाथ मे लिये रहा और बोला—"तुम उर्मिला को चाहते हो ?"

"चाहता हूँ"—उसने उत्तर दिया।

"तुम अपने देश को प्रेम करते हो ?"

घोष ने स्वीकृति सर हिला कर प्रकट की।

"मुझ पर विश्वास करते हो ?"

वनर्जी ने प्रश्न के साथ ही, घोष के हाथ पर कुछ अधिक दवाव डाला। घोष वनर्जी की तरफ देखने लगा। वेचारा उसके प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व के आगे सिर झुका लेने के सिवाय और कर ही क्या सकता था ?

"करता हूँ"—घोष के मुँह से निकल पड़ा और उसने वनर्जी के हाथ को कुछ दवा दिया।

वनर्जी बोला—"ठीक है। तव आओ हम लोग रात का काम पूरा करें।"

जब यह लोग अहाते के बाहर निकले तो कुछ रोशनी हो चुकी थी। पशु-पक्षियों के जागने के चिह्न रह रह कर प्रकट हो रहे थे। कहीं कहीं कोई बैलगाड़ी भी शहर की तरफ जाती हुई मिल जाती थी।

बनर्जी और घोष जिस मार्ग से आये थे उसी पर शीघ्रता से चलकर पोलो खेलने के मैदान के पास पहुँच गए, जहाँ से कि सडक बाईं तरफ मुड़ कर कालेज और सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस के बँगले की ओर जाती थी।

बनर्जी पोलो के मैदान के दूसरे छोर पर स्थित जगल की तरफ मुड़ गया। लगभग दस या पन्द्रह कदम आगे चलने के बाद वह एकाएक घूमकर खडा हो गया। इस स्थान से कालेज को जाने वाली सड़क का पूरा हिस्सा उन्हे साफ दिखलाई पड़ता था। पोलो खेलने का मैदान भी उनकी नजर के आगे था, पर उन्हे कहीं से भी कोई देख न सकता था।

"तुम्हें दल के प्रधान की आज्ञा मालूम है?'—बनर्जी ने पूछा।

"प्रधान की आज्ञा?"—कुछ आश्चर्य्य से घोष ने पूछा। वह यद्यपि शरीर से पूर्ण स्वस्थ था फिर भी थकावट का अनुभव करने लगा था। ऐसा जान पड़ने लगा कि रात को उसको बनर्जी से जो बातें हुई थीं, उन्हें एक युग बीत गया। बनर्जी से उसका द्वन्द्व, प्रिन्सपल का आगमन और उर्मिला से बातचीत—यह सभी दृश्य उसके मस्तिष्क में एक एक करके आ गए। बिना किसी इच्छा के उसके हाथ माथे की तरफ उठ गए और वह वास्तविक परिस्थिति को जानने का प्रयत्न करने लगा।

"घोष जल्दी करो"—बनर्जी ने कहा—"हमारे पास अब बहुत

ही कम समय रह गया है। तुम अपने वचन पर दृढ़ रहोगे न, बतलाओ ?"

घोष को याद आई कि उसने कैप्टिन ब्रायन ओकोनर की हत्या में योग देना स्वीकार कर लिया है। दूसरे ही क्षण उसके मस्तिष्क मे यह बात सोचकर द्वन्द्व छिड़ गया कि उर्मिला ने हिंसा और खूनखराबी को घृणित कार्य बतलाया था। फिर इस विचार से कि उर्मिला मि० ओकोनर से प्रेम करती है, उसका शरीर ईर्षाग्नि से जलने लगा। आपने जलते हुए माथे से हाथ उठाकर उसने दाँत पीसते हुए बनर्जी से कहा—"मैं अपने वचन पर दृढ हूँ। इसी समय या जब कहो मैं आज्ञा-पालन के लिए तैयार हूँ।"

"अच्छा, तब सुनो"—हमें मि० ओकोनर को पन्द्रह तारीख तक अपने मार्ग से हटाना है। आयोजना इस तरह है। तेरह तारीख को लालाजी अपने पुत्र के विवाह के उपलक्ष्य मे दावत दे रहे हैं। ब्रायन उस दावत में जा रहे हैं। यूरोपियनों में केवल उन्होंने निमंत्रण स्वीकार किया है। अन्य सभी मेहमान शहर से आवेंगे और तुरन्त वापस चले जायँगे। देखो, यहाँ से हमे लालाजी के बँगले से आने वाली सड़क साफ दिखलाई पड़ती है। दावत रात को ११ और १२ बजे के बीच मे समाप्त हो जायगी। इस सड़क पर उस समय केवल सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस की कार ही निकलेगी। यहाँ तक मामला बिलकुल साफ है, क्यो न ?

"हाँ, बिलकुल साफ"—घोष ने कहा।

तब बनर्जी कहने लगा—"लगभग साढ़े दस बजे मैं और तुम यहीं इसी स्थान पर आकर बैठ जायँगे ताकि देरी होने की आशंका न रहे। जैसे कि कार की रोशनी दूरी पर दिखलाई दे

तुम दौड़कर सड़क के मध्य मे जाकर लेट रहना । जब कार की रोशनी अपने शरीर पर पड़ती हुई जान पडने लगे तब तुम्हे जोर से कराहते हुए छटपटाना आरम्भ कर देना चाहिये । शायद अपनी कार को सड़क के मोड़ पर घुमाने के लिए धीमी करेंगे और तब तुम उन्हे अवश्य दिखलाई दोगे । एकाएक ब्रेक लगाकर वे कार रोक देंगे और यह देखने के लिए कि क्या पडा है नीचे उतरेंगे । तब तक तुम चुपचाप पड़े रहना किन्तु जब वे देखने के लिये नीचे झुकें उनपर तुरन्त गोली चला देना । यदि गोली मुँह, नाक, कान या माथे मे लगे तो अधिक अच्छा है, क्योंकि शरीर के बाकी हिस्से में गोली लगने से मृत्यु अवश्यम्भावी नहीं होती ।"

"परन्तु जो आदमी उनके साथ साया की तरह हमेशा साथ रहता है उसके सम्बन्ध में क्या सोचा है ।"—घोष ने कहा ।

"इस बात का जिम्मा मैं लेता हूँ कि रात तक वह व्यक्ति बिलकुल ही बेकाम कर दिया जायगा । ओकोनर के बँगले और लालाजी के मकान के बीच फासला बहुत कम है इसलिए वे अकेले ही कार लेकर निकल पड़ेंगे । आओ, हम लोग रिहर्सल कर लें ।"

उस समय आकाश मे तारे छिप चुके थे और उषा की लाली के स्थान पर आकाश का नीलापन साफ दिखलाई देने लगा था । प्रात काल की शीतल वायु इतनी मन्द गति से चल रही थी कि सूर्य्य की तीक्ष्ण किरणों से मुरझायी हुई पत्तियाँ भी नहीं हिलती थीं । बनर्जी और घोष सडक की तरफ आगे बढने ही वाले थे कि एक खरगोश, जो अब तक उनके डर से छिपा हुआ था, पास की झाडी से निकलकर घने जगल मे छिप गया ।

वनर्जी वहीं एक झाड़ी के पीछे हो रहा और घोष सड़क की तरफ चल दिया। सड़क के मध्य में जाकर वह लेटने ही वाला था कि वनर्जी ने इशारे से उसे वापस बुला लिया और जब वह वनर्जी के पास पहुँचा तब इसे उसका कारण ज्ञात हुआ। बात यह थी कि जिस जगह वे छिपे हुए थे उसी दिशा में पोलो खेलने के मैदान मे एक घुड़सवार दौड़ता हुआ चला आ रहा था। बिलकुल निकट आकर घुड़सवार मुड़ गया और मैदान की दूसरी तरफ चला गया। कैप्टिन ग्रायन ओकोनर अपने घोड़े को पोलो का अभ्यास करा रहे थे। इसी समय एक और आश्चर्य्य की बात हुई। कार का हार्न सुनाई देने पर उन्होंने जो पीछे देखा तो ज्ञात हुआ कि अपनी टू-सीटर कार मे उर्मिला चली आ रही है। मोटर मोड़ के पास धीमी हुई और पोलो का मैदान जहाँ आरम्भ होता था, वहीं आकर ठहर गयी।

वनर्जी से विदा होकर उर्मिला सीधे अपने कमरे में चली गई, किन्तु उसे नींद बिलकुल नहीं आई। उसे वह दिन याद आया जब लंदन मे वह वनर्जी से पहली बार मिली थी। बाद मे उन लोगो में जो बातें होती थीं वे भी एक एक करके उसके स्मृति पटल पर नाचने लगीं। उस समय दोनों के हृदयों में जवानी का जोश उमड़ रहा था और दोनों ही देश के लिए पागल हो रहे थे। वैध आन्दोलन की धीमी प्रगति से असन्तुष्ट होने के कारण उनका जी ऊब उठा था, क्योंकि उससे केवल आंशिक सफलता की ही सम्भावना दिखलाई पड़ती थी। वनर्जी कहा करता कि पशुबल का मुकाबला पशुबल ही से किया जा सकता है। जो चीज बलपूर्वक छीनी गयी है उसे केवल बलपूर्वक ही प्राप्त किया जा सकता है।

परन्तु उर्मिला और वनर्जी दोनों के विचार मे एक बहुत बड़ा

मतभेद भी था। उर्मिला पशुबल के प्रयोग की कल्पना केवल लड़ाई के मैदान ही में कर सकती थी। वह कहा करती थी राजपूताने की प्राचीन वीरांगनाओ की तरह मै अपनी जान स्वदेश की रक्षा के लिये दे सकती हूँ। हथियारो की खनखनाहट के बीच लड़ाई के मैदान में बहादुरी दिखलाना तो ठीक भी है परन्तु निरस्त्र भीड़ पर गोली चला देने या शत्रुओ की गुप्त रूप से हत्या करने के विचार मात्र से उसका दिल कॉप उठता था। परन्तु बनर्जी पशुबल से भी भयभीत न होता था।

उर्मिला पर बनर्जी के प्रेम प्रकट करने का भी बहुत प्रभाव पड़ा था और उसके प्रति उसके हृदय में सहानुभूति भी उमड आई थी। बनर्जी के संयम और उसके द्वारा खुले दिल से माफी मॉगने की भी वह हृदय से सराहना करने लगी थी। इसके बाद ब्रायन ओकोनर के प्रति अपने प्रेम की स्वीकारोक्ति की याद आ जाने से उसका मुँह लज्जा से लाल हो उठा। उसे बचपन के वे दिन याद आये जब वह उन के साथ खेला करती थी। इसके बाद जहाज़ पर दुबारा भेंट और पिता की गिरफ़्तारी के समय उनका सौजन्य और विनम्रता की याद आने के कारण उसका हृदय कृतज्ञता से भर गया। अन्त में बनर्जी के यह शब्द कि भविष्य में चाहे कुछ भी हो तुम केवल व्यक्तिगत स्वार्थ या द्वेप के वशीभूत होकर कोई काम न करना भी उसे याद आये और एकाएक वह चौंक पडी।

क्या ब्रायन की जान खतरे मे है? यदि ऐसा है तो उन्हे इसकी चेतावनी अवश्य मिलनी चाहिये। पर वे मिलेंगे कहाँ? उसे याद आया कि कभी कभी पोलो के मैदान में प्रात काल वे दिखलाई पडते है और वह तुरन्त अपनी टू-सीटर कार मे बैठ कर उनसे मिलने चल दी।

उर्मिला ने कार से हाथ का इशारा किया। आयन घोडा कुदाते हुये उसके पास आगये। उसे पहचानते ही उनका चेहरा खिल उठा—"अरे उर्मिला ? तुम तो आज चिड़ियो के साथ उठी हो।"

वनर्जी और घोष को सुनाई न दिया कि उर्मिला ने उत्तर मे क्या कहा परन्तु झाड़ी के पीछे से ओकोनर की मुख मुद्रा गंभीर होते उन्हे अवश्य दिखलाई दी। इसके बाद घोड़े से उतर कर वे उर्मिला के वगल में कार पर बैठ गये और घोडे को सईस के सुपुर्द कर दिया।

उर्मिला ने कार कालेज की तरफ मोड़ दी। वनर्जी और घोष ने देखा कि वह सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस के बँगले पर जाकर खडी हो गई।

तब दोनो व्यक्ति कपड़ो से पत्ते और कॉटे झाड़ते हुए खडे हो गये। इस बीच मे घोष बड़ाही सतर्क हो गया था, किन्तु वह यह नहीं कह सकता था कि अब किया क्या जाय ? घोष कातर भाव से वनर्जी की तरफ देखने लगा।

वनर्जी ने कहा—"मेरे ख्याल मे अब हमे रिहर्सल की जरूरत नहीं है। लाला जी के बॅगले से आती हुई कार तुम्हे अवश्य दिखलाई पड़ेगी और यदि दिमाग ठीक रखोगे तो निशाना भी न चूकेगा। याद रखना कि मैं तुमसे कुछ ही कदम की दूरीपर रहूँगा।

"क्या अब भी अपनी योजना के अनुसार कार्य करने का है ? उर्मिला सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस से सब बातें वतला देगी।"

"देखो मूर्खता न करो"—वनर्जी ने उत्तर दिया—"इस समय क्या हो रहा है, यह भी मैं तुम्हे वतला सकता हूँ। उर्मिला और

ओकोनर बँगले के वरामदे में बैठे हुये चाय पी रहे होंगे। उर्मिला बतला रही होगी कि उनके जीवन का खतरा है। उर्मिला से बातें करते समय उससे मैंने कुछ ऐसी बातें अवश्य कह दी थी जो न कहना चाहिये था, उस समय मैंने अपना संयम खो दिया था। परन्तु मि० ओकोनर ब्रायन बड़े सज्जन और बहादुर व्यक्ति हैं। वे कहेंगे कि जीवन तो सदा ही खतरे मे रहता हैं, इसलिये अपनी रक्षा के लिये मैं साधारण तौर पर सतर्क रहता ही हूँ। वे उर्मिला से उसकी सब बाते जानने का प्रयत्न कभी न करेंगे और न उर्मिला ही हमारे साथ कभी विश्वासघात करेगी। अब हमारे लिये केवल हत्या के बाद का प्रबंध करना ही शेष रह गया है।"

"बाद" शब्द से घोष एक बार फिर चौंक पड़ा। उसे अब निश्चय हो गया कि अगले ४८ घटे के अन्दर उसे कैप्टिन ब्रायन ओकोनर की हत्या अवश्य करनी है। क्षणिक जोश के अन्दर बातें करने और इरादा करके हाथ रङ्गने में बहुत अन्तर है। पोलो के मैदान में घोष ने जब ब्रायन को चतुराई से जहाँ तहाँ घोड़ा मोड़ते देखा तो उसके हृदय मे उनके प्रति प्रशसा की भावना फिर एक बार भर गयी। यहाँ तक कि उन्हें उर्मिला की तरफ घोड़ा दौड़ाते और उसके साथ कार मे बैठ कर जाते देख कर भी उसके हृदय मे द्वेष की भावना जाग्रत नहीं हुई। उसने सोचा कि उनकी जगह अगर मैं होता तो मैं भी यही करता। कम से कम बनर्जी ने यह तो स्वीकार कर ही लिया है कि वे बडे सज्जन और वीर हैं।

बनर्जी गहरा सोच-विचार करने मे लगा हुआ था। एकाएक उसने घोष से पूछा "अच्छा, तो कल तुम्हारा हाकी मैच ठीक रहा।"

घोष हैरत में रह गया, हाकी मैच और हत्या एक ही दिन!

आखिर बनर्जी का मतलब क्या है ? परन्तु बनर्जी ने उसे अधिक देर इस दुविधा मे न रखा।

"कालेज मे या पुलिस लाइन्स मे, कहीं भी मैच हो ? इससे क्या ? पर हमारी ग्राउन्ड पर मैच होने मे यह सुविधा रहेगी कि तुम्हे थोड़ी ही दूर ले जाना पड़ेगा।"

"तुम्हारा मतलब क्या है।"—घोष ने बात काट कर पूछा।

'मैच में खेलते खेलते तुम्हे घुटने या एड़ी मे चोट खाना होगा। शायद तुम्हारे एक घुटने मे तो पहले ही चोट लगी हुई है।"

"हॉ, घुटने मे चोट लगी तो अवश्य थी पर अब बिलकुल ठीक है। खेलते वक्त वहीं घाव फिर न उभड़ आवे इसलिए मैं उसमें रबड़ की 'इलेस्टिक' पट्टी लगाये रहता हूँ।"

"चलो तब घुटना ही ठीक रहा, घुटने में एक बार चोट लग चुकी है तो उसके दुबारा उभड़ आने की सम्भावना रहा करती है, इसलिए किसी को सन्देह भी न होगा। फिर सायंकाल को तुम्हे बुखार आ जायगा। रात को मै गुप्ता के साथ तुम्हारे कमरे में रहने की अनुमति वार्डन से प्राप्त कर लूँगा। रात को जब हम बाहर जायँगे तो वह उसे भीतर से बन्द कर लेगा। और वापस आने पर हमे भीतर कर लेगा। इस तरह हम लोग बराबर कमरे मे रहने का बहाना कर सकेंगे। बायन रात को साढ़े ११ बजे अपनी कार मे आवेंगे। तुम अपने काम के लिये पूरी तरह तैयार रहना। आधी रात तक हम लोग होस्टल मे वापस आ जायँगे। ओकोनर के सभी नौकर तब तक सो जायँगे और पुलिस के जो सिपाही उनके साथ रहते हैं वे भी रात को अपनी अपनी ड्यूटी पर चले जायँगे। लाश और कार का पता लोगों को सुबह के पहले न चलेगा।

"लाश" शब्द को सुनते ही घोष का दिल एक बार फिर काँप उठा। उसने बनर्जी की तरफ देखा, वह गहरे विचार मे डूबा हुआ था। घोष ने समझ लिया कि उसे अब बनर्जी की इच्छा के अनुसार चलना ही पड़ेगा। उसका सिर घूमने लगा। वह विचार करने लगा कि उसे क्या क्या करना है—हाकी मैच, घुटने की चोट, बुखार—और हत्या।"

"समझ गये"—बनर्जी ने पूछा।

घोष का गला सूख रहा था। वह बोल नहीं सकता था पर सिर हिला कर उसने अपनी स्वीकृति जता दी।

"अच्छा, तो चलो रास्ता साफ है।"

प्रातःकाल की चाय

उर्मिला ब्रायन को लिए हुए उनके बँगले पर पहुँची। कार से जैसे ही वह उतरी ब्रायन से उसके चेहरे की थकावट और पीलापन छिप न सका। वे उसे हाथ से सहारा देकर बरामदे मे ले गये।

"देखो उर्मिला, जब तक चाय न पी लो कोई बात आरम्भ न करो। जान पड़ता है गरमियो ने तुम्हारे स्वास्थ्य को चौपट कर डाला है।"

इसी समय खानसामा दिखलाई दिया, ब्रायन ने उससे जल्दी चाय लाने को कहा और इसके बाद उर्मिला को ले जाकर उन्होंने एक आराम-कुरसी पर बैठा दिया। वह कुछ बोलने वाली थी कि उन्होंने उसे रोक दिया—"देखो हड़बड़ी न करो।

आज मै तुम्हारे साथ वैसा व्यवहार करना चाहता हूँ, जैमा बचपन मे किया करता था। तुम्हे याद है पिता के बँगले मे हम लाग नित्य खाया-पिया करते थे। तुम मेरे लिये चाय तैयार किया करती थीं। मैं कितनी चीनी पसन्द करता था, यह तुम अब तो निश्चय ही भूल गयी होगी।"

"एक बड़ा टुकड़ा और दो छोटे"—चीण हँसी हँसते हुए उर्मिला ने कहा। चाय और आराम मिलने के कारण वह कुछ ताज़गी का अनुभव करने लगी थी। इसके सिवाय बचपन की स्मृतियों ने भी उसे प्रफुल्लित कर दिया था।

त्रायन को भी, उर्मिला मे यह परिवर्तन होते देखकर प्रसन्नता हुई। वे उसकी रूप-माधुरी का पान कर रहे थे। गोरी और नरम बाहे निश्चिन्तता के साथ कुरसी के दोनो तरफ पड़ी हुई थीं। जिन मुसकुराते हुए नेत्रो से वह उनकी तरफ देख रही थी उनकी गहराई और उज्वलता का अन्दाज़ उनसे लगाये न लगता था।

खानसामा ने चुपचाप चाय का सब सामान लाकर मेज़ पर रख दिया। त्रायन ने तब अपनी कुरसी मेज़ की तरफ खिसका ली और कुछ मुसकुराते हुए बोले—"अच्छा तो चलो तुम अपना काम आरम्भ करो।"

उर्मिला थोड़ी देर के लिए भी गत जीवन का आनन्द उठाने का लोभ सवरण न कर सकी, यद्यपि अब उसमे अतीत की यथार्थता का अनुभव उसे नहीं हो रहा था।

चाय डालते हुए उसने चीनी के बर्तन को आगे बढा दिया। त्रायन बर्तन मे हाथ डाल कर देखने लगे कि टुकड़ा छोटा है या बड़ा? उर्मिला कब चूकने वाली थी, बोल उठी—'देखिये बर्तन मे हाथ न डाला कीजिए, यह बुरी आदत है।"

"जव तक हाथ न डालूँगा तब तक यह कैसे जान पड़ेगा कि टुकड़ा छोटा है या वड़ा ?"

"वाह, मैं चमचे से निकाल कर दिखला न दूँगी। जितना वडा या छोटा आप चाहे ले सकते हैं।"

"वह वड़ा वाला। वस काफी है।"

"नहीं, आपको इस तरह कहना चाहिये था। उर्मिला, देखो मैं वह वडा टुकड़ा वाला लूँगा, थैंक यू वेरी मच।"

इसी प्रकार की वातें करते हुए दोनो खुशी-खुशी चाय पीने लगे। त्रायन इसके वाद सिगरेट जला कर एक आराम कुरसो पर लेट गये। चाय पी लेने के वाद उर्मिला भी आकर उनके पास वैठ गई। त्रायन ने कुछ गम्भीरतापूर्वक कहा—"अव वतलाओ क्या है ? क्या कोई वात पंडितजी के सम्वन्ध मे है ?"

"नहीं इस वात का मेरे पिता से कुछ भी सम्वन्ध नही है। इससे आपका और केवल आपका ही सम्वन्ध है। आपका जीवन निकट भविष्य में खतरे मे है।"

त्रायन ने उर्मिला की तरफ कुछ झुकते हुए पूछा—"क्या तुम्हें विलकुल निश्चय है ?"

"निश्चित रूप से मै तो कुछ कह नही सकती, किन्तु जितना मै जानती हूँ उसके आधार पर कह सकती हूँ कि वहुत जल्दी ही आपकी जान लिए जाने का प्रयत्न किया जाने वाला है।"

"वडे आश्चर्य की वात है। कल रात्रि को मै यही लान पर वैठा था। मेरे मन मे यह वात उठी थी कि जरूर कुछ न कुछ आफत आने वाली है। दूर होस्टल मे मुझे रोशनी दिखलाई दे रही थी और मै सोच रहा था कि आफत उन कमरो के वीच कहीं से

आरम्भ होगी। परन्तु उस समय मेरा ख़्याल था कि आफ़त सरकार पर आने वाली है, व्यक्तिगत रूप से मुझ पर नहीं।"

"क्या व्यक्तियों पर आक्रमण किए जाने से समस्त सरकार को नुकसान नहीं पहुँचेगा ?"

ब्रायन ने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। पीछे कुरसी पर पीठ टिका कर उन्होंने दूसरी सिगरेट जलायी और पीने लगे। कुछ समय पूर्व उन्हें गुप्त रूप से खबर मिली थी कि जिले मे एक बहुत खतरनाक क्रान्तिकारी अपने काम मे लगा हुआ है। तब क्या उर्मिला क्रान्तिकारियो से मिली हुई है ? आशा तो नहीं है कि आतंकवाद मे उसका विश्वास होगा, किन्तु साथ ही बिलकुल असम्भव भी नहीं है। कुछ भी हो, इस समय वह मित्र की हैसियत से मुझे चेतावनी दे रही है। मै उसे मन की बात कह डालने के लिये बाध्य न करूँगा। निजी बातो मे राजनैतिक मतभेद को दूर रखना ही अच्छा है। मै सरकारी अफसर हूँ और उर्मिला एक प्रमुख भारतीय नेता की पुत्री है। इस परिस्थिति मे भविष्य मे भी मतभेद होने की सम्भावना कुछ कम नहीं है। फिर उन्होने सोचा कि भविष्य तो बाद मे आवेगा अभी वर्तमान की तरफ ध्यान देना चाहिये।

ब्रायन बोले—"उर्मिला, चेतावनी के लिये धन्यवाद। मै जानता हूँ समय बहुत बुरा है, इसलिये बराबर सतर्क रहता हूँ। मेरे पास कुछ न कुछ हथियार रहता ही है। इसके सिवाय एक आदमी मेरे साथ सदा रहता है, जिसका निशाना बहुत अच्छा है।"

'अगले सप्ताह विशेष रूप से सतर्क रहिये। यदि मुझे सब बातें मालूम होतीं तो मैं तुरन्त आपको बतला देती—इसके

बाद एक क्षण चुप रह कर हँसती हुई वह बोली—"आप चाहे तो मुझे नई आर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़ार भी कर सकते हैं।"

ब्रायन उर्मिला की बातें सुन कर कुछ गम्भीर हो गये और बोले—"उर्मिला, भविष्य में तुम्हारे लिये बहुत कठिन समय आने वाला है और शायद तुमसे भी कठिन मेरे लिये। यदि तुम कानून के बाहर जाओगी तो मुझे तुम्हे भी गिरफ़ार करना पड़ेगा। मैं नहीं जानता कि वर्तमान राजनैतिक परिस्थिति के सम्बन्ध में तुम्हारा क्या मत है ?"

"क्या आपका ख्याल है मैं क्रान्तिकारिणी हूँ ?"

इस अप्रत्याशित प्रश्न से ब्रायन चौंके तो अवश्य, किन्तु साथ ही प्रसन्न भी हुए। प्रसन्न इस बात से कि एक बार उन्हे फिर उर्मिला के हृदय के निकट पहुँचने का अवसर मिलेगा। उनके उत्तर देने के पहले ही उर्मिला बोल उठी—

"मैं कभी क्रान्तिकारी दल में सम्मिलित तो न हुई थी, परन्तु मेरी सहानुभूति सदा उसी के साथ रही है।"

"सहानुभूति रही है ?"

"सुनिए, मै आपको अपनी गुप्त बात बतलाती हूँ। मैं एक क्षण के लिये भूली जाती हूँ कि आप सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस हैं—एक सरकारी अफसर हैं। मै सिर्फ यही याद रखूँगी कि हम मानव है और बचपन में साथ खेले है। ठीक है न ?"

"उर्मिला, सचमुच मुझे बड़ी खुशी है कि तुमने मुझे अपने मन की बात बताने का निश्चय कर लिया है। और इस बात से तो मुझे और भी आनन्द हुआ है कि तुम अब भी मुझे अपना बचपन का ही साथी समझती हो। ऐसा जान पड़ता है कि :

बातों को कई युग बीत गये। कभी कभी मैं सोचा करता हूँ कि कहीं वे दिन हमारे जीवन मे फिर आ जाते ?"

"मै भी यही सोचती हूँ—किन्तु यह असम्भव है। इस समय हमें वर्तमान की समस्याओं को सुलझाना है, जो बेहद मुश्किल हैं।"

इसके बाद वह सोचने लगी कि किस तरह से आरम्भ करे। त्रायन धैर्य्यपूर्वक उसकी बातें सुनने की प्रतीक्षा कर रहे थे। निश्चय ही वे मरना न चाहते थे, किन्तु साथ ही उन्हे मृत्यु से भय भी न था। युद्ध के समय जो चार साल फ्रास के रणक्षेत्र मे बीते थे उन दिनो उन्हे बराबर जान का खतरा लगा रहता था। अन्य सैनिकों की तरह वे भी भाग्यवादी हो गये थे। वे अक्सर कहा करते थे कि यदि मेरी बारी आ गई है तो जाना ही पडेगा और यदि नहीं आई है तो यह मेरा सौभाग्य है। जब मनुष्य कर्तव्य क्षेत्र मे कूद ही पड़ा है तो सम्भावनाओ से भयभीत होने मे लाभ ही क्या ? गत वर्ष में लगभग एक दर्जन पुलिस अफसर क्रान्तिकारियों द्वारा मार डाले जा चुके है। मेरी बारी भी किसी समय आ सकती है।

सच बात तो यह है कि त्रायन को भी कुछ दिनो से यह आशका लगी हुई थी कि कुछ न कुछ होनहार अवश्य है। वे काम करते समय बराबर सतर्क रहते थे। इसीलिये उर्मिला ने यद्यपि जान के खतरे की चेतावनी दी थी फिर भी इससे त्रायन के दिल को कुछ शान्ति ही मिली।

उर्मिला कहने लगी—"मैं मातृभूमि को हृदय से प्यार करती हूँ और उसकी स्वतन्त्रता के लिये अपनी जान तक निछावर करने को तैयार हूँ। पिताजी की गिरफ़ारी से मै उत्तेजित हो गई थी। मैंने मन मे सोचा कि इसके प्रतिकार के लिये कुछ न कुछ मुझे

आकांक्षाओ की पुष्टि का आन्दोलन जायज ढग पर चलाया जाय तो ब्रायन देश की आकांक्षाओ का हार्दिक समर्थन अवश्य करेंगे। और वास्तव मे ब्रायन का यह मत था भी कि प्रतिष्ठा की झूठी भावना का ख्याल न करके यदि भारत और ब्रिटिश साम्राज्य एक दूसरे के प्रति सहानुभूति और सद्भावना के पवित्र बंधन मे बँध जायँ तो इससे ब्रिटिश साम्राज्य और भारत दोनो का ही लाभ होगा।

उर्मिला अपनी बातें सुनाते सुनाते कुछ आगे की तरफ झुक आयी थी। उसे जो कहना था जब कह चुकी तो ब्रायन उठे और उसकी कुरसी की बाँह पर आकर धीरे से बैठ गये और कहने लगे—"उर्मिला, तुम्हारे विचार सुन कर मुझे बडी खुशी हुई है और किसी हद तक मेरे विचार तुम्हारे पिता से मिलते भी हैं, साथ ही हम मे कुछ मतभेद भी हैं। एक तो उनकी माँग आवश्यकता से काफी अधिक है और दूसरे इसकी पूर्ति वे अत्यधिक शीघ्रता से चाहते है। तीसरी बात यह है कि अगरेज जितना दे सकते हैं उतना भी देने के लिये तैयार नहीं हैं।"

"मुझे भी आज की बातो से खुशी हुई है"—उर्मिला ने धीरे से कहा। ब्रायन का हाथ इस समय उर्मिला के कंधे पर था, उसे उठा कर उसने अपने हाथ मे ले लिया।

इसी समय बाहर से खाँसने की आवाज सुनाई दी। बाहर के बरामदे मे डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट मि० ओकले खडे हुए थे। संयोग-वश इस समय वे ऐसे जूते पहने हुए थे, जिनके कारण चलने के समय आवाज बिलकुल सुनाई न पडती थी।

"गुडमार्निंग मि० ब्रायन, मैं तुमसे एक जरूरी मामले पर

सलाह लेने आया था। मेरा ख्याल न था कि इतने सुबह तुम व्यस्त होगे।"

त्रायन धीरे से उर्मिला वाली कुरसी के डंडे से उठे और डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट का अभिवादन करने के बाद उनका परिचय उर्मिला से कराने लगे—"आप शायद जानते हैं, यह पंडितजी की पुत्री हैं।"

"हाँ, हाँ अवश्य"—मि० ओकले ने उर्मिला की तरफ देखे बिना ही उत्तर दिया और वापस जाने के लिये मुड़ते हुये बोले—"मुझे आशा है इनके विचार अपने पिता की तरह क्रान्तिकारी न होंगे।"

उर्मिला उठी और हाथ बढाते हुए बोली—"अच्छा त्रायन, आप को जरूरी काम करना है, मैं चलती हूँ।"

त्रायन ने उसके अभिवादन के लिए बढ़े हुए हाथ को अपने हाथ में ले तो लिया किन्तु जाने देने के स्थान पर उसे फिर कुरसी पर बैठने के लिये बाध्य कर दिया—"देखो कुछ मिनट और ठहर जाओ, मुझे अपनी बात पूरी करनी है।"

मि० ओकले अभी कुछ ही कदम आगे बढे थे इसलिए उन्हे इनकी बातचीत का प्रत्येक शब्द स्पष्ट सुनाई देता था। मि० ओकले का क्रोध बराबर बढता ही गया। उन्हे इस बात की पूरी आशा थी कि डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के रूप मे उनकी मर्य्यादा की रक्षा के लिये त्रायन उर्मिला को विदा करके उनसे सरकारी काम के सम्बन्ध मे बातें करने लगेंगे।

त्रायन बरामदे से निकल कर उस स्थान पर आ गए जहाँ कि डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट खड़े हुए थे। इस समय वे एक सादी बनियान, पोलो की ब्रीचेज़ और बूट पहने थे

और उनका अंग-प्रत्यंग उर्मिला के अनावश्यक अपमान के कारण जला जा रहा था।

"कहिये साहब, क्या है ?"—उन्होंने जरा रुखाई से पूछा।

"शायद आप सुन चुके हैं कि मैं किसी महत्वपूर्ण मामले पर आपसे बातें करना चाहता हूँ"—डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने ताने की आवाज़ में उत्तर दिया।

"हाँ, और साथ ही आपने मेरी अतिथि का जिस प्रकार अपमान किया है वह भी मैं देख चुका हूँ।"

दोनो व्यक्ति एक दूसरे के सामने खड़े हुए घूर रहे थे। मि० ओकले की आँखें मानो कह रही थीं—"बेवकूफ नौजवान, इसके लिए मैं तुम्हे खूब सजा दूँगा"—ब्रायन के नेत्रों का भाव था—"अभिमानी व्यक्ति, भारत से तुम जितनी ही जल्दी विदा होगे उतना ही इस देश का और स्वयं तुम्हारा कल्याण होगा।"

मि० ओकले ने अपनी आँखें नीची कर लीं और बोले—"मैं आप से अभी एक महत्वपूर्ण मामले पर सलाह लेना चाहता हूँ।"

"खेद है साहब, इस समय मुझे फ़ुरसत नहीं है, मैं भी एक महत्वपूर्ण मामले पर विचार कर रहा हूँ।"

"पर मेरा काम बहुत जरूरी है।"

"मेरे भी जीवन-मरण का प्रश्न है।"

दोनो इस तरह देखने लगे मानो एक दूसरे को निगल ही जायँगे। मि० ओकले ने फिर आँखें झुका लीं।

"आपको कब फ़ुरसत होगी ?"—उन्होंने पूछा।

"१५ मिनट से कम समय लगेगा।"

"तब आप मेरे बँगले चले आइयेगा, क्यों ठीक है न ?"

"जरूर, जरूर"—ब्रायन ने उत्तर दिया और उर्मिला के पास पहुँचे। वह उनके आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी।

उनके आते ही उसने कहा—"ब्रायन, मुझे इसका खेद है कि मेरे कारण भावी श्वशुर से आपका झगड़ा हो गया।"

"जिन्दगी में इतना परेशान मैं कभी नहीं हुआ। उन्होंने तुम्हारे प्रति जो असभ्यता का व्यवहार किया वह अनुचित और अक्षम्य है। यदि उनकी पुत्री से मेरा सम्बन्ध पक्का न हुआ होता तो आज मैं उन्हे मार बैठता।"

"खैर, आप मेरे लिए चिन्ता न कीजिये। इस तरह की तानेबाजी का मुझ पर तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ता। हाँ, ऐसी बातों से मेरा मनोरंजन अवश्य होता है। शायद वे वास्तविक परिस्थिति को समझ ही नहीं पाये।"

"हाँ यही तो बात है। मि० ओकले और उनकी तरह के विचार वाले अपनी बात के सिवाय दूसरे का दृष्टिकोण समझ ही नहीं सकते।"

"अच्छा ब्रायन, मेरी चेतावनी का ख्याल रखियेगा, बतलाइये न ?"

"जरूर, इसके लिए मैं तुम्हे कैसे धन्यवाद दूँ ? आज मुझे ऐसा जान पड़ रहा है मानो मेरी स्वर्गीय बहन मुझे पुन प्राप्त हो गई है। अब कब मिलोगी ?"

"१२ तारीख को लाला जी के यहाँ तो आप आ रहे हैं न ?'

"हाँ, क्या तुम भी आ रही हो ?"

उर्मिला ने अपनी स्वीकृति सिर हिला कर प्रकट की और ब्रायन से हाथ मिला कर मोटर स्टार्ट कर दी।

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट का बंगला

उर्मिला के जाते ही ब्रायन डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के बंगले की तरफ रवाना होने की तैयारी करने लगे। वे यह अनुभव कर रहे थे कि दो दिन के अन्दर दो बार अपने भावी श्वसुर को रुष्ट करके उन्होंने अच्छा काम नहीं किया। रास्ते में उनके मन में यह विचार भी उठा कि राजनैतिक आन्दोलन के कारण बढ़ जाने वाले काम और मैदान के गरम मौसम ने उन्हें बिलकुल थका डाला है। अच्छा हो यदि पहाड़ पर मिस ओकले के साथ कुछ समय बिता लिया जाय। इससे तबियत फिर हरी हो उठेगी।

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के बँगले पर पहुँच कर उन्होंने देखा कि मि० ओकले मेज पर बैठे हुए भोजन कर रहे हैं। ब्रायन को देख कर वे बोल उठे—"मि० ओकोनर बैठ जाओ। आज की मुलाकात में हमारे बीच कुछ अप्रिय बातें होने की सम्भावना है। मुझे तुम्हारे साथ कुछ बहुत ही गम्भीर मामलों पर विचार करना है। इनमें से कुछ का सम्बन्ध सरकारी कार्य से है और कुछ हमारी आपसी बातें हैं।"

ब्रायन का चित्त यह सुन कर डाँवाडोल हो उठा। उन्होंने अपने मन में कहा कि इस समय यदि मैंने सावधानी से काम न लिया तो यह महाशय क्रोध में आकर मेरा सब बना बनाया खेल चौपट कर देंगे।

मि० ओकले ने कहा— अच्छा तो पहले हम सरकारी कार्य से सम्बन्ध रखने वाली बातों को लेते हैं। क्या तुम बतला सकते हो कि तुमने किस अधिकार से भीड़ का नियन्त्रण करने के लिए

सेना बुलवाई थी। इस प्रकार की आज्ञा केवल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ही दे सकता है और मुझे आश्चर्य्य तो यह है कि मेरी अनुमति के विना सैनिक अधिकारियो ने तुम्हारी बात को मान कैसे लिया। यह एक वेकायदा बात है, जिसकी तुरन्त जाँच होने की आवश्यकता है।"

"जॉच की क्या आवश्यकता है, जिम्मेदारी तो इसमे कुल मेरी है। मैंने ही मेजर मेटलैंड से मिल कर उन्हे परिस्थिति की गम्भीरता समझा दी थी और अपनी जिम्मेदारी पर यह भी कह दिया था कि डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की आवश्यक अनुमति मैं उन्हे ला दूँगा।"

"आखिर तुमने ही यह वेकायदा कार्यवाही क्यो की ?"

"फ्रास मे जव जर्मन सेना हमारी खाइयो पर हमला कर देती थी तो उन्हें हटाने के लिए हम वटालियन के सदर अफ़सरो से अनुमति लेने कभी न जाते थे।"

'देखो इस समय न तो लड़ाई छिडी हुई है और न इस वक्त तुम सेना ही मे हो।"

ब्रायन इसके उत्तर में कहने वाले थे कि जिसके आँखें है केवल वही समझ सकता है कि लड़ाई छिडी है या नहीं, किन्तु मि० ओकले के विगड़ उठने के भय से वे चुप रहे।

"देखो, मेरी बातो को याद रखोगे तो भविष्य मे ऐसी गलती कभी न होगी। मेरा सदा से विचार रहा है कि सेना के आदमियों को भारत मे शासन के विभागो मे रखना ठीक नहीं है। इन की प्रकृति बहुत ही स्वच्छन्द होती है और कायदे कानूनो का यह लोग तनिक भी विचार नहीं रखते।'

मि० ओकले की इस बात पर ब्रायन अपनी हँसी न रोक

सके। मन ही मन हँसते हुए उन्होंने सोचा कि यदि उस समय सेना न बुलायी जाती तो आज डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट और मुझ मे से कोई भी यहाँ न होते।

मि० ओकले ने जब ब्रायन को मुसकराते देखा तो उनका शरीर जल उठा—"हाँ, तुम हँसते हो न ? तुम नौजवान लोग आज कल सोचा करते हो कि तुम्हीं सब कुछ जानते हो। पर मैं तुमसे कहता हूँ कि मेरी तरह इस देश में ३० वर्ष रह लेने पर तुम कभी किसी बात के सम्बन्ध मे इतने निश्चित न होगे, जितने आज कल हो जाया करते हो।"

"साहब, मुझे इसके लिए खेद है। मैं हँस तो केवल इस ख्याल से रहा था कि यदि सेना न होती तो हम लोगों का न जाने क्या हाल होता ?"

"चलो, इस मामले को खत्म करो"—बीच ही मे मि० ओकले ने बुडक कर कहा—"ऐसी गलती फिर न करना। अच्छा, अब मैं दूसरी बात उठाता हूँ। अब भी मेरा यही मत है कि पंडितजी के मुकदमे का फैसला होने के बाद जो कुछ तुमने किया बहुत ही अनुचित और अदूरदर्शितापूर्ण था। बिना सोचे विचारे और जल्दबाजी में किये गए कार्य कभी ठीक नहीं होते। तुमने मुझे विचार करने के लिए समय ही न दिया। न्याय के मामले में पंडितजी को हस्तक्षेप करने देना बिलकुल बेकायदा और एक ऐसी कार्यवाही है, जिससे हमारी कमजोरी झलकती है। हमें वहाँ अधिक दृढता से काम लेना चाहिए था। यदि कुछ लोगों की जानें चली ही जाती तो दंगे सम्बन्धी कानून पढ़े जाने के पश्चात् इसमे कुछ भी अनुचित न होता। इससे लोगों को अच्छा सबक मिल जाता।"

"शायद आपको स्मरण होगा कि ऐसी ही परिस्थिति मे कुछ वर्ष पहले क्या हुआ था ?"

मि० ओकले ने कुछ विचार के वाद कहा—"शायद तुम्हारा मतलव जलियानवाला वाग की घटना से है।"

"हाँ, मेरा मतलव उसी घटना से है, जिसमे सवक सिखाने के ही इरादे से निरस्त्र भीड़ पर आवश्यकता से अधिक वल-प्रयोग किए जाने के कारण एक जनरल को वरखास्त कर दिया गया था।"

"यही तो मेरा भी कहना है"—मि० ओकले वोले—"कोई भी कार्य करने के पहले हमें अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए। तुम जो करना चाहते थे, उसे तुरन्त ही करने का निश्चय तुमने कर लिया। यदि तुम चाहते तो वहुत आसानी से मुझे भी अपनी राय से सहमत कर सकते थे। मुझे आशा है भविष्य मे तुम अपने इस दूसरे सवक का भी ध्यान रखोगे।"

व्रायन जलियानवाला कण्ड का उल्लेख करके विलकुल दूसरे ही परिणाम पर पहुँचना चाहते थे, किन्तु मि० ओकले की वात सुनकर उन्होंने कुछ कहा नहीं।

"तुम्हीं देखो न, सरकार मुझे अस्थिर और कमजोर ही समझेगी। पहली वात तो यह है कि आवश्यकता न रहने पर भी वलप्रयोग के लिए सेना वुलाई गई और दूसरी यह कि वलप्रयोग आवश्यक होने पर भी क्यो नही किया गया। मै नही जानता कि अव रिपोर्ट मे क्या लिखा जाय ?"

"कहिये तो मै वतलाऊँ ?"

"हाँ, जरूर"—मि० ओकले ने उत्सुकतापूर्वक कहा।

"लिख दीजिए कि पडितजी की गिरफ्तारी और उनके नामने

सके। मन ही मन हँसते हुए उन्होंने सोचा कि यदि उस समय सेना न बुलायी जाती तो आज डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट और मुझ मे से कोई भी यहाँ न होते।

मि० ओकले ने जब ब्रायन को मुसकराते देखा तो उनका शरीर जल उठा—"हाँ, तुम हँसते हो न? तुम नौजवान लोग आज कल सोचा करते हो कि तुम्हीं सब कुछ जानते हो। पर मैं तुमसे कहता हूँ कि मेरी तरह इस देश मे ३० वर्ष रह लेने पर तुम कभी किसी बात के सम्बन्ध में इतने निश्चित न होगे, जितने आज कल हो जाया करते हो।"

"साहब, मुझे इसके लिए खेद है। मैं हँस तो केवल इस ख्याल से रहा था कि यदि सेना न होती तो हम लोगो का न जाने क्या हाल होता?"

"चलो, इस मामले को खत्म करो"—बीच ही मे मि० ओकले ने घुडक कर कहा—"ऐसी गलती फिर न करना। अच्छा, अब मैं दूसरी बात उठाता हूँ। अब भी मेरा यही मत है कि पंडितजी के मुकदमे का फैसला होने के बाद जो कुछ तुमने किया बहुत ही अनुचित और अदूरदर्शितापूर्ण था। बिना सोचे विचारे और जल्दबाज़ी में किये गए कार्य कभी ठीक नहीं होते। तुमने मुझे विचार करने के लिए समय ही न दिया। न्याय के मामले में पंडितजी को हस्तक्षेप करने देना बिलकुल बेकायदा और एक ऐसी कार्यवाही है, जिससे हमारी कमज़ोरी झलकती है। हमें वहाँ अधिक दृढता से काम लेना चाहिए था। यदि कुछ लोगों की जानें चली ही जातीं तो दंगे सम्बन्धी कानून पढ़े जाने के पश्चात् इसमे कुछ भी अनुचित न होता। इसमे लोगों को अच्छा सबक मिल जाता।"